सामान्य हिन्दी

1.भाषा, बोली और व्याकरण

• भाषा–

भाषा मूलतः ध्वनि–संकेतों की एक व्यवस्था है, यह मानव मुख से निकली अभिव्यक्ति है, यह विचारों के आदान–प्रदान का एक सामाजिक साधन है और इसके शब्दों के अर्थ प्रायः रूढ़ होते हैं। भाषा अभिव्यक्ति का एक ऐसा समर्थ साधन है जिसके द्वारा मनुष्य अपने विचारअें को दूसरअें पर प्रकट कर सकता है और दूसरअें के विचार जाना सकता है। अतः हम कह सकते हैं कि "भावों और विचारों की अभिव्यक्ति के लिए रूढ़ अर्थों में प्रयुक्त ध्वनि संकेतों की व्यवस्था ही भाषा है।"

प्रत्येक देश की अपनी एक भाषा होती है। हमारी राष्ट्रभाषा हिन्दी है। संसार में अनेक भाषाएँ हैं। जैसे- हिन्दी, संस्कृत, अंग्रेजी, बँगला, गुजराती, पंजाबी, उर्दू, तेलुगु, मलयालम, कन्नड़, फ्रैंच, चीनी, जर्मन इत्यादि।

• भाषा के प्रकार- भाषा दो प्रकार की होती है –

1. मौखिक भाषा।
2. लिखित भाषा।

आमने–सामने बैठे व्यक्ति परस्पर बातचीत करते हैं अथवा कोई व्यक्ति भाषण आदि द्वारा अपने विचार प्रकट करता है तो उसे भाषा का मौखिक रूप कहते हैं।

जब व्यक्ति किसी दूर बैठे व्यक्ति को पत्र द्वारा अथवा पुस्तकअें एवं पत्र-पत्रिकाओं में लेख द्वारा अपने विचार प्रकट करता है तब उसे भाषा का लिखित रूप कहते हैं।

• बोली:

जिस क्षेत्र का आदमी जहाँ रहता है, उस क्षेत्र की अपनी एक बोली होतीहै। वहाँ रहने वाला व्यक्ति, अपनी बात दूसरे व्यक्ति को उसी बोली में बोलकर कहता है तथा उसी में सुनता है। जैसे–शेखावाटी (झुन्झुनू, चुरू व सीकर) के निवासी 'शेखावाटी' बोली में कहतेहैं एवं सुनते हैं। इसी प्रकार कोटा और बूँदी क्षेत्र के निवासी 'हाड़ौती' में; अलवर क्षेत्र के निवासी 'मेवाती' में; जयपुर क्षेत्र के निवासी 'ढूँढाड़ी' में; मेवाड़ के निवासी 'मेवाड़ी' में तथा जोधपुर, बीकानेर और नागौर क्षेत्रों के निवासी 'मारवाड़ी' में अपनी बात दूसरे व्यक्ति को बोलकर कहते हैं तथा दूसरे व्यक्ति की बात सुनकर समझते हैं।

अतः भाषा का वह रूप जो एक सीमित क्षेत्र में बोला जाये, उसे बोली कहते हैं। कई बोलियाँ तथा उनकी समान बातों से मिलकर भाषा बनती है। बोली व भाषा का बहुत गहरा सम्बन्ध है।

भाषा का क्षेत्रीय रूप बोली कहलाता है। अर्थात् देश के विभिन्न भागअें में बोली जाने वाली भाषा बोली कहलाती है और किसी भी क्षेत्रीय बोली का लिखित रूप में स्थिर साहित्य वहाँ की भाषा कहलाता है।

• व्याकरण :

मनुष्य मौखिक एवं लिखित भाषा में अपने विचार प्रकट कर सकता है और करता रहा है किन्तु इससे भाषा का कोई निश्चित एवं शुद्ध स्वरूप स्थिर नहीं हो सकता। भाषा के शुद्ध और स्थायी रूप को निश्चित करने के लिए नियमबद्ध योजना की आवश्यकता होती है और उस नियमबद्ध योजना को हम व्याकरण कहते हैं।

• परिभाषा–

व्याकरण वह शास्त्र है जिसके द्वारा किसी भी भाषा के शब्दअें और वाक्यअें के शुद्ध स्वरूपअें एवं शुद्ध प्रयोगअें का विशद ज्ञान कराया जाता है।

• भाषा और व्याकरण का संबंध –

कोई भी मनुष्य शुद्ध भाषा का पूर्ण ज्ञान व्याकरण के बिना प्राप्त नहीं कर सकता। अतः भाषा और व्याकरण का घनिष्ठ संबंध हैं वह भाषा में उच्चारण, शब्द-प्रयोग, वाक्य-गठन तथा अर्थों के प्रयोग के रूप को निश्चित करता है।

• व्याकरण के विभाग– व्याकरण के चार अंग निर्धारित किये गये हैं–

1. वर्ण-विचार – इसमें वर्णों के आकार, भेद, उच्चारण, और उनके मिलाने की विधि बताई जाती है।
2. शब्द-विचार – इसमें शब्दों के भेद, रूप, व्युत्पति आदि का वर्णन किया जाता है।
3. पद-विचार – इसमें पद तथा उसके भेदों का वर्णन किया जाता है।
4. वाक्य-विचार – इसमें वाक्यों के भेद, वाक्य बनाने और अलग करने की विधि तथा विराम–चिह्नों का वर्णन किया जाता है।

• लिपि :

किसी भी भाषा के लिखने की विधि को 'लिपि' कहते हैं। हिन्दी और संस्कृत भाषा की लिपि का नाम देवनागरी है। अंग्रेजी भाषा की लिपि 'रोमन', उर्दू भाषा की लिपि फारसी, और पंजाबी भाषा की लिपि गुरुमुखी है।

देवनागरी लिपि की निम्न विशेषताएँ हैं–

(i) यह बाएँ से दाएँ लिखी जाती है।
(ii) प्रत्येक वर्ण की आकृति समान होती है। जैसे– क, य, अ, द आदि।
(iii) उच्चारण के अनुरूप लिखी जाती है अर्थात् जैसे बोली जाती है, वैसी लिखी जाती है।

• साहित्य :

ज्ञान-राशि का संचित कोश ही साहित्य है। साहित्य ही किसी भी देश, जाति और वर्ग को जीवंत रखने का- उसके अतीत रूपअें को दर्शाने का एकमात्र साक्ष्य होता है। यह मानव की अनुभूति के विभिन्न पक्षअें को स्पष्ट करता है और पाठकअें एवं श्रोताओं के हृदय में एक अलौकिक अनिर्वचनीय आनंद की अनुभूति उत्पन्न करता है।

♦♦♦

« पीछे जायें | आगे पढ़ें »

• सामान्य हिन्दी
♦ होम पेज

प्रस्तुति:–

सामान्य हिन्दी

10. वाक्यांश के लिए एक शब्द

अच्छी रचना के लिए आवश्यक है कि कम से कम शब्दों में विचार प्रकट किए जाएँ। भाषा में यह सुविधा भी होनी चाहिए कि वक्ता या लेखक कम से कम शब्दों में अर्थात् संक्षेप में बोलकर या लिखकर विचार अभिव्यक्त कर सके। कम से कम शब्दों में अधिकाधिक अर्थ को प्रकट करने के लिए 'वाक्यांश या शब्द–समूह के लिए एक शब्द' का विस्तृत ज्ञान होना आवश्यक है। ऐसे शब्दों के प्रयोग से वाक्य–रचना में संक्षिप्तता, सुन्दरता तथा गंभीरता आ जाती है।

कुछ उदाहरण निम्नलिखित हैं–

वाक्यांश या शब्द–समूह -- शब्द

- हाथी हाँकने का छोटा भाला— अंकुश
- जो कहा न जा सके— अकथनीय
- जिसे क्षमा न किया जा सके— अक्षम्य
- जिस स्थान पर कोई न जा सके— अगम्य
- जो कभी बूढ़ा न हो— अजर
- जिसका कोई शत्रु न हो— अजातशत्रु
- जो जीता न जा सके— अजेय
- जो दिखाई न पड़े— अदृश्य
- जिसके समान कोई न हो— अद्वितीय
- हृदय की बातें जानने वाला— अन्तर्यामी
- पृथ्वी, ग्रहों और तारों आदि का स्थान— अन्तरिक्ष
- दोपहर बाद का समय— अपराह्न
- जो सामान्य नियम के विरुद्ध हो— अपवाद
- जिस पर मुकदमा चल रहा हो/अपराध करने का आरोप हो/अभियोग लगाया गया हो— अभियुक्त
- जो पहले कभी नहीं हुआ— अभूतपूर्व
- फेंक कर चलाया जाने वाला हथियार— अस्त्र
- जिसकी गिनती न हो सके— अगणित/अगणनीय
- जो पहले पढ़ा हुआ न हो— अपठित
- जिसके आने की तिथि निश्चित न हो— अतिथि
- कमर के नीचे पहने जाने वाला वस्त्र— अधोवस्त्र
- जिसके बारे में कोई निश्चय न हो— अनिश्चित
- जिसका भाषा द्वारा वर्णन असंभव हो— अनिर्वचनीय
- अत्यधिक बढ़ा–चढ़ा कर कही गई बात— अतिशयोक्ति
- सबसे आगे रहने वाला— अग्रणी
- जो पहले जन्मा हो— अग्रज
- जो बाद में जन्मा हो— अनुज
- जो इंद्रियों द्वारा न जाना जा सके— अगोचर
- जिसका पता न हो— अज्ञात
- आगे आने वाला— आगामी
- अण्डे से जन्म लेने वाला— अण्डज
- जो छूने योग्य न हो— अछूत
- जो छुआ न गया हो— अछूता
- जो अपने स्थान या स्थिति से अलग न किया जा सके— अच्युत
- जो अपनी बात से टले नहीं— अटल
- जिस पुस्तक में आठ अध्याय हों— अष्टाध्यायी
- आवश्यकता से अधिक बरसात— अतिवृष्टि
- बरसात बिल्कुल न होना— अनावृष्टि
- बहुत कम बरसात होना— अल्पवृष्टि
- इंद्रियों की पहुँच से बाहर— अतीन्द्रिय/इंद्रयातीत
- सीमा का अनुचित उल्लंघन— अतिक्रमण
- जो बीत गया हो— अतीत
- जिसकी गहराई का पता न लग सके— अथाह
- आगे का विचार न कर सकने वाला— अदूरदर्शी
- जो आज तक से सम्बन्ध रखता है— अद्यतन
- आदेश जो निश्चित अवधि तक लागू हो— अध्यादेश
- जिस पर किसी ने अधिकार कर लिया हो— अधिकृत
- वह सूचना जो सरकार की ओर से जारी हो— अधिसूचना
- विधायिका द्वारा स्वीकृत नियम— अधिनियम
- अविवाहित महिला— अनूढ़ा
- वह स्त्री जिसके पति ने दूसरी शादी कर ली हो— अध्यूढ़ा
- दूसरे की विवाहित स्त्री— अन्योढ़ा
- गुरु के पास रहकर पढ़ने वाला— अन्तेवासी
- पहाड़ के ऊपर की समतल जमीन— अधित्यका
- जिसके हस्ताक्षर नीचे अंकित हैं— अधोहस्ताक्षरकर्त्ता
- एक भाषा के विचारों को दूसरी भाषा में व्यक्त करना— अनुवाद
- किसी सम्प्रदाय का समर्थन करने वाला— अनुयायी
- किसी प्रस्ताव का समर्थन करने की क्रिया— अनुमोदन
- जिसके माता–पिता न हों— अनाथ

• जिसका जन्म निम्न वर्ण में हुआ हो— अंत्यज
• परम्परा से चली आई कथा— अनुश्रुति
• जिसका कोई दूसरा उपाय न हो— अनन्योपाय
• वह भाई जो अन्य माता से उत्पन्न हुआ हो— अन्योदर
• पलक को बिना झपकाए— अनिमेष/निर्निमेष
• जो बुलाया न गया हो— अनाहूत
• जो ढका हुआ न हो— अनावृत
• जो दोहराया न गया हो— अनावर्त
• पहले लिखे गए पत्र का स्मरण— अनुस्मारक
• पीछे–पीछे चलने वाला/अनुसरण करने वाला— अनुगामी
• महल का वह भाग जहाँ रानियाँ निवास करती हैं— अंतःपुर/रनिवास
• जिसे किसी बात का पता न हो— अनभिज्ञ/अज्ञ
• जिसका आदर न किया गया हो— अनादृत
• जिसका मन कहीं अन्यत्र लगा हो— अन्यमनस्क
• जो धन को व्यर्थ ही खर्च करता हो— अपव्ययी
• आवश्यकता से अधिक धन का संचय न करना— अपरिग्रह
• जो किसी पर अभियोग लगाए— अभियोगी
• जो भोजन रोगी के लिए निषिद्ध है— अपथ्य
• जिस वस्त्र को पहना न गया हो— अप्रहत
• न जोता गया खेत— अप्रहत
• जो बिन माँगे मिल जाए— अयाचित
• जो कम बोलता हो— अल्पभाषी/मितभाषी
• आदेश की अवहेलना— अवज्ञा
• जो बिना वेतन के कार्य करता हो— अवैतनिक
• जो व्यक्ति विदेश में रहता हो— अप्रवासी
• जो सहनशील न हो— असहिष्णु
• जिसका कभी अन्त न हो— अनन्त
• जिसका दमन न किया जा सके— अदम्य
• जिसका स्पर्श करना वर्जित हो— अस्पृश्य
• जिसका विश्वास न किया जा सके— अविश्वस्त
• जो कभी नष्ट न होने वाला हो— अनश्वर
• जो रचना अन्य भाषा की अनुवाद हो— अनूदित
• जिसके पास कुछ न हो अर्थात् दरिद्र— अकिँचन
• जो कभी मरता न हो— अमर
• जो सुना हुआ न हो— अश्रव्य
• जिसको भेदा न जा सके— अभेद्य
• जो साधा न जा सके— असाध्य
• जो चीज इस संसार में न हो— अलौकिक
• जो बाह्य संसार के ज्ञान से अनभिज्ञ हो— अलोकज्ञ
• जिसे लाँघा न जा सके— अलंघनीय
• जिसकी तुलना न हो सके— अतुलनीय
• जिसके आदि (प्रारम्भ) का पता न हो— अनादि
• जिसकी सबसे पहले गणना की जाये— अग्रगण
• सभी जातियों से सम्बन्ध रखने वाला— अन्तर्जातीय
• जिसकी कोई उपमा न हो— अनुपम
• जिसका वर्णन न हो सके— अवर्णनीय
• जिसका खंडन न किया जा सके— अखंडनीय
• जिसे जाना न जा सके— अज्ञेय
• जो बहुत गहरा हो— अगाध
• जिसका चिँतन न किया जा सके— अचिँत्य
• जिसको काटा न जा सके— अकाट्य
• जिसको त्यागा न जा सके— अत्याज्य
• वास्तविक मूल्य से अधिक लिया जाने वाला मूल्य— अधिमूल्य
• अन्य से संबंध न रखने वाला/किसी एक में ही आस्था रखने वाला— अनन्य
• जो बिना अन्तर के घटित हो— अनन्तर
• जिसका कोई घर (निकेत) न हो— अनिकेत
• कनिष्ठा (सबसे छोटी) और मध्यमा के बीच की उँगली— अनामिका
• मूलकथा में आने वाला प्रसंग, लघु कथा— अंतःकथा
• जिसका निवारण न किया जा सके/जिसे करना आवश्यक हो— अनिवार्य
• जिसका विरोध न हुआ हो या न हो सके— अनिरुद्ध/अविरोधी
• जिसका किसी में लगाव या प्रेम हो— अनुरक्त
• जो अनुग्रह (कृपा) से युक्त हो— अनुगृहीत
• जिस पर आक्रमण न किया गया हो— अनाक्रांत
• जिसका उत्तर न दिया गया हो— अनुत्तरित
• अनुकरण करने योग्य— अनुकरणीय
• जो कभी न आया हो (भविष्य)— अनागत
• जो श्रेष्ठ गुणों से युक्त न हो— अनार्य
• जिसकी अपेक्षा हो— अपेक्षित
• जो मापा न जा सके— अपरिमेय
• नीचे की ओर लाना या खीँचना— अपकर्ष
• जो सामने न हो— अप्रत्यक्ष/परोक्ष
• जिसकी आशा न की गई हो— अप्रत्याशित
• जो प्रमाण से सिद्ध न हो सके— अप्रमेय
• किसी काम के बार–बार करने के अनुभव वाला— अभ्यस्त
• किसी वस्तु को प्राप्त करने की तीव्र इच्छा— अभीप्सा

- जो साहित्य कला आदि में रस न ले— अरसिक
- जिसको प्राप्त न किया जा सके
- जो कम जानता हो— अल्पज्ञ
- जो वध करने योग्य न हो— अवध्य
- जो विधि या कानून के विरुद्ध हो— अवैध
- जो भला–बुरा न समझता हो अथवा सोच–समझकर काम न करता हो— अविवेकी
- जिसका विभाजन न किया जा सके— अविभाज्य/अभाज्य
- जिसका विभाजन न किया गया हो— अविभक्त
- जिस पर विचार न किया गया हो— अविचारित
- जो कार्य अवश्य होने वाला हो— अवश्यंभावी
- जिसको व्यवहार में न लाया गया हो— अव्यवहृत
- जो स्त्री सूर्य भी नहीं देख पाती— असूर्यपश्या
- न हो सकने वाला कार्य आदि— अशक्य
- जो शोक करने योग्य नहीं हो— अशोक्य
- जो कहने, सुनने, देखने में लज्जापूर्ण, घिनौना हो— अश्लील
- जिस रोग का इलाज न किया जा सके— असाध्य रोग/लाइलाज
- जिससे पार न पाई जा सके— अपार
- बूढ़ा–सा दिखने वाला व्यक्ति— अधेड़
- जिसका कोई मूल्य न हो— अमूल्य
- जो मृत्यु के समीप हो— आसन्नमृत्यु
- किसी बात पर बार–बार जोर देना— आग्रह
- वह स्त्री जिसका पति परदेश से लौटा हो— आगतपतिका
- जिसकी भुजाएँ घुटनों तक लम्बी हों— आजानुबाहु
- मृत्युपर्यन्त— आमरण
- जो अपने ऊपर निर्भर हो— आत्मनिर्भर/स्वावलंबी
- व्यर्थ का प्रदर्शन— आडम्बर
- पूरे जीवन तक— आजीवन
- अपनी हत्या स्वयं करना— आत्महत्या
- अपनी प्रशंसा स्वयं करने वाला— आत्मश्लाघी
- कोई ऐसी वस्तु बनाना जिसको पहले कोई न जानता हो— आविष्कार
- ईश्वर में विश्वास रखने वाला— आस्तिक
- शीघ्र प्रसन्न होने वाला— आशुतोष
- विदेश से देश में माल मँगाना— आयात
- सिर से पाँव तक— आपादमस्तक
- प्रारम्भ से लेकर अंत तक— आद्योपान्त
- अपनी हत्या स्वयं करने वाला— आत्मघाती
- जो अतिथि का सत्कार करता है— आतिथेय/मेजबान
- दूसरे के हित में अपना जीवन त्याग देना— आत्मोत्सर्ग
- जो बहुत क्रूर व्यवहार करता हो— आततायी
- जिसका सम्बन्ध आत्मा से हो— आध्यात्मिक
- जिस पर हमला किया गया हो— आक्रांत
- जिसने हमला किया हो— आक्रांता
- जिसे सूँघा न जा सके— आघ्रेय
- जिसकी कोई आशा न की गई हो— आशातीत
- जो कभी निराश होना न जाने— आशावादी
- किसी नई चीज की खोज करने वाला— आविष्कारक
- जो गुण–दोष का विवेचन करता हो— आलोचक
- जो जन्म लेते ही गिर या मर गया हो— आजन्मपात
- वह कवि जो तत्काल कविता कर सके— आशुकवि
- पवित्र आचरण वाला— आचारपूत
- लेखक द्वारा स्वयं की लिखी गई जीवनी— आत्मकथा
- वह चीज जिसकी चाह हो— इच्छित
- किन्हीं घटनाओं का कालक्रम से किया गया वर्णन— इतिवृत्त
- इस लोक से संबंधित— इहलौकिक
- जो इन्द्र पर विजय प्राप्त कर चुका हो— इंद्रजीत
- माँ–बाप का अकेला लड़का— इकलौता
- जो इन्द्रियों से परे हो/जो इन्द्रियों के द्वारा ज्ञात न हो— इन्द्रियातीत
- दूसरे की उन्नति से जलना— ईर्ष्या
- उत्तर और पूर्व के बीच की दिशा— ईशान/ईशान्य
- पर्वत की निचली समतल भूमि— उपत्यका
- दूसरे के खाने से बची वस्तु— उच्छिष्ट
- किसी भी नियम का पालन नहीं करने वाला— उच्छृंखल
- वह पर्वत जहाँ से सूर्य और चन्द्रमा उदित होते माने जाते हैं— उदयाचल
- जिसके ऊपर किसी का उपकार हो— उपकृत
- ऐसी जमीन जो अच्छी उत्पादक हो— उर्वरा
- जो छाती के बल चलता हो (साँप आदि)— उरग
- जिसने अपना ऋण पूरा चुका दिया हो— उऋण
- जिसका मन जगत से उचट गया हो— उदासीन
- जिसकी दोनों में निष्ठा हो— उभयनिष्ठ
- ऊपर की ओर जाने वाला— उर्ध्वगामी
- नदी के निकलने का स्थान— उद्‌गम
- किसी वस्तु के निर्माण में सहायक साधन— उपकरण
- जो उपासना के योग्य हो— उपास्य
- मरने के बाद सम्पत्ति का मालिक— उत्तराधिकारी/वारिस
- सूर्योदय की लालिमा— उषा

• जिसका ऊपर कथन किया गया हो— उपर्युक्त
• कुँए के पास का वह जल कुंड जिसमें पशु पानी पीते हैं— उबारा
• छोटी–बड़ी वस्तुओं को उठा ले जाने वाला— उठाईगिरा
• जिस भूमि में कुछ भी पैदा न होता हो— ऊसर
• सूर्यास्त के समय दिखने वाली लालिमा— ऊषा
• विचारों का ऐसा प्रवाह जिससे कोई निष्कर्ष न निकले— ऊहापोह
• कई जगह से मिलाकर इकट्ठा किया हुआ— एकीकृत
• सांसारिक वस्तुओं को प्राप्त करने की इच्छा— एषणा
• वह स्थिति जो अंतिक निर्णायक हो, निश्चित— एकांतिक
• जो व्यक्ति की इच्छा पर निर्भर हो— ऐच्छिक
• इंद्रियों को भ्रमित करने वाला— ऐंद्रजालिक
• लकड़ी या पत्थर का बना पात्र जिसमें अन्न कूटा जाता है— ओखली
• साँप–बिच्छू के जहर या भूत–प्रेत के भय को मंत्रों से झाड़ने वाला— ओझा
• जो उपनिषदों से संबंधित हो— औपनिषदिक
• जो मात्र शिष्टाचार, व्यावहारिकता के लिए हो— औपचारिक
• विवाहिता पत्नी से उत्पन्न संतान— औरस
• हड्डियों का ढाँचा— कंकाल
• दो व्यक्तियों के बीच परस्पर होने वाली बातचीत— कथोपकथन
• बर्तन बेचने वाला— कसेरा
• जिसे अपने मत या विश्वास का अधिक आग्रह हो— कट्टर
• जिसकी कल्पना न की जा सके— कल्पनातीत
• ऐसा अन्न जो खाने योग्य न हो— कदन्न
• हाथी का बच्चा— कलभ
• कर्म में तत्पर रहने वाला— कर्मठ
• एक के बाद एक— क्रम
• कान में कही जाने वाली बात— कानाबाती/कानाफूसी
• सरकार का वह अंग जो कानून का पालन करता है— कार्यपालिका
• शृंगारिक वासनाओं के प्रति आकर्षित— कामुक
• जो दु:ख या भय से पीड़ित हो— कातर
• अपनी गलती स्वीकार करने वाला— कायल
• दूसरे की हत्या करने वाला— कातिल
• बाल्यावस्था और युवावस्था के बीच की अवस्था— किशोरावस्था
• जो बात पूर्वकाल से लोगों में सुनकर प्रचलित हो— किंवदन्ती/जनश्रुति
• अपने काम के बारे में कुछ निश्चय न करने वाला— किंकर्तव्यविमूढ़
• वृक्ष लता आदि से ढका स्थान— कुञ्ज
• जिस लड़के का विवाह न हुआ हो— कुमार
• ऐसी लड़की जिसका विवाह न हुआ हो— कुमारी
• बुरे कार्य करने वाला— कुकर्मी
• बुरे मार्ग पर चलने वाला— कुमार्गी
• जिसकी बुद्धि बहुत तेज हो— कुशाग्रबुद्धि
• जो अच्छे कुल में उत्पन्न हुआ हो— कुलीन
• वह व्यक्ति जिसका ज्ञान अपने ही स्थान तक सीमित हो— कूपमंडूक
• किए गए उपकार को मानने वाला— कृतज्ञ
• किए गए उपकार को न मानने वाला— कृतघ्न
• जो धन को अत्यधिक कंजूसी से खर्च करता हो— कृपण
• जिसने संकल्प कर रखा है— कृतसंकल्प
• जो केन्द्र से हटकर दूर जाता हो— केन्द्रापसारी
• जो केन्द्र की ओर उन्मुख हो— केन्द्राभिसारी/केन्द्राभिमुख
• सर्प के शरीर से निकली हुई खोली— केंचुली
• जो क्षमा किया जा सके— क्षम्य
• जिसका कुछ ही समय में नाश हो जाए— क्षणभंगुर
• जहाँ धरती और आकाश मिलते हुए दिखाई देते हैं— क्षितिज
• जो भूख मिटाने के लिए बेचैन हो— क्षुधातुर
• भूख से पीड़ित— क्षुधार्त
• वह स्त्री जिसका पति अन्य स्त्री के साथ रात को रहकर प्रातः लौटे— खंडिता
• आकाशीय पिंडों का विवेचन करने वाला— खगोलशास्त्री
• जो व्यक्ति अपने हाथ में तलवार लिए रहता है— खड्गहस्त
• नायक का प्रतिद्वन्द्वी— खलनायक
• जहाँ से गंगा नदी का उद्गम होता है— गंगोत्री
• शरीर का व्यापार करने वाली स्त्री— गणिका
• जो आकाश को छू रहा हो— गगनस्पर्शी
• पहले से चली आ रही परम्परा का अनुपालन करने वाला— गतानुगतिक
• ग्रहण करने योग्य— ग्राह्य
• गीत गाने वाला/वाली— गायक/गायिका
• गीत रचने वाला— गीतकार
• हर पदार्थ को अपनी ओर आकृष्ट करने वाली शक्ति— गुरुत्वाकर्षण
• जो बात गूढ़ (रहस्यपूर्ण) हो— गूढ़ोक्ति
• जीवन का द्वितीय आश्रम— गृहस्थाश्रम
• गायों के खुरों से उड़ी धूल— गोधूलि
• जब गायें जंगल से लौटती हैं और उनके चलने की धूल आसमान में उड़ती है (दिन और रात्रि के बीच का समय)— गोधूलि बेला
• गायों के रहने का स्थान— गौशाला
• घास खोदकर जीवन–निर्वाह करने वाला— घसियारा
• शरीर की हानि करने वाला— घातक
• जो घृणा का पात्र हो— घृणित/घृणास्पद
• जिसके सिर पर चंद्रकला हो (शिव)— चंद्रचूड़/चंद्रशेखर

- वह कृति जिसमें गद्य और पद्य दोनों हों— चंपू
- चक्र के रूप में घूमती हुई चलने वाली हवा— चक्रवात
- ब्याज का वह प्रकार जिसमें मूल ब्याज पर भी ब्याज लगता है— चक्रवृद्धि ब्याज
- जिसके हाथ में चक्र हो— चक्रपाणि
- चार भुजाओं वाला— चतुर्भुज
- कार्य करने की इच्छा— चिकीर्षा
- लंबे समय तक जीने वाला— चिरंजीवी
- जो चिरकाल से चला आया है— चिरंतन
- जो बहुत समय तक ठहर सके— चिरस्थायी
- चिंता (चिंतन) करने योग्य बात— चिंतनीय/चिंत्य
- जिस पर चिह्न लगाया गया हो— चिह्नित
- चार पैरों वाला— चौपाया/चतुष्पद
- जो गुप्त रूप से निवास कर रहा हो— छद्मवासी
- दूसरों के केवल दोषों को खोजने वाला— छिद्रान्वेषी
- पत्थर को गढ़ने वाला औजार— छैनी
- एक स्थान से दूसरे स्थान पर चलने वाला— जंगम
- पेट की अग्नि— जठराग्नि
- बारात ठहरने का स्थान— जनवासा
- जो जल बरसाता हो— जलद
- जो जल से उत्पन्न हो— जलज
- वह पहाड़ जिसके मुख से आग निकले— ज्वालामुखी
- जल में रहने वाला जीव— जलचर
- जनता द्वारा चलाया जाने वाला तंत्र— जनतंत्र
- उम्र में बड़ा— ज्येष्ठ
- जो चमत्कारी क्रियाओं का प्रदर्शन करता हो— जादूगर
- जिसने आत्मा को जीत लिया हो— जितात्मा
- जानने की इच्छा रखने वाला— जिज्ञासु
- इन्द्रियों को वश में करने वाला— जितेन्द्रिय
- किसी के जीवन–भर के कार्यों का विवरण— जीवन–चरित्र
- जो जीतने के योग्य हो— जेय
- जेठ (पति का बड़ा भाई) का पुत्र— जेठोत
- स्त्रियों द्वारा अपनी इज्जत बचाने के लिए किया गया सामूहिक अग्नि-प्रवेश— जौहर
- ज्ञान देने वाली— ज्ञानदा
- जो ज्ञान प्राप्त करने की इच्छा रखता हो— ज्ञानपिपासु
- बहुत गहरा तथा बहुत बड़ा प्राकृतिक जलाशय— झील
- जहाँ सिक्कों की ढलाई होती है— टकसाल
- बर्तन बनाने वाला— ठठेरा
- जनता को सूचना देने हेतु बजाया जाने वाला वाद्य— ढिँढोरा
- जो किसी भी गुट में न हो— तटस्थ/निर्गुट
- हल्की नींद— तन्द्रा
- जो किसी कार्य या चिन्तन में डूबा हो— तल्लीन
- ऋषियों के तप करने की भूमि— तपोभूमि
- उसी समय का— तत्कालीन
- वह राजकीय धन जो किसानों की सहायता हेतु दिया जाता है— तक़ाबी
- जिसमें बाण रखे जाते हैं— तरकश/तूणीर
- जो चोरी–छिपे माल लाता ले जाता हो— तस्कर
- किसी को पद छोड़ने के लिए लिखा गया पत्र— त्यागपत्र
- तर्क करने वाला व्यक्ति— तार्किक
- दैहिक, दैविक और भौतिक सुख— तापत्रय
- तैर कर पार जाने की इच्छा— तितीर्षा
- ज्ञान में प्रवेश का मार्गदर्शक— तीर्थंकर
- वह व्यक्ति जो छुटकारा दिलाता है/रक्षा करता है— त्राता
- दुखान्त नाटक— त्रासदी
- भूत, वर्तमान और भविष्य को जानने/देखने वाला— त्रिकालज्ञ/त्रिकालदर्शी
- गंगा, जमुना और सरस्वती नदी का संगम— त्रिवेणी
- जिसके तीन आँखे हैं— त्रिनेत्र
- वह स्थान जो दोनों भृकुटिओं के बीच होता है— त्रिकुटी
- तीन महीने में एक बार— त्रैमासिक
- जो धरती पर निवास करता हो— थलचर
- पति और पत्नी का जोड़ा— दंपती
- दस वर्षों की समयावधि— दशक
- गोद लिया हुआ पुत्र— दत्तक
- संकुचित विचार रखने वाला— दक़ियानूस
- धन जो विवाह के समय पुत्री के पिता से प्राप्त हो— दहेज
- जंगल में फैलने वाली आग— दावानल
- दिन भर का कार्यक्रम— दिनचर्या
- दिखने मात्र को अच्छा लगने वाल— दिखावटी
- जो सपना दिन (दिवा) में देखा जाता है— दिवास्वप्न
- दो बार जन्म लेने वाला (ब्राह्मण, पक्षी, दाँत)— द्विज
- जिसने दीक्षा ली हो— दीक्षित
- अनुचित बात के लिए आग्रह— दुराग्रह
- बुरे भाव से की गई संधि— दुरभिसंधि
- वह कार्य जिसको करना कठिन हो— दुष्कर
- दो विभिन्न भाषाएँ जानने वाले व्यक्तियों को एक–दूसरे की बात समझाने वाला— दुभाषिया
- जो शीघ्रता से चलता हो— द्रुतगामी

• जिसे कठिनाई से जाना जा सके— दुर्ज्ञेय
• जिसको पकड़ने में कठिनाई हो— दुरभिग्रह/दुग्राह्य
• पति के स्नेह से वंचित स्त्री— दुर्भगा
• जिसे कठिनता से साधा/सिद्ध किया जा सके— दुस्साध्य
• जो कठिनाई से समझ में आता है— दुर्बोध
• वह मार्ग जो चलने में कठिनाई पैदा करता है— दुर्गम
• जिसमें खराब आदतें हों— दुर्व्यसनी
• जिसको मापना कठिन हो— दुष्परिमेय
• जिसको जीतना बहुत कठिन हो— दुर्जेय
• वह बच्चा जो अभी माँ के दूध पर निर्भर है— दुधमुँहा
• बुरे भाग्य वाला— दुर्भाग्यशाली
• जिसमें दया भावना हो— दयालु
• जिसका आचरण बुरा हो— दुराचारी
• दूध पर आधारित रहने वाला— दुग्धाहारी
• जिसकी प्राप्ति कठिन हो— दुर्लभ
• जिसका दमन करना कठिन हो— दुर्दमनीय
• आगे की बात सोचने वाला व्यक्ति— दूरदर्शी
• देश से द्रोह करने वाला— देशद्रोही
• देह से सम्बन्धित— दैहिक
• देव के द्वारा किया हुआ— दैविक
• प्रतिदिन होने वाला— दैनिक
• धन से सम्पन्न— धनी
• जो धनुष को धारण करता हो— धनुर्धर
• धन की इच्छा रखने वाला— धनेच्छु
• गरीबों के लिए दान के रूप में दिया जाने वाला अन्न–धन आदि— धर्मादा
• जिसकी धर्म में निष्ठा हो— धर्मनिष्ठा
• किसी के पास रखी हुई दूसरे की वस्तु— धरोहर/थाती
• मछली पकड़कर आजीविका चलाने वाला— धीवर
• जो धीरज रखता हो— धीर
• धुरी को धारण करने वाला अर्थात् आधारभूत कार्यों में प्रवीण— धुरंधर
• अपने स्थान पर अटल रहने वाला— ध्रुव
• ध्यान करने योग्य अथवा लक्ष्य— ध्येय
• ध्यान करने वाला— ध्याता/ध्यानी
• जिसका जन्म अभी–अभी हुआ हो— नवजात
• गाय को दुहते समय बछड़े का गला बाँधने की रस्सी जो गाय के पैरों में बाँधी जाती है— नवि
• जो नया–नया आया है— नवागंतुक
• जिसका उदय हाल ही में हुआ है— नवोदित
• जो आकाश में विचरण करता है— नभचर
• सम्मान में दी जाने वाली भेंट— नजराना
• जिस स्त्री का विवाह अभी हुआ हो— नवोढ़ा
• ईश्वर में विश्वास न रखने वाला— नास्तिक
• पुराना घाव जो रिसता रहता हो— नासूर
• जो नष्ट होने वाला हो— नाशवान/नश्वर
• नरक के योग्य— नारकीय
• वह स्थान या दुकान जहाँ हजामत बनाई जाती है— नापितशाला
• किसी से भी न डरने वाला— निडर/निर्भीक
• जो कपट से रहित है— निष्कपट
• जो पढ़ना–लिखना न जानता हो— निरक्षर
• जिसका कोई अर्थ न हो— निरर्थक
• जिसे कोई इच्छा न हो— निस्पृह
• रात में विचरण करने वाला— निशाचर
• जिसका आकार न हो— निराकार
• केवल शाक, फल एवं फूल खाने वाला या जो मांस न खाता हो— निरामिष
• जिससे किसी प्रकार की हानि न हो— निरापद
• जिसके अवयव न हो— निरवयव
• बिना भोजन (आहार) के— निराहार
• जो यह मानता है कि संसार में कुछ भी अच्छा होने की आशा नहीं है— निराशावादी
• जो उत्तर न दे सके— निरुत्तर
• जिसके कोई दाग/कलंक न हो— निष्कलंक
• जिसमें कोई कंटक/अड़चन न हो— निष्कंटक
• जिसका अपना कोई शुल्क न हो— निःशुल्क
• जिसके संतान न हो— निःसंतान
• जिसका अपना कोई स्वार्थ न हो— निस्स्वार्थ
• व्यापारिक वस्तुओं को किसी दूसरे देश में भेजने का कार्य— निर्यात
• जिसको देश से निकाल दिया गया हो— निर्वासित
• बिना किसी बाधा के— निर्बाध
• जो ममत्व से रहित हो— निर्मम
• जिसकी किसी से उपमा/तुलना न दी जा सके— निरुपम
• जो निर्णय करने वाला हो— निर्णायक
• जिसे किसी चीज की लालसा न हो— निष्काम
• जिसमें किसी बात का विवाद न हो— निर्विवाद
• जो निन्दा करने योग्य हो— निन्दनीय
• जिसमें किसी प्रकार का विकार उत्पन्न न हो— निर्विकार
• जो लज्जा से रहित हो— निर्लज्ज
• जिसको भय न हो— निर्भय

• जो नीति जानता हो— नीतिज्ञ
• रंगमंच पर पर्दे के पीछे का स्थान— नेपथ्य
• आजीवन ब्रह्मचर्य का व्रत करने वाला— नैष्ठिक
• जो नीति के अनुकूल हो— नैतिक
• जो न्यायशास्त्र की बात जानता हो— नैयायिक
• घृत, दुग्ध, दधि, शहद व शक्कर से बनने वाला पदार्थ— पंचामृत
• पक्षपात करने वाला— पक्षपाती
• पदार्थ का सबसे छोटा कण— परमाणु
• जितने की आवश्यकता हो उतना— पर्याप्त
• महीने के दो पक्षों में से एक— पखवाड़ा
• नाटक का पर्दा गिरना— पटाक्षेप/यवनिकापतन
• अपनी गलती के लिए किया हुआ दुःख— पश्चाताप
• केवल अपने पति में अनुराग रखने वाली स्त्री— पतिव्रता
• पति को चुनने की इच्छा वाली कन्या— पतिम्वरा
• उपाय/मार्ग बताने वाला— पथ-प्रदर्शक/मार्गदर्शक
• अपने मार्ग से च्युत/भटका हुआ— पथभ्रष्ट
• अपने पद से हटाया हुआ— पदच्युत
• जो भोजन रोगी के लिए उचित है— पथ्य
• घूमने–फिरने/देश–देशान्तर भ्रमण करने वाला यात्री— पर्यटक
• केवल दूध पर निर्भर रहने वाला— पयोहारी
• दूसरों पर निर्भर रहने वाला— पराश्रित/पराश्रयी
• परपुरुष से प्रेम करने वाली स्त्री— परकीया
• पति द्वारा छोड़ दी गई पत्नी— परित्यक्ता
• दूसरे का मुँह ताकने वाला— परमुखापेक्षी
• जो पहनने लायक हो— परिधेय
• जो मापा जा सके— परिमेय
• जो सदा बदलता रहे— परिवर्तनशील
• जो आँखों के सामने न हो— परोक्ष/अप्रत्यक्ष
• दूसरे पर उपकार करने वाला— परोपकारी/परमार्थी
• जो पूरी तरह से पक चुका हो/पारंगत हो चुका हो— परिपक्व
• पर्दे के अंदर रहने वाली— पर्दानशीन
• प्रशंसा करने योग्य— प्रशंसनीय
• किसी प्रश्न का तत्काल उत्तर दे सकने वाली मति— प्रत्युत्पन्नमति
• किसी वाद का विरोध करने वाला— प्रतिवादी
• शरणागत की रक्षा करने वाला— प्रणतपाल
• वह ध्वनि जो कहीं से टकराकर आए— प्रतिध्वनि
• जो किसी मत को सर्वप्रथम चलाता है— प्रवर्तक
• वह स्त्री जिसके हाल ही में शिशु उत्पन्न हुआ हो— प्रसूता
• वह आकृति जो किसी शीशे, जल आदि में दिखाई दे— प्रतिबिम्ब
• हास्य रस से परिपूर्ण नाटिका— प्रहसन
• प्रमाण द्वारा सिद्ध करने योग्य— प्रमेय
• संध्या के बाद व रात्रि होने के पूर्व का समय— प्रदोष/पूर्वरात्र
• ज्ञान नेत्र से देखने वाला अंधा व्यक्ति— प्रज्ञाचक्षु
• सभा में विचारार्थ प्रस्तुत बात— प्रस्ताव
• हाथ से लिखी गई पुस्तक— पाण्डुलिपि
• किसी परिश्रम के बदले मिलने वाली राशि— पारिश्रमिक
• जिसका स्वभाव पशुओं के समान हो— पाशविक
• महीने के प्रत्येक पक्ष से संबंधित— पाक्षिक
• किसी विषय का पूर्ण ज्ञाता— पारंगत
• जिसमें से आर–पार देखा जा सकता हो— पारदर्शी
• जो परलोक से संबंधित हो— पारलौकिक
• मार्ग में खाने के लिए भोजन— पाथेय
• जिसका संबंध पृथ्वी से हो— पार्थिव
• ज्ञात इतिहास के पूर्व समय का— प्रागैतिहासिक
• स्थल का वह भाग जिसके तीन ओर पानी हो— प्रायद्वीप
• जिसको देखकर अच्छा लगे— प्रियदर्शी
• पीने की इच्छा रखने वाला— पिपासु
• बार–बार कही गई बात— पुनरुक्ति
• जिसका पुनः जन्म हुआ हो— पुनर्जन्म
• पहले किया गया कथन— पूर्वोक्त
• दोपहर से पहले का समय— पूर्वाह्न
• प्राचीन इतिहास का ज्ञाता— पुरातत्त्ववेत्ता
• पीने योग्य पदार्थ— पेय
• पिता एवं प्रपिताओं से संबंधित— पैतृक
• जो सम्पत्ति पिता से प्राप्त हो— पैतृक सम्पत्ति
• फटे–पुराने कपड़े पहनने वाला— फटीचर
• केवल फलों पर निर्वाह करने वाला— फलाहारी
• फल की इच्छा रखने वाला— फलेच्छु
• बुरी किस्मत वाला— बदकिस्मत
• बुरे मिजाज (आचरण) वाला— बदमिजाज
• सूर्योदय से पहले दो घड़ी तक का समय— ब्रह्ममुहूर्त
• जीवन का प्रथम आश्रम— ब्रह्मचर्याश्रम
• बहुत विषयों का जानकार— बहुज्ञ
• जिसने सुनकर अनेक विषयों का ज्ञान प्राप्त किया हो— बहुश्रुत
• समुद्र में लगने वाली आग— बड़वानल

- जो अनेक रूप धारण करता हो— बहुरूपिया
- बहुत से देवताओं के अस्तित्व में विश्वास करने वाला मत— बहुदेववाद
- काफी अधिक कीमत का— बहुमूल्य
- अनेक भाषाओं को जानने वाला— बहुभाषाविद्
- रात का भोजन— ब्यालू/रात्रिभोज
- जिस स्त्री के कोई संतान नहीं हुई हो— बाँझ
- खाने का इच्छुक— बुबुक्षु
-
- किसी भवनादि के खंडित होने के बाद बचे भाग— भग्नावशेष
- भय के कारण बेचैन— भयाकुल
- भाग्य पर भरोसा रखने वाला— भाग्यवादी
- जो भाग्य का धनी हो— भाग्यवान
- दीवारों पर बने हुए चित्र— भित्तिचित्र
- जो पृथ्वी के भीतर का ज्ञान रखता हो— भूगर्भवेता
- धरती पर चलने वाला जन्तु— भूचर
- जो पहले था या हुआ— भूतपूर्व
- धरती को धारण करने वाला पर्वत— भूधर
- औषधियों का जानकार— भेषज
- प्रातःकाल गाया जाने वाला राग— भैरवी
- सूर्योदय के पहले का समय— भोर
- भूगोल से संबंधित— भौगोलिक
- फूलों का रस— मकरंद
- दोपहर का समय— मध्याह्न
- सर्दी में होने वाली वर्षा— महावट/मावठ
- हाथी को हाँकने वाला— महावत
- सुख एवं दुःख में एक समान रहने वाला— मनस्वी
- जिसकी आँखें मगर जैसी हो— मकराक्ष
- किसी मत का अनुसरण करने वाला— मतानुयायी
- दो पक्षों के बीच में पड़कर फैसला कराने वाला— मखत्राता/यज्ञरक्षक
- जो बहुत ऊँची अकांक्षा/इच्छा रखता हो— महत्वाकांक्षी
- जिसकी बुद्धि कमजोर है— मन्दबुद्धि/मतिमान्द्य
- जिसकी आत्मा महान हो— महात्मा
- किसी चीज के मर्म का ज्ञाता— मर्मज्ञ
- मध्यरात्रि का समय— मध्यरात्र
- मन का असीम दुःख— मनस्ताप
- जहाँ केवल रेत ही रेत हो— मरुस्थल
- माँस आदि खाने वाला— माँसाहारी
- माह में होने वाला— मासिक
- माता की हत्या करने वाला— मातृहंता
- कम खाने वाला— मिताहारी
- कम खर्च करने वाला— मितव्ययी
- जो असत्य बोलता हो— मिथ्यावादी
- जिस स्त्री की आँखें मछली के समान हों— मीनाक्षी
- थोड़ा खिला हुआ फूल— मुकुल
- शुभ कार्य हेतु निकाला गया समय— मुहूर्त
- दिल खोलकर कहना— मुक्तकंठ
- मुद्रा का अधिक चलन/प्रसार— मुद्रास्फीति
- मरणासन्न अवस्थावाला/शक्ति के अनुसार— मुमूषु
- मरने की इच्छा— मुमूर्षा
- मोक्ष की इच्छा रखने वाला— मुमुक्षु
- चुपचाप देखने वाला— मूकदर्शक
- हरिण के नेत्रों जैसी आँखों वाली— मृगनयनी
- जो मीठी वाणी बोलता हो— मृदुभाषी
- जिसने मृत्यु को जीत लिया हो— मृत्युंजय
- कमल की डंडी— मृणाल
- जो रचना किसी व्यक्ति की अपनी स्वयं की हो एवं नई हो— मौलिक
- जुड़वाँ भाई या बहन— यमल/यमला
- रंगमंच का परदा— यवनिका
- शक्ति के अनुसार करना— यथाशक्ति
- जैसा चाहिए, उचित हो वैसा— यथोचित
- जो यंत्र से संबंधित हो— यांत्रिक
- जब तक जीवन रहे— यावज्जीवन/जीवनपर्यंत
- घूम–घूमकर जीवन बिताने वाला— यायावर
- समाज को नई दिशा देकर नए युग की शुरुआत करने वाला— युगप्रवर्तक
- अपने युग का ज्ञान रखने वाला— युगद्रष्टा
- यज्ञ–स्थान पर स्थापित किया जाने वाला खंभा— यूप
- रात को कुछ भी दिखाई नहीं देने वाला रोग— रतौंधी
- किसानों से भूमि कर लेने वाला सरकारी विभाग— राजस्व विभाग
- राज्य द्वारा आधिकारिक रूप से प्रकाशित होने वाला पत्र— राजपत्र(गजट)
- जिसके नीचे रेखाएँ लगाई गई हों— रेखांकित
- प्रेम, आनन्द, भय आदि से रोंगटे खड़े होने की दशा— रोमांच
- प्रसन्नता से जिसके रोंगटे खड़े हो गए हों— रोमांचित
- जो लकड़ी काटकर जीवन बिताता हो— लकड़हारा
- जिसका वंश लुप्त हो गया हो— लुप्तवंश
- लोभी स्वभाव वाला— लुब्ध/लोभी

- जिसे देखकर रोंगटे खड़े हो जाएँ— लोमहर्षक
- वंश परम्परा के अनुसार— वंशानुगत
- जिसके हाथ में वज्र हो— वज्रपाणि
- बहुत ही कठोर और बड़ा आघात— वज्राघात
- बचपन और यौवन के मध्य की उम्र— वयसंधि
- जिसका वर्णन न किया जा सके— वर्णनातीत
- अधिक बोलने वाला— वाचाल
- सन्तान के प्रति प्रेम— वात्सल्य
- मुकदमा दायर करने वाला— वादी
- भाषण देने में चतुर— वाग्मी
- जिसका वाणी पर पूर्ण अधिकार हो— वाचस्पति
- सामाजिक मानमर्यादा के विपरीत कार्य करने वाला— वामाचारी
- गृह–निर्माण संबंधी विज्ञान— वास्तुविज्ञान
- बाहर के तापमान का असर रोकने हेतु की जाने वाली व्यवस्था— वातानुकूलन
- वह कन्या जिसके विवाह करने का वचन दे दिया गया हो— वाग्दता
- जिसमें विष मिला हुआ हो— विषाक्त
- जिस पर विश्वास किया जा सके— विश्वस्त
- जिस विषय में निश्चित मत न हो— विवादास्पद
- जिसकी पत्नी मर चुकी हो— विधुर
- स्त्री जिसका पति मर गया हो— विधवा
- सौतेली माँ— विमाता
- जो दूसरी जाति का हो— विजातीय
- जिस पर अभी विचार चल रहा हो— विचाराधीन
- वह स्त्री जो पढ़ी–लिखी व ज्ञानी हो— विदुषी
- अपना हित–अहित सोचने में समर्थ— विवेकी
- अपनी जगह से अलग किया हुआ— विस्थापित
- जिसके अंदर कोई विकार आ गया हो— विकृत
- जो अपने धर्म के विरुद्ध कार्य करने वाला हो— विधर्मी
- जो विधि/कानून के अनुसार सही हो— विधिवत्/वैध
- किसी विषय का विशेष ज्ञान रखने वाला— विशेषज्ञ
- विनाश करने वाला— विध्वंसक
- जिसके शरीर के भाग में कमी हो— विकलांग
- जिसे व्याकरण का पूरा ज्ञान हो— वैयाकरण
- सौ वर्षों का समूह— शताब्दी
- जो शरण में आ गया हो— शरणागत
- शरण की इच्छा रखने वाला— शरणार्थी
- हाथ में पकड़कर चलाया जाने वाला हथियार जैसे तलवार— शस्त्र
- सौ वस्तुओं का संग्रह— शतक
- जो सौ बातें एक साथ याद रख सकता है— शतावधानी
- जिसके स्मरण मात्र से ही शत्रु का नाश हो/शत्रु का नाश करने वाला— शत्रुघ्न
- जिसका कोई आदि और अंत न हो— शाश्वत
- शाक, फल और फूल खाने वाला— शाकाहारी/निरामिष
- जिस शब्द के दो अर्थ हों— शिलष्ट
- शिव का आलय (स्थान)— शिवालय
- शुभ चाहने वाला— शुभेच्छु/शुभाकांक्षी
- अनुसंधान के लिए दिया जाने वाला अनुदान— शोधवृत्ति
- जो सुनने योग्य हो— श्रव्य/श्रवणीय
- जिसमें श्रद्धा भावना हो— श्रद्धालु
- पति/पत्नी का पिता— श्वसुर
- पति/पत्नी की माता— श्वश्रू (सास)
- पति/पत्नी का भाई— श्वशुर्य (साला)
- जिसके छह कोण हों— षट्कोण
- जिसके छह पद हों (भौंरा)— षट्पद
- छह–छह माह में होने वाला— षण्मासिक
- सोलह वर्ष की अवस्था वाली स्त्री— षोडशी
- दो नदियों के मिलने का स्थान— संगम
- इन्द्रियों को वश में रखने वाला— संयमी
- जो समाचार भेजता है— संवाददाता
- एक ही माँ से उत्पन्न भाई/बहन— सहोदर/सहोदरा
- सात सौ दोहों का समूह— सतसई
- जो गुण–दोषों का विवेचन करता हो— समालोचक
- सब कुछ जानने वाला— सर्वज्ञ
- जो समान आयु का हो— समवयस्क
- जो सभी को समान दृष्टि से देखता हो— समदर्शी
- साहित्यिक गुण–दोषों की विवेचना करने वाला— समीक्षक
- वह स्त्री जिसका पति जीवित हो— सधवा
- जो सदा से चला आ रहा हो— सनातन
- अन्य लोगों के साथ गाया जाने वाला गीत— सहगान
- उसी समय में होने वाला/रहने वाला— समकालीन
- साथ पढ़ने वाला— सहपाठी
- जो दूसरों की बात सहन कर सकता हो— सहिष्णु
- छूत या संसर्ग से फैलने वाला रोग— संक्रामक
- जो एक ही जाति के हों— सजातीय
- गीतों की धुन बनाने वाला— संगीतकार
- रस पूर्ण— सरस

• साथ काम करने वाला— सहकर्मी
• सबको प्रिय लगने वाला— सर्वप्रिय
• सद् आचरण रखने वाला— सदाचारी
• ज्ञान देने वाली देवी— सरस्वती
• जो अपनी पत्नी के साथ हो— सपत्नीक
• सत्य के लिए आग्रह— सत्याग्रह
• शर्तों के साथ काम करने का समझौता— संविदा
• जो सत्य बोलता हो— सत्यवादी/सत्यभाषी
• संहार करने वाला/मारने वाला— संहारक
• जिसका चरित्र अच्छा हो— सच्चरित्र
• न बहुत ठण्डा न बहुत गर्म— समशीतोष्ण
• जो सब कुछ खाता हो— सर्वभक्षी
• सब कुछ पाने वाला— सर्वलब्ध
• जो समस्त देशों/स्थानों से संबंधित हो— सार्वभौमिक
• रथ हाँकने वाला— सारथि
• जो पढ़ना–लिखना जानता है— साक्षर
• सप्ताह में एक बार होने वाला— साप्ताहिक
• सभी लोगों के लिए— सार्वजनिक
• आकार से युक्त (मूर्तिमान)— साकार
• जो सब जगह विद्यमान हो— सर्वव्यापी
• जिसकी ग्रीवा सुंदर हो— सुग्रीव
• जो सोया हुआ हो— सुषुप्त
• सधवा रहने की दशा या अवस्था— सुहाग
• पसीने से उत्पन्न जीव (जैसे जूँ आदि)— स्वेदज
• किसी संस्था या व्यक्ति के पचास वर्ष पूरे करने के उपलक्ष्य में होने वाला उत्सव— स्वर्ण जयंती
• स्त्री के स्वभाव जैसा— स्त्रैण
• गतिहीन रहने वाला— स्थावर
• जिसको सिद्ध करने के लिए अन्य प्रमाणों की जरूरत न हो— स्वयंसिद्ध/स्वतः प्रमाण
• अपनी ही इच्छानुसार पति का वरण करने वाली— स्वयंवरा
• जो स्वयं भोजन बनाकर खाता हो— स्वयंपाकी
• जो अपने ही अधीन हो— स्वाधीन
• जो अपना ही हित सोचता हो— स्वार्थी
• सौ वस्तुओं का संग्रह— सैंकड़ा/शतक
• हमला करने वाला— हमलावर
• सेना का वह भाग जो सबसे आगे हो— हरावल
• हवन से संबंधित सामग्री— हवि
• ऐसा बयान जो शपथ सहित दिया गया हो— हलफनामा
• दूसरे के काम में दखल देना— हस्तक्षेप
• ऐसा दुःख जो हृदय को चीर डाले— हृदय विदारक
• हृदय से संबंधित— हार्दिक
• जिस पर हँसी आती हो/जो हँसी का पात्र हो— हास्यास्पद
• किसी संस्था या व्यक्ति के साठ वर्ष पूरे होने के उपलक्ष्य में होने वाला उत्सव— हीरक जयंती
• जो बात हृदय में अच्छी तरह बैठ गई हो— हृदयंगम
• दूसरों का हित चाहने वाला— हितैषी
• न टलने वाली घटना/अवश्यंभावी घटना/भाग्याधीन— होनहार
• यज्ञ में आहुति देने वाला— होमाग्नि

विभिन्न प्रकार की इच्छाएँ:

• किसी वस्तु को प्राप्त करने की तीव्र इच्छा— अभीप्सा
• सांसारिक वस्तुओं को प्राप्त करने की इच्छा— एषणा
• कार्य करने की इच्छा— चिकीर्षा
• जानने की इच्छा— जिज्ञासा
• जीतने, दमन करने की इच्छा— जिगीषा
• किसी को जीत लेने की इच्छा रखने वाला— जिगीषु
• किसी को मारने की इच्छा— जिघांसा
• भोजन करने की इच्छा— जिघत्सा
• ग्रहण करने, पकड़ने की इच्छा— जिघृक्षा
• जिँदा रहने की इच्छा— जिजीविषा
• ज्ञान प्राप्त करने की इच्छा— ज्ञानपिपासा
• तैर कर पार जाने की इच्छा— तितीर्षा
• धन की इच्छा रखने वाला— धनेच्छु
• पीने की इच्छा रखने वाला— पिपासु
• फल की इच्छा रखने वाला— फलेच्छु
• खाने की इच्छा— बुभुक्षा
• खाने का इच्छुक— बुभुक्षु
• जो अत्यधिक भूखा हो— बुभुक्षित
• मोक्ष की इच्छा रखने वाला— मुमुक्षु
• मरने की इच्छा— मुमुर्षा
• मरणासन्न अवस्था वाला/मरने को इच्छुक— मुमूर्षु
• युद्ध की इच्छा रखने वाला— युयुत्सु
• युद्ध करने की इच्छा— युयुत्सा
• शुभ चाहने वाला— शुभेच्छु
• हित चाहने वाला— हितैषी

♦♦♦

सामान्य हिन्दी

11. मुहावरे एवं लोकोक्तियाँ

1. मुहावरे

सामान्य अर्थ का बोध न कराकर विशेष अथवा विलक्षण अर्थ का बोध कराने वाले पदबन्ध को मुहावरा कहते हैं। इन्हें वाग्धारा भी कहते हैं।

मुहावरा एक ऐसा वाक्यांश है, जो रचना में अपना विशेष अर्थ प्रकट करता है। रचना में भावगत सौन्दर्य की दृष्टि से मुहावरों का विशेष महत्त्व है। इनके प्रयोग से भाषा सरस, रोचक एवं प्रभावपूर्ण बन जाती है। इनके मूल रूप में कभी परिवर्तन नहीं होता अर्थात् इनमें से किसी भी शब्द का पर्यायवाची शब्द प्रयुक्त नहीं किया जा सकता। हाँ, क्रिया पद में काल, पुरुष, वचन आदि के अनुसार परिवर्तन अवश्य होता है। मुहावरा अपूर्ण वाक्य होता है। वाक्य प्रयोग करते समय यह वाक्य का अभिन्न अंग बन जाता है। मुहावरे के प्रयोग से वाक्य में व्यंग्यार्थ उत्पन्न होता है। अतः मुहावरे का शाब्दिक अर्थ न लेकर उसका भावार्थ ग्रहण करना चाहिए।

प्रमुख मुहावरे व उनका अर्थ:

• अंग–अंग खिल उठना
– प्रसन्न हो जाना।
• अंग छूना
– कसम खाना।
• अंग–अंग टूटना
– सारे बदन में दर्द होना।
• अंग–अंग ढीला होना
– बहुत थक जाना।
• अंग–अंग मुसकाना
– बहुत प्रसन्न होना।
• अंग–अंग फूले न समाना
– बहुत आनंदित होना।
• अंगड़ाना
– अंगड़ाई लेना, जबरन पहन लेना।
• अंकुश रखना
– नियंत्रण रखना।
•अंग लगाना
– लिपटाना।
• अंगारा होना
– क्रोध में लाल हो जाना।
• अंगारा उगलना
– जली–कटी सुनाना।
•अंगारों पर पैर रखना
– जोखिम मोल लेना।
• अँगूठे पर मारना
– परवाह न करना।
• अँगूठा दिखाना
– निराश करना या तिरस्कारपूर्वक मना करना।
• अंगूर खट्टे होना
– प्राप्त न होने पर उस वस्तु को रद्दी बताना।
• अंजर–पंजर ढीला होना
– अंग–अंग ढीला होना।
• अंडा फूट जाना
– भेद खुल जाना।
• अंधा बनाना
– ठगना।
• अँधे की लकड़ी/लाठी
– एकमात्र सहारा।
• अंधे को चिराग दिखाना
– मूर्ख को उपदेश देना।
• अंधाधुंध
– बिना सोचे–विचारे।
• अंधानुकरण करना
– बिना विचारे अनुकरण करना।
• अंधेर खाता
– अव्यवस्था।
• अंधेर नगरी
– वह स्थान जहाँ कोई नियम व्यवस्था न हो।
• अंधे के हाथ बटेर लगना
– बिना प्रयास भारी चीज पा लेना।
• अंधों में काना राजा
– अयोग्य व्यक्तियों के बीच कम योग्य भी बहुत योग्य होता है।
• अँधेरे घर का उजाला
– अति सुन्दर/इकलौती सन्तान।

• अँधेरे में रखना
– भेद छिपाना।
• अँधेरे मुँह
– पौ फटते।
• अंधेरे–उजाले
– समय–कुसमय।
• अकड़ना
– घमण्ड करना।
• अक्ल का दुश्मन
– मूर्ख।
• अक्ल चकराना
– कुछ समझ में न आना।
• अक्ल का अंधा होना
– बेअक्ल होना।
• अक्ल आना
– समझ आना।
• अक्ल का कसूर
– बुद्धि दोष।
• अक्ल काम न करना
– कुछ समझ न आना।
• अक्ल के घोड़े दौड़ाना
– तरह–तरह की कल्पना करना।
• अक्ल के तोते उड़ना
– होश ठिकाने न रहना।
• अक्ल के बखिए उधेड़ना
– बुद्धि नष्ट कर देना।
• अक्ल जाती रहना
– घबरा जाना।
• अक्ल ठिकाने होना
– होश में आना।
• अक्ल ठिकाने ला देना
– समझा देना।
• अक्ल से दूर/बाहर होना
– समझ में न आना।
• अक्ल का पूरा
– मूर्ख।
• अक्ल पर पत्थर पड़ना
– बुद्धि से काम न लेना।
• अक्ल चरने जाना
– बुद्धि का न होना।
• अक्ल का पुतला
– बुद्धिमान।
• अक्ल के पीछे लठ लिए फिरना
– मूर्खता का काम करना।
• अपनी खिचड़ी खुद पकाना
– मिलजुल कर न रहना।
• अपना उल्लू सीधा करना
– स्वार्थ सिद्ध करना।
• अपना सा मुँह लेकर रहना
– लज्जित होना।
• अरमान निकालना
– मन का गुबार पूरा करना।
• अपने मुँह मियाँ मिट्ठू बनना
– अपनी बड़ाई आप करना।
• अपने पाँव पर कुल्हाड़ी मारना
– जानबूझकर अपना नुकसान करना।
• अपना राग अलापना
– अपनी ही बातों पर बल देना।
• अगर–मगर करना
– बहाना करना।
• अटकलें भिड़ाना
– उपाय सोचना।
• अपने पैरों पर खड़ा होना
– स्वावलंबी होना।
• अक्षर से भेंट न होना
– अनपढ़ होना।
• अटखेलियाँ करना
– किलोल करना।
• अड़ंगा करना
– होते कार्य में बाधा डालना।
• अड़ पकड़ना
– जिद करना/पनाह में आना।
• अता होना
– मिलना।
• अथाह में पड़ना

– मुश्किल में पड़ना।
• अदब करना
– सम्मान करना।
• अधर में झूलना
– दुविधा में रहना।
• अधूरा जाना
– असमय गर्भपात होना।
• अनसूनी करना
– जानबूझकर उपेक्षा करना।
• अनी की चोट
– सामने की चोट।
• अपनी–अपनी पड़ना
– सबको अपनी चिँता होना।
• अपनी नींद सोना
– इच्छानुसार कार्य करना।
• अपना हाथ जगन्नाथ
– स्वाधिकार होना।
• अरण्य रोदन
– निष्फल निवेदन।
• अवसर चूकना
– सुयोग का लाभ न उठाना।
• अवसर ताकना
– मौका ढूँढना।
• आँख का तारा
– बहुत प्यारा होना/अति प्रिय।
• आँख उठाना
– क्रोध से देखना।
• आँख बन्द कर काम करना
– ध्यान न देना।
• आँख चुराना
– छिपना।
• आँख मारना
– इशारा करना।
• आँख तरसना
– देखने के लालायित होना।
• आँख फेर लेना
– प्रतिकूल होना।
• आँख बिछाना
– प्रतीक्षा करना।
• आँखें सेंकना
– सुंदर वस्तु को देखते रहना।
• आँख उठाना
– देखने का साहस करना।
• आँख खुलना
– होश आना।
• आँख लगना
– नींद आना अथवा प्यार होना।
• आँखअों पर परदा पड़ना
– लोभ के कारण सच्चाई न दीखना।
• आँखअों में समाना
– दिल में बस जाना।
• आँखे चुराना
– अनदेखा करना।
• आँखें चार होना
– आमने–सामने होना/प्रेम होना।
• आँखें दिखाना
– गुस्से से देखना।
• आँखें फेरना
– बदल जाना, प्रतिकूल होना।
• आँखें पथरा जाना
– देखते–देखते थक जाना।
• आँखे बिछाना
– प्रेम से स्वागत करना।
• आँखों का काँटा होना
– बुरा लगना/अप्रिय व्यक्ति।
• आँखों पर बिठाना
– आदर करना।
• आँखों में धूल झोंकना
– धोखा देना।
• आँखों का पानी ढलना
– निर्लज्ज बन जाना।
• आँखों से गिरना
– आदर समाप्त होना।
• आँखों पर परदा पड़ना
– बुद्धि भ्रष्ट होना।

• आँखों में रात कटना
– रात–भर जागते रहना।
• आँच न आने देना
– थोड़ी भी हानि न होने देना।
• आँसू पीकर रह जाना
– भीतर ही भीतर दुःखी होना।
• आकाश के तारे तोड़ना
– असम्भव कार्य करना।
• आकाश–पाताल एक करना
– कठिन प्रयत्न करना।
• आग में घी डालना
– क्रोध और अधिक बढ़ाना।
• आग से खेलना
– जानबूझकर मुसीबत में फँसना।
• आग पर पानी डालना
– उत्तेजित व्यक्ति को शान्त करना।
• आटे–दाल का भाव मालूम होना
– कठिनाई में पड़ जाना।
• आसमान से बातें करना
– ऊँची कल्पना करना।
• आड़े हाथ लेना
– खरी–खरी सुनाना।
• आसमान सिर पर उठाना
– बहुत शोर करना।
• आँचल पसारना
– भीख माँगना।
• आँधी के आम होना
– बहुत सस्ती वस्तु मिलना।
• आँसू पोंछना
– धीरज देना।
• आग–पानी का बैर
– स्वाभाविक शत्रुता।
• आसमान पर चढ़ना
– बहुत अधिक अभिमान करना।
• आग–बबूला होना
– बहुत क्रोध करना।
• आपे से बाहर होना
– अत्यधिक क्रोध से काबू में न रहना।
• आकाश का फूल
– अप्राप्य वस्तु।
• आसमान पर उड़ना
– अभिमानी होना।
• आस्तीन का साँप
– विश्वासघाती मित्र।
• आकाश चूमना
– बहुत ऊँचा होना।
• आग लगने पर कुआँ खोदना
– पहले से कोई उपाय न कर रखना।
• आग लगाकर तमाशा देखना
– झगड़ा पैदा करके खुश होना।
• आटे के साथ घुन पिसना
– दोषी के साथ निर्दोषी की भी हानि होना।
• आधा तीतर आधा बटेर
– बेमेल काम।
• आसमान के तारे तोड़ना
– असंभव कार्य करना।
• आसमान फट पड़ना
– अचानक आफत आ पड़ना।
• आँचल देना
– दूध पिलाना।
• आँचल में गाँठ बाँधना
– अच्छी तरह याद कर लेना।
• आँचल फैलाना
– अति विनम्रता पूर्वक प्रार्थना करना।
• आँधी उठना
– हलचल मचना।
• आँसू गिराना
– रोना।
• आँसूओं से मुँह धोना
– बहुत रोना।
• आकाश कुसुम
– अनहोनी बात।
• आकाश खुलना
– बादल हटना।
• आकाश–पाताल का अन्तर होना

– बहुत बड़ा अन्तर।
• आग का पुतला
– बहुत क्रोधी।
• आग के मोल
– बहुत महँगा।
• आग लगाना
– झगड़ा कराना।
• आग में कूदना
– स्वयं को खतरे में डालना।
• आग पर लोटना
– बेचैन होना/ईर्ष्या करना।
• आग बुझा लेना
– कसर निकालना।
• आग भी न लगाना
– तुच्छ समझना।
• आग में झोंकना
– अनिष्ट में डाल देना।
• आग से पानी होना
– क्रोधावस्था से एकदम शान्त हो जाना।
• आगे–पीछे की सोचना
– भावी परिणाम पर दृष्टि रखना।
• आगे करना
– हाजिर करना/अगुआ करना/आड़ लेना।
• आगे–पिछे फिरना
– खुशामद करना।
• आगे होकर फिरना
– आगे बढ़कर स्वागत करना।
• आज–कल करना
– टालमटोल करना।
• ईंट का जवाब पत्थर से देना
– किसी के आरोप का करारा जवाब देना/कड़ाई से पेश आना।
• ईंट से ईंट बजाना
– नष्ट–भ्रष्ट कर देना/विनाश करना।
• इधर–उधर की लगाना
– चुगली करना।
• इधर–उधर की हाँकना
– व्यर्थ की गप्पे मारना।
• ईद का चाँद होना
– बहुत दिनों बाद दिखाई देना।
• उँगली उठाना
– लाँछन लगाना/दोष निकालना।
• उँगली पर नचाना
– वश में करना/अपनी इच्छानुसार चलाना।
• उँगली पकड़कर पहुँचा पकड़ना
– तनिक–सा सहारा पाकर पूरे पर अधिकार जमा लेना/मन की बात ताड़ जाना।
• उल्टी गंगा बहाना
– नियम के विरुद्ध कार्य करना।
• उल्लू बनाना
– मूर्ख बनाना।
• उल्लू सीधा करना
– स्वार्थ सिद्ध करना।
• उधेड़बुन में पड़ना
– सोच–विचार करना।
• उन्नीस बीस का अंतर होना
– बहुत कम अंतर होना।
• उड़ती चिड़िया पहचानना
– किसी की गुप्त बात जान लेना।
• उल्टी माला फेरना
– बुरा सोचना।
• उल्टे उस्तरे से मूँडना
– धृष्टतापूर्वक ठगना।
• उठा न रखना
– कमी न छोड़ना।
• उल्टी पट्टी पढ़ाना
– और का और कहकर बहकाना।
• एक आँख से देखना
– सबको बराबर समझना।
• एक और एक ग्यारह होना
– मेल में शक्ति होना।
• एड़ी–चोटी का जोर लगाना
– पूरी शक्ति लगाकर कार्य करना।
• एक लाठी से हाँकना
– अच्छे–बुरे का विचार किए बिना समान व्यवहार करना।
• एक घाट पानी पीना
– एकता और सहनशीलता होना।

• एक ही थैली के चट्टे–बट्टे
– सब एक से, सभी समान रूप से बुरे व्यक्ति।
• एक हाथ से ताली न बजना
– किसी एक पक्ष का दोष न होना।
• एक ही नौका में सवार होना
– एक समान परिस्थिति में होना, किसी भी कार्य के लिए सभी पक्षों की सक्रियता अनिवार्य होती है।
• एक आँख न भाना
– तनिक भी अच्छा न लगना।
• ओंठ चबाना
– क्रोध प्रकट करना।
• ओखली में सिर देना
– जानबूझकर विपत्ति में फँसना।
• कंठ का हार होना
– अत्यंत प्रिय होना।
• कंगाली में आटा गीला
– गरीबी में और अधिक हानि होना।
• कंधे से कंधा मिलाना
– पूरा सहयोग करना।
• कच्चा चिट्ठा खोलना
– भेद खोलना, छिपे हुए दोष बताना।
• कच्ची गोली खेलना
– अनुभवी न होना।
• कलेजा टूक टूक होना
– शोक में दुखी होना।
• कटी पतंग होना
– निराश्रित होना।
• कलेजा ठण्डा होना
– संतोष होना।
• कलई खुलना
– पोल खुलना।
• कमर कसना
– तैयार होना/किसी कार्य को दृढ़ निश्चय के साथ करना।
• कठपुतली होना
– दूसरे के इशारे पर चलना।
• कलेजा थामना
– दुःख सहने के लिए कलेजा कड़ा करना।
• कमर टूटना
– कमजोर पड़ जाना/हतोत्साहित होना।
• कब्र में पैर लटकना
– मृत्यु के समीप होना।
• कढ़ी का सा उबाल
– मामूली जोश।
• कड़वे घूँट पीना
– कष्टदायक बात सहन कर जाना।
• कलेजा छलनी होना
– बहुत दुःखी होना।
• कलेजा निकालकर रख देना
– सब कुछ समर्पित कर देना।
• कलेजा फटना
– असहनीय दुःख होना।
• कलेजा मुँह को आना
– व्याकुल होना या घबरा जाना।
• कलेजे का टुकड़ा
– अत्यधिक प्रिय होना।
• कलेजे पर पत्थर रखना
– चुपचाप सहन करना।
• कलेजे पर साँप लोटना
– ईर्ष्या से जलना।
• कसौटी पर कसना
– परखना/परीक्षा लेना।
• कटे पर नमक छिड़कना
– दुःखी को और दुःखी करना।
• काँटे बिछाना
– मार्ग में बाधा उत्पन्न करना।
• कागज काले करना
– व्यर्थ लिखना।
• काठ का उल्लू
– अत्यंत मूर्ख।
• कान खड़े होना
– सावधान होना।
• कान पर जूँ न रेंगना
– असर न होना।
• कान में फूँक मारना
– प्रभावित करना।
• कान भरना

– चुगली करना।
• कान लगाकर सुनना
– ध्यान से सुनना।
• कानों में तेल/रुई डालना
– ध्यान न देना।
• काम आना
– युद्ध में मरना।
• काम तमाम करना
– मार देना।
• काया पलट होना
– बिल्कुल बदल जाना।
• कालिख पोतना
– बदनाम करना।
• कागज की नाव
– अस्थायी/क्षण भंगुर।
• कान कतरना
– मात करना/बहुत चतुर होना।
• कान का कच्चा
– हर किसी बात पर विश्वास करने वाला।
• कागजी घोड़े दौड़ाना
– केवल लिखा–पढ़ी करते रहना/बहुत पत्र व्यवहार करना।
• कानों में उँगली देना
– कोई आश्चर्यकारी बात सुनकर दंग रहना।
• काल के गाल में जाना
– मृत्यु–पथ पर बढ़ना।
• किताब का कीड़ा
– हर समय पढ़ते रहना।
• कीचड़ उछालना
– बदनामी करना/नीचता दिखाना/कलंक लगाना।
• कुएँ में बाँस डालना
– बहुत दूर तक खोज करना।
• कुएँ में भांग पड़ना
– सब की बुद्धि मारी जाना।
• कोल्हू का बैल
– कड़ी मेहनत करते रहने वाला।
• कौड़ी के मोल बिकना
– अत्यधिक सस्ता होना।
• कौड़ी–कौड़ी पर जान देना
– कंजूस होना।
• खटाई में पड़ना
– टल जाना/काम में रुकावट आना।
• खाक में मिलना
– नष्ट हो जाना।
• खाक में मिलाना
– नष्ट कर देना।
• ख्याली पुलाव बनाना
– कपोल कल्पनाएँ करना।
• खालाजी का घर
– आसान काम।
• खाक छानना
– बेकार फिरना/दर–दर भटकना।
• खिचड़ी पकाना
– गुप्त रूप से षड्यंत्र रचना।
• खून का प्यासा
– भयंकर दुश्मनी/शत्रु।
• खून का घूँट पीना
– क्रोध को अंदर ही अंदर सहना।
• खून सूखना
– डर जाना।
• खून खौलना
– जोश में आना।
• खून–पसीना एक करना
– बहुत परिश्रम करना।
• खून सफेद हो जाना
– दया न रह जाना।
• खेत रहना
– मारा जाना।
• गंगा नहाना
– बड़ा कार्य कर देना।
• गत बनाना
– पीटना।
• गर्दन उठाना
– विरोध करना।
• गले का हार
– अत्यंत प्रिय।

• गड़े मुर्दे उखाड़ना
– पिछली बुरी बातें याद करना।
• गर्दन पर सवार होना
– पीछे पड़े रहना।
• गज भर की छाती होना
– साहसी होना।
• गाँठ बाँधना
– अच्छी तरह याद रखना।
• गाल बजाना
– डींग मारना।
• गागर में सागर भरना
– थोड़े में बहुत कुछ कहना।
• गाजर मूली समझना
– तुच्छ समझना।
• गिरगिट की तरह रंग बदलना
– बहुत जल्दी अपनी बात से बदलना।
• गीदड़ भभकी
– दिखावटी धमकी।
• गुड़–गोबर करना
– बना बनाया कार्य बिगाड़ देना।
• गुल खिलाना
– कोई बखेड़ा खड़ा करना/ऐसा कार्य करना जो दूसरों को उचित न लगे।
• गुदड़ी में लाल होना
– गरीबी में भी गुणवान होना।
• गूलर का फूल
– दुर्लभ का व्यक्ति या वस्तु।
• गेहूँ के साथ घुन पिसना
– दोषी के साथ निर्दोष पर भी संकट आना।
• गोबर गणेश
– बिल्कुल बुद्धू/निरा मूर्ख।
• घर फूँककर तमाशा देखना
– अपनी हानि करके मौज उड़ाना।
• घड़ों पानी पड़ना
– बहुत लज्जित होना।
• घड़ी में तोला घड़ी में माशा
– अस्थिर चित्त वाला व्यक्ति।
• घर में गंगा बहाना
– बिना कठिनाई के कोई अच्छी वस्तु पास में ही मिल जाना।
• घास खोदना
– व्यर्थ समय गँवाना।
• घाट–घाट का पानी पीना
– बहुत अनुभवी होना।
• घाव पर नमक छिड़कना
– दुःखी को और दुःख देना।
• घी के दिये जलाना
– बहुत खुशियाँ मनाना।
• घुटने टेक देना
– हार मान लेना।
• घोड़े बेचकर सोना
– निश्चिन्त होना।
• चलती चक्की में रोड़ा अटकाना
– कार्य में बाधा डालना।
• चंडाल चौकड़ी
– निकम्मे बदमाश लोग।
• चप्पा–चप्पा छान मारना
– हर जगह ढूँढ लेना।
• चाँदी का जूता
– घूस का धन।
• चाँदी का जूता देना
– रिश्वत देना।
• चाँदी होना
– लाभ ही लाभ होना।
• चादर से बाहर पैर पसारना
– आमदनी से अधिक खर्च करना।
• चादर तानकर सोना
– निश्चिँत होना।
• चार चाँद लगाना
– शोभा बढ़ाना।
• चार दिन की चाँदनी
– थोड़े दिनों का सुख/अस्थायी वैभव।
• चिकना घड़ा
– बेशर्म।
• चिकना घड़ा होना
– कोई प्रभाव न पड़ना।
• चिराग तले अँधेरा

– दूसरों को उपदेश देने वाले व्यक्ति का स्वयं अच्छा आचरण नहीँ करना।
• चिकनी–चुपड़ी बातेँ करना
– मीठी–मीठी बातेँ करके धोखा देना/चापलूसी करना।
• चीँटी के पर निकलना
– नष्ट होने के करीब होना/अधिक घमण्ड करना।
• चुटिया हाथ मेँ होना
– वश मेँ होना।
• चुल्लू भर पानी मेँ डूब मरना
– लज्जा का अनुभव करना/शर्म के मारे मुँह न दिखाना।
• चूना लगाना
– धोखा देना।
• चूड़ियाँ पहनना
– औरतोँ की तरह कायरता दिखाना।
• चेहरे पर हवाईयाँ उड़ना
– घबरा जाना।
• चैन की बंशी बजाना
– सुख से रहना।
• चोटी का पसीना एड़ी तक आना
– कड़ा परिश्रम करना।
• चोली दामन का साथ
– घनिष्ठ सम्बन्ध।
• चौदहवीँ का चाँद
– बहुत सुन्दर।
• छक्के छुड़ाना
– बुरी तरह हरा देना।
• छठी का दूध याद आना
– घोर संकट मेँ पड़ना/संकट मेँ पिछले सुख की याद आना।
• छप्पर फाड़कर देना
– अचानक लाभ होना/बिना प्रयास के सम्पत्ति मिलना।
• छाती पर पत्थर रखना
– चुपचाप दुःख सहन करना।
• छाती पर साँप लोटना
– बहुत ईर्ष्या करना।
• छाती पर मूँग दलना
– बहुत परेशान करना/कष्ट देना।
• छूमन्तर होना
– गायब हो जाना।
• छोटे मुँह बड़ी बात करना
– अपनी हैसियत से ज्यादा बात कहना।
• जंगल मेँ मंगल होना
– उजाड़ मेँ चहल–पहल होना।
• जमीन पर पैर न रखना
– अधिक घमण्ड करना।
• जहर का घूँट पीना
– असह्य बात सहन कर लेना।
• जलती आग मेँ कूदना
– विपत्ति मेँ पड़ना।
• जबान पर चढ़ना
– याद आना।
• जबान मेँ लगाम न होना
– बेमतलब बोलते जाना।
• जमीन आसमान एक करना
– सब उपाय कर डालना।
• जमीन आसमान का फर्क
– बहुत भारी अंतर।
• जलती आग मेँ तेल डालना
– और भड़काना।
• जहर उगलना
– कड़वी बातेँ करना।
• जान के लाले पड़ना
– गम्भीर संकट मेँ पड़ना।
• जान पर खेलना
– मुसीबत मेँ रहकर काम करना।
• जान हथेली पर रखना
– प्राणोँ की परवाह न करना।
• जी चुराना
– किसी काम से दूर भागना।
• जी का जंजाल
– व्यर्थ का झंझट।
• जी भर जाना
– हृदय द्रवित होना।
• जीती मक्खी निगलना
– जानबूझकर बेईमानी करना।
• जी पर आ बनना
– मुसीबत मेँ आ फँसना।

• जी चुराना
– काम करने से कतराना।
• जूतियाँ चटकाना/तोड़ना
– मारे–मारे फिरना।
• जूतियाँ/जूते चाटना
– चापलूसी करना।
• जूतियों में दाल बाँटना
– लड़ाई झगड़ा हो जाना।
• जोड़–तोड़ करना
– उपाय करना।
• झक मारना
– व्यर्थ परिश्रम करना।
• झाड़ू फिराना
– सब कुछ बर्बाद कर देना।
• झोली भरना
– अपेक्षा से अधिक देना।
• टका–सा जवाब देना
– दो टूक/रूखा उत्तर देना या मना करना।
• टट्टी की ओट में शिकार खेलना
– छिपकर षड्यन्त्र रचना।
• टका–सा मुँह लेकर रह जाना
– लज्जित हो जाना।
• टाँग अड़ाना
– हस्तक्षेप करना।
• टाँय–टाँय फिस हो जाना
– काम बिगड़ जाना।
• टेढ़ी उँगली से घी निकालना
– शक्ति से कार्य सिद्ध करना।
• टेढ़ी खीर
– कठिन काम।
• टूट पड़ना
– सहसा आक्रमण कर देना।
• टोपी उछालना
– अपमान करना।
• ठंडा पड़ना
– क्रोध शान्त होना।
• ठन–ठन गोपाल
– निर्धन व्यक्ति/खोखला।
• ठिकाने आना
– ठीक स्थान पर आना।
• ठीकरा फोड़ना
– दोष लगाना।
• ठोकर खाना
– हानि उठाना।
• डंका बजाना
– ख्याति होना/प्रभाव जमाना/घोषणा करना।
• डंके की चोट कहना
– स्पष्ट कहना।
• डकार जाना
– किसी की चीज को लेकर न देना/माल पचा जाना।
• डोरी ढीली छोड़ना
– नियन्त्रण में ढील देना।
• डोरे डालना
– प्रेम में फँसाना।
• ढपोरशंख होना
– झूठा या गप्पी आदमी।
• ढाई दिन की बादशाहत
– थोड़े दिन की मौज–बहार।
• ढिँढोरा पीटना
– अति प्रचारित करना/सबको बताना।
• ढोल में पोल होना
– थोथा या सारहीन।
• तलवे चाटना
– खुशामद करना।
• तार–तार होना
– पूरी तरह फट जाना।
• तारे गिनना
– रात को नीँद न आना/व्यग्रता से प्रतीक्षा करना।
• तिल का ताड़ करना
– बढ़ा चढ़ाकर बातें करना।
• तितर–बितर होना
– बिखर कर भाग जाना।
• तीन का तेरह होना
– अलग–अलग होना।
• तूती बोलना

– खूब प्रभाव होना।
• तेल की कचौड़ियाँ पर गवाही देना
– सस्ते में काम करना।
• तेली का बैल होना
– हर समय काम में लगे रहना।
• तेवर चढ़ाना
– गुस्सा होना।
• थाह लेना
– पता लगाना।
• थाली का बैंगन
– लाभ–हानि देखकर पक्ष बदलने वाला व्यक्ति/सिद्धान्तहीन व्यक्ति।
• थूककर चाटना
– बात कहकर बदल जाना।
• दबे पाँव चलना
– ऐसे चलना जिससे चलने की कोई आहट न हो।
• दमड़ी के लिए चमड़ी उधेड़ना
– मामूली सी बात के लिए भारी दण्ड देना।
• दम तोड़ देना
– मृत्यु को प्राप्त होना।
• दाँतों तले उँगली दबाना
– आश्चर्य करना/हैरान होना।
• दाँत पीसना
– क्रोध करना।
• दाँत पीसकर रहना
– क्रोध पीकर चुप रहना।
• दाँत काटी रोटी होना
– घनिष्ठ मित्रता।
• दाँत उखाड़ना
– कड़ा दण्ड देना।
• दाँत खट्टे करना
– परास्त करना/नीचा दिखाना।
• दाई से पेट छिपाना
– परिचित से रहस्य को छिपाये रखना।
• दाने–दाने को तरसना
– अत्यंत गरीब होना।
• दाल में काला होना
– सन्देहपूर्ण होना/गड़बड़ होना।
• दाल न गलना
– वश नहीं चलना/सफल न होना।
• दाहिना हाथ होना
– अत्यन्त विश्वासपात्र बनना/बहुत बड़ा सहायक।
• दामन पकड़ना
– सहारा लेना।
• दाना–पानी उठना
– जगह छोड़ना।
• दिन फिरना
– भाग्य पलटना।
• दिन में तारे दिखाई देना
– घबरा जाना/अजीब हालत होना।
• दिन–रात एक करना
– खूब परिश्रम करना।
• दिन दूनी रात चौगुनी होना
– बहुत जल्दी–जल्दी होना।
• दिमाग आसमान पर चढ़ना
– बहुत घमण्ड होना।
• दुम दबाकर भागना
– डर के मारे भागना।
• दूध का दूध और पानी का पानी
– उचित न्याय करना।
• दूध का धुला/धोया होना
– निर्दोष या निष्कलंक होना।
• दूध के दाँत न टूटना
– ज्ञान और अनुभव का न होना।
• दो दिन का मेहमान
– जल्दी मरने वाला।
• दो नावों पर पैर रखना
– दोनों तरफ रहना/एक साथ दो लक्ष्यों को पाने की चेष्टा करना।
• दो टूक जवाब देना
– साफ–साफ उत्तर देना।
• दौड़–धूप करना
– कठोर श्रम करना।
• दृष्टि फेरना
– अप्रसन्न होना।
• धज्जियाँ उड़ाना
– नष्ट–भ्रष्ट करना।

• धरती पर पाँव न पड़ना
– अभिमान में रहना।
• धूल फाँकना
– व्यर्थ में भटकना।
• धूप में बाल सफेद करना
– अनुभवहीन होना।
• धूल में मिल जाना
– नष्ट हो जाना।
• नकेल हाथ में होना
– वश में होना।
• नमक मिर्च लगाना
– बात बढ़ा–चढ़ाकर कहना।
• नाक कटना
– बदनामी होना।
• नाक काटना
– अपमानित करना।
• नाक चोटी काटकर हाथ में देना
– दुर्दशा करना।
• नाक भौं चढ़ाना
– घृणा या असन्तोष प्रकट करना।
• नाक पर मक्खी न बैठने देना
– बहुत साफ रहना/अपने पर आँच न आने देना।
• नाक रगड़ना
– दीनता दिखाना।
• नाक रखना
– मान रखना।
• नाक में दम करना
– बहुत तंग करना।
• नाक का बाल होना
– किसी के ज्यादा निकट होना।
• नाकों चने चबाना
– बहुत तंग करना।
• नानी याद आना
– कठिनाई में पड़ना/घबरा जाना।
• निन्यानवें के फेर में पड़ना
– पैसा जोड़ने के चक्कर में पड़ना।
• नीला–पीला होना
– गुस्से होना।
• नौ दो ग्यारह होना
– भाग जाना।
• नौ दिन चले ढाई कोस
– बहुत धीमी गति से कार्य करना।
• पगड़ी उछालना
– बेइज्जत करना।
• पगड़ी रखना
– इज्जत रखना।
• पसीना–पसीना होना
– बहुत थक जाना।
• पहाड़ टूट पड़ना
– भारी विपत्ति आ जाना।
• पाँचों उँगलियाँ घी में होना
– सब ओर से लाभ होना।
• पाँव उखड़ना
– हारकर भाग जाना।
• पाँव फूँक–फूँक कर रखना
– सावधानी से कार्य करना।
• पानी-पानी होना
– अत्यधिक लज्जित होना।
• पानी में आग लगाना
– शांति भंगकर देना।
• पानी फेर देना
– निराश कर देना।
• पानी भरना
– तुच्छ लगना।
• पानी पी–पीकर कोसना
– गालियाँ बकते जाना।
• पानी का मोल होना
– बहुत सस्ता।
• पापड़ बेलना
– बेकार जीवन बिताना।
• पीठ दिखाना
– कायरता का आचरण करना।
• पेट काटना
– अपने ऊपर थोड़ा खर्च करना।
• पेट में चूहे दौड़ना/कूदना

– भूख लगना।
• पेट बाँधकर रहना
– भूखे रहना।
• पेट में रखना
– बात छिपाकर रखना।
• पेट में दाढ़ी होना
– दिखने में सीधा, परन्तु चालाक होना।
• पैर उखड़ना
– भागने पर विवश होना।
• पैर जमीन पर न टिकना
– प्रसन्न होना, अभिमानी होना।
• पैरों तले से जमीन निकल/खिसक/सरक जाना
– होश उड़ जाना।
• पैरों में मेंहदी लगाकर बैठना
– कहीं जा न सकना।
• पौ बारह होना
– खूब लाभ होना।
• प्राण हथेली पर लिए फिरना
– जीवन की परवाह न करना।
• फट पड़ना
– एकदम गुस्से में हो जाना।
• फूँक–फूँककर कदम रखना
– सावधानी बरतना।
• फूटी आँख न सुहाना
– अच्छा न लगना।
• फूला न समाना
– अत्यधिक खुश होना।
• फूलकर कूप्पा होना
– बहुत खुश या बहुत नाराज होना।
• बंदर घुड़की/भभकी
– प्रभावहीन धमकी।
• बखिया उधेड़ना
– भेद खोलना।
• बछिया का ताऊ
– मूर्ख।
• बट्टा लगना
– कलंक लगना।
• बड़े घर की हवा खाना
– जेल जाना।
• बरस पड़ना
– अति क्रुद्ध होकर डाँटना।
• बल्लियाँ उछलना
– बहुत प्रसन्न होना।
• बाँए हाथ का खेल
– बहुत सरल काम।
• बाँछे खिल जाना
– अत्यंत प्रसन्न होना।
• बाजार गर्म होना
– काम–धंधा तेज होना।
• बात का धनी होना
– वचन का पक्का होना।
• बाल की खाल निकालना
– नुकता–चीनी करना/बहुत तर्क–वितर्क करना।
• बाल बाँका न होना/कर सकना
– कुछ भी नुकसान न होना/कर सकना।
• बाल–बाल बचना
– बड़ी कठिनाई से बचना।
• बासी कढ़ी में उबाल आना
– समय बीत जाने पर इच्छा जागना।
• बिल्ली के गल्ले में घंटी बाँधना
– अपने को संकट में डालना।
• बेपेंदी का लोटा
– ढुलमुल/पक्ष बदलने वाला।
• भंडा फोड़ना
– भेद खोल देना।
• भाड़ झोंकना
– समय व्यर्थ खोना।
• भाड़े का टट्टू
– पैसे लेकर ही काम करने वाला।
• भीगी बिल्ली बनना
– सहम जाना।
• भैंस के आगे बीन बजाना
– मूर्ख आदमी को उपदेश देना।
• मक्खन लगाना
– चापलूसी करना।

• मक्खियाँ मारना
– बेकार रहना।
• मन के लड्डू
– मनमोदक/कल्पना करना।
• माथा ठनकना
– संदेह होना।
• मिट्टी का माधो
– बिल्कुल बुद्धू।
• मिट्टी खराब करना
– बुरा हाल करना।
• मिट्टी में मिल जाना
– बर्बाद होना।
• मुँहतोड़ जवाब देना
– बदले में करारी चोट करना।
• मुँह की खाना
– हार मानना।
• मुँह में पानी भर आना
– खाने को जी ललचाना।
• मुँह खून लगना
– रिश्वत लेने की आदत पड़ जाना।
• मुँह छिपाना
– लज्जित होना।
• मुँह रखना
– मान रखना।
• मुँह पर कालिख पोतना
– कलंक लगाना।
• मुँह उतरना
– उदास होना।
• मुँह ताकना
– दूसरे पर आश्रित होना।
• मुँह बंद करना
– चुप कर देना।
• मुट्ठी में होना
– वश में होना।
• मुट्ठी गर्म करना
– रिश्वत देना।
• मोहर लगा देना
– पुष्टि करना।
• मौत सिर पर खेलना
– मृत्यु समीप होना।
• रंग उड़ना
– घबरा जाना।
• रंग में भंग पड़ना
– आनन्दपूर्ण कार्य में बाधा पड़ना।
• रंग बदलना
– परिवर्तन होना।
• रंगा सियार होना
– धोखा देने वाला।
• रफूचक्कर होना
– भाग जाना।
• राई का पहाड़ बनाना
– जरा–सी बात को बढ़ा–चढ़ाकर प्रस्तुत करना।
• रोंगटे खड़े होना
– डर से रोमांचित होना।
• रोड़ा अटकाना
– बाधा डालना।
• रोम–रोम खिल उठना
– प्रसन्न होना।
• लँगोटी में फाग खेलना
– गरीबी में आनन्द लूटना।
• लकीर पीटना
– पुरानी रीति पर चलना।
• लकीर का फकीर होना
– प्राचीन परम्पराओँ को सख्ती से मानने वाला।
• लड़ाई मोल लेना
– झगड़ा पैदा करना।
• लट्टू होना
– मस्त होना/मोहित होना।
• ललाट में लिखा होना
– भाग्य में बदा होना।
• लहू का घूँट पीना
– अपमान सहन करना।
• लाख का घर राख
– धनी का निर्धन हो जाना।
• लाल–पीला होना

– क्रोधित होना।
• लुटिया डुबोना
– काम बिगाड़ना।
• लेने के देने पड़ना
– लाभ के स्थान पर हानि होना।
• लोहा मानना
– किसी की शक्ति स्वीकार करना।
• लोहे के चने चबाना
– कठिन काम करना/बहुत संघर्ष करना।
• विष उगलना
– द्वेषपूर्ण बातें करना/बुरा–भला कहना।
• शहद लगाकर चाटना
– तुच्छ वस्तु को महत्त्व देना।
• शिकार हाथ लगना
– आसामी मिलना।
• शैतान की आँत
– लम्बी बात।
• शैतान के कान कतरना
– बहुत चालाक होना।
• श्रीगणेश करना
– शुरु करना।
• सब्ज बाग दिखाना
– कोरा लोभ देकर बहकाना।
• साँप को दूध पिलाना
– दुष्ट की रक्षा करना।
• साँप–छछूंदर की गति होना
– असंमजस या दुविधा की दशा होना।
• साँप सूँघ जाना
– गुप–चुप हो जाना।
• सात घाट का पानी पीना
– विस्तृत अनुभव होना।
• सिँदूर चढ़ाना
– लड़की का विवाह होना।
• सिट्टी–पिट्टी गुम हो जाना
– होश उड़ जाना।
• सितारा चमकना
– भाग्यशाली होना।
• सिर पर कफना बाँधना
– बलिदान देने के लिए तैयार होना।
• सिर पर सवार होना
– पीछे पड़ना।
• सिर पर चढ़ना
– मुँह लगना।
• सिर मढ़ना
– जिम्मे लगाना।
• सिर मुँड़ाते ओले पड़ना
– काम शुरु होते ही बाधा आना।
• सिर से बला टलना
– मुसीबत से पीछा छुटना।
• सिर आँखों पर रखना
– आदर सहित आज्ञा मानना।
• सिर पर हाथ होना
– सहारा होना, वरदहस्त होना।
• सिर पर भूत सवार होना
– धुन लगाना।
• सिर पर मौत खेलना
– मृत्यु समीप होना।
• सिर पर खून सवार होना
– मरने-मारने को तैयार होना।
• सिर–धड़ की बाजी लगाना
– प्राणअॅ की भी परवाह न करना।
• सिर नीचा करना
– लजा जाना।
• सिर उठाना
– विद्रोह करना।
• सिर ओखली में देना
– जान–बूझकर मुसीबत मोल लेना।
• सिर पर चढ़ाना
– अत्यधिक मनमानी करने की छूट देना।
• सिर से पानी गुजरना
– सहनशीलता समाप्त होना।
• सिर पर पाँव रखकर भागना
– तेजी से भागना।
• सिर धुनना
– पछताना।

• सींग काटकर बछड़ों में मिलना
– बूढ़े होकर भी बच्चों जैसा काम करना।
• सूखे धान पर पानी पड़ना
– दशा सुधरना।
• सूर्य को दीपक दिखाना
– अत्यन्त प्रसिद्ध व्यक्ति का परिचय देना।
• सोने की चिड़िया हाथ से निकलना
– लाभपूर्ण वस्तु से वंचित रहना।
• सोने पर सुहागा होना
– अच्छी वस्तु का और अधिक अच्छा होना।
• हक्का–बक्का रहना
– आश्चर्यचकित होना/हैरान रह जाना।
• हथियार डाल देना
– हार मान लेना।
• हवाई किले बनाना
– थोथी कल्पना करना।
• हथेली पर सरसों उगना
– कम समय में अधिक कार्य करना।
• हजामत बनाना
– लूटना/ठगना।
• हथेली पर जान लिए फिरना
– मरने की परवाह न करना।
• हवा लगना
– असर पड़ना।
• हवा से बातें करना
– बहुत तेज दौड़ना।
• हवा हो जाना
– गायब हो जाना/भाग जाना।
• हवा पलटना
– समय बदल जाना।
• हवा का रुख पहचानना
– अवसर की आवश्यकता को पहचानना।
• हाथ का मैल
– साधारण चीज।
• हाथ कट जाना
– परवश होना।
• हाथ में करना
– अपने वश में करना।
• हाथ को हाथ न सूझना
– घना अन्धकार होना।
• हाथ खाली होना
– रुपया-पैसा न होना।
• हाथ खींचना
– साथ न देना।
• हाथ पे हाथ धरकर बैठना
– निकम्मा होना/बिना कार्य के बैठे रहना।
• हाथअॅ के तोते उड़ना
– दुःख से हैरान होना/अचानक घबरा जाना।
• हाथअॅहाथ
– बहुत जल्दी/तत्काल।
• हाथ मलते रह जाना
– पछताना।
• हाथ साफ करना
– चुरा लेना/बेईमानी से लेना।
• हाथ–पाँव मारना
– प्रयास करना।
• हाथ–पाँव फूलना
– घबरा जाना।
• हाथ डालना
– शुरू करना।
• हाथ फैलाना
– माँगना।
• हाथ धोकर पीछे पड़ना
– बुरी तरह पीछे पड़ना/पीछा न छोड़ना।
• हिन्दी की चिन्दी निकालना
– बात की तह तक पहुँचना।
• हुक्का–पानी बन्द कर देना
– जाति से बाहर कर देना।
• हुलिया बिगाड़ना
– दुर्गत करना।

♦♦♦

2. लोकोक्तियाँ (कहावतें)

लोकोक्ति का अर्थ है, लोक की उक्ति अर्थात् जन–कथन। लोकोक्तियाँ अथवा कहावतें लोक–जीवन की किसी घटना या अन्तर्कथा से जुड़ी रहती हैं। इनका जन्म लोक–जीवन में ही होता है। प्रत्येक लोकोक्ति समाज में प्रचलित होने से पूर्व में अनेक बार लोगों के अनुभव की कसौटी पर कसी गई है और सभी लोगों के अनुभव उस लोकोक्ति के साथ एक से रहे हैं, तब वह कथन सर्वमान्य रूप से हमारे सामने है। लोकोक्तियाँ दिखने में छोटी लगती हैं, परन्तु उनमें अधिक भाव रहता है। लोकोक्तियों के प्रयोग से रचना में भावगत विशेषता आ जाती है।

मुहावरे एवं लोकोक्ति में अन्तर–

मुहावरा वाक्यांश होता है तथा इसके अन्त में 'होना', 'जाना', 'देना', 'करना' आदि क्रिया का मूल रूप रहता है, जिसका वाक्य में प्रयोग करते समय लिँग, वचन, काल, कारक आदि के अनुसार रूप बदल जाता है। जबकि लोकोक्ति अपने आप में पूर्ण वाक्य होती है और प्रयोग स्वतन्त्र वाक्य की तरह ज्यों का त्यों होता है

प्रमुख लोकोक्तियाँ व उनका अर्थ:

• अंडा सिखावे बच्चे को चीं-चीं मत कर
– छोटे के द्वारा बड़े को उपदेश देना।
• अंडे सेवे कोई, बच्चे लेवे कोई
– परिश्रम कोई करे लाभ किसी और को मिले।
• अंडे हअँगे तो बच्चे बहुतेरे हो जाएंगे
– मूल वस्तु रहने पर उससे बनने वाली वस्तुएॅं मिल ही जाती हैं।
• अंत भला सो सब भला
– कार्य का परिणाम सही हो जाए तो सारी गलतियाँ भुला दी जाती हैं।
• अंत भले का भला
– भलाई करने वाले का भला ही होता है।
• अंधा बाँटे रेवड़ी फिर-फिर अपनों को देय
– अपने अधिकार का लाभ अपने लोगअें को ही पहुँचाना।
• अंधा क्या चाहे, दो आँखें
– मनचाही वस्तु प्राप्त होना।
• अंधा क्या जाने बसंत बहार
– जो वस्तु देखी ही नहीं गई, उसका आनंद कैसे जाना जा सकता है।
• अंधा पीसे कुत्ता खाय
– एक की मजबूरी से दूसरे को लाभ हो जाता है।
• अंधा बगुला कीचड़ खाय
– भाग्यहीन को सुख नहीं मिलता।
• अंधा सिपाही कानी घोड़ी, विधि ने खूब मिलाई जोड़ी
– बराबर वाली जोड़ी बनना।
• अंधे अंधा ठेलिया दोनअें कूप पड़ंत
– दो मूर्ख एक दूसरे की सहायता करें तो भी दोनअें को हानि ही होती है।
• अंधे की लाठी
– बेसहारे का सहारा।
• अंधे के आगे रोये, अपनी आँखें खोये
– मूर्ख को ज्ञान देना बेकार है।
• अंधे के हाथ बटेर लगना
– अनायास ही मनचाही वस्तु मिल जाना।
• अंधे को अंधा कहने से बुरा लगता है
– किसी के सामने उसका दोष बताने से उसे बुरा ही लगता है।
• अंधे को अँधेरे में बड़े दूर की सूझी
– मूर्ख को बुद्धिमत्ता की बात सूझना।
• अंधेर नगरी चौपट राजा , टके सेर भाजी टके सेर खाजा
– जहाँ मुखिया मूर्ख हो और न्याय अन्याय का ख्याल न रखता हो।
• अकेला चना भाड़ नहीं फोड़ सकता
– अकेला व्यक्ति किसी बड़े काम को सम्पन्न करने में समर्थ नहीं हो सकता।
• अकेला हँसता भला न रोता भला
– सुख हो या दु:ख साथी की जरूरत पड़ती ही है।
• अक्ल बड़ी या भैंस
– शारीरिक शक्ति की अपेक्षा बुद्धि का अधिक महत्व होता है।
• अच्छी मति जो चाहअें, बूढ़े पूछन जाओ
– बड़े-बूढ़अें के अनुभव का लाभ उठाना चाहिये।
• अटकेगा सो भटकेगा
– दुविधा या सोच-विचार में पड़ने से काम नहीं होता।
• अधजल गगरी छलकत जाए
– ओछा आदमी थोड़ा गुण या धन होने पर इतराने लगता है।
• अनजान सुजान, सदा कल्याण
– मूर्ख और ज्ञानी सदा सुखी रहते हैं।
• अब पछताए होत क्या जब चिड़िया चुग गई खेत
– नुकसान हो जाने के बाद पछताना बेकार है।
• अढ़ाई हाथ की ककड़ी, नौ हाथ का बीज
– अनहोनी बात।
• बिन माँगे मोती मिले, माँगे मिले न भीख
– सौभाग्य से कोई बढ़िया चीज़ अपने-आप मिल जाती है और दुर्भाग्य से घटिया चीज़ प्रयत्न करने पर भी नहीं मिलती।
• अपना-अपना कमाना, अपना-अपना खाना
– किसी दूसरे के भरोसे नहीं रहना।
• अपना ढेंढर देखे नहीं, दूसरे की फुल्ली निहारे
– अपने बड़े से बड़े दुर्गुण को न देखना पर दूसरे के छोटे से छोटे अवगुण की चर्चा करना।
• अपना मकान कोट समान
– अपना घर सबसे सुरक्षित स्थान होता है।
• अपना रख पराया चख
– अपनी वस्तु बचाकर रखना और दूसरअें की वस्तुएँ इस्तेमाल करना।

• अपना लाल गँवाय के दर-दर माँगे भीख
– अपनी बहुमूल्य वस्तु को गवाँ देने से आदमी दूसरॲ का मोहताज हो जाता है।
• अपना ही सोना खोटा तो सुनार का क्या दोष
– अपनी ही वस्तु खराब हो तो दूसरॲ को दोष देना उचित नहीं है।
• अपनी- अपनी खाल में सब मस्त
– अपनी परिस्थिति से संतुष्ट रहना।
• अपनी-अपनी ढफली, अपना-अपना राग
– सभी का अलग-अलग मत होना।
• अपनी करनी पार उतरनी
– अच्छा परिणाम पाने के लिए स्वयं काम करना पड़ता है।
• अपनी गरज से लोग गधे को भी बाप बनाते हैं
– येन-केन-प्रकारेण स्वार्थपूर्ति करना।
• अपनी गरज बावली
– स्वार्थी आदमी दूसरॲ की परवाह नहीं करता।
• अपनी गली में कुत्ता भी शेर होता है
– अपने घर में आदमी शक्तिशाली होता है।
• अपनी गँठ पैसा तो पराया आसरा कैसा
– समर्थ व्यक्ति को दूसरे के आसरे की आवश्यकता नहीं होती।
• अपनी चिलम भरने के लिए दूसरे का झोंपड़ा जलाना
– अपने छोटे से स्वार्थ के लिए दूसरे की भारी हानि कर देना।
• अपनी छाछ को कोई खट्टा नहीं कहता
– अपनी चीज़ को कोई खराब नहीं बताता।
• अपनी जाँघ उघारिए आपहि मरिए लाज
– अपने अवगुणॲ को दूसरॲ के समक्ष प्रस्तुत करके आप ही पछताना।
• अपनी नींद सोना, अपनी नींद जागना
– मर्जी का मालिक होना।
• अपनी नाक कटे तो कटे दूसरॲ का सगुन तो बिगड़े
– दूसरॲ का नुकसान करने के लिए अपने नुकसान की भी परवाह न करना।
• अपनी पगड़ी अपने हाथ
– व्यक्ति अपनी इज्जत की रक्षा स्वयं ही कर सकता है।
• अपने किए का क्या इलाज
– अपने द्वारा किए गए कर्म का फल भोगना ही पड़ता है।
• अपने मरे बिना स्वर्ग नहीं दिखता
– दूसरॲ के भरोसे काम नहीं होता, सफलता पाने के लिए स्वयं परिश्रम करना पड़ता है।
• अपने पूत को कोई काना नहीं कहता
– अपनी चीज को कोई बुरा नहीं कहता।
• अपने मुँह मिया मिट्ठू बनना
– अपनी बड़ाई आप करना।
• अब की अब, तब की तब
– भविष्य की चिंता छोड़कर वर्तमान की ही चिंता करनी चाहिए।
• अब सतवंती होकर बैठी लूट लिया सारा संसार
– उम्र भर बुरे कर्म करने के बाद अच्छा होने का दिखावा करना।
• अभी तो तुम्हारे दूध के दाँत भी नहीं टूटे
– अभी तुम नादान हो।
• अभी दिल्ली दूर है
– सफलता अभी दूर है।
• अरहर की टट्टी गुजराती ताला
– मामूली वस्तु की रक्षा के लिए खर्च की परवाह न करना।
• अजब तेरी माया, कहीं धूप कहीं छाया
– जीवन में सुख और दुःख आते ही रहते हैं।
• अशर्फियाँ लुटाकर कोयलॲ पर मोहर लगाना
– अच्छे-बुरे का ज्ञान न होना।
• आँख एक नहीं कजरौटा दस-दस
– व्यर्थ का आडम्बर करना।
• आँख ओट पहाड़ ओट
– अनुपलब्ध व्यक्ति से किसी प्रकार का सहारा करना व्यर्थ है।
• आँख और कान में चार अंगुल का फर्क
– सुनी हुई बात की अपेक्षा देखा हुआ सत्य अधिक विश्वसनीय होता है।
• आँख का अंधा नाम नैनसुख
– व्यक्ति के नाम की अपेक्षा गुण प्रभावशाली होता है।
• आ बैल मुझे मार
– जान बूझकर मुसीबत मोल लेना।
• आई तो ईद, न आई तो जुम्मेरात
– आमदनी हुई तो मौज मनाना नहीं तो फाका करना।
• आई मौज फकीर की, दिया झोंपड़ा फूँक
– विरक्त व्यक्ति को किसी चीज की परवाह नहीं होती।
• आई है जान के साथ जाएगी जनाज़े के साथ
– लाईलाज बीमारी।
• आग कह देने से मुँह नहीं जल जाता
– कोसने से किसी का अहित नहीं हो जाता।
• आग का जला आग ही से अच्छा होता है
– कष्ट देने वाली वस्तु कष्ट का निवारण भी कर देती है।
• आग खाएगा तो अंगार उगलेगा
– बुरे काम का नतीजा बुरा ही होता है।
• आग बिना धुआँ नहीं

– बिना कारण कुछ भी नहीं होता।
• आगे जाए घुटना टूटे, पीछे देखे आँख फूटे
– दुर्दिन झेलना।
• आगे नाथ न पीछे पगहा
– पूर्णत: स्वतन्त्र रहना।
• आज का बनिया कल का सेठ
– परिश्रम करते रहने से आदमी आगे बढ़ता जाता है।
• आटे का चिराग, घर रखूँ तो चूहा खाए, बाहर रखूँ तो कौआ ले जाए
– ऐसी वस्तु जिसे बचाना मुश्किल हो।
• आदमी-आदमी में अंतर कोई हीरा कोई कंकर
– व्यक्तियअॅ के स्वभाव तथा गुण भिन्न-भिन्न होते हैं।
• आदमी की दवा आदमी है
– मनुष्य ही मनुष्य की सहायता करते हैं।
• आदमी को ढाई गज कफन काफी है
– अपनी हालत पर संतुष्ट रहना।
• आदमी जाने बसे सोना जाने कसे
– आदमी की पहचान नजदीकी से और सोने की पहचान सोना कसौटी से होती है।
• आम के आम गुठलियअॅ के दाम
– दोहरा लाभ होना।
• आधा तीतर आधा बटेर
– बेमेल वस्तु।
• आधी छोड़ पूरी को धावै, आधी मिले न पूरी पावै
– लालच करने से हानि होती है।
• आप काज़ महा काज़
– अपने उद्देश्य की पूर्ति करना चाहिए।
• आप भला तो जग भला
– भले आदमी को सब लोग भले ही प्रतीत होते हैं।
• आप मरे जग परलय
– मृत्यु के पश्चात कोई नहीं जानता कि संसार में क्या हो रहा है।
• आप मियाँ जी मँगते द्वार खड़े दरवेश
– असमर्थ व्यक्ति दूसरअॅ की सहायता नहीं कर सकता।
• आपा तजे तो हरि को भजे
– परमार्थ करने के लिए स्वार्थ को त्यागना पड़ता है।
• आम खाने से काम, पेड़ गिनने से क्या मतलब
– निरुद्देश्य कार्य न करना।
• आए की ख़ुशी न गए का गम
– अपनी हालात में संतुष्ट रहना।
• आए थे हरि भजन को ओटन लगे कपास
– लक्ष्य को भूलकर अन्य कार्य करना।
• आसमान का थूका मुँह पर आता है
– बड़े लोगअॅ की निंदा करने से अपनी ही बदनामी होती है।
• आसमान से गिरा खजूर पर अटका
– सफलता पाने में अनेक बाधाओं का आना।
• इक नागिन अरु पंख लगाई
– एक के साथ दूसरे दोष का होना।
• इतना खाए जितना पावे
– अपनी औकात को ध्यान में रखकर खर्च करना।
• इतनी सी जान, गज भर की ज़बान
– अपनी उम्र के हिसाब से अधिक बोलना।
• इधर कुआँ उधर खाई
– हर हाल में मुसीबत।
• इधर न उधर, यह बला किधर
– अचानक विपत्ति आ पड़ना।
• इन तिलअॅ में तेल नहीं
– किसी प्रकार का आसरा न होना।
• इसके पेट में दाढ़ी है
– कम उम्र में बुद्धि का अधिक विकास होना।
• इस हाथ दे उस हाथ ले
– किसी कार्य का फल तत्काल चाहना।
• उल्टा चोर कोतवाल को डाँटे
– दोषी होने पर भी दूसरअॅ पर ध ंस जमाना।
• उगले तो अंधा, खाए तो कोढ़ी
– दुविधा में पड़ना।
• उत्तर जाए या दक्खिन, वही करम के लक्ख़न
– स्थान बदल जाने पर भी व्यक्ति के लक्षण नहीं बदलते।
• उल्टी गंगा पहाड़ चली
– असंभव कार्य।
• उल्टे बाँस बरेली को
– विपरीत कार्य करना।
• ऊँची दुकान फीका पकवान
– तड़क-भड़क करके स्तरहीन चीजअॅ को खपाना।
• ऊँट किस करवट बैठता है
– सन्देह की स्थिति में होना।
• ऊँट के मुँह में जीरा
– अत्यन्त अपर्याप्त।

• ऊधो का लेना न माधो का देना
– किसी के तीन-पाँच में न रहना, स्वयं में लिप्त होना।
• एक अंडा वह भी गंदा
– बेकार की वस्तु।
• एक अनार सौ बीमार
– किसी वस्तु की मात्रा बहुत कम किन्तु उसकी माँग बहुत अधिक होना।
• एक आवे के बर्तन
– सभी का एक जैसा होना।
• एक और एक ग्यारह होते हैं
– एकता में बल है।
• एक तो करेला ऊपर से नीम चढ़ा
– बहुत अधिक खराब होना।
• एक गंदी मछली सारे तलाब को गंदा कर देती है
– अनेक अच्छाईयाँ पर भी एक बुराई भारी पड़ती है।
• एक टकसाल के ढले
– सभी का एक जैसा होना।
• एक तवे की रोटी, क्या छोटी क्या मोटी
– किसी प्रकार का भेदभाव न रखना।
• एक तो चोरी ऊपर से सीना-जोरी
– स्वयं के दोषी होने पर भी रोब गाँठना।
• एक ही थैली के चट्टे-बट्टे
– एक जैसे दुर्गुण वाले।
• एक मुँह दो बात
– अपनी बात से पलटना।
• एक म्यान में दो तलवारें नहीं रह सकती
– समान अधिकार वाले दो व्यक्ति एक क्षेत्र में नहीं रह सकते।
• एक हाथ से ताली नहीं बजती
– झगड़े के लिए दोनअॅ पक्ष जिम्मेदार होते हैं।
• एक ही लकड़ी से सबको हाँकना
– छोटे-बड़े का ध्यान न रखना।
• एकै साधे सब सधे, सब साधे सब जाय
– एक साथ अनेक कार्य करने से कोई भी कार्य पूरा नहीं होता।
• ओखली में सिर दिया तो मूसलअॅ से क्या डरना
– कठिनाइयअॅ न डरना।
• ओस चाटे प्यास नहीं बुझती
– आवश्यक से अत्यन्त कम की प्राप्ति होना।
• कंगाली में आटा गीला
– मुसीबत पर मुसीबत आना।
• ककड़ी के चोर को फाँसी नहीं दी जाती
– अपराध के अनुसार ही दण्ड दिया जाना चाहिए।
• कचहरी का दरवाजा खुला है
– न्याय पर सभी का अधिकार होता है।
• कड़ाही से गिरा चूल्हे में पड़ा
– छोटी विपत्ति से छूटकर बड़ी विपत्ति में पड़ जाना।
• कब्र में पाँव लटकना
– अत्यधिक उम्र वाला।
• कभी के दिन बड़े कभी की रात
– सब दिन एक समान नहीं होते।
• कभी नाव गाड़ी पर, कभी गाड़ी नाव पर
– परिस्थितियाँ बदलती रहती हैं।
• कमली ओढ़ने से फकीर नहीं होता
– ऊपरी वेशभूषा से किसी के अवगुण नहीं छिप जाते।
• कमान से निकला तीर और मुँह से निकली बात वापस नहीं आती
– सोच-समझकर ही बात करनी चाहिए।
• करत-करत अभ्यास के जड़मति होत सुजान
– अभ्यास करते रहने से सफलता अवश्य ही प्राप्त होती है।
• करम के बलिया, पकाई खीर हो गया दलिया
– काम बिगड़ना।
• करमहीन खेती करे, बैल मरे या सूखा पड़े
– दुर्भाग्य हो तो कोई न कोई काम खराब होता रहता है।
• कर लिया सो काम, भज लिया सो राम
– अधूरे काम का कुछ भी मतलब नहीं होता।
• कर सेवा तो खा मेवा
– अच्छे कार्य का परिणाम अच्छा ही होता है।
• करे कोई भरे कोई
– किसी की करनी का फल किसी अन्य द्वारा भोगना।
• करे दाढ़ी वाला, पकड़ा जाए जाए मुँछअॅ वाला
– प्रभावशाली व्यक्ति के अपराध के लिए किसी छोटे आदमी को दोषी ठहराया जाना।
• कल किसने देखा है
– आज का काम आज ही करना चाहिए।
• कलार की दुकान पर पानी पियो तो भी शराब का शक होता है
– बुरी संगत होने पर कलंक लगता ही है।
• कहाँ राम–राम, कहाँ टाँय–टाँय
– असमान चीजअॅ की तुलना नहीं हो सकती।
• कहीं की ईंट, कहीं का रोड़ा, भानमती ने कुनबा जोड़ा

– असम्बन्धित वस्तुओं का एक स्थान पर संग्रह।
• कहे खेत की, सुने खलिहान की
– कुछ कहने पर कुछ समझना।
• का वर्षा जब कृषी सुखाने
– अवसर निकलने जाने पर सहायता भी व्यर्थ होती है।
• कागज़ की नाव नहीं चलती
– बेईमानी या धोखेबाज़ी ज्यादा दिन नहीं चल सकती।
• काजल की कोठरी में कैसेहु सयानो जाय एक लीक काजल की लगिहै सो लागिहै
– बुरी संगत होने पर कलंक अवश्य ही लगता है।
• काज़ी जी दुबले क्यअँ? शहर के अंदेशे से
– दूसरअँ की चिन्ता में घुलना।
• काठ की हाँडी एक बार ही चढ़ती है
– धोखा केवल एक बार ही दिया जा सकता है, बार बार नहीं।
• कान में तेल डाल कर बैठना
– आवश्यक चिन्ताओं से भी दूर रहना।
• काबुल में क्या गधे नहीं होते
– अच्छाई के साथ–साथ बुराई भी रहती है।
• काम का न काज का, दुश्मन अनाज का
– खाना खाने के अलावा और कोई भी काम न करने वाला व्यक्ति।
• काम को काम सिखाता है
– अभ्यास करते रहने से आदमी होशियार हो जाता है।
• काल के हाथ कमान, बूढ़ा बचे न जवान
– मृत्यु एक शाश्वत सत्य है, वह सभी को ग्रसती है।
• काल न छोड़े राजा, न छोड़े रंक
– मृत्यु एक शाश्वत सत्य है, वह सभी को ग्रसती है।
• काला अक्षर भैंस बराबर
– अनपढ़ होना।
• काली के ब्याह में सौ जोखिम
– एक दोष होने पर लोगोँ द्वारा अनेक दोष निकाल दिए जाते हैं।
• किया चाहे चाकरी राखा चाहे मान
– नौकरी करके स्वाभिमान की रक्षा नहीं हो सकती।
• किस खेत की मूली है
– महत्व न देना।
• किसी का घर जले कोई तापे
– किसी की हानि पर किसी अन्य का लाभान्वित होना।
• कुंजड़ा अपने बेरअँ को खट्टा नहीं बताता
– अपनी चीज को कोई खराब नहीं कहता।
• कुँए की मिट्टी कुँए में ही लगती है
– कुछ भी बचत न होना।
• कुतिया चोरअँ से मिल जाए तो पहरा कौन देय
– भरोसेमन्द व्यक्ति का बेईमान हो जाना।
• कुत्ता भी दुम हिलाकर बैठता है
– कुत्ता भी बैठने के पहले बैठने के स्थान को साफ करता है।
• कुत्ते की दुम बारह बरस नली में रखो तो भी टेढ़ी की टेढ़ी
– लाख कोशिश करने पर भी दुष्ट अपनी दुष्टता नहीं त्यागता।
• कुत्ते को घी नहीं पचता
– नीच आदमी ऊँचा पद पाकर इतराने लगता है।
• कुत्ता भूँके हजार, हाथी चले बजार
– समर्थ व्यक्ति को किसी का डर नहीं होता।
• कुम्हार अपना ही घड़ा सराहता है
– अपनी ही वस्तु की प्रशंसा करना।
• कै हंसा मोती चुगे कै भूखा मर जाय
– सम्मानित व्युक्ति अपनी मर्यादा में रहता है।
• कोई माल मस्त, कोई हाल मस्त
– कोई अमीरी से संतुष्ट तो कोई गरीबी से।
• कोठी वाला रोवें, छप्पर वाला सोवे
– धनवान की अपेक्षा गरीब अधिक निश्चिंत रहता है।
• कोयल होय न उजली सौ मन साबुन लाइ
– स्वभाव नहीं बदलता।
• कोयले की दलाली में मुँह काला
– बुरी संगत से कलंक लगता ही है।
• कौड़ी नहीं गाँठ चले बाग की सैर
– अपनी सामर्थ्य से अधिक की सोचना।
• कौन कहे राजाजी नंगे हैं
– बड़े लोगअँ की बुराई नहीं देखी जाती।
• कौआ चला हंस की चाल, भूल गया अपनी भी चाल
– दूसरअँ की नकल करने से अपनी मौलिकता भी खो जाती है।
• क्या पिद्दी और क्या पिद्दी का शोरबा
– अत्यन्त तुच्छ होना।
• खग जाने खग ही की भाषा
– एक जैसे प्रकृति के लोग आपस में मिल ही जाते हैं।
• ख्याली पुलाव से पेट नहीं भरता
– केवल सोचते रहने से काम पूरा नहीं हो जाता।
• खरबूजे को देखकर खरबूजा रंग बदलता है
– देखादेखी काम करना।

• खाक डाले चाँद नहीं छिपता
– किसी की निंदा करने से उसका कुछ नहीं बिगड़ता।
• खाल ओढ़ाए सिंह की, स्यार सिंह नहीं होय
– ऊपरी रूप बदलने से गुण अवगुण नहीं बदलता।
• खाली बनिया क्या करे, इस कोठी का धान उस कोठी में धरे
– बेकाम आदमी उल्टे-सीधे काम करता रहता है।
• खिसियानी बिल्ली खंभा नोचे
– अपनी असफलता पर खीझना।
• खुदा की लाठी में आवाज़ नहीं होती
– कोई नहीं जानता की अपने कर्मों का कब और कैसा फल मिलेगा।
• खुदा गंजे को नाखून नहीं देता
– ईश्वर सभी की भलाई का ध्यान रखता है।
• खुदा देता है तो छप्पर फाड़ कर देता है
– भाग्यशाली होना।
• खुशामद से ही आमद है
– खुशामद से कार्य सम्पन्न हो जाते हैं।
• खूँटे के बल बछड़ा कूदे
– दूसरे की शह पाकर ही अकड़ दिखाना।
• खेत खाए गदहा, मार खाए जुलाहा
– किसी के दोष की सजा किसी अन्य को मिलना।
• खेती अपन सेती
– दूसरऑ के भरोसे खेती नहीं की जा सकती।
• खेल-खिलाड़ी का, पैसा मदारी का
– मेहनत किसी की लाभ किसी और का।
• खोदा पहाड़ निकली चुहिया
– परिश्रम का कुछ भी फल न मिलना।
• गंगा गए तो गंगादास, यमुना गए यमुनादास
– एक मत पर स्थिर न रहना।
• गंजेडी यार किसके दम लगाया खिसके
– स्वार्थी आदमी स्वार्थ सिद्ध होते ही मुँह फेर लेता है।
• गधा धोने से बछड़ा नहीं हो जाता
– स्वभाव नहीं बदलता।
• गधा भी कहीं घोड़ा बन सकता है
– बुरा आदमी कभी भला नहीं बन सकता।
• गई माँगने पूत, खो आई भरतार
– थोड़े लाभ के चक्कर में भारी नुकसान कर लेना।
• गर्व का सिर नीचा
– घमंडी आदमी का घमंड चूर हो ही जाता है।
• गरीब की लुगाई सब की भौजाई
– गरीब आदमी से सब लाभ उठाना चाहते हैं।
• गरीबी तेरे तीन नाम- झूठा, पाजी, बेईमान
– गरीब का सवत्र अपमान होता रहता है।
• गरीबऑ ने रोज़े रखे तो दिन ही बड़े हो गए
– गरीब की किस्मत ही बुरी होती है।
• गवाह चुस्त, मुद्दई सुस्त
– जिसका काम है वह तो आलस से करे, दूसरे फुर्ती दिखाएं।
• गाँठ का पूरा, आँख का अंधा
– मालदार असामी।
• गीदड़ की मौत आती है तो वह गाँव की ओर भागता है
– विपत्ति में बुद्धि काम नहीं करती।
• गुड़ खाए, गुलगुलऑ से परहेज
– झूठ और ढऑग रचना।
• गुड़ दिए मरे तो जहर क्यऑ दें
– काम प्रेम से निकल सके तो सख्ती न करें।
• गुड़ न दें, पर गुड़ सी बात तो करें
– कुछ न दें पर मीठे बोल तो बोलें।
• गुरु-गुड़ ही रहे, चेले शक्कर हो गए
– छोटऑ का बड़ऑ से आगे बढ़ जाना।
• गूदड़ में लाल नहीं छिपता
– गुण स्वयं ही झलकता है।
• गेहूँ के साथ घुन भी पिसता है
– दोषी के साथ निर्दोष भी मारा जाता है।
• गोद में बैठकर आँख में उँगली करना/गोदी में बैठकर दाढ़ी नोचना
– भलाई के बदले बुराई करना।
• गोद में छोरा, शहर में ढिंढोरा
– पास की वस्तु नजर न आना।
• घड़ी भर में घर जले, अढ़ाई घड़ी भद्रा
– समय पहचान कर ही कार्य करना चाहिए।
• घड़ी में तोला, घड़ी में माशा
– चंचल विचारऑ वाला।
• घर आए कुत्ते को भी नहीं निकालते
– घर में आने वाले को मान देना चाहिए।
• घर का जोगी जोगड़ा, आन गाँव का सिद्ध
– अपने ही घर में अपनी कीमत नहीं होती।
• घर का भेदी लंका ढाए

– आपसी फूट का परिणाम बुरा होता है।
• घर की मुर्गी दाल बराबर
– अपनी चीज़ या अपने आदमी की कदर नहीं।
• घर खीर तो बाहर खीर
– समृद्धि सम्मान प्रदान करती है।
• घर में नहीं दाने, अम्मा चली भुनाने
– कुछ न होने पर भी होने का दिखावा करना।
• घायल की गति घायल जाने
– कष्ट भोगने वाला ही वही दूसरअँ के कष्ट को समझ सकता है।
• घी गिरा खिचड़ी में
– लापरवाही के बावजूद भी वस्तु का सदुपयोग होना।
• घी सँवारे काम बड़ी बहू का नाम
– साधन पर्याप्त हअँ तो काम करने वाले को यश भी मिलता है।
• घोड़ा घास से दोस्ती करेगा तो खाएगा क्या?
– व्यापार में रियायत नहीं की जाती।
• घोड़े की दुम बढ़ेगी तो अपने ही मक्खियाँ उड़ाएगा
– उन्नति करके आदमी अपना ही भला करता है।
• घोड़े को लात, आदमी को बात
– सामने वाले का स्वभाव पहचान कर उचित व्यहार करना।
• चक्की में कौर डालोगे तो चून पाओगे
– कुछ पाने के लिए कुछ लगाना ही पड़ता है।
• चट मँगनी पट ब्याह
– त्वरित गति से कार्य होना।
• चढ़ जा बेटा सूली पर, भगवान भला करेंगे
– बिना सोचे विचारे खतरा मोल लेना।
• चने के साथ कहीं घुन न पिस जाए
– दोषी के साथ कहीं निर्दोष न मारा जाए।
• चमगादड़अँ के घर मेहमान आए, हम भी लटके तुम भी लटको
– गरीब आदमी क्या आवभगत करेगा।
• चमड़ी जाए पर दमड़ी न जाए
– महा कंजूस।
• चमार चमड़े का यार
– स्वार्थी व्यक्ति।
• चरसी यार किसके दम लगाया खिसके
– स्वार्थी व्यक्ति स्वार्थ सिद्ध होते ही मुँह फेर लेता है।
• चलती का नाम गाड़ी
– कार्य चलते रहना चाहिए।
• चाँद को भी ग्रहण लगता है
– भले आदमी की भी बदनामी हो जाती है।
• चाकरी में न करी क्या?
– नौकरी में मालिक की आज्ञा अवहेलना नहीं की जा सकती।
• चार दिन की चाँदनी फिर अँधियारी रात
– सुख थोड़े ही दिन का होता है।
• चिकना मुँह पेट खाली
– देखने में अच्छा-भला भीतर से दु:खी।
• चिकने घड़े पर पानी नहीं ठहरता
– निर्लज्ज़ आदमी पर किसी बात का असर नहीं पड़ता।
• चिकने मुँह को सब चूमते हैं
– समृद्ध व्यक्ति के सभी यार होते हैं।
• चिड़िया की जान गई, खाने वाले को मजा न आया
– भारी काम करने पर भी सराहना न मिलना।
• चित भी मेरी पट भी मेरी अंटी मेरे बाबा का
– हर हालत में अपना ही लाभ देखना।
• चिराग तले अँधेरा
– पास की चीज़ दिखाई न पड़ना।
• चिराग में बत्ती और आँख में पट्टी
– शाम होते ही सोने लगना।
• चींटी की मौत आती है तो उसके पर निकलने लगते हैं
– घमंड करने से नाश होता है।
• चील के घोंसले में मांस कहाँ
– दरिद्र व्यक्ति क्या बचत कर सकता है?
• चुड़ैल पर दिल आ जाए तो वह भी परी है
– पसंद आ जाए तो बुरी वस्तु भी अच्छी ही लगती है।
• चुल्लू भर पानी में डूब मरना
– शर्म से डूब जाना।
• चुल्लू-चुल्लू साधेगा, दुआरे हाथी बाँधेगा
– थोड़ा-थोड़ा जमा करके अमीर बना जा सकता है।
• चूल्हे की न चक्की की
– किसी काम न होना।
• चूहे का बच्चा बिल ही खोदता है
– स्वभाव नहीं बदलता।
• चूहे के चाम से कहीं नगाड़े मढ़े जाते हैं
– अपर्याप्त।
• चूहअँ की मौत बिल्ली का खेल
– दूसरे को कष्ट देकर मजा लेना।

• चोट्टी कुतिया जलेबियॲ की रखवाली
– चोर को रक्षा करने के कार्य पर लगाना।
• चोर के पैर नहीं होते
– दोषी व्यक्ति स्वयं फँसता है।
• चोर-चोर मौसेरे भाई
– एक जैसे बदमाशॲ का मेल हो ही जाता है।
• चोर-चोरी से जाए, हेरा-फेरी से न जाए
– दुष्ट आदमी से पूरी तरह से दुष्टता नहीं छूटती।
• चोर लाठी दो जने और हम बाप पूत अकेले
– शक्तिशाली आदमी से दो व्यक्ति भी हार जाते हैं।
• चोर को कहे चोरी कर और साह से कहे जागते रहो
– दो पक्षॲ को लड़ाने वाला।
• चोरी और सीना जोरी
– गलत काम करके भी अकड़ दिखाना।
• चोरी का धन मोरी में
– हराम की कमाई बेकार जाती है।
• चौबे गए छब्बे बनने, दूबे ही रह गए
– अधिक लालच करके अपना सब कुछ गवाँ देना।
• छछूँदर के सिर में चमेली का तेल
– अयोग्य के पास अच्छी चीज होना।
• छलनी कहे सूई से तेरे पेट में छेद
– अपने अवगुणॲ को न देखकर दूसरॲ की आलोचना करना।
• छाज (सूप) बोले तो बोले, छलनी भी बोले जिसमें हजार छेद
– ज्ञानी के समक्ष अज्ञानी का बोलना।
• छीके कोई, नाक कटावे कोई
– किसी के दोष का फल किसी दूसरे के द्वारा भोगना।
• छुरी खरबूजे पर गिरे या खरबूजा छुरी पर
– हर तरफ से हानि ही हानि होना।
• छोटा मुँह बड़ी बात
– अपनी योग्यता से बढ़कर बात करना।
• छोटे मियाँ तो छोटे मियाँ, बड़े मियाँ सुभान अल्लाह
– छोटे के अवगुणॲ से बड़े के अवगुण अधिक होना।
• जंगल में मोर नाचा किसने देखा
– कद्र न करने वालॲ के समक्ष योग्यता प्रदर्शन।
• जड़ काटते जाएं, पानी देते जाएं
– भीतर से शत्रु ऊपर से मित्र।
• जने-जने की लकड़ी, एक जने का बोझ
– अकेला व्यक्ति काम पूरा नहीं कर सकता किन्तु सब मिल काम करें तो काम पूरा हो जाता है।
• जब चने थे दाँत न थे, जब दाँत भये तब चने नहीं
– कभी वस्तु है तो उसका भोग करने वाला नहीं और कभी भोग करने वाला है तो वस्तु नहीं।
• जब तक जीना तब तक सीना
– आदमी को मृत्युपर्यन्त काम करना ही पड़ता है।
• जब तक साँस तब तक आस
– अंत समय तक आशा बनी रहती है।
• जबरदस्ती का ठेंगा सिर पर
– जबरदस्त आदमी दबाव डाल कर काम लेता है।
• जबरा मारे रोने न दे
– जबरदस्त आदमी का अत्याचार चुपचाप सहन करना पड़ता है।
• जबान को लगाम चाहिए
– सोच-समझकर बोलना चाहिए।
• ज़बान ही हाथी चढ़ाए, ज़बान ही सिर कटाए
– मीठी बोली से आदर और कड़वी बोली से निरादर होता है।
• जर का जोर पूरा है, और सब अधूरा है
– धन में सबसे अधिक शक्ति है।
• जर है तो नर नहीं तो खंडहर
– पैसे से ही आदमी का सम्मान है।
• जल में रहकर मगर से बैर
– जहाँ रहना हो वहाँ के शक्तिशाली व्यक्ति से बैर ठीक नहीं होता।
• जस दूल्हा तस बाराती
– स्वभाव के अनुसार ही मित्रता होती है।
• जहँ जहँ पैर पड़े संतन के, तहँ तहँ बंटाधार
– अभागा व्यक्ति जहाँ भी जाता है बुरा होता है।
• जहाँ गुड़ होगा, वहीं मक्खियाँ हऑंगी
– धन प्राप्त होने पर खुशामदी अपने आप मिल जाते हैं।
• जहाँ चार बर्तन हऑंगे, वहाँ खटकेंगे भी
– सभी का मत एक जैसा नहीं हो सकता।
• जहाँ चाह है वहाँ राह है
– काम के प्रति लगन हो तो काम करने का रास्ता निकल ही आता है।
• जहाँ देखे तवा परात, वहाँ गुजारे सारी रात
– जहाँ कुछ प्राप्ति की आशा दिखे वहीं जम जाना।
• जहाँ न पहुँचे रवि वहाँ पहुँचे कवि
– कवि की कल्पना की पहुँच सर्वत्र होती है।
• जहाँ फूल वहाँ काँटा
– अच्छाई के साथ बुराई भी होती ही है।
• जहाँ मुर्गा नहीं होता, क्या वहाँ सवेरा नहीं होता

– किसी के बिना किसी का काम रूकता नहीं है।
• जाके पैर न फटी बिवाई, सो क्या जाने पीर पराई
– दु:ख को भुक्तभोगी ही जानता है।
• जागेगा सो पावेगा, सोवेगा सो खोएगा
– हमेशा सतर्क रहना चाहिए।
• जादू वह जो सिर पर चढ़कर बोले
– अत्यन्त प्रभावशाली होना।
• जान मारे बनिया पहचान मारे चोर
– बनिया और चोर जान पहचान वालअॅ को ठगते हैं।
• जाए लाख, रहे साख
– धन भले ही चला जाए, इज्जत बचनी चाहिए।
• जितना गुड़ डालोगे, उतना ही मीठा होगा
– जितना अधिक लगाओगे उतना ही अच्छा पाओगे।
• जितनी चादर हो, उतने ही पैर पसारो
– आमदनी के हिसाब से खर्च करो।
• जितने मुँह उतनी बातें
– अस्पष्ट होना।
• जिन खोजा तिन पाइयाँ, गहरे पानी पैठ
– परिश्रम करने वाले को ही लाभ होता है।
• जिस थाली में खाना, उसी में छेद करना
– जो उपकार करे, उसका ही अहित करना।
• जिसका काम उसी को साजै
– जो काम जिसका है वहीं उसे ठीक तरह से कर सकता है।
• जिसका खाइए उसका गाइए
– जिससे लाभ हो उसी का पक्ष लो।
• जिसका जूता उसी का सिर
– दुश्मन को दुश्मन के ही हथियार से मारना।
• जिसकी लाठी उसकी भैंस
– शक्तिशाली ही समर्थ होता है।
• जिसके हाथ डोई, उसका सब कोई
– धनी आदमी के सभी मित्र होते हैं।
• जिसको पिया चाहे, वहीं सुहागिन
– समर्थ व्यक्ति जिसका चाहे कल्याण कर सकता है।
• जर जाए, घी न जाए
– महाकृपण।
• जीती मक्खी नहीं निगली जाती
– जानते बूझते गलत काम नहीं किया जा सकता।
• जीभ भी जली और स्वाद भी न आया
– कष्ट सहकर भी उद्देश्य पूर्ति न होना।
• जूठा खाए मीठे के लालच
– लाभ के लालच में नीच काम करना।
• जैसा करोगे वैसा भरोगे
– जैसा काम करोगे वैसा ही फल मिलेगा।
• जैसा बोवोगे वैसा काटोगे
– जैसा काम करोगे वैसा ही फल मिलेगा।
• जैसा मुँह वैसा थप्पड़
– जो जिसके योग्य हो उसको वही मिलता है।
• जैसा राजा वैसी प्रजा
– राजा नेक तो प्रजा भी नेक, राजा बद तो प्रजा भी बद।
• जैसी करनी वैसी भरनी
– जैसा काम करोगे वैसा ही फल मिलेगा।
• जैसे तेरी बाँसुरी, वैसे मेरे गीत
– गुण के अनुसार ही प्राप्ति होती है।
• जैसे कंता घर रहे वैसे रहे परदेश
– निकम्मा आदमी घर में रहे या बाहर कोई अंतर नहीं।
• जैसे नागनाथ वैसे साँपनाथ
– दुष्ट लोग एक जैसे ही होते हैं।।
• जो गरजते हैं वो बरसते नहीं
– डींग हाँकने वाले काम के नहीं होते हैं।
• जोगी का बेटा खेलेगा तो साँप से
– बाप का प्रभाव बेटे पर पड़ता है।
• जो गुड़ खाए सो कान छिदाए
– लाभ पाने वाले को कष्ट सहना ही पड़ता है।
• जो तोको काँटा बुवे ताहि बोइ तू फूल
– बुराई का बदला भी भलाई से दो।
• जो बोले सअॅ घी को जाए
– बड़बोलेपन से हानी ही होती है।
• जो हाँडी में होगा वह थाली में आएगा
– जो मन मेँ है वह प्रकट होगा ही।
• ज्यअॅ-ज्यअॅ भीजे कामरी त्यअॅ-त्यअॅ भारी होय
(1) पद के अनुसार जिम्मेदारियाँ भी बढ़ती जाती हैं।
(2) उधारी को छूटते ही रहना चाहिए अन्यथा ब्याज बढ़ते ही जाता है।
• झूठ के पाँव नहीं होते
– झूठा आदमी अपनी बात पर खरा नहीं उतरता।
• झोपड़ी में रहें, महलअॅ के ख्वाब देखें

– अपनी सामर्थ्य से बढ़कर चाहना।
• टके का सब खेल है
– धन सब कुछ करता है।
• ठंडा करके खाओ
– धीरज से काम करो।
• ठंडा लोहा गरम लोहे को काट देता है
– शान्त व्याक्ति क्रोधी को झुका देता है।
• ठोक बजा ले चीज, ठोक बजा दे दाम
– अच्छी वस्तु का अच्छा दाम।
• ठोकर लगे तब आँख खुले
– अक्ल अनुभव से आती है।
• डण्डा सब का पीर
– सख्ती करने से लोग काबू में आते हैं।
• डायन को दामाद प्यारा
– खराब लोगअॅ को भी अपने प्यारे होते हैं।
• डूबते को तिनके का सहारा
– विपत्ति में थोड़ी सी सहायता भी काफी होती है।
• ढाक के तीन पात
– अपनी बात पर अड़े रहना।
• ढोल के भीतर पोल
– झूठा दिखावा करने वाला।
• तख्त या तख्ता
– या तो उद्देश्य की प्राप्ति हो या स्वयं मिट जाएँ।
• तबेले की बला बंदर के सिर
– अपना अपराध दूसरे के सिर मढ़ना।
• तन को कपड़ा न पेट को रोटी
– अत्यन्त दरिद्र।
• तलवार का खेत हरा नहीं होता
– अत्याचार का फल अच्छा नहीं होता।
• ताली दोनअॅ हाथअॅ से बजती है
– केवल एक पक्ष होने से लड़ाई नहीं हो सकती।
• तिरिया बिन तो नर है ऐसा, राह बटाऊ होवे जैसा
– स्त्री के बिना पुरूष अधूरा होता है।
• तीन बुलाए तेरह आए, दे दाल में पानी
– समय आ पड़े तो साधन निकाल लेना पड़ता है।
• तीन में न तेरह में
– निष्पक्ष होना।
• तेरी करनी तेरे आगे, मेरी करनी मेरे आगे
– सबको अपने-अपने कर्म का फल भुगतना ही पड़ता है।
• तुम्हारे मुँह में घी शक्कर
– शुभ सन्देश।
• तुरत दान महाकल्याण
– काम को तत्काल निबटाना।
• तू डाल-डाल मैं पात-पात
– चालाक के साथ चालाकी चलना।
• तेल तिलअॅ से ही निकलता है
– सामर्थ्यवान व्यक्ति से ही प्राप्ति होती है।
• तेल देखो तेल की धार देखो
– धैर्य से काम लेना।
• तेल न मिठाई, चूल्हे धरी कड़ाही
– दिखावा करना।
• तेली का तेल जले, मशालची की छाती फटे
– दान कोई करे कुढ़न दूसरे को हो।
• तेली के बैल को घर ही पचास कोस
– घर में रहने पर भी अक्ल का अंधा कष्ट ही भोगता है।
• तेली खसम किया, फिर भी रूखा खाया
– सामर्थ्यतवान की शरण में रहकर भी दु:ख उठाना।
• थका ऊँट सराय ताकता
– परिश्रम के पश्चात् विश्राम आवश्यक होता है।
• थूक से सत्तू नहीं सनते
– कम सामग्री से काम पूरा नहीं हो पाता।
• थोथा चना बाजे घना
– मूर्ख अपनी बातअॅ से अपनी मूर्खता को प्रकट कर ही देता है।
• दमड़ी की बुढिया ढाई टका सिर मुँड़ाई
– मामूली वस्तु के रख रखाव के लिए अधिक खर्च करना।
• दबाने पर चींटी भी चोट करती है
– दुःख पहुँचाने पर निर्बल भी वार करता है।
• दमड़ी की हाँड़ी गई, कुत्ते की जात पहचानी गई
– असलियत जानने के लिए थोड़ी सी हानि सह लेना।
• दर्जी की सुई, कभी धागे में कभी टाट में
– परिस्थिति के अनुसार कार्य।
• दलाल का दिवाला क्या, मस्जिद में ताला क्या
– निर्धन को लुटने का डर नहीं होता।
• दाग लगाए लँगोटिया यार
– अपनअॅ से धोखा खाना।

• दाता दे भंडारी का पेट फटे
– दान कोई करे कुढ़न दूसरे को हो।
• दादा कहने से बनिया गुड़ देता है
– मीठे बोल बोलने से काम बन जाता है।
• दान के बछिया के दाँत नहीं देखे जाते
– मुफ्त में मिली वस्तु के गुण-अवगुण नहीं परखे जाते।
• दाने-दाने पर लिखा है खाने वाले का नाम
– हक की वस्तु अवश्य ही मिलती है।
• दाम सँवारे सारे काम
– पैसा सब काम करता है।
• दाल में काला होना
– गड़बड़ होना।
• दाल-भात में मसूरचंद
– जबरदस्ती दखल देने वाला।
• दाल में नमक, सच में झूठ
– थोड़ा-सा झूठ बोलना गलत नहीं होता।
• दिनन के फेर से सुमेरू होत माटी को
– बुरे समय में सोना भी मिट्टी हो जाता है।
• दिल्ली अभी दूर है
– सफलता दूर है।
• दीवार के भी कान होते हैं
– सतर्क रहना चाहिए।
• दुधारू गाय की लात सहनी पड़ती है
– जिससे लाभ होता है, उसकी ध˙स भी सहनी पड़ती है।
• दुनिया का मुँह किसने रोका है
– बोलने वालॲ की परवाह नहीं करनी चाहिए।
• दुविधा में दोनॲ गए माया मिली न राम
– दुविधा में पड़ने से कुछ भी नहीं मिलता।
• दूल्हा को पत्तल नहीं, बजनिये को थाल
– बेतरतीब काम करना।
• दूध का दूध पानी का पानी
– उचित न्याय होना।
• दूध पिलाकर साँप पोसना
– शत्रु का उपकार करना।
• दूर के ढोल सुहावने
– देख परख कर ही सही गलत का ज्ञान करना।
• दूसरे की पत्तल लंबा-लंबा भात
– दूसरे की वस्तु अच्छी लगती है।
• देसी कुतिया विलायती बोली
– दिखावा करना।
• देह धरे के दण्ड हैं
– शरीर है तो कष्ट भी होगा।
• दोनॲ हाथॲ में लड्डू
– सभी प्रकार से लाभ ही लाभ।
• दो लड़े तीसरा ले उड़े
– दो की लड़ाई में तीसरे का लाभ होना।
• धनवंती को काँटा लगा दौड़े लोग हजार
– धनी आदमी को थोड़ा-सा भी कष्ट हो तो बहुत लोग उनकी सहायता को आ जाते हैं।
• धन्ना सेठ के नाती बने हैं
– अपने को अमीर समझना।
• धर्म छोड़ धन कौन खाए
– धर्म विरूद्ध कमाई सुख नहीं देती।
• धूप में बाल सफ़ेद नहीं किए हैं
– अनुभवी होना।
• धोबी का गधा घर का ना घाट का
– कहीं भी इज्जत न पाना।
• धोबी पर बस न चला तो गधे के कान उमेठे
– शक्तिशाली पर आने वाले क्रोध को निर्बल पर उतारना।
• धोबी के घर पड़े चोर, लुटे कोई और
– धोबी के घर चोरी होने पर कपड़े दूसरॲ के ही लुटते हैं।
• धोबी रोवे धुलाई को, मियाँ रोवे कपड़े को
– सब अपने ही नुकसान की बात करते हैं।
• नंगा बड़ा परमेश्वर से
– निर्लज्ज से सब डरते हैं।
• नंगा क्या नहाएगा क्या निचोड़ेगा
– अत्यन्त निर्धन होना।
• नंगे से खुदा डरे
– निर्लज्ज से भगवान भी डरते हैं।
• न अंधे को न्योता देते न दो जने आते
– गलत फैसला करके पछताना।
• न इधर के रहे, न उधर के रहे
– दुविधा में रहने से हानि ही होती है।
• नकटा बूचा सबसे ऊँचा
– निर्लज्ज से सब डरते हैं इसलिए वह सबसे ऊँचा होता है।
• नक्कारखाने में तूती की आवाज

– महत्व न मिलना।
• नदी किनारे रूखड़ा जब-तब होय विनाश
– नदी के किनारे के वृक्ष का कभी भी नाश हो सकता है।
• न नौ मन तेल होगा न राधा नाचेगी
– ऐसी परिस्थिति जिसमें काम न हो सके/असम्भव शर्त लगाना।
• नमाज़ छुड़ाने गए थे, रोज़े गले पड़े
– छोटी मुसीबत से छुटकारा पाने के बदले बड़ी मुसीबत में पड़ना।
• नया नौ दिन पुराना सौ दिन
– साधारण ज्ञान होने से अनुभव होने का अधिक महत्व होता है।
• न रहेगा बाँस, न बजेगी बाँसुरी
– ऐसी परिस्थिति जिसमें काम न हो सके।
• नाई की बरात में सब ही ठाकुर
– सभी का अगुवा बनना।
• नाक कटी पर घी तो चाटा
– लाभ के लिए निर्लज्ज हो जाना।
• नाच न जाने आँगन टेढ़ा
– बहाना करके अपना दोष छिपाना।
• नानी के आगे ननिहाल की बातें
– बुद्धिमान को सीख देना।
• नानी के टुकड़े खावे, दादी का पोता कहावे
– खाना किसी का, गाना किसी का।
• नानी क्वाँरी मर गई, नाती के नौ-नौ ब्याह
– झूठी बड़ाई।
• नाम बड़े दर्शन छोटे
– झूठा दिखावा।
• नाम बढ़ावे दाम
– किसी चीज का नाम हो जाने से उसकी कीमत बढ़ जाती है।
• नामी चोर मारा जाए, नामी शाह कमाए खाए
– बदनामी से बुरा और नेकनामी से भला होता है।
• नीचे की साँस नीचे, ऊपर की साँस ऊपर
– अत्यधिक घबराहट की स्थिति।
• नीचे से जड़ काटना, ऊपर से पानी देना
– ऊपर से मित्र, भीतर से शत्रु।
• नीम हकीम खतरा-ए-जान
– अनुभवहीन व्याक्ति के हाथअॅ काम बिगड़ सकता है।
• नेकी और पूछ-पूछ
– भलाई का काम।
• नौ दिन चले अढ़ाई कोस
– अत्यन्त मंद गति से कार्य करना।
• नौ नकद, न तेरह उधार
– नकद का काम उधार के काम से अच्छा।
• नौ सौ चूहे खा के बिल्ली हज को चली
– जीवन भर कुकर्म करके अन्त में भला बनना।
• पंच कहे बिल्ली तो बिल्ली ही सही
– सबकी राय में राय मिलाना।
• पंचअॅ का कहना सिर माथे पर, पर नाला वहीं रहेगा
– दूसरअॅ की सुनकर भी अपने मन की करना।
• पकाई खीर पर हो गया दलिया
– दुर्भाग्य।
• पगड़ी रख, घी चख
– मान-सम्मान से ही जीवन का आनंद है।
• पढ़े तो हैं पर गुने नहीं
– पढ़-लिखकर भी अनुभवहीन।
• पढ़े फारसी बेचे तेल
– गुणवान होने पर भी दुर्भाग्यवश छोटा काम मिलना।
• पत्थर को जअॅक नहीं लगती
– निर्दयी आदमी दयावान नहीं बन सकता।
• पत्थर मोम नहीं होता
– निर्दयी आदमी दयावान नहीं बन सकता।
• पराया घर थूकने का भी डर
– दूसरे के घर में संकोच रहता है।
• पराये धन पर लक्ष्मीनारायण
– दूसरे के धन पर गुलछर्रँ उड़ाना।
• पहले तोलो, फिर बोलो
– सोच-समझकर मुँह खोलना चाहिए।
• पाँच पंच मिल कीजे काजा, हारे-जीते कुछ नहीं लाजा
– मिलकर काम करने पर हार-जीत की जिम्मेदारी एक पर नहीं आती।
• पाँचअॅ उँगलियाँ घी में
– चौतरफा लाभ।
• पाँचअॅ उँगलियाँ बराबर नहीं होतीं
– सब आदमी एक जैसे नहीं होते।
• पागलअॅ के क्या सींग होते हैं
– पागल भी साधारण मनुष्य होता है।
• पानी केरा बुलबुला अस मानुस के जात
– जीवन नश्वर है।

• पानी पीकर जात पूछते हो
– काम करने के बाद उसके अच्छे-बुरे पहलुओं पर विचार करना।
• पाप का घड़ा डूब कर रहता है
– पाप जब बढ़ जाता है तब विनाश होता है।
• पिया गए परदेश, अब डर काहे का
– जब कोई निगरानी करने वाला न हो, तो मौज उड़ाना।
• पीर बावर्ची भिस्ती खर
– किसी एक के द्वारा ही सभी तरह के काम करना।
• पूत के पाँव पालने में पहचाने जाते हैं
– वर्तमान लक्षणअें से भविष्य का अनुमान लग जाता है।
• पूत सपूत तो का धन संचय, पूत कपूत तो का धन संचय
– सपूत स्वयं कमा लेगा, कपूत संचित धन को उड़ा देगा।
• पूरब जाओ या पच्छिम, वही करम के लच्छन
– स्थान बदलने से भाग्य और स्वभाव नहीं बदलता।
• पेड़ फल से जाना जाता है
– कर्म का महत्व उसके परिणाम से होता है।
• प्यासा कुएँ के पास जाता है
– बिना परिश्रम सफलता नहीं मिलती।
• फिसल पड़े तो हर गंगे
– बहाना करके अपना दोष छिपाना।
• बंदर क्या जाने अदरक का स्वाद
– ज्ञान न होना।
• बकरे की जान गई खाने वाले को मज़ा नहीँ आया
– भारी काम करने पर भी सराहना न मिलना।
• बड़ी मछली छोटी मछली को खा जाती है
– शक्तिशाली व्यक्ति निर्बल को दबा लेता है।
• बड़े बरतन का खुरचन भी बहुत है
– जहाँ बहुत होता है वहाँ घटते-घटते भी काफी रह जाता है।
• बड़े बोल का सिर नीचा
– घमंड करने वाले को नीचा देखना पड़ता है।
• बनिक पुत्र जाने कहा गढ़ लेवे की बात
– छोटा आदमी बड़ा काम नहीं कर सकता।
• बनी के सब यार हैं
– अच्छे दिनअें में सभी दोस्त बनते हैं।
• बरतन से बरतन खटकता ही है
– जहाँ चार लोग होते हैं वहाँ कभी अनबन हो सकती है।
• बहती गंगा में हाथ धोना
– मौके का लाभ उठाना।
• बाँझ का जाने प्रसव की पीड़ा
– पीड़ा को सहकर ही समझा जा सकता है।
• बाड़ ही जब खेत को खाए तो रखवाली कौन करे
– रक्षक का भक्षक हो जाना।
• बाप भला न भइया, सब से भला रूपइया
– धन ही सबसे बड़ा होता है।
• बाप न मारे मेढकी, बेटा तीरंदाज़
– छोटे का बड़े से बढ़ जाना।
• बाप से बैर, पूत से सगाई
– पिता से दुश्मनी और पुत्र से लगाव।
• बारह गाँव का चौधरी अस्सी गाँव का राव, अपने काम न आवे तो ऐसी-तैसी में जाव
– बड़ा होकर यदि किसी के काम न आए, तो बड़प्पन व्यर्थ है।
• बारह बरस पीछे घूरे के भी दिन फिरते हैं
– एक न एक दिन अच्छे दिन आ ही जाते हैं।
• बासी कढ़ी में उबाल नहीं आता
– काम करने के लिए शक्ति का होना आवश्यक होता है।
• बासी बचे न कुत्ता खाय
– जरूरत के अनुसार ही सामान बनाना।
• बिंध गया सो मोती, रह गया सो सीप
– जो वस्तु काम आ जाए वही अच्छी।
• बिच्छू का मंतर न जाने, साँप के बिल में हाथ डाले
– मूर्खतापूर्ण कार्य करना।
• बिना रोए तो माँ भी दूध नहीं पिलाती
– बिना यत्न किए कुछ भी नहीं मिलता।
• बिल्ली और दूध की रखवाली?
– भक्षक रक्षक नहीं हो सकता।
• बिल्ली के सपने में चूहा
– जरूरतमंद को सपने में भी जरूरत की ही वस्तु दिखाई देती है।
• बिल्ली गई चूहअें की बन आयी
– डर खत्म होते ही मौज मनाना।
• बीमार की रात पहाड़ बराबर
– खराब समय मुश्किल से कटता है।
• बुड्ढी घोड़ी लाल लगाम
– वय के हिसाब से ही काम करना चाहिए।
• बुढ़ापे में मिट्टी खराब
– बुढ़ापे में इज्जत में बट्टा लगना।
• बुढिया मरी तो आगरा तो देखा

– प्रत्येक घटना के दो पहलू होते हैं– अच्छा और बुरा।
• बूँद-बूँद से घड़ा भरता है
– थोड़ा-थोड़ा जमा करने से धन का संचय होता है।
• बूढ़े तोते भी कही पढ़ते हैं
– बुढ़ापे में कुछ सीखना मुश्किल होता है।
• बिल्ली के भागअें छींका टूटा
– सौभाग्य।
• बोए पेड़ बबूल के आम कहाँ से होय
– जैसा कर्म करोगे वैसा ही फल मिलेगा।
• भरी गगरिया चुपके जाय
– ज्ञानी आदमी गंभीर होता है।
• भरे पेट शक्कर खारी
– समय के अनुसार महत्व बदलता है।
• भले का भला
– भलाई का बदला भलाई में मिलता है।
• भलो भयो मेरी मटकी फूटी मैं दही बेचने से छूटी
– काम न करने का बहाना मिल जाना।
• भलो भयो मेरी माला टूटी राम जपन की किल्लत छूटी
– काम न करने का बहाना मिल जाना।
• भागते भूत की लँगोटी ही सही
– कुछ न मिलने से कुछ मिलना अच्छा है।
• भीख माँगे और आँख दिखाए
– दयनीय होकर भी अकड़ दिखाना।
• भूख लगी तो घर की सूझी
– जरूरत पड़ने पर अपनअें की याद आती है।
• भूखे भजन न होय गोपाला
– भूख लगी हो तो भोजन के अतिरिक्त कोई अन्य कार्य नहीं सूझता।
• भूल गए राग रंग भूल गई छकड़ी, तीन चीज़ याद रहीं नून तेल लकड़ी
– गृहस्थी के जंजाल में फँसना।
• भैंस के आगे बीन बजे, भैंस खड़ी पगुराय
– मूर्ख के आगे ज्ञान की बात करना बेकार है।
• भ कते कुत्ते को रोटी का टुकड़ा
– जो तंग करे उसको कुछ दे-दिला के चुप करा दो।
• मछली के बच्चे को तैरना कौन सिखाता है
– गुण जन्मजात आते हैं।
• मजनू को लैला का कुत्ता भी प्यारा
– प्रेयसी की हर चीज प्रेमी को प्यारी लगती है।
• मतलबी यार किसके, दम लगाया खिसके
– स्वार्थी व्यक्ति को अपना स्वार्थ साधने से काम रहता है।
• मन के लड्डअें से भूख नहीं मिटती
– इच्छा करने मात्र से ही इच्छापूर्ति नहीं होती।
• मन चंगा तो कठौती में गंगा
– मन की शुद्धता ही वास्तविक शुद्धता है।
• मरज़ बढ़ता गया ज्यअें-ज्यअें इलाज करता गया
– सुधार के बजाय बिगाड़ होना।
• मरता क्या न करता
– मजबूरी में आदमी सब कुछ करना पड़ता है।
• मरी बछिया बांभन के सिर
– व्यर्थ दान।
• मलयागिरि की भीलनी चंदन देत जलाय
– बहुत अधिक नजदीकी होने पर कद्र घट जाती है।
• माँ का पेट कुम्हार का आवा
– संताने सभी एक-सी नहीं होती।
• माँगे हरड़, दे बेहड़ा
– कुछ का कुछ करना।
• मान न मान मैं तेरा मेहमान
– ज़बरदस्ती का मेहमान।
• मानो तो देवता नहीं तो पत्थर
– माने तो आदर, नहीं तो उपेक्षा।
• माया से माया मिले कर-कर लंबे हाथ
– धन ही धन को खींचता है।
• माया बादल की छाया
– धन-दौलत का कोई भरोसा नहीं।
• मार के आगे भूत भागे
– मार से सब डरते हैं।
• मियाँ की जूती मियाँ का सिर
– दुश्मन को दुश्मन के हथियार से मारना।
• मिस्सअें से पेट भरता है किस्सअें से नहीं
– बातअें से पेट नहीं भरता।
• मीठा-मीठा गप, कड़वा-कड़वा थू-थू
– मतलबी होना।
• मुँह में राम बगल में छुरी
– ऊपर से मित्र भीतर से शत्रु।
• मुँह माँगी मौत नहीं मिलती
– अपनी इच्छा से कुछ नहीं होता।

• मुफ्त की शराब काज़ी को भी हलाल
– मुफ्त का माल सभी ले लेते हैं।
• मुल्ला की दौड़ मस्जिद तक
– सीमित दायरा।
• मोरी की ईंट चौबारे पर
– छोटी चीज का बड़े काम में लाना।
• म्याऊँ के ठोर को कौन पकड़े
– कठिन काम कोई नहीं करना चाहता।
• यह मुँह और मसूर की दाल
– औकात का न होना।
• रंग लाती है हिना पत्थर पे घिसने के बाद
– दु:ख झेलकर ही आदमी का अनुभव और सम्मान बढ़ता है।
• रस्सी जल गई पर ऐंठ न गई
– घमण्ड का खत्म न होना।
• राजा के घर मोतियअॅ का अकाल?
– समर्थ को अभाव नहीं होता।
• रानी रूठेगी तो अपना सुहाग लेगी
– रूठने से अपना ही नुकसान होता है।
• राम की माया कहीं धूप कहीं छाया
– कहीं सुख है तो कहीं दु:ख है।
• राम मिलाई जोड़ी, एक अंधा एक कोढ़ी
– बराबर का मेल हो जाना।
• राम राम जपना पराया माल अपना
– ऊपर से भक्त, असल में ठग।
• रोज कुआँ खोदना, रोज पानी पीना
– रोज कमाना रोज खाना।
• रोगी से बैद
– भुक्तभोगी अनुभवी हो जाता है।
• लड़े सिपाही नाम सरदार का
– काम का श्रेय अगुवा को ही मिलता है।
• लड्डू कहे मुँह मीठा नहीं होता
– केवल कहने से काम नहीं बन जाता।
• लातअॅ के भूत बातअॅ से नहीं मानते
– मार खाकर ही काम करने वाला।
• लाल गुदड़ी में नहीं छिपते
– गुण नहीं छिपते।
• लिखे ईसा पढ़े मूसा
– गंदी लिखावट।
• लेना एक न देना दो
– कुछ मतलब न रखना।
• लोहा लोहे को काटता है
– प्रत्येक वस्तु का सदुपयोग होता है।
• वहम की दवा हकीम लुकमान के पास भी नहीं है
– वहम सबसे बुरा रोग है।
• विष को सोने के बरतन में रखने से अमृत नहीं हो जाता
– किसी चीज़ का प्रभाव बदल नहीं सकता।
• शौकीन बुढिया मलमल का लहँगा
– अजीब शौक करना।
• शक्करखोरे को शक्कर मिल ही जाता है
– जुगाड़ कर लेना।
• सकल तीर्थ कर आई तुमड़िया तौ भी न गयी तिताई
– स्वाभाव नहीं बदलता।
• सख़ी से सूम भला जो तुरन्त दे जवाब
– लटका कर रखने वाले से तुरन्त इंकार कर देने वाला अच्छा।
• सच्चा जाय रोता आय, झूठा जाय हँसता आय
– सच्चा दुखी, झूठा सुखी।
• सबेरे का भूला सांझ को घर आ जाए तो भूला नहीं कहलाता
– गलती सुधर जाए तो दोष नहीं कहलाता।
• समय पाइ तरूवर फले केतिक सीखे नीर
– काम अपने समय पर ही होता है।
• समरथ को नहिं दोष गोसाई
– समर्थ आदमी का दोष नहीं देखा जाता।
• ससुराल सुख की सार जो रहे दिना दो चार
– रिश्तेदारी में दो चार दिन ठहरना ही अच्छा होता है।
• सहज पके सो मीठा होय
– धैर्य से किया गया काम सुखकर होता है।
• साँच को आँच नहीं
– सच्चे आदमी को कोई खतरा नहीं होता।
• साँप के मुँह में छछूँदर
– कहावत दुविधा में पड़ना।
• साँप निकलने पर लकीर पीटना
– अवसर बीत जाने पर प्रयास व्यर्थ होता है।
• सारी उम्र भाड़ ही झोंका
– कुछ भी न सीख पाना।
• सारी देग में एक ही चावल टटोला जाता है

– जाँच के लिए थोड़ा-सा नमूना ले लिया जाता है।
• सावन के अंधे को हरा ही हरा सूझता है
– परिस्थिति को न समझना।
• सावन हरे न भादअॅ सूखे
– सदा एक सी दशा।
• सिंह के वंश में उपजा स्यार
– बहादुरअॅ की कायर सन्तान।
• सिर फिरना
– उल्टी-सीधी बातें करना।
• सीधे का मुँह कुत्ता चाटे
– सीधेपन का लोग अनुचित लाभ उठाते हैं।
• सुनते-सुनते कान पकना
– बार-बार सुनकर तंग आ जाना।
• सूत न कपास जुलाहे से लठालठी
– अकारण विवाद।
• सूरज धूल डालने से नहीं छिपता
– गुण नहीं छिपता।
• सूरदास की काली कमरी चढ़े न दूजो रंग
– स्वभाव नहीं बदलता।
• सेर को सवा सेर
– बढ़कर टक्कर देना।
• सौ दिन चोर के, एक दिन साहूकार का
– चोरी एक न एक दिन खुल ही जाती है।
• सौ सुनार की एक लोहार की
– सुनार की हथौड़ी के सौ मार से भी अधिक लुहार के घन का एक मार होता है।
• हज्जाम के आगे सबका सिर झुकता है
– गरज पर सबको झुकना पड़ता है।
• हथेली पर दही नहीं जमता
– कार्य होने में समय लगता है।
• हड्डी खाना आसान पर पचाना मुश्किल
– रिश्वत कभी न कभी पकड़ी ही जाती है।
• हर मर्ज की दवा होती है
– हर बात का उपाय है।
• हराम की कमाई हराम में गँवाई
– बेईमानी का पैसा बुरे कामअॅ में जाता है।
• हवन करते हाथ जलना
– भलाई के बदले कष्ट पाना।
• हल्दी लगे न फिटकरी रंग आए चोखा
– बिना कुछ खर्च किए काम बनाना।
• हाथ सुमरनी पेट/बगल कतरनी
– ऊपर से अच्छा भीतर से बुरा।
• हाथ कंगन को आरसी क्या, पढ़े लिखे को फारसी क्या
– प्रत्यक्ष को प्रमाण की आवश्यकता नहीं।
• हाथी के दाँत खाने के और दिखाने के और
– भीतर और बाहर में अंतर होना।
• हाथी निकल गया दुम रह गई
– थोड़े से के लिए काम अटकना।
• हिजड़े के घर बेटा होना
– असंभव बात।
• हीरे की परख जौहरी जानता है
– गुणवान ही गुणी को पहचान सकता है।
• होनहार बिरवान के होत चीकने पात
– अच्छे गुण आरम्भ में ही दिखाई देने लगते हैं।
• होनी हो सो होय
– जो होनहार है, वह होगा ही।

♦♦♦

« पीछे जायें | आगे पढ़ें »

• सामान्य हिन्दी
♦ होम पेज

प्रस्तुति:–

सामान्य हिन्दी

4. पद–विचार

♦ पद की परिभाषा –

सार्थक वर्ण या वर्णों के समूह को शब्द कहा जाता है। शब्द साभिप्राय होते हैं। जब कोई सार्थक शब्द वाक्य में प्रयुक्त होता है तब उसे 'पद' कहते हैं। व्याकरण के नियमों के अनुसार विभक्ति, वचन, लिँग, काल आदि की योग्यता रखने वाला वर्णों का समूह 'पद' कहलाता है। जैसे– राम विद्यालय जायेगा। यह वाक्य 'राम', 'विद्यालय' और 'जायेगा' तीन पदों से बना है।

♦ पद–भेद :

हिन्दी में पद के पाँच भेद या प्रकार माने गये हैं –
(1) संज्ञा (2) सर्वनाम (3) क्रिया (4) विशेषण (5) अव्यय।

1. संज्ञा

'संज्ञा' (सम्+ज्ञा) शब्द का अर्थ है ठीक ज्ञान कराने वाला। अतः "वह शब्द जो किसी स्थान, वस्तु, प्राणी, व्यक्ति, गुण, भाव आदि के नाम का ज्ञान कराता है, संज्ञा कहलाता है।"
उदाहरणार्थ –
• स्थान—भारत, दिल्ली, जयपुर, नगर, गाँव, गली, मोहल्ला।
• वस्तुएँ—पंखा, पुस्तक, मेज, दूध, मिठाई।
• प्राणी—गाय, चूहा, तितली, पक्षी, मछली, बिल्ली।
• व्यक्ति—राम, श्याम, कृष्ण, महेश, सुरेश।
• गुण, अवस्था या भाव—बचपन, बुढ़ापा, मिठास, सर्दी, सौन्दर्य, अपनत्व।

♦ संज्ञा के भेद –

हिन्दी भाषा में संज्ञा के मुख्य रूप से तीन भेद ही माने गये हैं—(1)व्यक्तिवाचक संज्ञा (2) जातिवाचक संज्ञा (3) भाववाचक संज्ञा। द्रव्यवाचक और समूहवाचक संज्ञा शब्दों को जातिवाचक संज्ञा ही माना जाता है।

1. व्यक्तिवाचक संज्ञा –

जिन संज्ञा शब्दों से किसी एक ही व्यक्ति, वस्तु या स्थान विशेष का पता चलता है, उन शब्दों को व्यक्तिवाचक संज्ञा कहते हैं। जैसे –
• व्यक्तियों के नाम—राम, श्याम, मोहन, कमला, कविता, सुशीला, शबनम आदि।
• दिशाओं के नाम—उत्तर, दक्षिण, पूर्व, पश्चिम, नैऋत्य, आग्नेय आदि।
• देशों के नाम—भारत, पाकिस्तान, चीन, जापान, नेपाल आदि।
• नदियों के नाम—गंगा, यमुना, कृष्णा, कावेरी आदि।
• सागरों के नाम—अरब सागर, हिन्द महासागर, लाल सागर आदि।
• पर्वतों के नाम—हिमालय, सतपुड़ा, अरावली, विंध्याचल आदि।
• नगरों के नाम—अजमेर, आगरा, मथुरा, दिल्ली, लखनऊ आदि।
• समाचार–पत्रों के नाम—राजस्थान पत्रिका, दैनिक भास्कर, दैनिक अम्बर, अमर उजाला आदि।
• पुस्तकों के नाम—रामायण, महाभारत, रामचरितमानस, साकेत, अंधायुग आदि।
• दिनों के नाम—सोमवार, मंगलवार, बुधवार आदि।
• महीनों के नाम—जनवरी, फरवरी, चैत्र, वैशाख आदि।
• ग्रह–नक्षत्रों के नाम—सूर्य, चन्द्रमा, पृथ्वी, शनि, मंगल आदि।
• त्यौहारों के नाम—होली, दीपावली, तीज, ईद, गणगौर आदि

2. जातिवाचक संज्ञा –

जिन संज्ञा शब्दों से एक जाति के सभी प्राणियों या पदार्थों अथवा सम्पूर्ण जाति, वर्ग या समुदाय का बोध होता है, उन्हें जातिवाचक संज्ञा कहते हैं। जैसे– मनुष्य, घोड़ा, नगर, पर्वत, स्कूल, गाय, फूल, पुस्तक, पशु, पक्षी, छात्र, खिलाड़ी, सब्जी, माता, मन्त्री, पण्डित, जुलाहा, अध्यापक, कवि, लेखक, जन, बहिन, बेटा, पहाड़, स्त्री, क्षत्रिय, प्रभु, वीर, विद्वान, चोर, शिशु, ठग, सेना, दल, कुंज, कक्षा, भीड़, सोना, दूध, पानी, घी, तेल आदि।

3. भाववाचक संज्ञा –

जिन संज्ञा शब्दों से किसी व्यक्ति, वस्तु और स्थान के गुण, दोष, भाव, दशा, व्यापार आदि का बोध होता है, उन्हें भाववाचक संज्ञा कहते हैं। जैसे– सत्य, बचपन, बुढ़ापा, सफलता, मिठास, मित्रता, हरियाली, मुस्कुराहट, लघुता, प्रभुता, वीरता, चूक, लड़कपन, जवानी, ठगी, डर आदि।

भाववाचक संज्ञा मुख्य रूप से पाँच प्रकार से बनती है। जैसे –
(1) जातिवाचक संज्ञा से भाववाचक संज्ञा –
मानव - मानवता
दास - दासता
बच्चा - बचपन
स्त्री - स्त्रीत्व
व्यक्ति - व्यक्तित्व
क्षत्रिय - क्षत्रियत्व
प्रभु - प्रभुता, प्रभुत्व
वीर - वीरता, वीरत्व
बंधु - बंधुत्व
देव - देवता, देवत्व
पशु - पशुता, पशुत्व
ब्राह्मण - ब्राह्मणत्व

मित्र - मित्रता
विद्वान - विद्वता
चोर - चोरी
युवक - यौवन
मनुष्य - मनुष्यता, मनुष्यत्व।

(2) सर्वनाम से भाववाचक संज्ञा –
अजनबी - अजनबीपन
मम - ममता, ममत्व
स्व - स्वत्व
आप - आपा
पराया - परायापन
सर्व - सर्वस्व
निज - निजता, निजत्व
अहं - अहंकार
अपना - अपनापन, अपनत्व।

(3) क्रिया से भाववाचक संज्ञा –
खेलना - खेल
थकना - थकावट
लड़ना - लड़ाई
बहना - बहाव
भूलना - भूल
हँसना - हँसी
देखना - दिखावा
सुनना - सुनवाई
चुनना - चुनाव
धोना - धुलाई
पढ़ना - पढ़ाई
रुकना - रुकावट
लिखना - लिखाई
जीतना - जीत
जीना - जीवन
सीना - सिलाई
जलना - जलन
सजाना - सजावट
बसना - बसावट
गाना - गान
बैठना - बैठक
बिकना - बिक्री
कमाना - कमाई।

(4) विशेषण से भाववाचक संज्ञा –
आवश्यक - आवश्यकता
युवक - यौवन
छोटा - छुटपन
सुन्दर - सुन्दरता, सौन्दर्य
शिष्ट - शिष्टता
ललित - लालित्य
सफेद - सफेदी
निपुण - निपुणता
भयानक - भय
काला - कालिम
लाल - लालिमा
सूक्ष्म - सूक्ष्मता
हरा - हरियाली
मीठा - मिठास
महान - महानता
स्वस्थ - स्वास्थ्य
लम्बा - लम्बाई
भूखा - भूख।

(5) अव्यय शब्दों से भाववाचक संज्ञा –
धिक् - धिक्कार
ऊपर - ऊपरी
दूर - दूरी
चतुर - चातुर्य
निकट - निकटता
मना - मनाही
नीचे - नीचाई
तेज - तेजी
बाहर - बाहरी।

2. सर्वनाम

♦ परिभाषा –

संज्ञा के स्थान पर आने वाले शब्दों को सर्वनाम कहते हैं।

सर्वनाम का अभिधार्थ है—सबका नाम। जो सबके नाम के स्थान पर आये, वे सर्वनाम कहलाते हैं। जैसे– मैं, तुम, आप, यह, वह, हम, उसका, उसकी, वे, क्या, कुछ, कौन आदि।

वाक्य में संज्ञा की पुनरुक्ति को दूर करने के लिए ही सर्वनाम का प्रयोग किया जाता है। सर्वनाम भाषा को सहज, सरल, सुन्दर एवं संक्षिप्त बनाते हैं। सर्वनाम के अभाव में भाषा अटपटी लगती है।

उदाहरणार्थ –

राम स्कूल गया है। स्कूल से आते ही राम राम का और मित्र का काम करेगा। फिर राम और मित्र खेलेंगे।
यह वाक्य कितना अटपटा, अनगढ़ और असुन्दर है। अब सर्वनामों से युक्त वाक्य देखिए–
राम स्कूल गया है। वहाँ से आते ही वह अपने मित्र के घर जायेगा। फिर दोनों अपना–अपना काम करेंगे। फिर दोनों खेलेंगे।

♦ सर्वनाम के भेद –

सर्वनाम के निम्नलिखित छः भेद होते हैं –
(1) पुरुषवाचक – मैं (हम), तुम (तू, आप), वह (यह, आप)
(2) निश्चयवाचक – यह (निकटवर्ती), वह (दूरवर्ती)
(3) अनिश्चयवाचक – कोई (प्राणिवाचक), क्या (अप्राणिवाचक)
(4) सम्बन्धवाचक – जो ... सो (वह)
(5) प्रश्नवाचक – कौन (प्राणिवाचक), क्या (अप्राणिवाचक)
(6) निजवाचक – आप (स्वयं, खुद)।

1. पुरुषवाचक सर्वनाम–

जिस सर्वनाम का प्रयोग वक्ता (बोलने वाला) या लेखक स्वयं अपने लिए अथवा श्रोता या पाठक के लिए या किसी अन्य व्यक्ति के लिए करता है, उसे पुरुषवाचक सर्वनाम कहते हैं। जैसे– उसने, मुझे, तुम आदि।

पुरुषवाचक सर्वनाम के तीन भेद होते हैं–

(1) उत्तम पुरुषवाचक सर्वनाम–

जिन सर्वनामों का प्रयोग बोलने वाला या लिखने वाला अपने लिए करता है, उन्हें उत्तम पुरुषवाचक सर्वनाम कहते हैं। जैसे– मैं, मेरा, हमारा, मुझको, मुझे, मैंने आदि।

(2) मध्यम पुरुषवाचक सर्वनाम–

जिस सर्वनाम का प्रयोग बोलने वाला या लिखने वाला सुनने वाले या पढ़ने वाले के लिए करे, उसे मध्यम पुरुषवाचक सर्वनाम कहते हैं। जैसे– तू, तुम, आप, तुझको, तुम्हारा, तुमने आदि।

(3) अन्य पुरुषवाचक सर्वनाम–

जिन सर्वनाम शब्दों का प्रयोग बोलने वाला किसी अन्य व्यक्ति के लिए करे, उन्हें अन्य पुरुषवाचक सर्वनाम कहते हैं। जैसे– यह, वह, वे, उसे, उसको, इसने, उसने, उन्होंने, उनका आदि।

2. निश्चयवाचक सर्वनाम–

जिन सर्वनाम शब्दों से किसी दूरवर्ती या निकटवर्ती व्यक्तियों, प्राणियों, वस्तुओं और घटना–व्यापार का निश्चित बोध होता है, उन्हें निश्चयवाचक सर्वनाम कहते हैं। जैसे– यह, वह, ये, वे, इन्होंने, उन्होंने आदि।

निकटवर्ती के लिए 'यह' तथा दूरवर्ती के लिए 'वह' का प्रयोग होता है। इस सर्वनाम को 'संकेतवाचक' या 'निर्देशक सर्वनाम' भी कहते हैं।

3. अनिश्चयवाचक सर्वनाम–

जिन सर्वनामों से किसी निश्चित व्यक्ति, वस्तु या घटना का ज्ञान नहीं होता, उन्हें अनिश्चयवाचक सर्वनाम कहते हैं। जैसे– कोई, कुछ, किसी आदि।

प्राणियों के लिए 'कोई' व 'किसी' तथा पदार्थों के लिए 'कुछ' का प्रयोग किया जाता है। जैसे–
• रास्ते में कुछ खा लेना।
• सम्भवतः कोई आया है।
• वहाँ किसी से भी पूछ लेना।

4. सम्बन्धवाचक सर्वनाम–

जो सर्वनाम शब्द किसी वाक्य में प्रयुक्त संज्ञा या सर्वनाम का अन्य संज्ञा या सर्वनाम के साथ परस्पर सम्बन्ध का बोध कराते हैं, उन्हें सम्बन्धवाचक सर्वनाम कहते हैं। जैसे– जो, जिनका, उसका आदि।
• जो करता है, वह भरता है।
• जिसका खाते हो उसी को आँख दिखाते हो।
• जैसा करोगे वैसा भरोगे।
• जिसकी लाठी उसकी भैंस।
• जिसको आपने बुलाया था, वह आया है।

5. प्रश्नवाचक सर्वनाम–

वह सर्वनाम जिसका प्रयोग किसी व्यक्ति, प्राणी, वस्तु, क्रिया या व्यापार आदि के सम्बन्ध में प्रश्न करने के लिए किया जाता है, प्रश्नवाचक सर्वनाम कहलाता है। जैसे– कौन, क्या, कब, क्यों, किसको, किसने आदि।

व्यक्ति या प्राणी के सम्बन्ध में प्रश्न करते समय 'कौन, किसे, किसने' का प्रयोग किया जाता है, जबकि वस्तु या क्रिया–व्यापार के सम्बन्ध में प्रश्न करते समय 'क्या, कब' आदि का प्रयोग किया जाता है। जैसे–
• देखो, कौन आया है?
• यह गिलास किसने तोड़ा?
• आप खाने में क्या लेंगे?
• जयपुर कब जा रहे हो?

6. निजवाचक सर्वनाम–

वह सर्वनाम शब्द जिनका प्रयोग बोलने वाला या लिखने वाला स्वयं अपने लिए करता है, निजवाचक सर्वनाम कहलाता है। जैसे– आप, अपने आप, अपना, स्वयं, खुद, मैं, हम, हमारा आदि।
• हमें अपना कार्य स्वयं करना चाहिए।
• मैं अपना काम खुद कर लूँगा।
• मैं स्वयं आ जाऊँगा।
• हमारा प्यारा राजस्थान।

♦ सर्वनाम शब्दों के रूपान्तर–नियम :
(1) सर्वनाम का प्रयोग संज्ञा के स्थान पर होता है। अतः किसी भी सर्वनाम शब्द का लिँग और वचन उस संज्ञा के अनुरूप रहेगा जिसके स्थान पर उसका प्रयोग हुआ है। जैसे–
राम और उसका बेटा आया था।
(2) सर्वनाम का प्रयोग एकवचन और बहुवचन दोनों में होता है। जैसे– मैं (हम), वह (वे), यह (ये), इसका (इनका)।
(3) सम्बन्धकारक के अतिरिक्त अन्य किसी कारक के कारण सर्वनाम शब्द का लिँग परिवर्तन नहीं होता। जैसे–
• मैं पढ़ता हूँ।
मैं पढ़ती हूँ।
• वह आया।
वह आई।
• तुम स्कूल जाते हो।
तुम स्कूल जाती हो।
(4) सर्वनाम से सम्बोधन कारक नहीं होता, क्योंकि किसी को सर्वनाम द्वारा पुकारा नहीं जाता।
(5) आदर के अर्थ में एक व्यक्ति के लिए भी अन्य पुरुषवाचक सर्वनाम का प्रयोग बहुवचन में होता है। जैसे–
• तुलसीदास महान कवि थे, उन्होंने हिँदी साहित्य को महान रचनाएँ प्रदान कीं।
(6) उत्तम पुरुष और मध्यम पुरुष सर्वनाम के बहुवचन का प्रयोग एक व्यक्ति के लिए भी होता है। जैसे–
• हम (मैं) आ रहे हैं।
• आप (तू) अवश्य आना।
• तुम (तू) जा सकते हो।
(7) 'तू' सर्वनाम का प्रयोग अत्यन्त निकटता या आत्मीयता प्रकट करने के लिए, अपने से आयु व सम्बन्ध में छोटे व्यक्ति के लिए या कभी–कभी तिरस्कार प्रदर्शन करने के लिए एवं ईश्वर के लिए भी किया जाता है। जैसे–
• माँ! तू क्या कर रही है?
• अरे नालायक! तू अब तक कहाँ था?
• हे प्रभु! तू मेरी प्रार्थना कब सुनेगा?
(8) मुझ, तुझ, तुम, उस, इन आदि सर्वनामों में निश्चयार्थ के लिए 'ई' (ी) जोड़ देते हैं। जैसे– उस (उसी), तुझ (तुझी), तुम (तुम्हीं), इन (इन्हीं)।
(9) मैं, तुम, आप, वह, यह, कौन आदि सर्वनामों का निज–भेद उनके क्रिया–रूपों से जाना जाता है। जैसे–
• वह पढ़ रहा है।
• वह पढ़ रही है।
(10) पुरुषवाचक सर्वनामों के साथ 'को' लगने पर उनके रूप में अन्तर आ जाता है। जैसे–
• मैं (को) मुझको या मुझे।
• तू (को) तुझको या तुझे।
• यह (को) इसको या इसे।
• ये (को) इनको या इन्हें।
• वह (को) उसको या उसे।
• वे (को) उनको या उन्हें।
(11) अधिकार अथवा अभिमान प्रकट करने के लिए आजकल 'मैं' की बजाय 'हम' का प्रयोग चल पड़ा है, जो व्याकरण की दृष्टि से अशुद्ध है। जैसे–
• पिता के नाते हमारा भी कुछ कर्त्तव्य है।
• शांत रहिए, अन्यथा हमें कड़ा रुख अपनाना पड़ेगा।
(12) जहाँ 'मैं' की जगह 'हम' का प्रयोग होने लगा है, वहाँ 'हम' के बहुवचन के रूप में 'हम लोग' या 'हम सब' का प्रयोग प्रचलित है।
(13) 'तुम' सर्वनाम के बहुवचन के रूप में 'तुम सब' का प्रचलन हो गया है। जैसे–
• रमेश! तुम यहाँ आओ।
• अरे रमेश, सुरेश, दिनेश! तुम सब यहाँ आओ।
(14) 'मैं', 'हम' और 'तुम' के साथ 'का', 'के', 'की' की जगह 'रा', 'रे', 'री' प्रयुक्त होते हैं। जैसे– मेरा, मेरी, मेरे, तुम्हारा, तुम्हारे, तुम्हारी, हमारा, हमारे, हमारी।
(15) सर्वनाम शब्दों के साथ विभक्ति चिह्न मिलाकर लिखे जाने चाहिए। जैसे– मुझको, उसने, हमसे आदि।
(16) यदि सर्वनाम के बाद दो विभक्ति चिह्न आते हैं तो पहला मिलाकर तथा दूसरा अलग रखा जाना चाहिए। जैसे– उनके लिए, उन पर से, हममें से, उनके द्वारा आदि।
(17) यदि सर्वनाम तथा विभक्ति चिह्न के बीच 'ही', 'तक' आदि कोई निपात आ जाता है तो विभक्ति को अलग लिखा जाएगा। जैसे– आप ही के लिए, उन तक से आदि।

♦ सर्वनामों के पुनरुक्ति रूप :
कुछ सर्वनाम पुनरावृत्ति के साथ प्रयोग में आते हैं। ऐसे स्थलों पर अर्थ में विशिष्टता या भिन्नता आ जाती है। जैसे–
• जो—जो–जो आता जाए, उसे बिठाते जाओ।
• कोई—कोई–कोई तो बिना बात भागा चला जा रहा था।
• क्या—हमारे साथ क्या–क्या हुआ, यह न पूछो।
• कौन—मेले में कौन–कौन चलेगा?
• किस—किस–किसको भूख लगी है?
• कुछ—मुझे कुछ–कुछ याद आ रहा है।
• अपना—अपना–अपना सामान लो और चलते बनो।
• आप—यजमान आप–आप ही खाए जा रहे थे, मेहमानों की कहीं कोई पूछ नहीं थी।
• वह—जिसे मिठाई न मिली हो, वह–वह रूक जाओ।
• कहाँ—मैंने तुम्हें कहाँ–कहाँ नहीं ढूँढा।

कुछ सर्वनाम संयुक्त रूप में प्रयुक्त होते हैं। जैसे–
• कोई–न–कोई—रात के समय कोई–न–कोई प्रबंध अवश्य हो जायेगा।
• कुछ–न–कुछ—घबराओ नहीं, कुछ–न–कुछ गाड़ी तो चलेगी ही।

3. विशेषण

♦ परिभाषा –

संज्ञा या सर्वनाम की विशेषता (गुण, दोष, संख्या, रंग, आकार–प्रकार आदि) बताने वाले शब्दों को विशेषण कहते हैं। जैसे– मोटा, पतला, कौन आदि।

उदाहरणार्थ–
• एक किलो चीनी लाओ।
• सफेद गाय कम दूध देती है।
• बच्चा होशियार है।
• कुछ लोग सो रहे हैं।
• मेरी कक्षा में बीस विद्यार्थी हैं।

उपर्युक्त वाक्यों में एक किलो, सफेद, कम, होशियार, कुछ, बीस क्रमशः चीनी, गाय, दूध, बच्चे, लोग तथा विद्यार्थी की विशेषता बता रहे हैं, अतः ये सभी विशेषण हैं।

♦ विशेष्य और विशेषण –

जिस संज्ञा या सर्वनाम शब्द की विशेषता प्रकट की जाती है, उसे विशेष्य और जो विशेषता–सूचक शब्द होता है, उसे विशेषण कहते हैं। विशेषण शब्द प्रायः विशेष्य से पहले आता है। जैसे –
• मुझे मीठे व्यंजन अच्छे लगते हैं।
• काली बिल्ली को देखो।
• दो किलो दूध लाओ।

उपर्युक्त वाक्यों में क्रमशः 'व्यंजन', 'बिल्ली' और 'चीनी' विशेष्य तथा 'मीठे', 'काली' और 'दो किलो' शब्द विशेषण हैं। कभी–कभी विशेषण शब्द विशेष्य के बाद भी प्रयुक्त होते हैं। जैसे –
• यह छात्र बुद्धिमान है।
• ये फल बहुत मीठे हैं।
• वह व्यक्ति योग्य है।
• रमेश ईमानदार है।

♦ प्रविशेषण –

जो विशेषण शब्द विशेषणों की भी विशेषता बतलाते है, उन्हें प्रविशेषण कहते हैं।

उदाहरणार्थ –
• यह लड़का बहुत अच्छा है।
('बहुत' प्रविशेषण)
• आप बड़े भोले हैं।
('बड़े' प्रविशेषण)
• मैं पूर्ण स्वस्थ हूँ।
('पूर्ण' प्रविशेषण)
• मोहनी अत्यन्त सुन्दरी है।
('अत्यन्त' प्रविशेषण)
• घर बिल्कुल सुनसान था।
('बिल्कुल' प्रविशेषण)
• आज बहुत अधिक सर्दी है।
('बहुत' प्रविशेषण)

क्रिया–विशेषणों की विशेषता बताने वाले विशेषणों को भी 'प्रविशेषण' कहा जाता है। जैसे–
• गरिमा बहुत धीरे चलती है।
('बहुत' क्रिया–प्रविशेषण)
• गावस्कर बिल्कुल धीरे खेलता था।
('बिल्कुल' क्रिया–प्रविशेषण)
• मैं ठीक सात बजे आऊँगा।
('ठीक' क्रिया–प्रविशेषण)
• मैं बहुत अधिक तेज नहीं चल सकता।
('बहुत अधिक' क्रिया–प्रविशेषण)।

♦ उद्देश्य विशेषण और विधेय विशेषण –

वाक्य में विशेषण की स्थिति दो प्रकार की होती है– विशेष्य से पहले तथा विशेष्य के बाद। इस स्थिति के आधार पर विशेषण दो प्रकार के होते हैं–

(1) उद्देश्य विशेषण – विशेष्य से पहले आने वाले विशेषण उद्देश्य–विशेषण या विशेष्य–विशेषण कहलाते हैं। स्थिति की दृष्टि से ये विशेषण वाक्य के उद्देश्य–भाग के अन्तर्गत आते है। जैसे –
• चतुर बालक अपना काम कर लेते हैं।
• भला बालक है, मदद कर दीजिए।
• बुद्धिमान आदमी सर्वत्र पूजा जाता है।

(2) विधेय विशेषण – विशेष्य के बाद आने वाले विशेषण को 'विधेय–विशेषण' कहते हैं। ये विशेषण क्रिया से पहले और वाक्य के विधेय–भाग के अन्तर्गत आते हैं। जैसे –
• वह बालक चतुर है।
• सुनिता बहुत अच्छा गाती है।
• उसकी पेन्ट नीली है।
• रेखा घर की शोभा बढ़ाती है।

ध्यातव्य – विशेषण चाहे, 'उद्देश्य–विशेषण' हो, चाहे 'विधेय–विशेषण', दोनों ही स्थितियों में उनका रूप संज्ञा या सर्वनाम के अनुसार बदलता है। उदाहरणार्थ –

उद्देश्य विशेषणों के रूप–
• लंबी युवती खेल रही है।
(विशेषण और विशेष्य दोनों स्त्री एकवचन)
• लंबी युवतियाँ खेल रही हैं।
(स्त्रीलिंग, विशेषण अपरिवर्तित रहता है)
• लंबा लड़का जा रहा है।
(विशेषण–विशेष्य दोनों पुरुष एकवचन)
• लंबे लड़के जा रहे हैं।
(विशेषण–विशेष्य दोनों पुरुष बहुवचन)

विधेय विशेषणों के रूप –
• वह लड़का लंबा है।
(विशेषण–विशेष्य दोनों पुरुष एकवचन)
• वे लड़के लंबे हैं।

(विशेषण–विशेष्य दोनों पुरुष बहुवचन)
• वह लड़की मोटी है।
(विशेषण–विशेष्य दोनों स्त्री. एकवचन)
• वे लड़कियाँ मोटी हैं।
(स्त्रीलिंग, विशेषण अपरिवर्तित रहता है।)

♦ विशेषण के भेद :

विशेषण के पाँच भेद होते हैं –
1. गुणवाचक विशेषण (Adjective of Quality)
2. परिमाणवाचक विशेषण (Adjective of Quantity)
3. संख्यावाचक विशेषण (Numerical Adjective)
4. सार्वनामिक विशेषण या संकेतवाचक अथवा निर्देशवाचक विशेषण (Demonstrative Adjective)
5. व्यक्तिवाचक विशेषण।

1. गुणवाचक विशेषण –

संज्ञा अथवा सर्वनाम के किसी भी प्रकार के गुण से सम्बन्धित विशेषता का बोध कराने वाले शब्दों को गुणवाचक विशेषण कहते हैं। जैसे–
वह मोटा आदमी है।
उसके कोट का रंग नीला है।
वह गोरी लड़की है।
इन वाक्यों में 'मोटा', 'नीला', 'गोरी' शब्द गुणवाचक विशेषण हैं।

यहाँ 'गुण' का अर्थ केवल अच्छी विशेषताओं से नहीं है। यहाँ 'गुण' का तात्पर्य है– किसी भी वस्तु या व्यक्ति की विशेष स्थिति, विशेष दशा, विशेष दिशा, रंग, गंध, काल, स्थान, आकार, रूप, स्वाद, बुराई, अच्छाई आदि। अतः जो विशेषण किसी संज्ञा या सर्वनाम की उपर्युक्त विशेषताओं का बोध कराए, उसे गुणवाचक विशेषण कहते हैं। कुछ प्रचलित प्रमुख गुणवाचक विशेषण इस प्रकार हैं–
• गुणबोधक—अच्छा, भला, शिष्ट, नम्र, सुशील, विनीत, दानी, ईमानदार, परिश्रमी, दयालु, सच्चा, सरल आदि।
• दोषबोधक—बुरा, खराब, झूठा, अशिष्ट, उद्धत, ढीठ, दुश्चरित्र, कंजूस, कामचोर, पापी, दुरात्मा, निर्दयी आदि।
• रंगबोधक—काला, पीला, नीला, हरा, लाल, गुलाबी, सुनहरा, चमकीला, हरित, रक्त, जामुनी, बैंगनी, खाकी, सुर्मई, बहुरंगी, सतरंगी, नवरंग आदि।
• कालबोधक—आधुनिक, प्राचीन, ताजा, बासी, प्रागैतिहासिक, नवीन, नूतन, क्षणिक, दैनिक, साप्ताहिक, पाक्षिक, मासिक, वार्षिक आदि।
• स्थानबोधक—ग्रामीण, शहरी, भारतीय, देशी, विदेशी, बनारसी, रूसी, जापानी, चीनी, नेपाली, बाहरी, अमरोही, लुधियानवी, जयपुरी, लाहौरी, जालंधरी, इलाहाबादी आदि।
• गन्धबोधक—खुशबूदार, सुगन्धित, मधुगन्धी, सौंधी, महक, बदबूदार, दुर्गन्धित, गंधहीन आदि।
• दिशाबोधक—उत्तरी, दक्षिणी, पूर्वी, पश्चिमी, पश्चिमोत्तरी, पाश्चात्य, पौर्वात्य, ईशानकोणीय, ऊपरी, भीतरी, बाहरी आदि।
• अवस्थाबोधक—गीला, सूखा, नम, शुष्क, आर्द्र, नमीदार, पनीला, भुना हुआ, तला हुआ, जला हुआ, पका हुआ आदि।
• आयुबोधक—युवा, वृद्ध, बाल, किशोर, अधेड़, प्रौढ़, तरुण आदि।
• दशाबोधक—रोगी, निरोगी, स्वस्थ, अस्वस्थ, बीमार, रुग्ण, भला–चंगा, तन्दुरुस्त, सुधरा हुआ, बिगड़ा हुआ, फटा हुआ, नया, पुराना आदि।
• आकारबोधक—छोटा, बड़ा, मोटा, लम्बा, ठिगना, बौना, गोल, ऊँचा, चौड़ा, तिकोना, चौकोर, षट्कोण, अण्डाकार, त्रिभुज, सर्पाकार, गोलाकार, वृत्ताकार आदि।
• स्पर्शबोधक—कठोर, कोमल, मुलायम, खुरदरा, मखमली, नर्म, सख्त, ठण्डा, गर्म, चिकना, स्निग्ध आदि।
• स्वादबोधक—खट्टा, मीठा, मधुर, कड़वा, नमकीन, कसैला आदि।

2. परिमाणवाचक विशेषण –

जिस विशेषण शब्द से संज्ञा अथवा सर्वनाम की माप–तोल या मात्रा संबंधी विशेषता का ज्ञान हो, उसे परिमाणवाचक विशेषण कहते हैं। जैसे– कुछ, थोड़ा, सब आदि।
• मैं प्रतिदिन चार लीटर दूध लाता हूँ।
• वह बाद में कुछ घी खाता है।
यहाँ चार लीटर दूध का माप है। कुछ घी का माप है। इन दोनों वस्तुओं को गिना नहीं जा सकता, केवल मापा जा सकता है। इसलिए ये परिमाणवाचक विशेषण हैं।

परिणामवाचक विशेषण दो प्रकार के होते हैं–

(1) निश्चित परिमाणवाचक–
जो विशेषण संज्ञा या सर्वनाम के निश्चित परिमाण का बोध कराते हैं, उन्हें निश्चित परिमाणवाचक विशेषण कहते हैं। जैसे–
पाँच किलो, दस क्विंटल, एक तोला सोना, दो मीटर कपड़ा, दस ग्राम सोना आदि।

(2) अनिश्चित परिणामवाचक–
जो विशेषण संज्ञा या सर्वनाम के निश्चित परिमाण का नहीं अपितु अनिश्चित परिमाण का बोध कराते हैं, उन्हें अनिश्चित परिमाणवाचक विशेषण कहते हैं। जैसे–
कुछ आम, थोड़ा दूध, बहुत घी, कम चीनी, ढेर सारा मक्खन, कई किलो दही, पचासों मन गेहूँ, तनिक अचार, जरा–सा नमक आदि।

3. संख्यावाचक विशेषण –

जो विशेषण किसी व्यक्ति, प्राणी अथवा वस्तु (संज्ञा या सर्वनाम) की संख्या से सम्बन्धित विशेषता का बोध कराएँ, उन्हें संख्यावाचक विशेषण कहते हैं। जैसे– तीसवाँ, साढ़े चार, प्रत्येक, कम, सब आदि।

संख्यावाचक विशेषण मुख्यतः दो प्रकार के होते हैं–

(क) निश्चित संख्यावाचक–
जो निश्चित संख्या का बोध कराते हैं। जैसे– पहला, तीसरा, पाँच छात्र, सात किताबें आदि। निश्चित संख्यावाचक विशेषण के निम्नलिखित उपभेद होते हैं–

(i) गणनावाचक—
जिनसे अंक या गिनती का ज्ञान हो। जैसे– एक, पाँच, दस, बारह, आधा, चौथाई, सवा पाँच, साढ़े सात आदि। गणना वाचक विशेषण के भी दो भेद किए जा सकते हैं–

(अ) अपूर्ण संख्यावाचक विशेषण—
1/4 (पाव), 1/2 (आधा), 1–1/4 (सवा), 1–1/2 (डेढ़), 1–3/4 (पौने दो), 2–1/2 (ढ़ाई), 3–1/2 (साढ़े तीन) आदि विशेषण अपूर्ण संख्याबोधक हैं।

(ब) पूर्ण संख्यावाचक विशेषण—
एक, दो, तीन आदि पूर्ण संख्याबोधक हैं।

(ii) क्रमवाचक—
जिस विशेषण से क्रम का ज्ञान हो, उसे क्रमवाचक विशेषण कहते हैं। जैसे– पहला, तीसरा, चौथा, छठा, आठवाँ आदि।

(iii) आवृत्तिवाचक—
जिस विशेषण से किसी संज्ञा या सर्वनाम की तहों या गुणन का बोध हो अथवा जिससे यह ज्ञात होता है कि संज्ञा या सर्वनाम कितने गुना है। जैसे– दुगुना, चौगुना, पाँच गुना, इकहरा, दुहरा, तिहरा आदि।

(iv) समुदायवाचक—
जिस विशेषण से कुछ संख्याओं के इकट्ठे समूह अथवा समुदाय का बोध हो, उसे समुदायवाचक विशेषण कहते हैं। जैसे– दोनों, तीनों, पाँचों, आठों, दसों, तीनों–के–तीनों, सभी, सब–के–सब आदि।

(v) समुच्चयवाचक—
संज्ञा या सर्वनाम के किसी प्रचलित समुच्चय को प्रकट करने वाले विशेषण समुच्चयवाचक कहलाते हैं। जैसे– दर्जन, युग्म, जोड़ा, पच्चीसी, चालीसा, शतक, सैंकड़ा, सतसई आदि।

(vi) भिन्नतावाचक—
जो विशेषण भिन्नता दर्शाते हुए संज्ञा या सर्वनाम (विशेष्य) की विशेषता बतलाते हैं, उन्हें भिन्नतावाचक विशेषण कहते हैं। जैसे– प्रत्येक, हरेक, हर मास, हर वर्ष, एक–एक, चार–चार आदि।

(ब) अनिश्चित संख्यावाचक—
जो विशेषण संज्ञा या सर्वनाम की किसी निश्चित संख्या का ज्ञान नहीं कराते, बल्कि उसका अस्पष्ट अनुमान प्रस्तुत करते हैं, उन्हें अनिश्चित संख्यावाचक विशेषण कहते हैं। जैसे– कुछ छात्राएँ, थोड़े–से गाँव, अधिक लड़के, काफी धन, कई लोग, बहुत–सा पैसा, हजारों आदमी, पाँच–छः दर्शक आदि।

वाक्य–प्रयोग—
• कुछ बच्चे खेल रहे हैं।
• तुम्हारी थैली में बहुत संतरे हैं, मेरी में थोड़े।
• रैली में हजारों लोग पहुँचे।
• गुंडों ने सैकड़ों दुकानें फूँक डाली।
• वहाँ कोई पाँच सौ खिलाड़ी होंगे।

परिमाणवाचक और संख्यावाचक विशेषण में अन्तर :
यदि विशेष्य गिनी जाने वाली वस्तु हो तो, उसके साथ प्रयुक्त विशेषण संख्यावाचक माना जाता है, अन्यथा उसे परिमाणवाचक विशेषण माना जाता है। जैसे–
• मोहित दस केले खा गया।
(संख्यावाचक)
• मोहित दो किलो दूध पी गया।
(परिमाणवाचक)
• मैंने अधिक सेब खा लिए।
(संख्यावाचक)
• कुछ दूध मेरे लिए भी छोड़ देना।
(परिमाणवाचक)
• थोड़े बच्चे दिखाई दे रहे हैं।
(संख्यावाचक)
• थोड़ा घी लाया हूँ।
(परिमाणवाचक)

4. सार्वनामिक विशेषण—
जो सर्वनाम, अपने सार्वनामिक रूप में ही संज्ञा के विशेषण के रूप में प्रयुक्त होते हैं अथवा जो सर्वनाम शब्द संज्ञा की ओर संकेत करते हैं, उन्हें सर्वनामिक विशेषण या संकेतवाचक विशेषण कहते हैं। जैसे– ये, वे, कौन, उस आदि।
• यह मेरी पुस्तक है।
• कोई व्यक्ति गा रहा है।
• कौन लोग आये थे?
• वह मकान अच्छा है।
• इन छात्रों को पुस्तकें दो।

उपर्युक्त वाक्यों में 'यह', 'कोई', 'कौन', 'वह' और 'इन' शब्द क्रमशः 'पुस्तक', 'व्यक्ति', 'लोग', 'मकान' और 'छात्रों' की ओर संकेत करते हैं अथवा उनकी विशेषता प्रकट करते हैं। अतः ये सार्वनामिक या संकेतवाचक विशेषण हैं।

सार्वनामिक विशेषण के चाय भेद हैं–
(1) निश्चयवाचक/संकेतवाचक सार्वनामिक विशेषण–
ये संज्ञा या सर्वनाम की ओर निश्चयात्मक संकेत करते हैं। जैसे–
• यह किताब उठा दो।
• उस घर को देखो।

(2) अनिश्चयवाचक सार्वनामिक विशेषण–
ये संज्ञा या सर्वनाम की ओर अनिश्चयात्मक संकेत करते हैं। जैसे–
• कोई आदमी आपसे मिलने आया है।
• किसी से कुछ मत लेना।

(3) प्रश्नवाचक सार्वनामिक विशेषण–
ये विशेषण संज्ञा या सर्वनाम से संबंधित प्रश्नों का बोध कराते हैं। जैसे–
• कौन–सी फिल्म देखोगे?
• कौन लड़की गा रही है?
• किस पुस्तक को पढ़ूँ?
• क्या वस्तु लाकर मैं उसे प्रसन्न कर सकता हूँ?

(4) सम्बन्धवाचक सार्वनामिक विशेषण–
ये विशेषण संज्ञा या सर्वनाम का सम्बन्ध वाक्य में प्रयुक्त अन्य संज्ञा या सर्वनाम शब्द के साथ जोड़ते हैं। जैसे–
• जो बोया है, वही तो काटोगे।
• जो आदमी कल आया था, वह बाहर खड़ा है।
• जिस कार्य को करना न हो, उस पर विचार करना मूर्खता है।

♦ सार्वनामिक विशेषण और सर्वनाम में अन्तर :
यदि सार्वनामिक विशेषण का प्रयोग संज्ञा या सर्वनाम शब्द से पहले हो, तो यह सार्वनामिक विशेषण कहलाएगा और यदि अकेले (संज्ञा के स्थान पर) प्रयुक्त हो, तो सर्वनाम कहलाता है। जैसे–
• यह आम पका है और वह कच्चा।
('यह' सार्वनामिक विशेषण है और 'वह' सर्वनाम।)
• यह लड़का बहुत चालाक है।

(सार्वनामिक विशेषण)
• यह काफी कमजोर है।
(सर्वनाम)
• उस घर में मेरा मित्र रहता है।
(सार्वनामिक विशेषण)
• उसने मुझे बुलाया है।
(सर्वनाम)

5. व्यक्तिवाचक विशेषण–
व्यक्तिवाचक संज्ञा से बनन वाले विशेषण को व्यक्तिवाचक विशेषण कहते हैं। जैसे– कश्मीरी, जापानी, भारतीय, नेपाली आदि।
• हम राजस्थानी हैं।
• मैं भारतीय नागरिक हूँ।
• रमेश धनवान (धनी) आदमी है।
• नागौरी बैल अच्छे होते हैं। ऊपर लिखे वाक्यों में 'राजस्थान' से 'राजस्थानी', 'भारत' से 'भारतीय', 'धन' से 'धनवान (धनी)' और 'नागौर' से 'नागौरी' विशेषण बने हैं। राजस्थान, भारत, धन और नागौर व्यक्तिवाचक संज्ञाएँ हैं।

♦ विशेषणों की तुलना :
विशेषणों में तुलनात्मक स्थियाँ आती हैं। यद्यपि हिन्दी में विशेषताओं की तुलनात्मक कमी या अधिकता प्रकट करने के लिए अलग से अपने शब्द नहीं हैं। जो भी तुलनात्मक शब्द हैं, वे संस्कृत या उर्दू के हैं। हिन्दी में तुलनात्मक विशेषता प्रकट करने के लिए 'से कम', 'से अधिक', 'सबसे बढ़कर', 'सर्वाधिक न्यून' आदि प्रविशेषणों का प्रयोग किया जाता है।

तुलना के आधार पर विशेषणों की तीन अवस्थाएँ होती हैं—मूलावस्था, उत्तरावास्था एवं उत्तमावस्था।
(1) मूलावस्था –
विशेषण सामान्य रूप से जिस मूल रूप में रहता है, उसे मूलावस्था कहते हैं। इसमें किसी प्रकार की तुलना नहीं होती, केवल विशेषण का सामान्य कथन होता है। जैसे – सुन्दर, अधिक, श्रेष्ठ, लघु आदि।
• अरुण अच्छा लड़का है।
• काली गाय चर रही है।
• आपका चित्र सुन्दर है।

(2) उत्तरावस्था –
जहाँ दो व्यक्तियों या वस्तुओं में तुलना की जाये और उनमें से किसी एक को अधिक या कम बतलाया जाये, वहाँ उत्तरावस्था होती है। जैसे – सुन्दरतर, श्रेष्ठतर, अधिकतर, लघुत्तर आदि।
• अरुण राजीव से अच्छा है।
• वह तुम्हारी अपेक्षा समझदार है।
• आकार में रामायण से महाभारत वृहत्तर है।
• मोहिनी, उर्वशी की तुलना में रूपवती है।
ध्यान देने योग्य है कि उत्तरावस्था में दो विशेष्य होते हैं। उनमें तुलना प्रकट करने के लिए से बढ़कर, से घटकर, से कम, की अपेक्षा, की तुलना में, के मुकाबले, से अधिक आदि वाचकों का प्रयोग होता है।

(3) उत्तमावस्था –
जब दो या दो से अधिक व्यक्तियों या वस्तुओं की तुलना में किसी एक को सबसे अधिक श्रेष्ठ अथवा कम बतलाया जाये तब वह विशेषण की उत्तमावस्था होती है। जैसे– सुन्दरतम, श्रेष्ठतम, अधिकतम, लघुत्तम आदि। इसमें सबसे बढ़कर, सर्वाधिक, सबसे कम, सभी में आदि शब्द प्रयुक्त होते हैं। जैसे –
• माला, सबसे चतुर लड़की है।
• हिमालय सर्वाधिक ऊँचा पर्वत है।
• राजस्थान में माउण्ट आबू सर्वाधिक ठण्डा स्थान है।

♦ तुलनाबोधक प्रत्यय –
हिन्दी में अपने तुलनात्मक प्रत्यय नहीं हैं। अतः संस्कृत शब्दों के साथ संस्कृत के प्रत्यय 'तर' और 'तम' प्रयुक्त होते हैं तथा उर्दू शब्दों के साथ उर्दू के प्रत्यय 'तर' तथा 'तरीन' प्रयुक्त होते हैं। जैसे–
मूलावस्था उत्तरावस्था उत्तमावस्था
अधिक अधिकतर अधिकतम
उत्कृष्ट उत्कृष्टतर उत्कृष्टतम
उच्च उच्चतर उच्चतम
कुटिल कुटिलतर कुटिलतम
गुरु गुरुतर गुरुतम
दृढ़ दृढ़तर दृढ़तम
दीर्घ दीर्घतर दीर्घतम
निकट निकटतर निकटतम
निकृष्ट निकृष्टतर निकृष्टतम
निम्न निम्नतर निम्नतम
न्यून न्यूनतर न्यूनतम
महान महत्तर महत्तम
मधुर मधुरतर मधुरतम
मृदु मृदुतर मृदुतम
लघु लघुत्तर लघुत्तम
वृहत वृहत्तर वृहत्तम
श्रेष्ठ श्रेष्ठतर श्रेष्ठतम
सुंदर सुंदरतर सुंदरतम
समीप समीपतर समीपतम
उर्दू–फारसी के तुलनात्मक प्रत्यय–
अच्छा बेहतर बेहतरीन
कम कमतर कमतरीन
बद बदतर बदतरीन

♦ विशेषण शब्दों के रूपांतर :
विशेषण शब्दों में तीन कारणों से रूपान्तर होते हैं—लिँग, वचन और कारक के कारण। कुछ आकारांत विशेषणों में लिँग और वचन संबंधी परिवर्तन विशेष्य के अनुसार

होता है। जैसे –
• काला कौआ, काली गाय, काले घोड़े।
• छोट बच्चा, छोटी बच्ची, छोटे बच्चे।
• मैला कपड़ा, मैली चादर, मैले बर्तन।

विभक्ति से युक्त विशेष्य और संबोधन कारक के साथ आकारांत विशेषण में 'आ' का 'ए' हो जाता है। जैसे –
• लंबे लड़कों को पीछे बिठाओ।
(लंबा का लंबे)
• काले घोड़ों को दौड़ाओ।
(काला का काले)
• पीले कपड़े पहन लो।
(पीला का पीले)
• ऐ छोटे बच्चे, बैठ जाओ।
(छोटा का छोटे)
• बुरे लोगों से दूर ही रहना चाहिए।
(बुरा का बुरे)

आकारांत विशेषणों के अतिरिक्त अन्य विशेषण यथावत् रहते हैं। उनका रूप–परिवर्तन नहीं होता। जैसे –
• कीमती हार, कीमती गुड़िया, कीमती कपड़े।
• मासिक पत्रिका, मासिक पत्रिकाएँ, मासिक चंदे।
• ऐतिहासिक इमारत, ऐतिहासिक इमारतें।
• योग्य लड़का, योग्य लड़के, योग्य लड़की।
• रोगी बच्चे, रोगी स्त्री, रोगी व्यक्ति।

कुछ तत्सम् विशेषणों को स्त्रीलिंग रूपों में ही प्रयुक्त किया जाता है। जैसे –
• बुद्धिमती नारी (बुद्धिमान का प्रयोग गलत है)
• विदुषी कन्या (विद्वान नहीं लिखा जाता)
• रूपवती पत्नी (रूपवान नहीं लिखा जाता)

इसी प्रकार स्त्रीलिंग रूपों के साथ धनवती, गुणवती, ज्ञानवती आदि शब्दों के स्थान पर क्रमशः धनवान, गुणवान, ज्ञानवान आदि लिखना अनुपयुक्त है।

कई बार विशेषणों को ही संज्ञा–रूप में प्रयुक्त किया जाता है। जैसे –
• बड़ों का सम्मान करना चाहिए।
• छोटों को प्यार देना चाहिए।
• वीरों की पूजा कौन नहीं करता?
• सज्जनों की संगति से मौत भी टल सकती है।

उपर्युक्त वाक्यों में क्रमशः बड़ों, छोटों, वीरों तथा सज्जनों शब्द संज्ञा की तरह ही प्रयुक्त हुए हैं। अतः ये संज्ञा शब्द माने जाएँगे और संज्ञा के समान ही इनके लिंग, वचन और कारक का प्रयोग होगा।

♦ विशेषणों की रचना :

हिन्दी में मूल रूप में विशेषण शब्द बहुत कम हैं। कुछ मूल विशेषण हैं– बुरा, अच्छा, लम्बा, बड़ा आदि। अधिकांश विशेषण संज्ञा, सर्वनाम, क्रिया या अव्यय शब्दों से उत्पन्न हुए हैं। इसी कारण उन्हें व्युत्पन्न विशेषण कहा जाता है। व्युत्पन्न विशेषणों का निर्माण संज्ञा, सर्वनाम, क्रिया तथा अव्यय में उपसर्ग और प्रत्यय लगाने से होता है।

1. उपसर्गों से विशेषण रचना–
• शब्द में 'अ' जोड़कर—अयोग्य, अबोध, असमर्थ, अविकसित, अविचल।
• 'स' जोड़कर—सबल, सफल, सपूत, सजीव, सचित्र, सजल।
• 'निः' जोड़कर—निर्भय, निर्गुण, निर्दोष, निर्लज्ज, निर्मम, निर्विकार।
• 'नि' जोड़कर—निडर, निकम्मा, निपूती।
• 'दु' जोड़कर—दुबला, दुधारा, दुर्दिन।
• 'बे' जोड़कर—बेकसूर, बेईमान, बेहोश, बेवकूफ, बेवजह।
• 'ला' जोड़कर—लावारिस, लाईलाज, लापता, लाचार।

2. प्रत्ययों से विशेषण रचना–
• इतिहास+इक = ऐतिहासिक
• समाज+इक = सामाजिक
• रंग+इला = रंगीला
• ज्ञान+वती = ज्ञानवती
• मद+अक = मादक
• बुद्धि+मान = बुद्धिमान
• सुख+द = सुखद
• बल+शाली = बलशाली
• चाय+वाला = चायवाला।

3. उपसर्ग और प्रत्यय दोनों के योग से विशेषण रचना–
• अप+मान+इत = अपमानित
• न+अस्ति+क = नास्तिक
• अन+आचार+ई = अनाचारी
• अन+आत्मा+इक = अनात्मिक
• अ+धर्म+इक = अधार्मिक
• अ+न्याय+ई = अन्यायी।

4. संज्ञा शब्दों से व्युत्पन्न विशेषण–

अधिकांश विशेषण संज्ञा शब्दों से व्युत्पन्न होते हैं। जैसे–

संज्ञा शब्द — विशेषण
• जयपुर—जयपुरी
• लखनऊ—लखनवी
• अलीगढ़—अलीगढ़ी

• आदर—आदरणीय
• नमक—नमकीन
• नगर—नागरिक
• ग्राम—ग्रामीण
• शहर—शहरी
• अंक—अंकित
• दिन—दैनिक
• गाना—गायक
• खेद—खिन्न
• पुष्प—पुष्पित
• फल—फलित
• चाचा—चचेरा
• दूध—दुधारू
• नाव—नाविक।

5. सर्वनाम से व्युत्पन्न विशेषण–
• जो—जैसा
• यह—ऐसा
• वह—वैसा
• अहं—अहंकार
• तुम—तुम–सा
• आप—आप–सा
• उस—उस–सा
• मैं—मुझ–सा।

6. क्रिया से व्युत्पन्न विशेषण–
• भागना—भगोड़ा
• भूलना—भुलक्कड़
• पठ्—पठित
• हँसना—हँसोड़
• चलना—चालू
• दिखाना—दिखावटी।

7. अव्यय से व्युत्पन्न विशेषण–
• बाहर—बाहरी
• भीतर—भीतरी
• आगे—अगला
• पीछे—पिछला
• ऊपर—ऊपरी
• नीचे—निचला।

हिंदी में प्रचलित विशेषण

शब्द — विशेषण
• अंक—अंकित
• अंश—आंशिक
• अधर्म—अधर्मी
• अध्यात्म—आध्यात्मिक
• अनुकरण—अनुकरणीय
• अनुवाद—अनूदित, अनुवादित
• अवलंब—अवलंबित
• अध्ययन—अध्ययनीय, अध्येता, अध्येय
• अतिथि—आतिथेय
• अर्थ—आर्थिक
• आत्म—आत्मिक, आत्मीय
• आलस—आलसी
• आदर—आदरणीय
• आश्रय—आश्रित
• आमोद—आमोदित
• आप—आपसी
• आवरण—आवृत्त
• आदि—आदिम
• आयोग—आयुक्त
• आयु—आयुष्मान्
• आविष्कार—आविष्कृत
• आस्वाद—आस्वादित
• इतिहास—ऐतिहासिक
• ईर्ष्या—ईर्ष्यालु
• ईश्वर—ईश्वरीय
• उत्साह—उत्साही
• उदर—उदरस्थ
• उल्लास—उल्लासित
• उत्कंठा—उत्कंठित
• उपासना—उपासक

- उर्मि—उर्मिल
- ऊपर—ऊपरी
- ऋण—ऋणी
- ओज—ओजस्वी
- कंटक—कंटकित
- कर्त्तव्य—कर्त्तव्य परायण
- कल्पना—काल्पनिक
- कलंक—कलंकित
- करुणा—कारुणिक
- कर्म—कर्मठ, कर्मशील
- क्रम—क्रमिक
- काँटा—कँटीला
- काम—कामुक
- काल—कालिक
- कुल—कुलीन
- कृपा—कृपालु
- खेल—खिलाड़ी
- गति—गतिमान
- ग्राम—ग्रामीण
- गुण—गुणी, गुणवान
- गाँव—गँवार
- घर—घरेलू
- चमक—चमकीला
- चलता—चलायमान
- चाचा—चचेरा
- चाल—चालू
- चिँता—चिँतित
- चित्र—चित्रित
- चिकित्सा—चिकित्सक
- चिह्न—चिह्नित
- छंद—छंदोमय
- जटा—जटिल
- जल—जलमय
- जघन—जघन्य
- ज्योति
- जाति—जातीय
- जीव—जैविक
- जोश—जोशीला
- झगड़ा—झगड़ालू
- तट—तटीय, तटस्थ
- तत्त्व—तात्विक
- तप—तपस्वी
- तर्क—तार्किक
- तरंग—तरंगित
- तिरोधान—तिरोहित
- त्वरा—त्वरित
- दया—दयायु
- द्रव—द्रवित
- दान—दानी, दाता
- दिन—दैनिक
- दुःख—दुःखी
- देखना—दिखावटी
- देव—दैविक
- देह—दैहिक
- धन—धन्य, धनी, धनिक, धनवान
- धर्म—धार्मिक
- ध्यान—ध्येय
- ध्वनि—ध्वनित
- धूम—धूमिल
- नगर—नागरिक
- नमक—नमकीन
- नाव—नाविक
- नागपुर—नागपुरी
- नास्ति—नास्तिक
- नाम—नामिक, नामी
- निँदा—निँदक
- नियंत्रण—नियंत्रित
- निमीलन—निमीलित
- निमित्त—नैमित्तिक
- निसर्ग—नैसर्गिक
- नीचे—निचला
- नीति—नैतिक
- पंक—पंकिल
- पक्ष—पाक्षिक
- पठन—पठित

- पत्थर—पथरीला
- परलोक—पारलौकिक
- परितोष—पारितोषिक
- पल्लव—पल्लवित
- प्यास—प्यासा
- पानी—पानीय
- पाठ—पाठ्य, पठनीय
- पिशाच—पैशाचिक
- पुत्र—पुत्रवान
- पुरा—पुरातन
- पुरुष—पौरुषेय, पुरुषार्थ
- पुष्प—पुष्पित
- पूजा—पूज्य, पूजनीय
- पूर्व—पूर्वी
- पेट—पेटू
- प्रत्याशा—प्रत्याशित
- प्रभाव—प्रभावित
- प्रभा—प्रभामय
- प्रमाण—प्रमाणित, प्रामाणिक
- प्रलय—प्रलयंकर
- प्रांत—प्रांतीय
- प्रातःकाल—प्रातःकालीन
- फेन—फेनिल
- बंक—बंकिम
- बल—बली, बलवान
- बढ़ना—बड़ा
- बाधा—बाधित
- बुद्धि—बुद्धिमान, बौद्धिक
- बुभुक्षा—बुभुक्षित
- बेचना—बिकाऊ
- बाहर—बाहरी
- भय—भयानक, भयभीत, भयंकर
- भार—भारित, भारी
- भागना—भगोड़ा
- भारत—भारतीय
- भीतर—भीतरी
- भूत—भौतिक
- भूलना—भुलक्कड़
- भूमि—भौमिक
- भूगोल—भौगोलिक
- भेद—भेदी, भेदक
- मद—मादक
- मन—मनस्वी
- मध्य—मध्यस्थ
- मर्यादा—मर्यादित
- मर्म—मार्मिक
- मधु—मधुर
- मानस—मानसिक
- मानव—मानवीय
- मास—मासिक
- मुख—मुखर
- मुखर—मुखरित
- मूर्धा—मूर्धन्य
- मूल—मौलिक
- मृत्यु—मृत, मृतक
- मृदु—मृदुल
- यदु—यादव
- यज्ञ—याज्ञिक
- युग—युगीन
- यूरोप—यूरोपीय
- रक्त—रक्तिम
- रस—रसिक, रसमय, रसीला
- रश्मि—रश्मिल
- राष्ट्र—राष्ट्रीय
- रूचि—रुचिर
- रूप—रूपवान
- रेत—रेतीला
- रोग—रोगी
- रोम—रोमिल
- रोमांच—रोमांचित
- लय—लीन
- लाठी—लठैत
- लालच—लालची
- लिपि—लिपिबद्ध
- लेख—लिखित

• वन—वन्य
• वश—वश्य
• वर्ष—वार्षिक
• वह—वैसा
• वायु—वायवी, वायव्य
• विदेश—विदेशी
• विष—विषैला
• विस्मय—विस्मित
• विश्वास—विश्वासी, विश्वस्त
• विधि—वैधानिक
• विकार—विकारी
• विष्णु—वैष्णव
• वेद—वैदिक
• शर्म—शर्मीला
• शकुन—शकुनी
• शक्ति—शक्तिशाली, शक्तिमान
• शब्द—शाब्दिक
• शाप—शापित
• शास्त्र—शास्त्रीय
• शिव—शैव
• शीत—शीतल
• शोभा—शोभित
• श्रम—श्रमिक
• श्रद्धा—श्रद्धालु
• श्रवण—श्रोता
• श्री—श्रीमती, श्रीमान्
• संकेत—सांकेतिक
• संचय—संचित
• संप्रदाय—सांप्रदायिक
• संयम—संयमित
• संयोग—संयुक्त
• संस्कृति—सांस्कृतिक
• समाज—सामाजिक
• सप्ताह—साप्ताहिक
• सत्य—सत्यवान
• समुदाय—सामुदायिक
• समीप—समीपस्थ
• सर्वजन—सार्वजनिक
• सीमा—सीमित
• सुख—सुखद, सुखमय
• सुरभि—सुरभित
• सेवा—सेवक, सेव्य
• सोना—सुनहरा
• स्त्री—स्त्रैण
• स्व—स्वकीय
• स्मृति—स्मार्त
• स्वर्ग—स्वर्गीय
• स्पर्श—स्पर्श्य
• स्वाद—स्वादिष्ट
• स्वप्न—स्वप्निल
• स्थान—स्थानीय
• स्वास्थ्य—स्वस्थ
• स्तुति—स्तुत्य
• हँसना—हँसोड़
• हृदय—हार्दिक
• हिँसा—हिँस्त्र
• हिम—हिमवान
• क्षय—क्षीण
• क्षत्रिय—क्षात्र
• क्षुधा—क्षुधित
• त्रास—त्रस्त, त्रासदी
• त्रुटि—त्रुटिपूर्ण
• ज्ञान—ज्ञानी।

4. क्रिया

♦ परिभाषा–

जिन शब्दों से किसी कर्म (कार्य) के होने या करने अथवा किसी प्रक्रिया में होने का बोध हो, उन शब्दों को क्रिया कहते हैं। जैसे–

• राम खाना खाता है।
• रेखा खेल रही है।
• वह बम्बई गया।
• नदी बह रही थी।
• मोहिनी गाती है।

• पुस्तक मेज पर है।
• गर्मी हो रही है।
उपर्युक्त वाक्यों में 'खाता है', 'खेल रही है', 'गया', 'बह रही थी', 'गाती है', 'पर है', 'हो रही है' क्रिया बोधक शब्द हैं।

क्रिया वाक्य का अनिवार्य अंग है। बिना क्रिया के वाक्य–रचना संभव नहीं है। क्रिया के बिना वाक्यांश हो सकता है, वाक्य नहीं। कई बार क्रिया प्रत्यक्ष रूप में नहीं, बल्कि परोक्ष रूप में विद्यमान रहती है। जैसे–
• बहुत सुंदर।
• दिल्ली।
• अवश्य।
• रोटी।
इन अपूर्ण वाक्यों में क्रियाएँ छिपी हुई हैं। 'बहुत सुन्दर' का अर्थ– यह बहुत सुन्दर है अथवा यह बहुत सुन्दर हुआ है। या यह बहुत सुन्दर किया है।
'अवश्य' का अर्थ है– अवश्य जाऊँगा/आऊँगा/खाऊँगा/गया था/जाता हूँ आदि।
'दिल्ली' का तात्पर्य है– दिल्ली गया था/जाऊँगा आदि। 'रोटी' का आशय है– रोटी खाई थी/रोटी खाएँगे आदि।

♦ क्रिया का निर्माण–
क्रिया का निर्माण धातु से होता है। 'धातु' वह मूल शब्द है, जिससे क्रिया पद का गठन होता होता है। जैसे– लिखना—लिख धातु, ना प्रत्यय। पढ़ना—पढ् धातु, ना प्रत्यय।

♦ क्रिया के सामान्य रूप–
मूल धातु में 'ना' प्रत्यय लगाकर प्रयुक्त किए जाने वाले रूप को क्रिया का सामान्य रूप कहा जाता है। जैसे– पढ़+ना = पढ़ना, लिख+ना = लिखना, खेल+ना = खेलना, पी+ना = पीना, चल+ना = चलना, खा+ना = खाना आदि।

♦ धातु –
क्रिया के मूल स्वरूप को धातु कहते हैं। जैसे– आ, जा, खा, पी, पढ़, लिख, चल, हँस, गा, सो, सक, खेल, देख, सुन, बैठ आदि।
ये विभिन्न क्रियाओं के मूल रूप हैं। इसलिए इन्हें क्रियामूल भी कहते हैं। इनसे अनेक क्रियाएँ बनती हैं। जैसे– लिख से लिखा, लिखता, लिखते, लिखती, लिखूँ, लिखूँगा, लिखेंगे, लिखी थी आदि।

♦ मूल धातु की पहचान –
मूल धातु आज्ञार्थक रूप में 'तू' के साथ प्रयुक्त होती है। जैसे– तू खा, तू पढ़, तू लिख, तू पी, तू जा, तू खेल, तू हँस, तू गा आदि।
इस प्रकार मूल धातुओं की पहचान हो सकती है।

♦ धातु के रूप –
धातु के निम्नलिखित पाँच भेद हैं–
1. सामान्य धातु – मूल धातु में 'ना' प्रत्यय लगाकर बनाए गए रूप 'सामान्य धातु' कहलाते हैं। जैसे– सोना, पढ़ना, आना, जाना, लिखना, तैरना आदि। इन्हें सरल धातु भी कहा जाता है।

2. व्युत्पन्न धातु – जो धातु सामान्य धातु में प्रत्यय लगाकर अथवा अन्य किसी प्रकार बनाई जाती है, उन्हें व्युत्पन्न धातु कहते हैं। जैसे–
सामान्य धातु—व्युत्पन्न धातु
पीना—पिलाना, पिलवाना
देना—दिलाना, दिलवाना
रोना—रुलाना, रुलवाना
सोना—सुलाना, सुलवाना
उठना—उठाना, उठवाना
कटना—काटना, कटाना, कटवाना
उड़ना—उड़ाना, उड़वाना।

3. नामधातु – संज्ञा, सर्वनाम और विशेषण शब्दों में प्रत्यय लगाकर जो धातु व्युत्पन्न होती हैं, उन्हें नाम धातु कहते हैं। प्रायः नाम धातुओं में 'अ' प्रत्यय का प्रयोग होता है। जैसे–
• संज्ञा शब्दों से—लालच–ललचाना, शर्म–शर्माना, हाथ–हथियाना, बात–बतियाना, लात–लतियाना, फिल्म–फिल्माना।
• विशेषण शब्दों से—चिकना–चिकनाना, गर्म–गरमाना, लँगड़ा–लँगड़ाना, दुहरा–दुहराना।
• सर्वनाम शब्दों से—आप–अपनाना।

4. सम्मिश्र धातु – संज्ञा, विशेषण और क्रिया–विशेषण शब्दों के पश्चात् 'करना' या 'होना' क्रिया–पद लगाकर बनने वाले धातु रूप 'सम्मिश्र धातु' कहलाते हैं। जैसे–
काम करना, काम होना, उत्तम करना, उत्तम होना, धीरे करना, धीरे होना आदि।
कुछ अन्य सहायक क्रिया–पदों से बनने वाले सम्मिश्र धातु–
• करना—नाम करना, छेद करना, हत्या करना।
• होना—नाम होना, छेद होना, हत्या होना।
• खाना—मार खाना, रिश्वत खाना, हवा खाना।
• देना—दर्शन देना, कष्ट देना, धन्यवाद देना।
• आना—काम आना, पसंद आना, नजर आना।
• जाना—भाग जाना, खा जाना, पी जाना, सो जाना।
• मारना—चक्कर मारना, डींग मारना, झपट्टा मारना।

5. अनुकरणात्मक धातु – ध्वनियों के अनुकरण पर बनाई जाने वाली धातुएँ अनुकरणात्मक कहलाती हैं। जैसे–
भिनभिन–भिनभिनाना, हिनहिन–हिनहिनाना, खटखट–खटखटाना, टनटन–टनटनाना, झनझन–झनझनाना।

♦ क्रिया के भेद –
अर्थ के आधार क्रिया के मुख्यतः दो भेद होते हैं– 1. सकर्मक क्रिया, 2. अकर्मक क्रिया।
1. सकर्मक क्रिया –
जिस क्रिया के व्यापार (कार्य) का फल कर्त्ता को छोड़कर कर्म पर पड़ता है, वह सकर्मक क्रिया कहलाती है। इन क्रियाओं में कर्म अवश्य होता है। जैसे–
• मोहन ने खाना खाया।
• सीता ने पत्र पढ़ा।
इन दोनों वाक्यों में 'खाया' और 'लिखा' शब्दों का फल मोहन और सीता पर न पड़कर 'खाना' और 'पत्र' पर पड़ रहा है। अतः ये दोनों सकर्मक क्रियाएँ हैं। अन्य उदाहरण–
• अनुराग ने फल खरीदे।
• राम ने रावण को मारा।
• बच्चे सीरियल देख रहे हैं।
• बालिका निबन्ध लिख रही है।
• डॉक्टर बीमारी दूर करता है।

कुछ वाक्यों में 'कर्म' उपस्थित नहीं होता, परन्तु कर्म की आवश्यकता बनी रहती है। ऐसी क्रिया भी सकर्मक कहलाती है। जैसे–

- राम पढ़ता है।
- सुधा खेल रही है।

इन वाक्यों में राम 'क्या' पढ़ रहा है और सुधा 'क्या' खेल रही है—ये आवश्यकताएँ बनी हुई हैं। इसलिए कर्म के न होने पर भी ये सकर्मक क्रियाएँ हैं।

♦सकर्मक क्रिया के भेद –

सकर्मक क्रिया के दो भेद होते हैं– पूर्ण सकर्मक और अपूर्ण सकर्मक क्रिया।

(1) पूर्ण सकर्मक क्रियाएँ–

जो क्रियाएँ कर्म के साथ जुड़कर पूरा अर्थ प्रदान करती हैं, पूर्ण सकर्मक कहलाती हैं। इस क्रिया के भी दो भेद होते हैं–

(अ) पूर्ण एककर्मक क्रियाएँ–

जो क्रिया एक कर्म के साथ जुड़कर पूरा अर्थ प्रदान करती हैं, वह पूर्ण एककर्मक क्रिया कहलाती है। एक ही कर्म होने के कारण इसे 'एक कर्मक' तथा पूर्ण अर्थ प्रदान करने में सक्षम होने के कारण 'पूर्ण' कहा जाता है। जैसे–

- वाल्मीकि ने रामायण लिखी।
- राजू ने टी.वी. खरीदा।
- मैंने फिल्म देखी।

(ब) पूर्ण द्विकर्मक क्रियाएँ–

जो क्रियाएँ दो कर्मों के साथ संयुक्त होने पर पूर्ण अर्थ प्रदान करती हैं, उन्हें द्विकर्मक क्रियाएँ कहा जाता हैं। जैसे–

- मालिक ने नौकर को पानी दिया।

(इसमें 'दिया' क्रिया के दो कर्म हैं– नौकर तथा पानी)

- मोहन ने सोहन को पुस्तक दी।

('दी' क्रिया के कर्म– सोहन तथा पुस्तक।)

- मैंने अपने मित्र की भरपूर सहायता की।

('की' क्रिया के कर्म– मित्र और सहायता।)

- नौकर को कुत्ते को दूध पिलाया।

('पिलाया' क्रिया के कर्म– कुत्ता और दूध।)

- थानेदार सिपाही से चोर पकड़वाता है।

('पकड़वाता' क्रिया के कर्म– सिपाही तथा चोर।)

- पिताजी ने हमें कुछ पैसे दिए।

('दिए' क्रिया के कर्म– हमें तथा पैसे।)

अतः ये सभी क्रियाएँ द्विकर्मक हैं।

♦ मुख्य कर्म और गौण कर्म–

प्रायः मुख्य कर्म–

1. क्रिया के समीप रहता है।
2. विभक्ति रहित होता है।
3. अप्राणिवाचक होता है।

गौण कर्म प्रायः–

1. क्रिया से अपेक्षाकृत दूर रहता है।
2. विभक्ति सहित होता है।
3. प्राणिवाचक होता है।

(2) अपूर्ण सकर्मक क्रियाएँ–

जिन क्रियाओं का आशय कर्म होने पर भी पूर्ण नहीं होता और अर्थ को स्पष्ट करने के लिए किसी पूरक (संज्ञा या विशेषण) की आवश्यकता है वे 'अपूर्ण सकर्मक क्रियाएँ' होती हैं। जैसे– मैं तुझे समझता हूँ , यह अपूर्ण वाक्य है। इस वाक्य को इस प्रकार पूरा कर सकते हैं– मैं तुझे बुद्धिमान समझता हूँ। अतः 'समझना' अपूर्ण सकर्मक क्रिया है।

अन्य उदाहरण–

- तुम मुझे (पत्र) अवश्य लिखना।
- वह (डॉक्टर) बनकर दिखाएगा।
- वे हमारे (गुरु) थे।
- मैं तुम्हें अपना (भाई) मानता हूँ।
- हमने उसे (प्रतिनिधि) चुना।

प्रायः चुनना, मानना, समझना, बनाना ऐसी क्रियाएँ हैं, जिनमें कर्म के सिवाय एक पूरक की भी आवश्यकता बनी रहती है।

2.अकर्मक क्रियाएँ–

जिन क्रियाओं में कोई कर्म नहीं होता और उनके व्यापार (कार्य) का फल कर्त्ता पर ही पड़ता है, वे 'अकर्मक क्रियाएँ' कहलाती हैं। जैसे–

- मोहन खेलता है।
- बन्दर आया।

इन वाक्यों में 'खेलता है' और 'आया' क्रिया शब्दों का फल कर्त्ता मोहन और बन्दर पर पड़ रहा है, किसी कर्म पर नहीं। अतः ये दोनों अकर्मक क्रियाएँ हैं।

कुछ अकर्मक (धातु) क्रियाएँ :

शरमाना, ठहरना, होना, जागना, बढ़ना, क्षीण होना, कूदना, डरना, जीना, मरना, सोना, खेलना, अच्छा लगना, बरसना, चमकना, बैठना, उठना, दौड़ना, उगना, अकड़ना, उछलना।

हिन्दी में कुछ क्रियाओं का सकर्मक तथा अकर्मक दोनों रूपों में प्रयोग होता है। जैसे–

- अकर्मक—बूँद–बूँद से बाल्टी भरती है।
- सकर्मक—नौकरानी नल पर बाल्टी भरती है।
- अकर्मक—उसका सिर खुजला रहा है।
- सकर्मक—वह अपने सिर को खुजला रहा है।
- अकर्मक—बहू लजाती है।
- सकर्मक—अब उसे और न लजाओ।

जो नाम अर्थात् संज्ञा, सर्वनाम या विशेषण शब्द धातु की तरह प्रयुक्त होते हैं, वे नामधातु कहलाते हैं। नाम धातु में प्रत्यय लगाकर जो क्रिया बनती है, उसे नामधातु क्रिया कहते हैं। जैसे–

नाम धातु क्रिया का निर्माण चार प्रकार से होता है–

(i) संज्ञा शब्द से—लाज से लजाना, हाथ से हथियाना।

(ii) विशेषण शब्द से—मोटा से मुटाना, नरम से नरमाना।

(iii) सर्वनाम शब्द से—अपना से अपनाना।
(iv) अनुकरणवाची शब्द से—हिनहिन से हिनहिनाना, बड़बड़ से बड़बड़ाना।

(3) प्रेरणार्थक क्रिया–
जिस क्रिया से यह बोध होता है कि कर्त्ता स्वयं कार्य न करके किसी अन्य को उस कार्य के करने की प्रेरणा देता है, वह प्रेरणार्थक क्रिया कहलाती है। जैसे– मोहन, बरखा से पत्र लिखवाता है। यहाँ 'लिखवाता है' प्रेरणार्थक क्रिया है। 'मोहन' प्रेरक कर्त्ता और 'बरखा' प्रेरित कर्त्ता है।

प्रेरणार्थक क्रिया दो प्रकार से बनती है—(1) अकर्मक क्रिया से (2) सकर्मक क्रिया से। अकर्मक क्रिया प्रेरणार्थक क्रिया बनने पर सकर्मक क्रिया हो जाती है।
प्रेरणार्थक क्रिया की दो श्रेणियाँ हैं—(1) प्रथम प्रेरणार्थक (2) द्वितीय प्रेरणार्थक।

♦ प्रेरणार्थक क्रिया बनाने के नियम :
(I) अकर्मक से सकर्मक–
मूल धातु के अन्त में 'आ' जोड़ने से प्रथम प्रेरणार्थक (सकर्मक) और 'वा' जोड़ने से द्वितीय प्रेरणार्थक (द्विकर्मक) क्रिया बनती है। जैसे–
• चमक से चमकाना, चमकवाना।
• लड़ना से लड़ाना, लड़वाना।

(II) सकर्मक धातुओं से द्विप्रेरणार्थक–
जैसे– काटना से कटाना, कटवाना। पढ़ना से पढ़ाना, पढ़वाना।

(4) कृदन्त क्रिया–
जो क्रियाएँ शब्दों के अन्त में शब्दांश जोड़कर बनायी जाती हैं, वे कृदन्त क्रियाएँ कहलाती हैं। जैसे– देखता, देखा, देखकर आदि।

(5) पूर्वकालिक क्रिया–
यदि किसी क्रिया से पहले कोई दूसरी क्रिया आए, अर्थात् जहाँ एक कार्य समाप्त होकर दूसरा कार्य किया जाए उसे पूर्वकालिक क्रिया कहते हैं। पूर्वकालिक क्रिया या तो क्रिया का मूल रूप होती है या उसके साथ 'कर' या 'करके' का प्रयोग होता है। जैसे– वह अभी सोकर उठा है। इस वाक्य में 'उठा है' क्रिया के पूर्व 'सोकर' क्रिया का प्रयोग हुआ है। अतः 'सोकर' पूर्वकालिक क्रिया है।

(6) आज्ञार्थक या विधि क्रिया–
जिस क्रिया का प्रयोग आज्ञा, अनुमति, प्रार्थना आदि के बोध के लिए किया जाता है, तो वह आज्ञार्थक क्रिया कहलाती है। जैसे–
• इधर आओ।
• उधर मत जाओ।
• पुस्तक पढ़ो।
• बाग में चलें।
• बड़ों का आदर करना चाहिए।

♦ समापिका एवं असमापिका क्रियाएँ :
(1) समापिका क्रियाएँ –
समापिका क्रियाएँ वाक्य के अन्त में रहकर वाक्यों को समाप्त करती हैं। जैसे–
• चिड़िया आकाश में उड़ती है।
• मोहन पार्क में दौड़ रहा है।
• विनोद सुबह नाश्ते में चाय पिएगा।
• हिमालय की बर्फ पिघल रही थी।
• उपदेशों पर चला करो।
• मैं उठकर जा रहा हूँगा।
उपर्युक्त वाक्यों में 'उड़ती है', 'दौड़ रहा है', 'पिएगा', 'पिघल रही थी', 'चला करो' तथा 'जा रहा हूँगा' समापिका क्रियाएँ हैं।

(2) असमापिका क्रियाएँ–
जो क्रियाएँ वाक्य के अन्त में न आकर वाक्य में अन्यत्र कहीं प्रयुक्त होती हैं, उन्हें असमापिका क्रियाएँ कहते हैं। जैसे– डाल पर चहचहाती हुई चिड़ियाँ कितनी सुन्दर हैं।
यहाँ 'चहचहाती हुई' असमापिका क्रिया है। यह क्रिया वाक्य का अंत करके 'चिड़ियाँ' का विशेषण बनकर प्रयुक्त हुई है।
कुछ अन्य उदाहरण–
• जंगल में दौड़ता हुआ हिरण कैसा मनोरम है?
• बहता हुआ गंगाजल किसे नहीं भाता?
• गुरुजी को खड़े होकर प्रणाम करो।

♦ असमापिका क्रियाओं का विवेचन–
असमापिका क्रियाओं के अनेक भेद हैं। उनका विवेचन तीन दृष्टियों से किया जाता है–
1. रचना की दृष्टि से–
रचना की दृष्टि से असमापिक क्रियाओं की रचना चार प्रकार के प्रत्ययों से होती है–
(1) अपूर्ण कृदंत—ता, ते, ती; जैसे– बहता, जाता, भागते, दौड़ते।
(2) पूर्ण कृदंत—बैठा, बैठी, पिछले।
(3) क्रियार्थक कृदंत—ना, नी, ने; पढ़ना, पढ़ने।
(4) पूर्वकालिक कृदंत—कर; पढ़कर, खड़े रहकर, खोकर।

2. शब्द–भेद की दृष्टि से–
असमापिका क्रियाएँ या तो संज्ञा के रूप में प्रयुक्त होती हैं, या विशेषण या क्रिया–विशेषण के रूप में। जैसे–
(i) संज्ञा–रूप में–
• ना—एकांत में टहलना मुझे भाता है।
• ने—गाड़ी चलने वाली है।
(ii) विशेषण–रूप में–
• ता—खेलता बच्चा खुश रहता है।
• ता—बहता पानी निर्मल होता है।
• ते—हँसते लोग अच्छे लगते है।
• ते—रोते मनुष्य अकेले रह जाते हैं।
• ती—छेड़ती नजरें बुरी लगती हैं।
• आ—मरा हुआ इन्सान जाग उठा।
• ई—खिली हुई कलियाँ चटक उठीं।
• ए—गिरे हुए इन्सानों को सहारा देना पुण्य है।

(iii) क्रिया–विशेषण–
• ते ही—बंदर बंदूक देखते ही भाग गया।
• ते–ते—बालक पढ़ते–पढ़ते सो गया।
• कर—मैं गाना गाकर जाऊँगा।
• ए–ए—वह बैठे–बैठे पढ़ता रहा।

3. प्रयोग की दृष्टि से–
प्रयोग की दृष्टि से कृदंत छः प्रकार के होते हैं–
(i) क्रियार्थक कृदंत–
इनका प्रयोग भाववाचक संज्ञा के रूप में होता है। जैसे– टहलना, खेलना, सोना, पढ़ना आदि।
वाक्य–प्रयोग-
• समय से सोना अच्छी आदत है।
• मन लगाकर पढ़ना ही सफलता की कुंजी है।

(ii) कर्तृवाचक कृदंत–
इससे कर्तृवाचक संज्ञा बनती है। जैसे– धातु+ने+वाला/वाली–पढ़ने वाला, पढ़ने वाली।
वाक्य–प्रयोग-
• खेलने वालों को मना करो।
• हँसने वालों को खड़ा करो।

(iii) वर्तमानकालिक कृदंत–
ये कृदंत वर्तमान काल में चल रही किसी क्रिया का बोध कराते हैं। जैसे– बहता हुआ, जाता हुआ, नाचता हुआ।
वाक्य–प्रयोग-
• नाचता हुआ मोर कितना सुन्दर है।
• हँसता हुआ जोकर सबको गुदगुदाता है।
ये वर्तमानकालिक कृदंत विशेषण का कार्य करते हैं।

(iv) भूतकालिक कृदंत–
ये कृदंत भूतकाल में सम्पन्न हो चुकी क्रिया का बोध कराते हैं तथा विशेषण के रूप में प्रयुक्त होते हैं। जैसे– पका हुआ फल, सड़ा, निकला, भागा, जागा हुआ।
वाक्य–प्रयोग-
• जागा हुआ शिशु न जाने क्या कर बैठे?

(v) तात्कालिक कृदंत–
इस कृदंत से मुख्य क्रिया से तुरंत पहले हुई किसी क्रिया का बोध होता है। तात्कालिक कृदंत के सम्पन्न होते ही मुख्य क्रिया सम्पन्न हो जाती है। इसका वाचक प्रत्यय है– 'ते', 'ही'। जैसे– तुम्हारे निकलते ही वह आ गया।

(vi) पूर्वकालिक कृदंत–
इस कृदंत से मुख्य क्रिया से पहले होने वाली क्रिया का बोध होता है। इसका निर्माण धातु में 'कर' प्रत्यय लगाने से होता है। जैसे– पढ़+कर = पढ़कर, सोकर, जागकर आदि।
वाक्य–प्रयोग-
• मैं नहा–धोकर नाश्ता करूँगा।
• वह स्कूल से आकर काम करेगा।

♦ पूर्वकालिक कृदंत और तात्कालिक कृदंत में अन्तर:
पूर्वकालिक क्रिया मुख्य क्रिया से पहले होने वाली सामान्य क्रिया है, जबकि तात्कालिक क्रिया और मुख्य क्रिया में समय का अन्तर नहीं है। बस क्रम का अंतर है। ये दोनों क्रियाएँ क्रम के भेद से एक साथ होती हैं। पहले पूर्वकालिक क्रिया, बाद में तात्कालिक क्रिया, अंत में मुख्य क्रिया– यह क्रम रहता है।

क्रिया के वाच्य

♦ परिभाषा–
क्रिया के जिस रूप से यह बोध होता है कि वाक्य में क्रिया द्वारा किए गए विधान का प्रधान विषय कर्त्ता है, कर्म है अथवा भाव है, उसे वाच्य कहते हैं।

♦ वाच्य के भेद :
वाच्य के निम्नलिखित तीन भेद होते हैं–
(1) कर्तृवाच्य–
क्रिया के जिस रूप से वाक्य के उद्देश्य का बोध हो, उसे कर्तृवाच्य कहते हैं। इसमें कर्त्ता प्रधान होता है तथा क्रिया के लिंग, वचन और पुरुष कर्त्ता के अनुरूप होते हैं। कर्त्ता ही वाक्य का केन्द्र बिन्दु होता है।
जैसे—रमा लिखती है। इस वाक्य में रमा एकवचन, स्त्रीलिंग और अन्य पुरुष है तथा उसकी क्रिया 'लिखती' भी एकवचन, स्त्रीलिंग और अन्य पुरुष है। अतः यहाँ कर्तृवाच्य है।

(2) कर्मवाच्य–
क्रिया के जिस रूप से वाक्य का उद्देश्य 'कर्म प्रधान हो' उसे कर्मवाच्य कहते हैं। इसमें क्रिया का केन्द्र बिन्दु कर्त्ता न होकर 'कर्म' होता है और लिंग, वचन भी कर्म के अनुसार होते हैं।
जैसे—उपन्यास मेरे द्वारा लिखा गया। इस वाक्य में 'लिखा गया' क्रिया में 'कर्म' की प्रधानता होने से क्रिया के इस रूप में कर्मवाच्य है।

कर्मवाच्य का प्रयोग सामान्यतः निम्न स्थितियों में किया जाता है–
• जब क्रिया का कर्त्ता अज्ञात हो अथवा उसके व्यक्त करने की आवश्यकता न हो। जैसे–
- चोर पकड़ा गया है।
- आज हुक्म सुनाया जाएगा।
- उसे पेश किया गया है।
- यह फिर देखा जाएगा।
• जब कोई सूचना दी जाती है। जैसे–
- शीतकालीन अवकाश बदला जाएगा।

- आज शाम को नाटक दिखाया जाएगा।

(3) भाववाच्य–

क्रिया के जिस रूप से वाक्य का उद्देश्य केवल भाव ही जाना जाए, उसे भाववाच्य कहते हैं। भाववाच्य में क्रिया सदा अकर्मक, एकवचन पुल्लिँग तथा अन्य पुरुष में प्रयोग की जाती है। ऐसे वाक्यों में क्रिया न तो कर्त्ता के अनुसार होती है और न कर्म के अनुसार। इसमें क्रिया के भाव की प्रधानता रहती है। जैसे–

अब मुझसे लिखा नहीं जाता। इस वाक्य में 'लिखा नहीं जाता' क्रिया का भाव प्रमुख होने से भाव वाच्य है।

♦ वाच्यों की पहचान :
• कर्तृवाच्य—
- कर्त्ता बिना विभक्ति के होता है। अथवा
- कर्त्ता के साथ 'ने' विभक्ति होती है।
• कर्मवाच्य—
- कर्त्ता के साथ 'से' या 'के द्वारा' विभक्ति होती है।
- मुख्य क्रिया सकर्मक होती है और उसके साथ 'जाना' क्रिया का लिँग, वचन कालानुसार रूप जुड़ा होता है।
- 'जाना' के उपर्युक्त रूप से पहले क्रिया सामान्य भूतकाल में होती है।
• भाववाच्य—
- कर्त्ता के साथ 'से' या 'के द्वारा' कारक चिह्न होता है।
- क्रिया अकर्मक होती है।
- क्रिया सदा एकवचन पुल्लिँग में होती है।

♦ वाच्यों का प्रयोग :

हिन्दी में अधिकतर कर्मवाच्य का ही प्रयोग होता है। जिन परिस्थितियों में कर्मवाच्य और भाववाच्य का प्रयोग होता है, वे इस प्रकार हैं–

◊ कर्मवाच्य के प्रयोग–स्थल –
• अधिकार, गर्व या दर्प जताने के लिए–
(1) कल अपराधी को पेश किया जाए।
(2) शुभ्रा को दंड दिया जाए।
(3) यह खाना हमसे नहीं खाया जाता।
(4) इस मामले की पूरी जाँच की जाए।
• जब वाक्य में कर्त्ता को प्रकट करने की आवश्यकता न हो या कर्त्ता अज्ञात हो–
(1) रुपया पानी की तरह बहाया जा रहा है।
(2) यहाँ किसी की बात नहीं सुनी जाती।
(3) पत्र भेज दिया गया है।
(4) गाना गाया गया होगा।
(5) गोष्ठी में कविता पढ़ी जाएगी।
• जब कर्त्ता कोई सभा, समाज या सरकार हो–
(1) स्वास्थ्य योजनाओं पर सरकार द्वारा प्रतिवर्ष निर्धारित धन खर्चा जाता है।
(2) आर्य समाज द्वारा कई अंतर्जातीय विवाह कराए जाते हैं।
(3) क्रिकेट खिलाड़ियों का चयन क्रिकेट कंट्रोल बोर्ड द्वारा किया जाता है।
• कानून या कार्यालयों की भाषा में–
(1) होली की छुट्टी होगी।
(2) तीन माह का अर्जित अवकाश स्वीकृत किया जाता है।
(3) कार्य–कुशलता के लिए कर्मचारियों को सरकार द्वारा पुरस्कृत किया जाएगा।
(4) बिना आज्ञा के प्रवेश करने वालों को दंडित किया जाएगा।
(5) आपके प्रार्थना–पत्र को निम्नलिखित कारणों से रद्द कर दिया गया है।

◊ भाववाच्य के प्रयोग–स्थल–
• विवशता, असमर्थता व्यक्त करने के लिए या निषेधार्थ में–
(1) यहाँ तो खड़ा भी नहीं हुआ जाता।
(2) आज मुझसे बैठा भी नहीं जा रहा है।
(3) यह खाना कैसे खाया जाएगा?
• अनुमति या आज्ञा प्राप्त करने के लिए–
(1) अब थोड़ी देर आराम किया जाए।
(2) अब चला जाए।
(3) चलिए, अब थोड़ा सो लिया जाए।

♦ वाच्य परिवर्तन :

1. कर्तृवाच्य से कर्मवाच्य बनाना :

♦ कर्तृवाच्य के कर्त्ता को करण कारक बना दिया जाता है अर्थात् कर्त्ता को उसकी विभक्ति (यदि लगी है तो) हटाकर 'से', 'द्वारा' या 'के द्वारा' विभक्ति लगा दी जाती है। जैसे–
• कर्तृवाच्य—संगीता पत्र लिखती है।
• कर्मवाच्य—संगीता से पत्र लिखा जाता है।
• कर्तृवाच्य—संगीता ने पत्र लिखा।
• कर्मवाच्य—संगीता द्वारा पत्र लिखा गया।
• कर्तृवाच्य—संगीता पत्र लिखेगी।
• कर्मवाच्य—संगीता के द्वारा पत्र लिखा जाएगा।

♦ कर्म के साथ यदि विभक्ति लगी हो तो उसे हटा दिया जाता है। जैसे–
• कर्तृवाच्य—माँ ने पुत्र को सुला दिया।
• कर्मवाच्य—माँ के द्वारा पुत्र को सुला दिया गया।
• कर्तृवाच्य—सुशीला पुस्तक को पढ़ेगी।
• कर्मवाच्य—सुशीला के द्वारा पुस्तक पढ़ी जाएगी।

2. कर्तृवाच्य से भाववाच्य बनाना :

♦ कर्त्ता के आगे 'से' अथवा 'के द्वारा' लगाएँ। जैसे– बच्चे–बच्चों से, लड़की–लड़की के द्वारा।

♦ मुख्य क्रिया को सामान्य भूतकाल की क्रिया के एकवचन में बदलकर उसके साथ 'जाना' धातु के एकवचन, पुल्लिँग, अन्य पुरुष का वही काल लगा दें, जो कर्तृवाच्य की क्रिया का है। जैसे–
• कर्तृवाच्य—बालक नहीं पढ़ता है।
• भाववाच्य—बालक से पढ़ा नहीं जाता।
• कर्तृवाच्य—हम दौड़ेंगे।

• भाववाच्य—हमसे दौड़ा जाएगा।
• कर्तृवाच्य—पक्षी आकाश में नहीं उड़ते।
• भाववाच्य—पक्षियों द्वारा आकाश में नहीं उड़ा जाता है।
• कर्तृवाच्य—मैं नहीं पढ़ता।
• भाववाच्य—मुझसे पढ़ा नहीं जाता।
• कर्तृवाच्य—शेर दौड़ता है।
• भाववाच्य—शेर से दौड़ा जाता है।
• कर्तृवाच्य—लड़का रात भर सो न सका।
• भाववाच्य—लड़के से रात भर सोया न जा सका।
• कर्तृवाच्य—मैं अब नहीं चल सकता।
• भाववाच्य—मुझसे अब नहीं चला जाता।
• कर्तृवाच्य—क्या वे लिखेंगे?
• भाववाच्य—क्या उनसे लिखा जाएगा?
• कर्तृवाच्य—भाई लड़ नहीं सका।
• भाववाच्य—भाई से लड़ा नहीं जा सका।

3. कर्मवाच्य और भाववाच्य से कर्तृवाच्य बनाना :
♦ कर्मवाच्य और भाववाच्य से कर्तृवाच्य बनाने के लिए 'से', 'द्वारा', 'के द्वारा' आदि को हटा दिया जाता है। जैसे–
* कर्मवाच्य/भाववाच्य–
• पक्षियों से उड़ा नहीं जाता।
• अपर्णा द्वारा कविता पढ़ी गई।
• लड़कों द्वारा हँसा नहीं जाता।
• वेदव्यास द्वारा महाभारत लिखा गया।
• सरकार द्वारा शिक्षा पर बहुत खर्च किया जाता है।
• बालकों द्वारा क्रिकेट खेली गई।
* कर्तृवाच्य–
• पक्षी उड़ नहीं पाते।
• अपर्णा ने कविता पढ़ी।
• लड़के नहीं हँसे।
• वेदव्यास ने महाभारत लिखी।
• सरकार शिक्षा पर बहुत खर्च करती है।
• बालकों ने क्रिकेट खेली।

5. अव्यय

♦ परिभाषा–
जिन शब्दों के रूप में लिंग, वचन, क्रिया, कारक आदि के कारण कोई विकार पैदा नहीं है, उन्हें अव्यय शब्द कहते हैं।

अव्यय का शाब्दिक अर्थ होता है– जो व्यय नहीं होता है। अर्थात् ये अविकारी होते हैं। ये शब्द जहाँ भी प्रयुक्त होते हैं, वहाँ एक ही रूप में रहते हैं। जैसे– अन्दर, बाहर, अनुसार, अधीन, इसलिए, यद्यपि, तथापि, परन्तु आदि।

♦ अव्यय के भेद–
अव्यय या अविकारी शब्दों को सुविधा, स्वरूप और व्यवस्था की दृष्टि से चार भागों में बाँटा गया है–
1. क्रिया–विशेषण
2. समुच्चय बोधक
3. सम्बन्ध बोधक
4. विस्मय बोधक अव्यय।

1. क्रिया–विशेषण अव्यय–
क्रिया की विशेषता प्रकट करने वाले शब्द क्रिया–विशेषण अव्यय कहलाते हैं। जैसे—'अधिक तेज दौड़ना' में दौड़ने की विशेषता क्रिया विशेषण शब्द 'तेज' बतला रहा है परन्तु 'अधिक' क्रिया विशेषण शब्द की विशेषता बतला रहा है। अन्य उदाहरण—
• वह प्रतिदिन पढ़ता है।
• कुछ खा लो।
• मोहन सुन्दर लिखता है।
• घोड़ा तेज दौड़ता है।
इन वाक्यों में प्रतिदिन, कुछ, सुन्दर व तेज शब्द क्रिया की विशेषता प्रकट कर रहे हैं। अतः ये शब्द क्रिया–विशेषण अव्यय हैं।

क्रिया–विशेषण अव्यय छः प्रकार के होते हैं–
(1) स्थानवाचक क्रिया विशेषण–
जिस क्रिया विशेषण अव्यय से क्रिया की स्थान या दिशा सम्बन्धी विशेषता प्रकट होती है, वह स्थानवाचक क्रिया विशेषण अव्यय कहलाता है। जैसे–
• वह यहाँ नहीं है।
• तुम वहाँ क्या कर रहे थे?
• तुम आगे चलो।
• वह पेड़ के नीचे बैठा है।
• इधर–उधर मत भागो।
• हमारे आस–पास रहना।
इन वाक्यों में यहाँ, वहाँ, नीचे, इधर–उधर, आस–पास स्थानवाचक क्रिया–विशेषण अव्यय हैं।

(2) कालवाचक क्रिया–विशेषण अव्यय–
जिन क्रिया–विशेषण शब्दों से क्रिया के होने का समय या काल मालूम होता है, उन्हें कालवाचक क्रिया–विशेषण अव्यय कहते हैं। जैसे—सर्वदा, बहुधा, निरन्तर, प्रतिदिन, आज, कल, परसों आदि।
• तुम अब जा सकते हो।
• दिन भर पानी बरसता रहा।

• तुम प्रतिदिन समय पर आते हो।

इन वाक्यों में अब, दिनभर, प्रतिदिन शब्द क्रिया की विशेषता बतला रहे हैं अतः ये कालवाचक क्रिया–विशेषण अव्यय हैं।

(3) परिमाणवाचक क्रिया–विशेषण अव्यय–

जिन क्रिया–विशेषण शब्दों से क्रिया के परिमाण अर्थात् अधिकता–न्यूनता, नाप–तौल का बोध होता है, उन्हें परिमाणवाचक क्रिया–विशेषण अव्यय कहते हैं। जैसे– थोड़ा, तनिक, पर्याप्त, बहुत, बिल्कुल आदि।

• उतना खाओ, जितना आवश्यक हो।
• कुछ तेज चलो।
• तुम खूब खेलो।
• रमेश बहुत बोलता है।

इन वाक्यों में उतना, जितना, कुछ, खूब व बहुत परिमाणवाचक क्रिया–विशेषण अव्यय हैं।

(4) रीतिवाचक क्रिया–विशेषण अव्यय–

वे क्रिया–विशेषण शब्द जिनसे क्रिया की रीति या विधि का पता चलता है अर्थात् क्रिया के होने का ढंग मालूम होता है, उन शब्दों को रीतिवाचक क्रिया–विशेषण अव्यय कहते हैं। जैसे—धीरे–धीरे, मानो, यथाशक्ति, ज्यों, त्यों आदि।

रीतिवाचक विशेषण निम्न अर्थों में आते हैं–

1. प्रकारात्मक—धीरे–धीरे, अचानक, अनायास, संयोग से, एकाएक, सहसा, सुखपूर्वक, शान्ति से, हँसता हुआ, मन से, धड़ाधड़, झटपट, आप ही आप, शीघ्रता से, ध्यानपूर्वक, जल्दी, तुरन्त आदि।
2. निश्चयात्मक—अवश्य, ठीक, सचमुच, अलबत्ता, वास्तव में, बेशक, निःसंदेह आदि।
3. अनिश्चयात्मक—कदाचित्, शायद, सम्भव है, बहुत करके, बहुधा, प्रायः, अक्सर आदि।
4. स्वीकारात्मक—हाँ, ठीक, सच, बिल्कुल सही, जी हाँ आदि।
5. कारणात्मक (हेतु)—इसलिए, अतएव, क्यों, किसलिए, काहे को, अतः आदि।
6. निषेधात्मक—न, ना, नहीं, मत, बिल्कुल नहीं, हरगिज नहीं, जी नहीं आदि।
7. आवृत्यात्मक—गटागट, फटाफट, खुल्लमखुल्ला आदि।
8. अवधारक—ही, तो, भी, तक, भर, मात्र, अभी, कभी, जब भी, तभी आदि।

(5) स्वीकारात्मक क्रिया–विशेषण अव्यय–

जिन क्रिया विशेषण शब्दों से स्वीकृति का बोध होता है, उन्हें स्वीकारात्मक क्रिया–विशेषण अव्यय कहते हैं। जैसे– जी, अवश्य, अच्छा, बहुत अच्छा, जरूर आदि।

(6) निषेधात्मक क्रिया–विशेषण अव्यय–

जिन अव्यय शब्दों से क्रिया के निषेध का ज्ञान होता है, उन्हें निषेधात्मक क्रिया–विशेषण अव्यय कहते हैं। जैसे– न, नहीं, मत आदि।

♦ क्रिया–विशेषणों की रचना :

मूल क्रिया विशेषणों के अतिरिक्त प्रत्यय, समास आदि के योग से भी कुछ क्रिया–विशेषण शब्दों की रचना होती है, जिन्हें यौगिक क्रिया–विशेषण कहा जाता है। ये निम्न प्रकार हैं–

1. संज्ञा से—प्रेमपूर्वक, कुशलतापूर्वक, दिन–भर, रात–तक, सवेरे, सायं आदि।
2. सर्वनाम से—यहाँ, वहाँ, अब, जब, जिससे, इसलिए, जिस पर, ज्यों, त्यों, जैसे–वैसे, जहाँ–वहाँ आदि।
3. विशेषण से—धीरे, चुपके, इतने में, ऐसे, वैसे, कैसे, जैसे, पहले, दूसरे, प्रायः, बहुधा आदि।
4. क्रिया से—चलते–चलते, उठते–बैठते, खाते–पीते, सोते–जागते, जाते–जाते, करते हुए, लौटते हुए आदि।
5. शब्दों की पुनरुक्ति से—हाथों–हाथ, रातों–रात, बीचों–बीच, घर–घर, साफ–साफ, कभी–कभी, क्षण–क्षण, पल–पल, धड़ाधड़ आदि।
6. विलोम शब्दों के योग से—रात–दिन, साँझ–सवेरे, देश–विदेश, उल्टा–सीधा, छोटा–बड़ा आदि।
7. तः प्रत्याना—सामान्यतः, वस्तुतः, साधारणतः, येन केन प्रकारेण (जैसे–तैसे) आदि।
8. बिना प्रत्ययान्त के—कभी–कभी संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण आदि बिना किसी प्रत्यय के, क्रिया–विशेषण के रूप में प्रयुक्त होते हैं। जैसे–

(1) संज्ञा –
• तू सिर पढ़ेगा।
• तुम खाक करोगे।

(2) सर्वनाम –
• यह क्या हुआ?
• तूने यह क्या किया?

(3) विशेषण –
• अच्छा हुआ।
• घोड़ा अच्छा चलता है।

(4) पूर्वकालिक क्रिया –
• सुनकर चला गया।
• देखकर चकरा गया।

इस प्रकार के वाक्य क्रिया–विशेषण के रूप में प्रयुक्त किए जाते हैं।

(9) परसर्ग जोड़कर—कुछ क्रिया–विशेषणों के साथ की, के, को, से, पर आदि विभक्तियाँ भी लगती हैं और इनके योग से भी क्रिया–विशेषणों की रचना होती है। जैसे–

• कहाँ से आ रहे हो।
• यहाँ से क्यों जा रहे हो।
• कब से तुम्हारी राह देख रहा हूँ।
• गुरुजी से नम्रता से बोलो।
• आगे से ऐसा मत करना।
• रात को देर तक मत पढ़ना।

परसर्गों की सहायता से बने ये वाक्य क्रिया–विशेषणों का कार्य कर रहे हैं।

10. पदबन्ध—पूरे वाक्यांश क्रिया–विशेषण के रूप में प्रयुक्त होते हैं। जैसे–

• सवेरे से शाम तक।
• तन–मन–धन से।
• जी–जान से।
• पहाड़ की तलहटी में।
• आपके आदेशानुसार। आदि पदबन्ध क्रिया–विशेषण हैं।

2. समुच्चयबोधक अव्यय–

जिन अव्यय शब्दों से दो शब्द, दो वाक्यांश, दो उपवाक्य, पदबन्ध या वाक्य जोड़े जाते हैं, उन्हें समुच्चय बोधक या योजक अव्यय कहते हैं। जैसे– पुनः, यथा, वरना, अधिक आदि।

• वह निकम्मा है इसीलिए सब उसे दुत्कारते हैं।

• यदि तुम परिश्रम करोगे तो अवश्य उत्तीर्ण होगे।
• राम यहाँ रहे या कहीं और।
• यह मेरा घर है और यह मेरे मित्र का।

उक्त वाक्यों में 'इसीलिए', 'यदि', 'तो', 'या', 'और' शब्द समुच्चय या योजक अव्यय हैं क्योंकि ये वाक्यों को आपस में जोड़ रहे हैं।

♦ समुच्चय बोधक अव्यय के दो भेद हैं–

1. समानाधिकरण समुच्चय बोधक
2. व्याधिकरण समुच्चय बोधक।

1. समानाधिकरण समुच्चय बोधक–

वे अव्यय जो समान घटकों (शब्दों, वाक्यों या वाक्यांशों) को परस्पर मिलाते हैं, समानाधिकरण समुच्चयबोधक अव्यय कहलाते हैं।

समानाधिकरण अव्यय के तीन भेद हैं–

(1) संयोजक–

जो शब्द वाक्यों, वाक्यांशों या शब्दों में संयोग प्रकट करते हैं उन्हें संयोजक कहते हैं। जैसे–
• राम और श्याम दोनों एक ही कक्षा में पढ़ते हैं।
• मैं और मेरा पुत्र एवं पड़ौसी सभी साथ थे।
• बादल उमड़े एवं वर्षा हुई।

उपर्युक्त वाक्यों में 'और', 'एवं' शब्द संयोजक अव्यय हैं।

(2) विकल्पबोधक–

ये अव्यय शब्दों, वाक्यांशों या वाक्यों में विकल्प प्रकट करते हुए अथवा विभाजन करते हुए उनमें मेल कराते हैं। जैसे–
• तुम चलोगे अथवा श्याम चलेगा।
• न रमेश कोई काम करता है न सुरेश ही।
• तुम्हें जन्मदिन पर घड़ी मिलेगी या साइकिल।

उक्त वाक्यों में 'अथवा', 'न' व 'या' शब्द विकल्पबोधक अव्यय का कार्य कर रहे हैं।

(3) भेदबोधक–

जो योजक शब्द एक वाक्य, वाक्यांश या शब्द से भिन्नता का ज्ञान कराते हैं उन्हे भेदबोधक कहते हैं। जैसे– परन्तु, यद्यपि, तथापि, चाहे, तो भी।
• वह नालायक है फिर भी पास हो जाता है।
• यद्यपि तुम बुद्धिमान हो तथापि कम अंक लाते हो।
• तुम पढ़ने में होशियार हो परन्तु रोज नहीं आते।

उक्त वाक्यों में 'फिर भी', 'यद्यपि', 'तथापि' और 'परन्तु' शब्द वाक्यों में भिन्नता का ज्ञान करा रहे हैं।

भेदबोधक के भी चार निम्नलिखित उपभेद हैं–

(1) विरोधदर्शक–

जब संयोजक द्वारा पहले वाक्य से मनचाहे अर्थ का विरोध प्रकट हो, तब वह विरोधदर्शक कहलाता है। जैसे– किन्तु, परन्तु आदि। इनके पहले अल्पविराम (,) अर्द्धविराम (;) लगते हैं।
• रमेश ने बहुत प्रयत्न किया; परन्तु फिर भी असफल रहा।
• छात्राएँ आगे बढ़ती गई; किन्तु छात्र पिछड़ते रहे।

उक्त वाक्यों में मनचाहा अर्थ नहीं मिल पाया क्योंकि प्रयत्न करना सफलता का प्रतीक है; पर असफलता मिली। छात्राओं की तरह छात्र भी आगे बढ़ते पर ऐसा अर्थ नहीं मिला। इसलिए यहाँ विरोधदर्शक अव्यय ही क्रियाशील रहे।

(2) परिणामदर्शक–

इसके द्वारा मिला हुआ वाक्य किसी परिणाम की ओर संकेत करता है। जैसे–
• चुप हो जाओ नहीं तो दण्ड मिलेगा।
• नौकर ने चोरी की थी इसलिए उसे निकाल दिया।
• मेरा कहना मानो अन्यथा बाद में पछताओगे।

उक्त वाक्यों में 'नहीं तो', 'इसलिए', 'अन्यथा' शब्द परिणाम दर्शक का कार्य कर रहे हैं।

(3)संकेतबोधक–

जहाँ दो वाक्यों के आरम्भ में संयोजक द्वारा अगले सम्बन्ध बोधक (योजक) का संकेत पाया जाए, वहाँ संकेत बोधक होता है। वाक्य में अव्यय प्रायः जोड़े में ही प्रयुक्त किए जाते हैं। जैसे–
• यद्यपि वह बहुत पढ़ा लिखा है तथापि रिश्वती होने के कारण उसका सम्मान नहीं है।
• यदि तुम गाँव जाओ तो वहाँ सबसे मेरा राम–राम कहना।
• चाहे कोई कितना धनी हो, तो भी चरित्र के बिना सम्मान नहीं पाता।

उक्त वाक्यों से स्पष्ट है कि यद्यपि के साथ तथापि, यदि के साथ तो, चाहे के साथ तो भी, जब के साथ जब तक, से के साथ तक, भले के साथ परन्तु आदि का वाक्यों में प्रयोग होता है तो उक्त संकेतबोधक अव्यय कहलाएंगे।

(4) स्वरूपबोधक–

जिस शब्द का प्रयोग पहले आए शब्द, वाक्यांश या वाक्य का भाव स्पष्ट करने के लिए प्रयुक्त किया जाए, तो वह समुच्चय बोधक का स्वरूप बोधक नामक अव्यय भेद कहलाता है। जैसे–
• तुम्हारे हाथ फूल जैसे हैं अर्थात् कोमल हैं।
• वह अहिंसावादी यानी गाँधीजी का पुजारी है।
• राम इतना अच्छा है मानो सचमुच राम है।

इन वाक्यों में यानी, अर्थात्, मानो स्वरूप बोधक अव्यय हैं।

2. व्याधिकरण समुच्चय बोधक–

एक या अधिक आश्रित उपवाक्यों को प्रधान वाक्य से जोड़ने वाले अव्यय व्याधिकरण समुच्चय बोधक अव्यय कहलाते हैं। जैसे– यदि, तो, यद्यपि, तथापि, ताकि, इसलिए, यानि, अर्थात् आदि।

व्याधिकरण समुच्चय बोधक अव्यय चार प्रकार के होते हैं–

(I) कारणबोधक–

(क्योंकि, चूँकि, इसलिए, कि, ताकि आदि।)

ये अव्यय वाक्यों के आरंभ में आते हैं। जैसे–
• अजय को बुखार है इसलिए वह स्कूल नहीं जाएगा।
• मुझे घर जाना चाहिए ताकि मैं आराम कर सकूँ।

(II) संकेत बोधक–
(यदि, तो, यद्यपि... तथापि, यद्यपि... परंतु आदि।)
ये अव्यय दो उपवाक्यों को जोड़ते हैं। जैसे–
• यद्यपि वर्षा हुई परंतु गर्मी कम नहीं हुई।
• यदि तुम अपनी खैर चाहते हो तो यहाँ से चले जाओ।

(III) स्वरूप बोधक–
(अर्थात्, यानि, मानो आदि।)
ये अव्यय पहले के उपवाक्य या वाक्यांश के अर्थ को अधिक स्पष्ट करने वाले होते हैं। जैसे–
• मैं अहिंसावादी यानि गाँधी का समर्थक हूँ।
• तुम्हारे हाथ फूल जैसे अर्थात् कोमल हैं।

(IV) उद्देश्य बोधक–
(ताकि, जिससे, कि, इसलिए आदि।)
ये अव्यय आश्रित उपवाक्य से पूर्व आकर मुख्य वाक्य का उद्देश्य स्पष्ट करते हैं। जैसे–
• मैंने सुबह पढ़ाई पूरी कर ली ताकि शाम को खेल सकूँ।
• मैं भागा जिससे गाड़ी पकड़ सकूँ।

3. सम्बन्ध बोधक अव्यय–
जो अव्यय संज्ञा या सर्वनाम के बाद आते हैं एवं उनका सम्बन्ध वाक्य के दूसरे शब्दों या पदों के साथ बताते हैं, उन्हें सम्बन्ध बोधक अव्यय कहते हैं। जैसे– ओर, अपेक्षा, तुल्य, वास्ते, विशेष, पलटे, ऐसा, जैसे, लिए, मारे, करके आदि सम्बन्धवाचक अव्यय हैं।
उदाहरण–
• खुशी के मारे वह पागल हो गया।
• बालक चाँद की ओर देख रहा था।
• मेरे घर के सामने मन्दिर है।
• छत के ऊपर मोर नाच रहा है।
• मेरे कारण तुम्हें परेशानी हुई।

उक्त वाक्यों में मारे, ओर, सामने, ऊपर, कारण शब्द सम्बन्ध बोधक अव्यय का कार्य कर रहे हैं। इनके अतिरिक्त निम्नलिखित सम्बन्ध बोधक शब्द और उनके प्रयोग द्रष्टव्य हैं–
शब्द — प्रयोग
• नाईं—पढ़े–लिखे की नाईं (तरह)।
• रहे—दो घड़ी दिन रहे चल देना।
• नीचे—पेड़ के नीचे खाट पर सो जाना।
• तले—गरीब आकाश तले रात गुजारते हैं।
• पास—गाँव के पास स्टेशन है।
• निकट—शहर के निकट के लोग प्रायः सम्पन्न होते हैं।
• निमित्त—हम सब तो निमित्त मात्र हैं।
• आगे—मेरे घर के आगे बस–स्टेण्ड है।
• पीछे—हमारे घर के पीछे बगीचा है।
• पहले—वर्षा से पहले छत ठीक कर लो।
• द्वारा—मेरे द्वारा कुछ गलत न हो जाए।
• समान—ज्ञान के समान और कोई पवित्र वस्तु नहीं है।
• समीप—तालाब के समीप मत जाना।
• तक—हम दो दिन तक भटकते रहे।
• प्रतिकूल—प्रकृति प्रतिकूल चले तो विनाश हो जाएगा।
• विरुद्ध—मेरे विरुद्ध वह आवाज नहीं उठा सकता।
• मध्य—आतंकवाद को लेकर भारत और पाकिस्तान के मध्य मन मुटाव चल रहा है।
• विषय—मुझे उसके विषय में कुछ नहीं मालूम।
• बाहर—घर के बाहर बहुत बड़ा चौक है।
• परे—शक्ति से परे व्यक्ति को कुछ नहीं करना चाहिए।
• समेत—भाइयों के समेत मैं भी वहीं था।
• तुल्य—वह मानव नहीं देवता–तुल्य है।
• सदृश—वह खुशी के मारे कमल के सदृश खिल उठा।

♦ सम्बन्ध बोधक अव्यय के भेद–
सम्बन्धबोधक अव्ययों के भण्डार को भाषा की सुविधा हेतु चौदह भेदों में इस प्रकार स्पष्ट करेंगे–
1. कालवाचक – आगे, पीछे, पहले, बाद, पूर्व, पश्चात्, उपरान्त आदि।
2. स्थानवाचक – पास, दूर, तरफ, प्रति, ऊपर, नीचे, तले, मध्य, बाहर ही, भीतर, अन्दर, सामने, निकट, यहाँ, वहाँ, नजदीक आदि।
3. साधनवाचक – हाथ, द्वारा, हस्ते, विरुद्ध, जरिये, मारफत, सहारे आदि।
4. दिशावाचक – सामने, ओर, पार, तरफ, आर–पार, प्रति, आस–पास आदि।
5. विरोधसूचक – प्रतिकूल, उलटे, विपरीत, खिलाफ आदि।
6. हेतु (कारण) वाचक – कारण, हेतु, लिए, निमित्त, वास्ते, खातिर आदि।
7. व्यतिरेकवाचक – अतिरिक्त, अलावा, सहित, सिवाय आदि।
8. सहसूचक – साथ, संग, समेत, पूर्वक, अधीन, वश आदि।
9. पार्थक्य सूचक – दूर, पृथक्क, परे, हटकर आदि।
10. तुलनावाचक – की अपेक्षा, की बजाय, वनिस्पत आदि।
11. संग्रहवाचक – मात्र, भर, पर्याप्त, तक आदि।
12. साम्यवाचक – सदृश, बराबर, ऐसा, जैसा, अनुसार, समान, तुल्य, नाईं, अनुरूप, तरह आदि।
13. विनिमयवाचक – एवज, पलटे, के बदले, की जगह आदि।
14. विषयकवाचक – भरोसे, लेखे, नाम, विषय, बाबत आदि।

4. विस्मयादिबोधक अव्यय–
वे अव्यय शब्द जो बोलने वाले या लिखने वाले के विस्मय, हर्ष, शोक, लज्जा, ग्लानि, खेद आदि मनोभावों को प्रकट करते हैं, विस्मयादिबोधक अव्यय कहलाते हैं। जैसे–

अहो, हे, छी, वाह, धिक्कार आदि।

♦ विस्मय बोधक अव्यय के सात भेद हैं –
1. हर्षबोधक—वाह–वाह!, धन्य–धन्य!, आहा!, शाबाश!
2. शोकबोधक—हाय!, आह!, हा–हा!, त्राहि–त्राहि!
3. आश्चर्यबोधक—अहो!, ओह!, ओहो!, हैं!, क्या!
4. अनुमोदनबोधक—अच्छा!, हाँ–हाँ!, वाह!, शाबाश!
5. तिरस्कारबोधक—छिः!, हट!, अरे!, धिक्!
6. स्वीकृतिबोधक—अच्छा!, ठीक!, बहुत अच्छा!, हाँ!, जी हाँ!
7. सम्बन्धबोधक—अरे!, रे!, अजी!, अहो! आदि।

कभी–कभी संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण आदि शब्द भी विस्मयादिबोधक का काम करते हैं। जैसे–
• संज्ञा—राम–राम!, शिव–शिव!, जय गंगे!, श्री कृष्ण! आदि।
• सर्वनाम—यही!, कौन!, क्या!, तूने! आदि।
• विशेषण—सुन्दर!, अच्छा!, खूब!, बहुत अच्छे!, जंगली! आदि।
• क्रिया—चला जाऊँ!, चुप!, आ गये! आदि।
• वाक्यांश—शान्तम् पापम्! आदि।

♦ निपात :
वे सहायक पद जो वाक्यार्थ में नवीन अर्थ या चमत्कार उत्पन्न कर देते हैं, निपात कहलाते हैं। जैसे– ही, तक, तो, भी, सा, जी, मत, यह, क्या आदि निपात हैं।

निपात सहायक शब्द होते हुए भी वाक्य का अंग नहीं हैं। इनका कोई भी लिँग या वचन नहीं होता। निपात का कार्य शब्द–समूह को बल प्रदान करना है।

♦ निपात के भेद–
1. स्वीकारात्मक—हाँ, जी, जी हाँ।
2. नकारात्मक—जी नहीं, नहीं।
3. निषेधात्मक—मत।
4. प्रश्नबोधक—क्या।
5. विस्मयात्मक—काश।
6. तुलनात्मक—सा।
7. अवधारणात्मक—ठीक, लगभग, करीब, तकरीबन।
8. आदरात्मक—जी।

पद–परिचय

♦ पद–परिचय :
वाक्य में प्रयुक्त सार्थक शब्द को 'पद' कहते हैं। वाक्य में प्रयुक्त प्रत्येक पद के स्वरूप, प्रकार या भेद का विश्लेषण करना अथवा परिचय देना ही 'पद–परिचय' कहलाता है।
अंग्रेजी में इसे (Parsing) कहते हैं। पद–परिचय को पदान्वय, पद–व्याख्या, पद–निर्देश, पदच्छेद, शब्द निरूपण या शब्दबोध आदि भी कहा जाता है।

वाक्य में संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण, क्रिया तथा अव्यय शब्द प्रयुक्त होते हैं। पद–परिचय में यह बताया जाता है कि वाक्य में शब्द विशेष का प्रयोग के अनुसार क्या स्थान है? यदि यह विकारी (संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण और क्रिया) है तो उसके लिँग, पुरुष, कारक, वचन आदि क्या हैं और उसके साथ वाक्य में आये अन्य शब्दों का क्या सम्बन्ध है? यदि वह शब्द अविकारी (क्रिया–विशेषण, सम्बन्धबोधक, समुच्चय बोधक, विस्मयादिबोधक) है तो किस अर्थ में उसका प्रयोग हुआ है और वह अव्यय के किस भेद के अन्तर्गत आता है और वाक्य में अन्य शब्दों से उसका क्या सम्बन्ध है? इस प्रकार पद–परिचय में वाक्यों में प्रयुक्ति के अनुसार शब्दों की भेदोपभेद सहित व्याख्या करनी पड़ती है।

उदाहरण–
1. संज्ञा का पद परिचय–
इसमें संज्ञा का प्रकार (व्यक्तिवाचक, जातिवाचक एवं भाववाचक), लिंग, वचन, कारक (कर्त्ता, कर्म आदि) तथा वाक्य के क्रिया आदि शब्दों से सम्बन्ध बताया जाता है। जैसे–
• बचपन में बालकों में चंचलता होती है।
पद–परिचय–
(1) बचपन—भाववाचक संज्ञा, पुल्लिँग, एकवचन, अधिकरण कारक, 'होती है' क्रिया का आधार।
(2) बालकों—जातिवाचक संज्ञा, पुल्लिँग, एकवचन, अधिकरण कारक, 'होती है' क्रिया का आधार।
(3) चंचलता—भाववाचक संज्ञा, स्त्रीलिँग, एकवचन, कर्त्ताकारक, 'होती है' क्रिया का कर्त्ता।

2. सर्वनाम का पद–परिचय–
इसमें सर्वनाम का भेद, वचन, लिँग, कारक, पुरुष और अन्य शब्दों से सम्बन्ध बताया जाता है। जैसे–
• वह कौन थी, जिससे तुम अभी–अभी बात कर रहे थे।
पद–परिचय–
(1) वह—पुरुषवाचक सर्वनाम, अन्यपुरुष, स्त्रीलिँग, एकवचन, कर्त्ताकारक, 'बात कर रहे थे' क्रिया का कर्त्ता।
(2) कौन—प्रश्नवाचक सर्वनाम, स्त्रीलिँग, एकवचन, अधिकरण कारक, 'वह' का अधिकरण।
(3) जिससे—सम्बन्ध वाचक सर्वनाम, स्त्रीलिँग, एकवचन, कर्मकारक, क्रिया 'बात कर रहे थे' का कर्म।
(4) तुम—पुरुषवाचक सर्वनाम, मध्यमपुरुष, पुल्लिँग, एकवचन, कर्त्ताकारक, 'बात कर रहे थे' क्रिया का कर्त्ता।

3. विशेषण का पद–परिचय–
इसमें विशेषण के भेद, लिँग, वचन, विशेषण की अवस्था, विशेष्य का निरूपण ये बातें बताई जाती हैं। जैसे–
• जोधपुरी साड़ी खरीदनी चाहिए।
पद–परिचय–
(1) जोधपुरी—व्यक्तिवाचक विशेषण, स्त्रीलिँग, एकवचन, साड़ी का विशेषण।

4. क्रिया का पद–परिचय–
क्रिया के पदान्वय में क्रिया के भेद (सकर्मक और अकर्मक), काल (वर्तमान काल, भूतकाल, भविष्यत्काल), पुरुष, लिँग, वाच्य (कर्त्तृवाच्य, कर्मवाच्य, भाववाच्य), क्रिया का कर्त्ता आदि से सम्बन्ध बताया जाता है। जैसे–
• सुरेन्द्र ने कहा– "मैं पुस्तक पढूँगा। तुम भी अपना पाठ पढ़कर सुनाओ।"

पद–परिचय–
(1) कहा—सकर्मक क्रिया, सामान्य भूतकाल, अन्यपुरुष, पुल्लिँग, एकवचन, कर्त्तृवाच्य, 'पढ़ूँगा' क्रिया का कर्त्ता सुरेन्द्र है और कर्म है– मैं पुस्तक पढ़ूँगा।
(2) पढ़ूँगा—सकर्मक क्रिया, सामान्य भविष्यत काल, उत्तम पुरुष, पुल्लिँग, एकवचन, कर्त्तृवाच्य, 'पढ़ूँगा' क्रिया का कर्त्ता 'मैं' और कर्म है– 'पुस्तक' ।
(3) पढ़कर—सकर्मक पूर्वकालिक क्रिया, कर्म है– 'पाठ'।
(4) सुनाओ—सकर्मक प्रेरणार्थक क्रिया, मध्यम पुरुष, बहुवचन, कर्त्तृवाच्य, इसका कर्त्ता है– 'तुम'।

5. अव्यय का पद–परिचय–
इसमें अव्यय (क्रिया–विशेषण) का प्रकार और क्रिया से सम्बन्ध बताया जाता है। जैसे–
• तुम यहाँ कब आये।
पद–परिचय–
(1) यहाँ—स्थानवाचक क्रियाविशेषण अव्यय 'आये' क्रिया की विशेषता बताता है।
(2) कब—कालबोधक क्रियाविशेषण अव्यय 'आये' क्रिया की विशेषता बतलाता है।
• मैं आज काम नहीं करूँगा।
पद–परिचय–
(1) आज—कालवाचक क्रिया विशेषण, विशेष्य क्रिया 'करूँगा'।
(2) नहीं—रीतिवाचक क्रियाविशेषण, विशेष्य क्रिया 'करूँगा'।

—:o:—

« पीछे जायें | आगे पढ़ें »

• सामान्य हिन्दी
♦ होम पेज

प्रस्तुति:–
प्रमोद खेदड़

सामान्य हिन्दी

13. पारिभाषिक शब्दावली

• Above all – सर्वोपरि
• Above cited – ऊपर उद्धृत
• Above quoted – ऊपर दिया हुआ
• Acting in good faith – सद्भाव से कार्य करते हुए
• Ad hoc – तदर्थ
• After adequate consideration – समुचित विचार के बाद
• After consulation – से परामर्श करके
• Approved as proposed – यथा प्रस्ताव अनुमोदित
• As above – जैसा ऊपर दिया है
• As a last resort – अन्तिम उपाय के रूप मेँ
• As a matter of fact – यथार्थतः/वस्तुतः
• As a result of – के फलस्वरूप
• As directed – निदेशानुसार
• As is where is – जैसा है और जहाँ है
• As may be necessary – यथावश्यक
• As of right – साधिकार
• As per – के अनुसार
• As per details below – नीचे लिखे ब्यौरों के अनुसार
• As modified – यथा शोधित
• As the case may be – यथा प्रकरण/यथास्थिति
• Attention is invited to – की ओर ध्यान आकर्षित किया जाता है
• Beg to state – निवेदन है
• Best of knowledge and belief – मेरी जानकारी और विश्वास मेँ
• By authority of – के प्राधिकार मेँ
• By order – के आदेश से
• By return of post – लौटती डाक से
• Cabinet – मंत्रिमण्डल
• Cadre – संवर्ग
• Calling – व्यवसाय
• Camera meeting – गुप्त सभा
• Candidate – उम्मीदवार/प्रत्याशी
• Capital – पूँजी, राजधानी
• Capitaion fee – प्रतिव्यक्ति शुल्क
• Career – जीविका, वृत्तिका
• Carried down – तल शेष
• Carried forward – अग्रेषित शेष
• Carry out – पालन/कार्यान्विति
• Cartage – गाड़ी भाड़ा
• Case – मामला/प्रकरण
• Casting vote – निर्णायक मत
• Catch Word – सूचक शब्द
• Caution – सावधानी, सावधान
• Census – जनगणना
• Charge – भार
• Charge sheet – आरोप पत्र
• Charity – खैरात/दान
• Civil – दीवानी
• Clarification – स्पष्टीकरण
• Clause – खण्ड
• Co-accused – सह–अभियुक्त
• Codification – संहिताकरण
• Coherance – संबद्धता/संगति
• Coincidence - संयोग
• Collaboration - सहयोग
• Collusion - धोखा, दुरभि संधि
• Colour blindness - वर्णान्धता
• Comittee - समिति
• Command - रक्षा, समादेश
• Commencement - आरम्भ
• Commenoration - स्मारक
• Commission - आयोग, दलाली
• Common roster - सामान्य नामावली
• Communique - विज्ञप्ति
• Commutaion - विनिमय/परिवर्तन

• Commuted Leave - परिवर्तित छुट्टी
• Compassionate allowance - अनुकम्पा भत्ता
• Compensatory allowance - प्रतिपूरक भत्ता
• Competence - क्षमता/समर्थता
• Compilation - संकलन
• Complaint Book - शिकायत पुस्तिका
• Compliance - अनुपालना
• Complimentary - मानार्थ
• Concern - प्रतिष्ठान, सम्बन्धित
• Concise - संक्षिप्त
• Concurrence - सहमति
• Condition - शर्त
• Condone - माफ करना
• Confer - प्रदान या विचार–विमर्श करना
• Conference - सम्मेलन
• Come into affect – प्रभावशाली होना
• Come into force – लागू होना
• Come into operation – प्रवर्तन में लाया जाना
• Copy inclosed – प्रतिलिपि संलग्न है
• Delay regretted – विलम्ब के लिए खेद है
• Demi official (D.O.) – अर्द्धशासकीय
• Draft as amended is put up – यथा संशोधित प्रारूप प्रस्तुत है
• Draft for approval – अनुमोदनार्थ प्रारूप
• Draw attention – ध्यान दिलाना
• Duly complied – विधिवत् पालन किया गया
• During the course of discussion – विचार–विमर्श के दौरान
• Expedite action – कार्यवाही शीघ्र करें
• Ex-officio – पदेन
• Express Delivery – अविलम्ब वितरण
• Follow up action – अनुवर्ती कार्यवाही
• For approval – अनुमोदनार्थ
• For consideration – विचारार्थ
• For disposal – निपटाने के लिए
• For favourable action – अनुकूल कार्यवाही के लिए
• For favour of doing the needful – उचित कार्यवाही की कृपा के लिए
• For favour of orders – आदेशार्थ
• For further action – आगे की कार्यवाही के लिए
• For guidance – मार्गदर्शन के लिए
• For information – सूचनार्थ
• For perusal – अवलोकनार्थ
• For signature – हस्ताक्षरार्थ
• For suggestion – सुझाव देने के लिए
• For sympathetic consideration – सहानुभूतिपूर्वक विचार के लिए
• Hard and fast rule – पक्का नियम
• I am directed to – मुझे निर्देश हुआ है
• In anticipation of – की प्रत्याशा में
• In complianee with – के अनुपालन में
• In continuation of – के आगे
• In course of business – काम के दौरान
• In default of – के अभाव में
• In detail – विस्तार से
• In due course – यथा विधि
• In favour of – के पक्ष में/के नाम
• In his discretion – स्वविवेक से
• In lump sum – एक मुश्त
• In offical capacity – पद की हैसियत से
• In order of priority – प्राथमिकता क्रम से
• In public interest – लोक हित में
• In supersession of – का अतिक्रमण करते हुए
• Inter alia – और बातों में
• Interference undue – अनुचित हस्तक्षेप
• In the interest of – के हित में
• In the prescribed manner – निर्धारित ढंग से
• Is here by informed – को सूचित किया जाता है
• Keep in abeyance – मुल्तवी रखा जाये
• Keeping pending – लम्बित रखा जाये
• Keep with the file – पत्रावली के साथ रखिये
• Last Pay Certificate (LPC) – अन्तिम वेतन प्रमाण-पत्र
• Leave not due – छुट्टी हक में नहीं है
• Matter is under consideration – मामला विचाराधीन है
• May be considered – विचार किया जाये
• May be informed accordingly – तद्नुसार सूचित कर दिया जाये
• May please see – कृपया देखें
• Necessary action – आवश्यक कार्यवाही
• Needful done – अपेक्षित कार्यवाही हो चुकी है

• No action – कोई कार्यवाही नहीं
• No admission – प्रवेश निषेध
• No Objection Certificate (NOC) – अनापत्ति-पत्र
• Noted, thanks – नोट कर लिया, धन्यवाद
• Notice in writing – लिखित सूचना
• Not playable before – के पूर्व अदेय
• Objectionable action – आपत्तिजनक कार्य
• Observations made above – उपर्युक्त विचार
• Office Copy (O.C.) – कार्यालय प्रति
• On deputation – प्रतिनियुक्ति पर
• Out today – आज ही
• Paper for disposal – निपटाने के लिए कागज
• Paper under consideration – विचाराधीन पत्र
• Please discuss – कृपया बात करें
• Put up – प्रस्तुत कीजिए
• Reminder may be sent – स्मरण-पत्र भेज दें
• Retrospective effect with – पूर्वव्यापी प्रभाव से
• See, thanks – देख लिया, धन्यवाद
• Show cause notice – कारण बताओ नोटिस
• Submitted for orders – आदेशार्थ प्रस्तुत
• Submitted for perusal – अवलोकनार्थ प्रस्तुत
• Take over – कार्यभार संभालना
• Through proper channel – उचित माध्यम से
• To the best of my knowledge – जहाँ तक मुझे पता है
• To the point – विषयानुकूल
• Under consideration – विचाराधीन
• Whichever is earlier – जो भी पहले हो
• With full particulars – पूरे विवरण के साथ।

♦ कार्यालय में दैनिक प्रयोग में आने वाली अभिव्यक्तियाँ ♦

• Hello – हैलो, कहिये, जी हाँ, हाँ जी
• File please – पत्रावली प्रस्तुत करें
• Report please – कृपया रिपोर्ट करें
• Please speak – कृपया बात करें
• Get it cyclostyled – इसे साइक्लोस्टाइल करें
• File is not complete – पत्रावली अपूर्ण है
• Issue sanction – स्वीकृति जारी करें
• Top priority may be given to it – इसे सर्वोच्च प्राथमिकता दी जाये
• This may be treated most urgent – इसे अत्यावश्यक समझा जाये
• Progress is very slow – प्रगति बहुत मंद है
• Explain the position clearly – स्थिति स्पष्ट की जाये
• Put up with rules – नियमों के साथ प्रस्तुत करें
• Please get it done now – कृपया अब इसकी व्यवस्था करें
• Please explain – स्पष्ट करें
• Today please – आज ही
• Report is not clear – रिपोर्ट स्पष्ट नहीं है
• Post may be abolished – पदों को समाप्त किया जाये
• Notice may be issued – नोटिस जारी हो
• Action taken approved – कार्यवाही अनुमोदित है
• Admit the case – मामला विचारार्थ लें
• May be allowed – अनुमति दे दी जाये
• Tour programme may be intimated – दौरे के कार्य की सूचना दे दी जाये
• May be permited – अनुमति दी जाये
• Fair draft be put up – शुद्ध प्रारूप प्रस्तुत करें
• Keep pending – विचाराधीन रखें
• Put up after a week – एक सप्ताह बाद प्रस्तुत करें
• The file is in submission – फाइल पेशी पर है
• Sanction may please be accorded – कृपया स्वीकृति दी जाये
• Election urgent – चुनाव अत्यावश्यक
• Checked and found correct – जाँचा और सही पाया।

♦♦♦

« पीछे जायें | आगे पढ़ें »

• सामान्य हिन्दी
♦ होम पेज

प्रस्तुति:–
प्रमोद खेदड़

सामान्य हिन्दी

9. शब्द–ज्ञान

1. पर्यायवाची शब्द

जो शब्द अर्थ की दृष्टि से समान होते हैं, वे पर्यायवाची शब्द कहलाते हैं। हिन्दी भाषा में प्रयुक्त होने वाले सभी शब्द अपना स्वतंत्र अर्थ रखते हैं तथा कोई भी शब्द पूरी तरह से दूसरे शब्द का पर्याय नहीं होता, फिर भी कुछ समानताओं के आधार पर इन्हें पर्यायवाची मान लिया जाता है। परन्तु स्मरणीय बात यह है कि अर्थ में समानता होते हुए भी पर्यायवाची शब्द प्रयोग में सर्वथा एक–दूसरे का स्थान नहीं ले सकते। जैसे– मृतात्माओं के तर्पण के लिए जल शब्द का प्रयोग उपयुक्त है, पानी का नहीं।

प्रत्येक पर्यायवाची शब्द का वाक्य प्रयोग के अनुसार ही उचित अर्थ बैठता है। अतः भावानुसार इन शब्दों का प्रयोग करना चाहिए। पर्यायवाची शब्द गद्य या पद्य साहित्य को पुनरुक्ति दोष से ग्रसित होने से बचाते हैं।

महत्त्वपूर्ण पर्यायवाची शब्द–
• अंधकार — तम, तिमिर, अँधेरा, अँधियारा, ध्वांत, तमिस्त्र, तमस।
• अंधा — नेत्रहीन, चक्षुहीन, विवेकशून्य, दृष्टिहीन।
• अहंकार — दर्प, दम्भ, अभिमान, घमण्ड, गर्व, मद।
• अतिथि — मेहमान, पाहुना, आगंतुक, अभ्यागत, बटाऊ।
• अग्नि — आग, अनल, पावक, वह्नि, ज्वाला, कृशानु, वैश्वानर, धनंजय, दहन, सर्वभक्षी, जातवेद, हुताशन, हव्यवान, ज्वलन, शिखा, वैसन्दर, रोहिताश्व, कृपीटयोनि, तनूनपात, शोचिष्केनश, उषर्बुध, आश्रयाश, वृहदभानु, वायुसख, चित्रभानु, विभावसु, शुचि, अप्पित्त।
• अकाल — सूखा, दुर्भिक्ष, भुखमरी, कमी, काळ (राजस्थानी)।
• अध्यापक — गुरु, आचार्य, शिक्षक, प्रवक्ता, उपाध्याय।
• अमृत — सुधा, पीयूष, अमिय, सोम, सुरभोग, जीवनोदक, अमी, मधु, दिव्य पदार्थ।
• अनुपम — अनूप, अपूर्व, अतुल, अनोखा, अद्भुत, अनन्य, अद्वितीय, बेजोड़, बेमिसाल, अनूठा, निराला, अभूतपूर्व, विलक्षण।
• असुर — दैत्य, दानव, राक्षस, निशाचर, रजनीचर, दनुज, रात्रिचर, जातुधान, तमीचर, मायावी, सुरारि, निश्चिर, मनुजाद।
• अचल — अटल, अडिग, अविचल, स्थिर, दृढ़।
• अनाथ — यतीम, नाथहीन, बेसहारा, दीन, निराश्रित।
• अपमान — अनादर, बेइज्जती, अवमानना, निरादर, तिरस्कार।
• अभिजात — संभ्रान्त, कुलीन, श्रेष्ठ, योग्य।
• अभिप्राय — आशय, तात्पर्य, मतलब, अर्थ, मंशा, व्याख्या, भाष्य, टीकापिप्पणी।
• अरण्य — जंगल, अटवी, विपिन, कानन, वन, कान्तार, दावा, गहन, बीहड़, विटप।
• अजेय — अदम्य, अपराजेय, अपराजित, अजित।
• अन्य — पर, भिन्न, पृथक, और, दूसरा, अलग।
• अनुचर — भृत्य, किंकर, दास, परिचारक, सेवक।
• अनार — शुकप्रिय, रामबीज, दाड़िम।
• अर्जुन — पार्थ, धनंजय, सव्यसाची, गाण्डीवधारी।
• अक्षर — हरफ, ब्रह्म, अ आदि वर्ण, अविनाशी।
• अनाज — अन्न, धान्य, खाद्यान्न, शस्य, गल्ला।
• अधिकार — हक, स्वामित्व, स्वत्व, कब्जा, आधिपत्य।
• अनुमान — अंदाज, तखमीना, अटकल, कयास।
• अनुमति — इजाजत, आज्ञा, अनुज्ञा, मंजूरी, स्वीकृति।
• अप्सरा — देवांगना, सुरांगना, देवकन्या, सुखनिता, अरुणप्रिया।
• अवनति — अपकर्ष, ह्रास, गिराव, उतार।
• अशुद्ध — दूषित, अपवित्र, मलिन, गंदा, गलत।
• अस्त — ओझल, गायब, छिपना, तिरोहित।
• आँख — नेत्र, नयन, चक्षु, दृग, लोचन, अक्षि, नजर, दृष्टि, विलोचन।
• आँसू — अश्रु, नयनजल, नेत्रनीर, नैत्रज, दृगजल, दृगम्बु।
• आँधी — तूफान, चक्रवात, झंझावत, बवंडर।
• आँगन — अंगना, प्रांगण, बाखर, बगर, अजिर, बाड़ा।
• आकाश — नभ, अंबर, व्योम, गगन, अनंत, शून्य, तारापथ, अन्तरिक्ष, दुष्कर, आसमान, महानील, द्यौ, शून्यरव, दिव, अभ्र, सुखर्त्यन्, क्यित, विहायस, नाक, द्युस्।
• आम — आम्र, रसाल, सहकार, अमृतफल, अम्बु, सौरभ, मादक।
• आनन्द — आमोद, प्रमोद, प्रसन्नता, हर्ष, उल्लास, आह्लाद, मोद, मुद, खुशी, मजा, सुख, चैन, विहार।
• आन — प्रण, प्रतिज्ञा, हठ, शपथ, घोषणा, मर्यादा।
• आभूषण — जेवर, गहना, भूषण, आभरण, मंडन, अलंकार।
• आत्मा — चैतन्य, विभु, जीव, सर्वज्ञ, सर्वव्याप्त, देव, चेतनतत्त्व, अन्तःकरण।
• आज्ञा — आदेश, निदेश, हुक्म।
• आयु — उम्र, वय, अवस्था, जीवनकाल।
• आदर्श — मानक, प्रतिमान, नमूना, प्रतिरूप।
• आदि — प्रथम, आरम्भिक, पहला, अथ।
• आपत्ति — विपत्ति, आपदा, संकट, मुसीबत।
• आश्रय — अवलंब, सहारा, आधार, प्रश्रय, आसरा।
• आश्रम — कुटी, विहार, मठ, संघ, अखाड़ा।
• आचरण — व्यवहार, चाल–चलन, बरताव।
• आयुष्मान — चिरायु, दीर्घायु, चिरंजीव।
• इन्द्र — महेन्द्र, देवराज, देवेश, सुरपति, शचिपति, वासव, पुरन्दर, सुरेन्द्र, सुरेश, देवेन्द्र, मघवा, शक्र, पुरहूत, देवपति, उर्वशीनाथ, सुनासीर, वज्री, वृत्रहा, नाकपति, सलस्त्राक्ष।

• इच्छा — अभिलाषा, आकांक्षा, कामना, चाह, ईप्सा, मनोरथ, ईहा, स्पृहा, उत्कंठा, लालसा, वांछा, लिप्सा, काम, चाव।
• ईश्वर — परमात्मा, प्रभु, ईश, जगदीश, भगवान, परमेश्वर, जगदीश्वर, विधाता, दीनबन्धु, जगन्नाथ, हरि, राम, विश्वम्भर।
• ईर्ष्या — जलन, डाह, द्वेष, खार, रश्क, कुढ़न।
• ईनाम — उपहार, पुरस्कार, पारितोषिक, बख्शीश।
• ईमानदारी — सदाशयता, निष्कपटता, दयानतदारी।
• उपहास — मजाक, खिल्ली, परिहास, मखौल, हास, प्रहसन, हँसी, लास।
• उपवन — बाग, बगीचा, उद्यान, वाटिका, फुलवारी, गुलशन।
• उत्तम — श्रेष्ठ, उत्कृष्ट, प्रवर, प्रकृष्ट, बेहतरीन, अच्छा।
• उत्थान — उत्कर्ष, आरोह, चढ़ाव, उत्क्रमण, उन्नति, प्रगति, उन्नयन।
• उदाहरण — दृष्टांत, मिसाल, नजीर, नमूना।
• उपकार — भलाई, नेकी, हितसाधन, कल्याण, मदद, परोपकार।
• उत्सव — समारोह, पर्व, त्यौहार, जलसा, जश्न।
• उदय — प्रकट होना, आरोहण, चढ़ना।
• उदास — दुखी, रंजीदा, विरक्त, अनमना, अन्यमनस्क।
• उद्देश्य — लक्ष्य, ध्येय, हेतु, प्रयोजन।
• उद्यम — साहस, उद्योग, परिश्रम, व्यवसाय, धंधा, कार्य, व्यापार, कर्म, क्रिया।
• उपमा — तुलना, मिलान, सादृश्य, समानता।
• उदर — पेट, कुक्ष, जठर।
• ऊँट — उष्ट्र, क्रमलेक, मरुयान, लम्बोष्ठ, महाग्रीव।
• एकान्त — सूना, निर्जन, जनशून्य।
• ऐश्वर्य — वैभव, सम्पन्नता, समृद्धि, प्रभुत्व, ठाठ–बाट।
• ओझल — गायब, लुप्त, अदृश्य, अंतर्धान, तिरोभूत।
• ओस — तुषार, हिमकण, शबनम, हिमबिंदु।
• ओष्ठ — अधर, रदच्छद, लब, किनारा, होंठ, औंठ।
• कमल — नलिन, अरविन्द, उत्पल, राजीव, पद्म, पंकज, नीरज, सरोज, जलज, जलजात, वारिज, शतदल, अम्बुज, पुण्डरिक, अब्ज, सरसिज, इंदीवर, ताम्ररस, कंज, वनज, अम्भोज, सहस्त्रदल, पुष्कर, कुवलय, पङ्करुह, सरसीरुह, कोकनद।
• कल्पवृक्ष — देवदारु, सुरतरु, मन्दार, पारिजात, कल्पद्रुम, देववृक्ष, सुरद्रुम, कल्पतरु।
• कबूतर — कपोत, हारीत, परेवा, पारावत, रक्तलोचन।
• कर्ण — अंगराज, सूतपुत्र, सूर्यपुत्र, राधेय, कौन्तेय।
• करुणा — दया, प्रसाद, अनुग्रह, अनुकंपा, कृपा, मेहरबानी।
• कर्ज — ऋण, उधार, देनदारी, देयता।
• कलंक — लांछन, दोष, दाग, तोहमत, धब्बा, कालिख पोतना।
• कमर — कटि, श्रोणि, लंक, मध्यांग।
• कस्तूरी — मृगनाभि, मृगमद, मदलता।
• कवि — कल्पक, सृष्टा, काव्यकार, रचनाकार।
• कलश — घट, घड़ा, गागर, गगरी, मटका, घटिका, कुंभ, कूट।
• कपड़ा — वस्त्र, चीर, वसन, अंबर, पट, कर्पट, दुकूल, परिधान।
• कष्ट — दुःख, दर्द, पीड़ा, मुसीबत, व्यथा, कठिनाई, व्याधि, कलेश, विषाद, संताप, वेदना, यातना, यंत्रणा, पीर, भीर, संकट, शोक, श्वेद, क्षोम, उत्पीड़न।
• कामदेव — काम, अनंग, मदन, मनोज, मन्मथ, कन्दर्प, स्मर, रतिपति, पुष्पधन्वी, मयन, मीनकेतु, पंचशर, मकरध्वज, मनसिज, पुष्पशायक, पंचबाण, मनोभव, कुसुमायुध, मार, सारंग, दर्पक, शम्बरारि।
• कान — कर्ण, श्रवण, श्रवणेन्द्रिय, श्रोत, श्रुतिपुट, श्रुतिपटल।
• कान्ति — चमक, आभा, प्रभा, सुषमा, द्युति।
• किरण — रश्मि, कर, मरीचि, मयूख, अंशु, दीधिति, वसु, ज्योति, दीप्ति।
• किताब — पोथी, ग्रन्थ, पुस्तक, गुटका।
• किनारा — तट, तीर, कूल, पुलिन, पर्यंत, बेलातट।
• कुबेर — यक्षराज, धनाधिप, धनद, धनपति।
• कुत्ता — श्वान, शुनक, गंडक, कूकर, श्वजन।
• क्रूर — निष्ठुर, निर्मोही, बर्बर, नृशंस, निर्दयी।
• कृष्ण — श्याम, कन्हैया, वासुदेव, मोहन, राधास्वामी, नंदलाल, मुरलीधर, बनवारी, माधव, मधुसूदन, गिरिधर, गोपाल, गोपीवल्लभ, विश्वंभर, नटवर, गिरधारी, चतुर्भुज, नारायण, जनार्दन, पुरुषोत्तम, अच्युत, गरुड़ध्वज, कैटमारि, घनश्याम, चक्रपाणि, पद्मनाभ, राधापति, मुकुन्द, गोविन्द, केशव।
• कृतज्ञ — आभारी, उपकृत, अनुगृहीत, कृतार्थ, ऋणी।
• कृषक — किसान, हलवाहा, भूमिसुत, खेतिहर, कृषिजीवी, हलधर, अन्नदाता, भूमिपुत्र।
• क्रोध — गुस्सा, रीस, अमर्ष, रोष, शेष, कोप, कोह, प्रतिघात।
• केला — कदली, भानुफल, रंभा, गजवसा, कुंजरासरा, मोचा।
• केश — बाल, शिरोरुह, कच, कुंतल, पश्म, चिकुर, अलक।
• कोयल — पिक, कलकंठ, कोकिला, श्यामा, काकपाली, बसंतदूत, सारिका, कुहुकिनी, वनप्रिया, सारंग, कलापी, कोकिल, परभृत।
• कौआ — काक, वायस, पिशुन, करटक, काग।
• क्षमा — माफी, सहनशीलता, सहिष्णुता।
• खंभा — यूप, स्तंभ, खंभ, स्तूप।
• खल — अधम, दुष्ट, दुर्जन, धूर्त, कुटिल, नीच, पामर, पिशुन, निकृष्ट, शठ।
• खिड़की — गवाक्ष, झरोखा, बारी, वातायन, दरीचा।
• गंगा — देवनदी, मंदाकिनी, भगीरथी, विष्णुपदी, देवपगा, ध्रुवनंदा, सुरसरिता, देवनदी, जाह्नवी, त्रिपथगा, देवगंगा, सुरापगा, विपथगा, स्वर्गापगा, आपगा, सुरधनी, विवुधनदी, विवुधा, पुण्यतीया, नदीश्वरी, भीष्मसू।
• गणेश — विनायक, गजानन, गौरीनंदन, गणपति, गणनायक, शंकरसुवन, लम्बोदर, महाकाय, एकदन्त, गजवदन, मूषकवाहन, वक्रतुण्ड, विघ्ननाशक, धूम्रकेतु, गणाध्यक्ष, गणराज, भालचन्द्र, पार्वतीनंदन, सिद्धिसदन।
• गरुड़ — वैनतेय, खगकेतु, हरिवाहन, खगेश, पक्षिराज, उरगरिपु।
• गधा — गदहा, खर, गर्दभ, रासभ, वेशर, चक्रीवान, वैशाखनन्दन।
• गला — कण्ठ, ग्रीवा, शिरोधरा।
• गाय — गौ, गऊ, गैया, धेनु, सुरभी, गौरी, पयस्विनी, दौग्धी, भ्रदा, ऋषिभि, सुरभिवच्छा, माहेयी।
• ग्रीष्म — घाम, निदाघ, ताप, ऊष्मा, गर्मी, उष्ण।
• गीदड़ — शृगाल, सियार, जंबूक।
• गुलाब — शतपत्र, पाटल, वृत्तपुष्प, स्थलकमल।
• गुरु — शिक्षक, अध्यापक, आचार्य, अवबोधक।
• घर — गृह, सदन, गेह, भवन, धाम, निकेतन, निवास, आलय, आवास, निलय, मंदिर, मकान, आगार, निकेत, अयन, आयतन, शाला, ओक, सौध, केत।
• घृत — घी, नवनीत, अमृत, आज्य, हव्य, सर्पि।

• घोड़ा — घोटक, अश्व, तुरंग, हय, वाजि, सैन्धव, तुरंगम, बाजी, वाह, तरंग, रविपुत्र।
• घोड़ी — अश्विनी, वामी, प्रसू, प्रसूका।
• चंदन — मलय, मंगल्य, गंधराज।
• चन्द्रमा — चाँद, हिमांशु, इंदु, विधु, तारापति, चन्द्र, शशि, हिमकर, राकेश, रजनीश, निशानाथ, सोम, मयंक, सारंग, सुधाकर, कलानिधि, सुधांशु, निशाकर, शशांक, राकापति, मृगांक, औषधीश, द्विजराज, रजनीपति, क्षयनाथ, विश्व विलोचन, राकेन्दु, चन्द्रिकाकान्त, दधिसुत, हियभानु, हियवान, हियकर, मरीचिमाली, क्षयाकर, नक्षत्रेश।
• चतुर — कुशल, प्रवीण, निपुण, योग्य, पटु, नागर, होशियार, दक्ष, चालाक।
• चरण — पद, पग, पाँव, पैर, पाँव।
• चाँदनी — चन्द्रिका, कौमुदी, ज्योत्स्ना, चन्द्रमरीचि, उजियारी, अमला, जुन्हाई।
• चाँदी — रजत, रूपक, रूपा, रौप्य, कलधौत, जातरूप।
• चोर — धनक, रजनीचर, तस्कर, मौषक, कुंभिल।
• छल — कपट, छद्म, धोखा, व्याज, वंचना, प्रवंचना, ठगी।
• छिपकली — गोधिका, विषतूलिका, माणिक्य।
• जंगल — विपिन, कानन, वन, अरण्य, गहन, कांतार, बीहड़, विटप।।
• जल — नीर, सलिल, उदक, अम्बु, तोय, जीवन, वारि, पय, मेघपुष्प, पानी, वन जीवम, पुष्कर, सारंग, रस, पात, क्षीर, धनरस, वसु, अम्भ, शम्बर, अमृत, पानीय, अप।
• जन्म — उद्भव, उत्पति, आविर्भाव, पैदाइश।
• जहर — विष, गरल, हलाहल, कालकूट, गर।
• जवान — युवा, युवक, तरुण, किशोर।
• जीभ — जिह्वा, रसना, रसज्ञा, रसिका।
• जीव — प्राणी, प्राण, चैतन्य, जान।
• झरना — प्रपात, निर्झर, उत्स, स्त्रोता।
• झूठ — असत्य, मिथ्या, मृषा, अनृत।
• झोंपड़ी — कुंज, कुटिया, पर्णकुटी।
• तलवार — असि, चन्द्रहास, खड़्ग, कृपाण, करवाल, खंग।
• तरकस — तूणीर, निषंग।
• त्वचा — चर्म, चमड़ी, खाल, चाम।
• तालाब — सरोवर, जलाशय, सर, पुष्कर, पोखरा, जलवान, सरसी, तड़ाग, पद्माकर, हृद, कासार, पल्वल, पुष्पकरण, सरस, सरक, सरस्वत, सत्र, सारंग।
• तारा — उडु, नखत, नक्षत्र, तारक, तारिका, ऋक्ष, सितारा।
• तोता — शुक, कीर, सुआ, वक्रतुण्ड, दाड़िमप्रिय।
• थोड़ा — कम, जरा, स्वल्प, तनिक, न्यून, अल्प, किंचित, मामूली।
• दर्पण — शीशा, आरसी, आईना, मुकुर।
• दल — समूह, झुण्ड, झल, निकर, गण, तोम, वृन्द, पुंज।
• दरिद्र — गरीब, विपन्न, धनहीन, निर्धन, कंगाल।
• दाँत — दन्त, रद, दशन, रदन, द्विज, मुखक्षुर।
• दिन — वासर, वासक, दिवस, दिवा, अह्न, आह्न, अर्हि, अहः, वार।
• दुःख — पीड़ा, क्लेश, वेदना, यातना, खेद, कष्ट, व्यथा, शोक, यन्त्रणा, सन्ताप, संकट, श्वेद, क्षोभ, विषाद, उत्पीड़न, पीर, लेश।
• दुर्गा — चंडिका, भवानी, कुमारी, कल्याणी, महागौरी, कालिका, शिवा, चामुण्डा, चण्डी, सुभद्रा, कामाक्षी, काली, अम्बा, शेरावाली, ज्वाला, गौरी।
• दूध — क्षीर, पय, दुग्ध, गोरस, सरस।
• देवता — सुर, अजर, अमर, देव, विवुध, गोर्वाण, निर्जर, वसु, आदित्य, लेख, वृन्दारक, अजय, सुमना, अमर्त्य, त्रिदश, ऋभु, सुपर्वा, दिदिवेश, त्रिवौकस, आदितेय।
• देश — वतन, स्थान, मुल्क, क्षेत्र, झर्झरीक।
• दिव्य — अलौकिक, लोकोत्तर, लोकातीत।
• द्रौपदी — कृष्णा, पांचाली, याज्ञसेनी।
• धन — अर्थ, वित्त, सम्पत्ति, द्रव्य, सम्पदा, दौलत, मुद्रा, लक्ष्मी, श्री।
• धनुष — कोदण्ड, चाप, शरासन, कमान, धनु, विशिखासन।
• ध्वजा — ध्वज, निशान, केतु, पताका, झण्डा, वैजयन्ती।
• ध्वनि — आवाज, स्वर, शब्द, नाद, रव।
• धरती — पृथ्वी, उर्वि, वसुन्धरा, अचला, क्ष्मा, कु, भू, क्षोणी, विपुला, जगती, पुहिम, धरा, धरणी, रसा, मही, वसुमति, मेदिनी, गह्वरी, धात्री, क्षिति, भूमि, अनन्ता, अवनि, तृणधरी, धरित्र, रत्नगर्भा।
• नर — व्यक्ति, जन, मनुष्य, मनुज, आदमी, पुरुष, मानव, काम्य, सौम्य, नृ।
• नदी — निम्नगा, कूलकंषा, सरिता, सरि, धुनि, आपगा, सरित, नोचगा, तटिनी, प्रवाहिनी, शर्करी, निर्झरिणी, फूलंकषा, जलमाला, नद, तरंगिणी, रजवती, स्त्रोतस्विनी, शैवालिनी।
• नकुल — नेवला, महादेव, वंशरहित, युधिष्ठिर का भाई।
• नया — नूतन, नव, नवीन, नव्य।
• नश्वर — नाशवान, क्षणी, क्षणभंगुर, क्षणिक।
• नारद — ब्रह्मर्षि, देवर्षि, ब्रह्मापुत्र।
• नारी — महिला, वनिता, ललना, रमणी, स्त्री, कामिनी, औरत, अबला, तिय, भामा, काम्या, सोम्या, भामिनी, अंगना, कलत्र, तरुणी, त्रिया, प्रमदा, भात्रिनी, बारा, तन्वंगी।
• नाश — विनाश, ध्वंस, क्षय, तबाही, संहार, नष्ट।
• नाव — नौका, तरणी, जलयान, तरी, डोंगी, पोत, पतंग, नैया।
• निंदा — बुराई, अपयश, बदनामी, चुगली।
• नियति — प्रारब्ध, भाग्य, होनी, भावी, दैत्य, होनहार।
• निर्मल — स्वच्छ, शुद्ध, साफ, उज्ज्वल, पवित्र, पावन।
• नौकर — अनुचर, सेवक, किंकर, चाकर, भृत्य, परिचारक, दास।
• पंडित — विद्वान, कोविद, सुधी, मनीषी, बुध, प्राज्ञ, धीर, विचक्षण।
• पहाड़ — पर्वत, अचल, गिरि, नग, भूधर, महीधर, शैल, अद्रि, मेरु, धराधर, नाग, गोत्र, शिखरी, तुंग।
• पक्षी — द्विज, शकुनि, पतंग, अंडज, शकुन्त, चिड़िया, विहंगम, विहग, खग, नभचर, खेचर, पंछी, पखेरू, परिन्दा।
• पवन — अनिल, वात, वायु, बयार, समीर, हवा, मरुत, मारुत, प्रभंजन।
• पति — भर्ता, वल्लभ, स्वामी, बालम, अधिपति, भरतार, अधिईश, कान्त, नाथ, आर्यपुत्र, वर, प्राणाधार, प्राणेश, प्राणप्रिय।
• पत्नी — भार्या, दारा, सहधर्मिणी, वधु, गृहिणी, बहू, कलम, प्राणप्रिया, प्राणवल्लभा, तिय, वामा, वामांगीत्रिया, अर्द्धांगिनी, गृहिणी, कलत्र, कान्ता, अंगना।
• पथ — राह, रास्ता, मार्ग, बाट, पंथ।
• पराग — रज, पुष्परज, केशर, कुसुमरज।
• पत्ता — पर्ण, पल्लव, दल, किसलय, पत्र।
• प्रकाश — रोशनी, आलोक, उजाला, प्रभा, दीप्ति, छवि, ज्योति, चमक, विकास।
• पत्थर — पाषाण, शिला, पाहन, प्रस्तर, उपल।
• प्रातः — प्रभात, सुबह, अरुणोदय, उषाकाल, अहर्मुख, सवेरा।
• पान — ताम्बूल, नागरबेल, मुखमंडन, मुखभूषण।
• पाला — हिम, तुषार, नीहार, प्रालेय।

• पाप — अघ, पातक, दुष्कृत्य, अधर्म, अनाचार, अपकर्म, जुल्म, अनीत।
• पार्वती — गिरिजा, शैलजा, उमा, भवानी, शिवा, शिवानी, दुर्गा, अम्बिका, रुद्राणी, कात्यायिनी, गौरी, शंकरी, अपर्णा, गिरितनया, आर्या, मैनादुलारी।
• प्रेम — प्यार, प्रीति, अनुराग, राग, हेत, स्नेह, प्रणय।
• पिता — जनक, तात, पितृ, बाप, प्रसवी, पितु, पालक, बप्पा।
• पुत्र — बेटा, आत्मज, सुत, वत्स, तनुज, तनय, नंदन, लाल, लड़का, पूत, सुवन।
• पुत्री — बेटी, आत्मजा, तनुजा, सुता, तनया, दुहिता, नन्दिनी, लड़की।
• पेड़ — विटप, द्रुम, तरु, वृक्ष, पादप, रूख, शारणी, भूरुह, शाखी।
• प्यास — पिपासा, तृषा, तृष्णा, तिषा, तिष, पिष।
• प्रसन्न — खुश, हर्षित, प्रसादपूर्ण, आनन्दित।
• फूल — कुसुम, सुमन, पुष्प, मंजरी, प्रसून, फलपिता, पुहुप, लतांत, प्रसूमन।
• बलराम — हलधर, मूसली, रेवतीरमण, हली।
• बसंत — ऋतुराज, माधव, कुसुमाकर, मधुऋतु, मधुमास, मधु।
• बहिन — सहोदरा, भगिनी, सहगर्भिणी, बान्धवी।
• ब्रह्मा — अज, विधि, विधाता, सृष्टा, प्रजापति, चतुरानन, चतुर्मुख, नाभिज, सदानन्द, विरंचि, आत्मभू, स्वयंभू, पद्मयोनि, हिरण्यगर्भ, लोकेश, सृष्टा, अब्जयोनि, कमलासन, गिरापति, रजोमूर्ति, हंसवाहन, धाता।
• बन्दर — वानर, मर्कट, शाखामृग, हरि, लंगूर, कपि, कीश।
• बर्फ — तुषार, हिम, तुहिन, नीहार।
• ब्राह्मण — द्विज, विप्र, अग्रजन्मा।
• ब्याह — शादी, विवाह, परिणय, पाणिग्रहण।
• बाघ — व्याघ्र, शार्दूल, चित्रक, चीता।
• बाज — श्येन, शशदिन, कपोतारि।
• बाण — तीर, शायक, शिलीमुख, नाराच, शर, विशिख, कलाप, आशुग।
• बालू — रेत, बालुका, सैकत।
• बादल — पयोद, वारिद, जलद, नीरद, तोयद, अम्बुद, मेघ, पयोधर, जलधर, अब्द, बलाहक, कन्द, अभ्र, घन, पर्जन्य, वारिवाह, तड़ित्वान, सारंग, जीयूत, घुख।
• बालक — शिशु, बच्चा, शावक।
• बिजली — शम्पा, शतह्रदा, ह्रादिनी, ऐरावती, क्षणप्रिया, तड़ित, सौदामिनी, विद्युत, चंचला, चपला, दामिनी, बिज्जु, बिजुरी, अशनि, क्षणप्रभा।
• बिल्ली — मार्जारी, विलास, विड़ाल।
• बुद्धि — मति, मेधा, धी, मनीषा, प्रज्ञा, अक्ल, विवेक।
• बैल — वृषभ, वृष, ऋषभ, नंदी, शिखी।
• भय — त्रास, डर, आतंक, भीति।
• भैंस — महिषी, कासरी, सैरिभी, लुलापा।
• भ्राता — भाई, बान्धव, सगर्भा, सहोदर, भातृ, तात, बन्धु।
• भाग्य — ललाट, तकदीर, भाग, अंक, भाल, किस्मत।
• भालू — रीछ, जंबू, ऋक्ष्य।
• भिखारी — भिक्षुक, याचक, मँगता, मँगन, भिक्षोपजीवी।
• भौंरा — मधुप, भ्रमर, अलि, मधुकर, षटपद, भृंग, चंचरीक, शिलीमुख, मिलिँद, मारिन्द, मधुलोभी, मकरन्द, द्विरेफ, मधुवत, मधुसिँह।
• मक्खन — नवनीत, लौनी, माखन, दधिसार।
• मछली — मकर, शफरी, मीन, मत्स्य, झख, पाठीन, झष।
• मदिरा — दारू, शराब, सुरा, मद्य, मधु, वारुणी, कादम्बरी, माधव, हाला।
• मांस — आमिष, गोश्त, पलल, पिशित।
• माता — माँ, जननी, अम्बा, धात्री, प्रसू, अम्बिका, प्रसूता, प्रसविनी, प्रसवित्री, मैया, मात, अम्मा, जन्मदायिनी।
• मित्र — संगी, साथी, सहचर, दोस्त, सखा, सुहृद, मीत, मितवा, यार।
• मुख — मुँह, चेहरा, वदन, आनन।
• मुनि — साधु, महात्मा, संत, बैरागी, तापस, तपस्वी, संन्यासी।
• मुर्गा — कुक्कुट, ताम्रचूड़, उपाकर, अरुणशिखा।
• मूर्ख — मूढ़, अज्ञ, अज्ञानी, वालिश।
• मेंढक — मंडूक, दादुर, वर्षाभू, शातुर, दुर्दर, मण्डूक।
• मैना — सारिका, चित्रलोचना, कहहप्रिया, मधुरालय, सारी।
• मोती — मुक्ता, मौक्तिक, सीपज, शशिप्रभा।
• मोर — मयूर, केकी, शिखी, वर्हि, कलाधर, कलापी, कलकंठ, नीलकंठ, सारंग, भुजंगभुक्, शिखाबल, चन्द्रकी, मेघानन्दी, शिखण्डी, क्षितिपति, अधिपति।
• मृत्यु — मौत, निधन, देहान्त, प्राणान्त, मरना, निऋति, स्वर्गवास।
• मोक्ष — मुक्ति, निर्वाण, कैवल्य, अपवर्ग, अमृतपद।
• यमराज — यम, धर्मराज, हरि, जीवनपति, सूर्यपुत्र।
• यमुना — कृष्णा, कालिँदी, सूर्यजा, तरणिजा, तनूजा, अर्कजा, रवितनया, जमुना, श्यामा।
• युद्ध — रण, संग्राम, समर, लड़ाई, विग्रह, आहव, संख्य, संयुग, संगर।
• युवती — किशोरी, तरुणी, श्यामा।
• रक्त — खून, लहू, रुधिर, लोहित, शोणित।
• राम — रघुपति, सीतापति, रघुवर, राघव, दशरथनंदन, दशरथसुत, रघुकुलमणि, सियावर, जानकीवल्लभ, रघुकुलतिलक।
• रावण — दशानन, लंकापति, लंकेश, दशकंध, दशासन।
• राजा — नृप, महीप, नरेश, भूप, नरेन्द्र, भूपति, नृपति, अहिपति, महीपति, भूपाल, राव, अवनिपति, महीश, पार्थिव, महिपाल, अवनीश, क्षोणीव, क्षितिपति, अधिपति।
• राधा — वृषभानुजा, ब्रजरानी, कृष्णप्रिया, राधिका।
• रात्रि — रात, रजनी, निशा, क्षपा, वामा, रैन, यामिनी, शर्बरी, यामा, त्रिभामा, विभावरी, तमी, क्षणदा, तमिसा, राका, सारंग।
• रोगी — बीमार, अस्वस्थ, रुग्ण, व्याधिग्रस्त, रोगग्रस्त।
• लक्ष्मी — कमला, पद्मा, रमा, हरिप्रिया, श्री, इन्दिरा, पद्मासना, पद्मानना, लोकमाता, क्षारोदा, क्षीरोदतनया, समुद्रजा, भार्गवी, विष्णुवल्लभा, सिन्धुजा, विष्णुप्रिया, चपला, सिन्धुसुता।
• लक्ष्मण — लखन, सौमित्र, रामानुज, लषन, शेषावतार, मेघनादारि।
• लता — वेलि, वल्लरी, वीरुध, बेल।
• लहर — तरंग, ऊर्मि, वीचि।
• लोहा — अयस, लौह, सार।
• वर्ष — साल, बरस, अब्द, वत्सर।
• वर्षा — बरसात, पावस, बारिश, वर्षण, बरखा।
• वरुण — अम्बुपति, सागरेश, प्रचेता, समुद्रेश, पाशी।
• वात्सल्य — स्नेह, लाडप्यार, ममता, लालन, शिशु–प्रेम।
• विधवा — पतिहीना, अनाथा, राँड।
• विष्णु — नारायण, केशव, उपेन्द्र, माधव, अच्युत, गरुड़ध्वज, हरि, चक्रपाणि, दामोदर, रमेश, मुरारी, जनार्दन, विश्वम्भर, मुकुन्द, ऋषिकेश, लक्ष्मीपति, विधु, विश्वरूप,

जलशायी, सारंगाणि, बनमाली, पीताम्बर, चतुर्भुज, अधोक्षज, पुरुषोत्तम, श्रीपति, वासुदेव, मधुसूदन, मधुरिपु, पद्मनाभ, पुराणपुरुष, दैत्यारि, सनातन, शेषशायी।
• वियोग — बिछोह, विरह, जुदाई, विप्रलंब।
• वीर्य — शुक्र, बीज, जीवन।
• शब्द — ध्वनि, रव, नाद, निनाद, स्वर।
• शत्रु — रिपु, बैरी, विपक्षी, अरि, अराति, दुश्मन, विरोधी, द्वेषी, अमित्र।
• शरीर — देह, तन, काया, कलेवर, वपु, गात, विग्रह, तनु, घट, बदन, अवयव, अंगी, गति, काय।
• शहद — मधु, मकरंद, पुष्परस, पुष्पासव।
• शत्रुघ्न — रिपुसूदन, शत्रुहन, शत्रुहन्ता।
• श्वेत — शुभ्र, ध्वल, सफेद, शुक्ल, वलक्ष, अमल, दीप्त, उज्ज्वल, सित।
• शिकार — आखेट, मृगया, अहेर।
• शिकारी — बहेलिया, अहेरी, व्याध, लुब्धक।
• शिष्ट — सभ्य, सुशील, सुसंस्कृत, विनीत।
• शिव — रुद्र, नीलकंठ, अग्निकेतु, शम्भु, शम्भू, ईश, चन्द्रशेखर, शूली, महेश्वरी, शर्व, शव, भूतेश, पिनाकी, उग्र, कपर्दी, श्रीकंठ, शितिकंठ, वामदेव, विरुपाक्ष, विलोचन, कृशानुरेत, सर्वज्ञ, धूर्जटि, उमापति, पंचानन, ऋतुध्वंसी, स्मरहर, मदनारि, अहिर्बुध्न्य, महानट, गौरीपति, कापालिक, दिगम्बर, गुड़ाकेश, चन्द्रापीड़, श्मशानेश्वर, वृषांक, अंगीरागुरु, अंतक, अंडधर, अंबरीश, अकंप, अक्षतवीर्य, अक्षमाली, अघोर, अचलेश्वर, अजातारि, अज्ञेय, अतीन्द्रिय, अत्रि, अनघ, अनिरुद्ध, अनेकलोचन, अपानिधि, अभिराम, अभीरु, अभदन, अमृतेश्वर, अमोघ, अरिदम, अरिष्टनेमि, अर्धेश्वर, अर्धनारीश्वर, अर्हत, अष्टमूर्ति, अस्थिमाली, आत्रेय, आशुतोष, इंदुभूषण, इंदुशेखर, इकंग, ईशान, ईश्वर, उन्मत्तवेष, उमाकांत, उमानाथ, उमेश, उमापति, उरगभूषण, ऊर्ध्वरेता, ऋतुध्वज, एकनयन, एकपाद, एकलिंग, एकाक्ष, कपालपाणि, कमंडलुधर, कलाधर, कल्पवृक्ष, कामरिपु, कामारि, कामेश्वर, कालकंठ, कालभैरव, काशीनाथ, कृत्तिवासा, केदारनाथ, कैलाशनाथ, क्रतुध्वसी, क्षमाचार, गंगाधर, गणनाथ, गणेश्वर, गरलधर, गिरिजापति, गिरीश, गोनर्द, चंद्रेश्वर, चंद्रमौलि, चीरवासा, जगदीश, जटाधर, जटाशंकर, जमदग्नि, ज्योतिर्मय, तरस्वी, तारकेश्वर, तीव्रानंद, त्रिचक्षु, त्रिधामा, त्रिपुरारि, त्रियंबक, त्रिलोकेश, त्र्यंबक, दक्षारि, नंदिकेश्वर, नंदीश्वर, नटराज, नटेश्वर, नागभूषण, निरंजन, नीलकंठ, नीरज, परमेश्वर, पूर्णेश्वर, पिनाकपाणि, पिंगलाक्ष, पुरंदर, पशुपतिनाथ, प्रथमेश्वर, प्रभाकर, प्रलयंकर, भोलेनाथ, बैजनाथ, भगाली, भद्र, भस्मशायी, भालचंद्र, भुवनेश, भूतनाथ, भूतमहेश्वर, भोलानाथ, मंगलेश, महाकांत, महाकाल, महादेव, महारुद्र, महार्णव, महालिंग, महेश, महेश्वर, मृत्युंजय, यजंत, योगेश्वर, लोहिताश्व, विधेश, विश्वनाथ, विश्वेश्वर, विषकंठ, विषपायी, वृषकेतु, वैद्यनाथ, शशांक, शेखर, शशिधर, शारंगपाणि, शिवशंभु, सतीश, सर्वलोकेश्वर, सर्वेश्वर, सहस्त्रभुज, साँब, सारंग, सिद्धनाथ, सिद्धीश्वर, सुदर्शन, सुरर्षभ, सुरेश, सोम, सृत्वा, हर-हर महादेव, हरिशर, हिरण्य, हुत।
• शेषनाग — अहीश, धरणीधर, सहस्त्रासन, फणीश।
• षडयंत्र — कुचक्र, दुरभिसंधि, अभिसंधि, साजिश, जाल।
• संध्या — सायंकाल, गोधूलि, निशारंभ, दिनांत, दिवावसान, पितृप्रसू, प्रदोष, सायम्।
• संसार — जग, जगत्, भव, विश्व, जगती, दुनिया, लोक, संसृति।
• समुद्र — जलधि, सिँधु, सागर, रत्नाकर, उदधि, नदीश, पारावार, वारिधि, पयोधि, अर्णव, नीरनिधि, तोयधि, वननिधि, वारीश, कंपति।
• स्वर्ग — सुरलोक, देवलोक, परमधाम, त्रिदिव, दयुलोक, बैकुण्ठ, गोलोक, परलोक, नाक, द्यौ, इन्द्रलोक, दिव।
• सरस्वती — भाषा, वाणी, वागीश्वरी, इला, विधात्री, भारती, शारदा, वीणाधारिणी, वाक्, गिरा, वीणापाणि, वाग्देवी, वीणावादिनी, ब्राह्मी, वाचा, गिरा, वागीश, महाश्वेता, श्री, ईश्वरी, संध्येश्वरी।
• सखी — सहेली, सजनी, आली, सैरन्ध्री।
• स्तन — उरोज, थन, कुच, वक्षोज, पयोधर।
• स्वामी — ईश, पति, नाथ, साँई, अधिप, प्रभु।
• साँप — सर्प, नाग, अहि, व्याल, भुजंग, विषधर, उरग, पन्नग, फणी, चक्षुश्रुवा, श्वसनोत्सुक, पवनासन, फणधर।
• सिँह — केसरी, शेर, महावीर, हरि, मृगपति, वनराज, शार्दूल, नाहर, सारंग, मृगराज, मृगेन्द्र, पंचमुख, हर्यक्ष, पञ्चास्य, पारीन्द्र, श्वेतपिंगल, कण्ठीरख, पंचशिख, भीमविक्रम, केशी, मृगारि, कव्याद, नखी, विक्रान्त, दीप्तपिँगल, पुण्डरिक, पंचानन।
• सीता — जानकी, भूमिजा, वैदेही, रामप्रिया, अयोनिज, जनकसुता, जनकदुलारी, सिया।
• सुगन्ध — खुशबू, सुरभि, सौरभ, सुवास, तर्पण, सुगन्धि, मदगंध, सुवास, महक।
• सुन्दर — रुचिर, चारु, सुहावन, सौम्य, मोहक, रमणीय, ललित, चित्ताकर्षक, ललाम, कमनीय, रम्य, कलित, मंजुल, मनोज, मनभावन।
• सुन्दरता — लावण्य, सौम्यता, रमणीयता, शोभा, स्त्री, कमनीयता, चारुता, रुचिरता, छवि, कांति, रम्यता, सौन्दर्य, छटा, सुषमा।
• सूर्य — रवि, सूरज, दिनकर, प्रभाकर, आदित्य, दिनेश, भास्कर, दिवाकर, मार्तण्ड, अंशुमाली, दिननाथ, अर्क, तमरि, भूषण, तरणि, पतंग, मित्र, भानू, सविता, छायानाथ, मरीची, दिवसाधिप, विवस्वान, विभावसु, अम्बर, मणि, खग, गभास्तिमान, हिरण्यगर्भ, नक्षमाधिपति, सूर, वीरोचन, पूषण, अर्यमा, चक्रबन्धु, कमलबन्धु, हरि, सप्ताश्व, द्वादशात्मा, ऊष्मरश्मि, असुर, विकर्तन, गृहपति, सहस्त्रांशु, पद्माक्ष, तेजोराशि, महातेज, तमिस्त्रहा, जगच्चक्षु, प्रद्योतन, खद्योत, सारंग, मित्र।
• सेना — कटक, सैन्यदल, फौज, वाहिनी।
• सोना — हाटक, कनक, सुवर्ण, कंचन, हेम, कुन्दन, हिरण्य, स्वर्ण, चामीकर, तामरस।
• हंस — मराल, चक्रंग, सूर्य, आत्मा, मानसौक, कलकंठ, मितपक्ष, कारण्डव।
• हनुमान — कपीश, अंजनिपुत्र, पवनसुत, मारुतिनंदन, मारुत, बजरंगबली, महावीर।
• हरिण — मृग, कुरंग, चमरी, सारंग, कृष्णसार, तृनजीवी।
• हाथ — कर, हस्त, पाणि, बाहु, भुजा, भुज।
• हाथी — गज, हस्ती, द्विप, वारण, वसुन्दर, करी, कुन्जर, दंती, कुम्भी, वितुण्डा, मतंग, नाग, द्विरद, सिन्धुर, गयन्द, कलभ, सारंग, मतगंज, मातंग, हरि, वज्रदन्ती, शुण्डाल।
• हिमालय — हिमगिरी, हिमाचल, गिरिराज, पर्वतराज, नगेश, नगाधिराज, हिमवान, हिमाद्रि, शैलराट।
• हृदय — छाती, वक्ष, वक्षस्थल, हिय, उर, सीना।
• त्रुटि — गलती, कसर, कमी, भूल, संशय, अंगहीनता, प्रतिज्ञा–भंग।

2. विलोम शब्द

जो शब्द परस्पर विपरीत या विरोधी अर्थ प्रकट करते हैं, उन्हें विलोम शब्द या विपरीतार्थक अथवा प्रतिलोम शब्द कहते हैं। विलोम शब्दों के लिए निम्नलिखित बातें ध्यान में रखनी चाहिए –

(1) शब्द जिस स्तर का हो, उसका विलोम भी उसी स्तर का होना अति आवश्यक है। यदि शब्द तत्सम है तो विलोम भी तत्सम होगा, जैसे – हस्ति - हस्तिनी। यदि शब्द तद्भव है तो विलोम भी तद्भव होगा, जैसे – हाथी - हथिनी।

(2) संज्ञा का विपरीतार्थी शब्द संज्ञा तथा विशेषण के लिए विशेषण शब्द ही विलोम होगा। जैसे – अधिक - न्यून। अधिक का विलोम 'कम' नहीं होगा क्योंकि 'कम' शब्द उर्दू का है। कम का विलोम ज्यादा होगा।

♦ महत्त्वपूर्ण विलोम शब्द :

शब्द – विलोम शब्द
• अंत – आदि
• अंश – पूर्ण
• अंतर्मुखी – बहिर्मुखी
• अंतरंग – बहिरंग
• अति – अल्प
• अपना – पराया
• अपराजित – पराजित

• अर्वाचीन – प्राचीन
• अकाल – सुकाल
• अभिज्ञ – अनभिज्ञ
• अनन्त – अन्त, सान्त
• अज्ञ – विज्ञ
• अधिमूल्यन – अवमूल्यन
• अपराधी – निरपराधी
• अथ (प्रारम्भ) – इति (समाप्ति)
• अकर्मक – सकर्मक
• अमृत – विष
• अथाह – छिछला
• अवर – प्रवर
• अवतल – उत्तल
• अतिथि – आतिथेय
• अतिवृष्टि – अनावृष्टि
• अधोगति – ऊर्ध्वगति
• अघोष – सघोष
• अभियुक्त – अभियोगी
• अग्र – पश्च
• अत्यधिक – स्वल्प
• अनुकूल – प्रतिकूल
• अनुराग – विराग
• अनुरक्त – विरक्त
• अनुरूप – प्रतिरूप
• अनाहूत – आहूत
• अग्रज – अनुज
• अधम – उत्तम
• अपेक्षा – उपेक्षा
• अल्पज्ञ – बहुज्ञ
• अल्पायु – चिरायु/दीर्घायु
• अवनि – अंबर
• असीम – ससीम
• अनुनासिक – निरानुनासिक
• अनिवार्य – ऐच्छिक/वैकल्पिक
• अधुनातन – पुरातन
• अस्त्रीकरण – निरस्त्रीकरण
• आदि – अंत
• आविर्भाव – तिरोभाव
• आरोह – अवरोह
• आगमन – निर्गमन
• आस्तिक – नास्तिक
• आग्रह – दुराग्रह
• आधुनिक – प्राचीन
• आविर्भूत – तिरोभूत/तिरोहित
• आवर्तक – अनावर्तक
• आगामी – विगत
• आज्ञा – अवज्ञा
• आर्द्र – शुष्क
• आलस्य – उद्यम
• आकाश – पाताल
• आचार – अनाचार
• आत्मनिर्भर – परजीवी
• आद्य – अंत्य
• आध्यात्मिक – सांसारिक
• आनन्द – शोक
• आह्लाद – विषाद
• आभ्यंतर – बाह्य
• आकुंचन – प्रसारण
• आह्वान – विसर्जन
• आलोचना – प्रशंसा
• आकर्षण – विकर्षण
• आमिष – निरामिष
• आसक्त – अनासक्त
• आशीर्वाद – अभिशाप
• आशा – निराशा
• आर – पार
• आवृत्त – अनावृत्त
• आस्था – अनास्था
• आयात – निर्यात
• आदान – प्रदान
• आया – गया
• आय – व्यय
• आश्रित – अनाश्रित
• इहलोक – परलोक
• इष्ट – अनिष्ट

• इच्छा – अनिच्छा
• ईश्वर – अनीश्वर
• उत्थान – पतन
• उद्धत – विनीत
• उपस्थित – अनुपस्थित
• उत्कृष्ट – निकृष्ट
• उपकार – अपकार
• उत्कर्ष – अपकर्ष
• उन्मीलन (खिलना) – निमीलन
• उन्नति – अवनति
• उद्घाटन – समापन
• उन्मूलन – स्थापन/रोपण
• उन्मुख – विमुख
• उपमान – उपमेय
• उर्वर – ऊसर/अनुर्वर
• उत्पति – विनाश
• उत्तरायण – दक्षिणायण
• उत्तरार्द्ध – पूर्वार्द्ध
• उदयाचल – अस्ताचल
• उपमेय – अनुपमेय
• उपचार – अपचार
• उषा – संध्या
• उच्छ्वास – निःश्वास
• उज्ज्वल – धूमिल
• उत्तीर्ण – अनुत्तीर्ण
• उपार्जित – अनुपार्जित
• उल्लास – विषाद
• उपसर्ग – प्रत्यय
• उदार – अनुदार
• उद्भव – अवसान
• उपजाऊ – अनुपजाऊ
• उर्ध्व – अधर
• उधार – नकद
• उत्पादक – अनुत्पादक
• उपयोग – अनुपयोग/दुर्पयोग
• ऊपर – नीचे
• ऊँच – नीच
• ऋत – अनृत
• ऋण – उऋण
• ऋणी – धनी
• ऋजु – वक्र
• एक – अनेक
• एडी – चोटी
• एकता – अनेकता
• एकान्त – अनेकान्त
• एकाकी – समग्र
• एकार्थक – अनेकार्थक
• एकाधिकार – सर्वाधिकार
• ऐहिक – पारलौकिक
• ऐक्य – अनेक्य
• ऐश्वर्य – अनैश्वर्य
• औजस्वी – निस्तेज
• औचित्य – अनौचित्य
• औदार्य – अनौदार्य
• उपत्यका (पहाड़ के नीचे की समतल भूमि) – अधित्यका (पहाड़ के ऊपर की समतल भूमि)
• कटु – मधुर
• कदाचार – सदाचार
• कापुरुष – पुरुषार्थी
• कनिष्ठ – वरिष्ठ/ज्येष्ठ
• कठोर – मुलायम
• क्रय – विक्रय
• कल्याण – अकल्याण
• कायर – वीर
• कड़ुवा – मीठा
• कपूत – सपूत
• कपटी – निष्कपट
• कमजोर – बलवान
• कमी – वृद्धि, बेशी
• कर्कश – मधुर
• कलंकित – निष्कलंक
• कल्पित – यथार्थ
• कलुषित – निष्कलंक
• कसूरवार – बेकसूर
• कटुभाषी – मृदुभाषी
• काला – गोरा

- कुलदीप – कुलांगार
- कुमारी – विवाहिता
- क्रोध – शान्ति
- कोलाहल – नीरवता
- कर्मण्य – अकर्मण्य
- करणीय – अकरणीय
- कार्य – अकार्य
- कुपथ – सुपथ
- कुगति – सुगति
- कुमार्ग – सुमार्ग
- कुमति – सुमति
- कुरूप – सुरूप
- कृत्रिम – नैसर्गिक
- कृष्ण – शुक्ल
- कुलटा – पतिव्रता
- कृपा – कोप
- कृश – पुष्ट/स्थूल
- क्रिया – प्रतिक्रिया
- कीर्ति – अपकीर्ति
- कुख्यात – विख्यात
- कृपण – उदार
- कृतज्ञ – कृतघ्न
- कुटिल – सरल
- कोमल – कठोर
- क्षुण्ण – अक्षुण्ण
- क्षुद्र – विराट
- खंडन – मंडन
- खरा – खोटा
- खगोल – भूगोल
- खीझना – रीझना
- खुशी – गम
- खुशकिस्मत – बदकिस्मत
- खुशबू – बदबू
- खेद – प्रसन्नता
- गणतंत्र – राजतंत्र
- गंभीर – वाचाल/चंचल, चपल
- गरल – सुधा
- गरिमा – लघिमा
- गहरा – उथला
- गृहस्थ – संन्यासी
- ग्राम – नगर
- ग्राह्य – अग्राह्य/त्याज्य
- गुप्त – प्रकट
- गुरु – लघु
- गोचर – अगोचर
- गौरव – लाघव
- गौण – मुख्य
- गुण – अवगुण/दोष
- गर्मी – सर्दी
- गमन – आगमन
- घना – छितरा
- घात – प्रतिघात
- घृणा – प्रेम
- चंचल – स्थिर
- चपल – गंभीर
- चर – अचर
- चतुर – मूर्ख
- चढ़ाव – उतार
- चिँतित – निश्चिँत
- चिर – स्थिर
- चेतन – अचेतन/जड़
- चेतना – मूर्च्छा
- छली – निश्छल
- छाया – धूप
- जंगम – स्थावर
- जय – पराजय
- जन्म – मृत्यु
- जागरण – सषुप्ति/निद्रा
- जाग्रत – सुषुप्त
- जटिल – सरल
- जल – थल
- जीत – हार
- जीवित – मृत
- जीव – जड़
- ज्योति – तम

• जीर्ण – अजीर्ण
• ज्येष्ठ – लघु
• ज्ञात – अज्ञात
• ज्ञान – अज्ञान
• ज्ञेय – अज्ञेय
• झूँठ – साँच
• झूठा – सच्चा
• झोंपड़ी – महल
• ठोस – द्रव/तरल
• ढ़ाल – चढ़ाई
• तटस्थ – पक्षपाती
• तर – शुष्क
• तरुण – वृद्ध
• तप्त – शीतल
• त्यक्त – गृहीत
• त्याज्य – ग्राह्य
• तामसिक – सात्विक
• तारीफ – बुराई
• तिमिर – प्रकाश
• तीव्र – मंद/मन्थर
• तुच्छ – महान
• तृष्णा – वितृष्णा
• तृषा – तृप्ति
• त्याग – भोग
• तीक्ष्ण – सरल
• थाह – अथाह
• थोक – खुदरा
• थोड़ा – बहुत
• दरिद्र – धनी
• दया – क्रूरता
• दक्षिण – उत्तर
• दाता – गृहीता, कृपण
• दिन – रात
• दिवा – रात्रि
• दीर्घ – लघु
• दीर्घकाय – लघुकाय
• दुर्गन्ध – सुगन्ध
• दृश्य – अदृश्य
• दुराचार – सदाचार
• दुर्जन – सज्जन
• दुरुपयोग – सदुपयोग
• दुराचारी – सदाचारी
• दुष्कर – सुकर
• दुष्प्राप्य – सुप्राप्य
• द्रुत – मंथर
• दूर – पास
• देव – दानव
• देनदार – लेनदार
• देशभक्त – देशद्रोही
• द्वेष – सद्भावना
• द्वैत – अद्वैत
• दिव्य – अदिव्य
• द्वन्द्व – निर्द्वन्द्व
• दुरात्मा – महात्मा
• दुःख – सुख
• दुर्गम – सुगम
• धर्म – अधर्म
• ध्वंस – निर्माण
• ध्वल – श्याम
• धरा – गगन
• धनात्मक – ऋणात्मक
• धीर – अधीर
• धीरज – उतावलापन
• धृष्ट – विनम्र
• धूप – छाँव
• नया – पुराना
• नश्वर – शाश्वत
• न्यून – अधिक
• नगर – ग्राम
• नवीन – प्राचीन
• नत – उन्नत
• नराधम – नरपुंगव
• नम्र – अनम्र
• नमकहराम – नमकहलाल
• निर्भीक – भीरु

- निरुद्देश्य – सोद्देश्य
- निर्मल – मलिन
- निषिद्ध – विहित
- निर्बल – सबल
- निर्लज्ज – सलज्ज
- निरर्थक – सार्थक
- निर्गुण – सगुण
- निराधार – साधार
- निराकार – साकार
- निँद्य – वंद्य
- निष्क्रिय – सक्रिय
- निन्दा – स्तुति
- निरपेक्ष – सापेक्ष
- निश्चल – चंचल
- निस्वार्थ – स्वार्थी
- नीरस – सरस
- नूतन – पुरातन
- नेकी – बदी
- नैतिक – अनैतिक
- निष्काम – सकाम
- नर – नारी
- निरक्षर – साक्षर
- पठित – अपठित
- परमार्थ – स्वार्थ
- पण्डित – मूर्ख
- परतंत्र – स्वतंत्र
- पवित्र – अपवित्र
- पराधीन – स्वाधीन
- परकीय – स्वकीय
- पहले – पीछे
- प्रधान – गौण
- प्रशंसा – निन्दा
- प्रवृत्ति – निवृत्ति
- प्राकृतिक – अप्राकृतिक
- प्रत्यक्ष – परोक्ष/अप्रत्यक्ष
- परितोष – दंड
- पाश्चात्य – पौर्वात्य/पौरस्त्य
- प्रसारण – संकुचन
- पदोन्नत – पदावनत
- पाप – पुण्य
- पावन – अपावन
- पात्र – अपात्र
- पेय – अपेय
- पुरुष – स्त्री
- पूर्ण – अपूर्ण
- पाठ्य – अपाठ्य
- पदस्थ – अपदस्थ
- पक्ष – विपक्ष
- पल्लवन – संक्षेपण
- परिश्रम – विश्राम
- प्रलय – सृष्टि
- प्रश्न – उत्तर
- प्रगति – अवनति
- प्रथम – अंतिम
- प्रवेश – निकास
- प्रतीची – प्राची
- प्रफुल्ल – ग्लान
- प्रसाद – विषाद
- प्रज्ञ – मूढ़
- प्रारंभिक – अंतिम
- पार्थिव – अपार्थिव
- पालक – घालक/संहारक
- पापी – निष्पाप
- प्रीति – द्वेष
- पुरस्कृत – दंडित
- पुरोगामी – पश्चगामी
- पुष्ट – क्षीण
- पूर्णिमा – अमावस्या
- पूर्ववर्ती – परवर्ती
- प्रेम – घृणा
- प्रेषक – प्रापक
- पैना – भौथरा
- प्रोत्साहित – हतोत्साहित
- फूल – काँटा
- बहिष्कार – स्वीकार

• बद्ध – मुक्त
• बंधन – मुक्ति/मोक्ष
• बढ़िया – घटिया
• बलवान – कमजोर
• बंजर – उर्वर
• बलिष्ठ – दुर्बल
• बसंत – पतझड़
• बहादुर – डरपोक
• बर्बर – सभ्य
• बाढ़ – सूखा
• बाह्य – आंतरिक
• भद्र – अभद्र
• भलाई – बुराई
• भारी – हल्का
• भूत – भविष्य
• भोगी – योगी
• भ्रान्त – निभ्रान्त
• भला – बुरा
• भौतिक – आध्यात्मिक
• भेद – अभेद
• भेद्य – अभेद्य
• ममत्व – परत्व
• मग्न – दुखी/ऊपर
• मंगल – अमंगल
• मसृण – रुक्ष
• मनुज – दनुज
• ममता – निष्ठुरता
• महीन – मोटा
• मत – विमत
• मति – कुमति
• मनुष्यता – पशुता
• मान – अपमान
• मित्र – शत्रु
• मितव्यय – अपव्यय
• मिलन – बिछोह
• मिथ्या – सत्य
• मुनाफा – घाटा
• मुख्य – गौण
• मूढ़ – ज्ञानी
• मूक – वाचाल
• मेहमान – मेज़बान
• मौखिक – लिखित
• मौन – मुखर, वाचाल
• मानवीय – अमानवीय
• मूल्यवान – मूल्यहीन
• यश – अपयश
• युगल – एकल
• युद्ध – शांति
• योग – वियोग
• यौवन – वार्धक्य
• रत – विरत
• रक्षण – भक्षण
• रक्षक – भक्षक
• रद्द – बहाल
• रचनात्मक – ध्वंसात्मक
• रसीला – नीरस
• रति – विरति
• राग – द्वेष, विराग
• राजा – रंक
• रिक्त – पूर्ण
• रीता – भरा
• रुचि – अरुचि
• रुग्ण – स्वस्थ
• रुदन – हास्य
• ललित – कुरूप
• लघु – विशाल/गुरु/दीर्घ
• लाभ – हानि
• लिप्त – निर्लिप्त
• लिखित – अलिखित
• लुप्त – व्यक्त
• लुभावना – घिनौना
• लोक – परलोक
• लोभ – त्याग
• लौकिक – अलौकिक
• वक्र – सरल

• वक्ता – श्रोता
• वर – वधू
• वफादार – बेवफा
• वरदान – अभिशाप
• व्यक्ति – समाज
• व्यक्तिगत – सामूहिक/समष्टिगत
• व्यष्टि – समष्टि
• व्यभिचारी – सदाचारी
• व्यर्थ – अव्यर्थ
• वन्य – पालतु
• वादी – प्रतिवादी
• वाकिफ – नावाकिफ
• व्यवस्था – अव्यवस्था
• विधवा – सधवा
• विभव – पराभव
• विश्लेषण – संश्लेषण
• विपदा – सम्पदा
• विधि – निषेध
• विस्तार – संक्षेप
• विकल – अविकल
• विज्ञ – अविज्ञ
• विजयी – परास्त
• विनीत – उद्धत
• विपति – सम्पत्ति
• विशेष/विशिष्ट – साधारण
• विराट – क्षुद्र
• विस्तृत – संक्षिप्त
• विरह – मिलन
• विकल्प – संकल्प
• विद्वान – मूर्ख
• विवादित – निर्विवाद
• विजेता – विजित
• वियोग – संयोग
• विदाई – स्वागत
• विपुल – अल्प
• विलास – तपस्या
• वेदना – आनन्द
• वैमनस्य – सौमनस्य
• वैतनिक – अवैतनिक
• शकुन – अपशकुन
• श्लील – अश्लील
• शत्रुता – मित्रता
• शयन – जागरण
• शर्मदार – बेशर्म
• शहरी – देहाती
• श्लाघा – निँदा
• श्वेत – श्याम
• शायद – अवश्य
• शासक – शासित
• शालीन – धृष्ट
• शान्त – अशान्त
• शिव – अशिव
• शीत – उष्ण
• शीर्ष – तल
• शिष्ट – अशिष्ट
• श्रीगणेश – इतिश्री
• शुभ – अशुभ
• शूरता – भीरुता
• शृंखलित – विशृंखलित
• शोहरत – बदनामी
• शोक – हर्ष
• शोषक – पोषक
• समर्थ – असमर्थ
• सूम – उदार
• सुबोध – दुर्बोध
• सन्देह – विश्वास
• सौभाग्य – दुर्भाग्य
• सम्पन्नता – विपन्नता
• सन्धि – विग्रह
• सम्भोग – विप्रलम्भ
• समास – व्यास
• स्थूल – सूक्ष्म
• सक्षम – अक्षम
• सजीव – निर्जीव
• सत्याग्रह – दुराग्रह

- सभ्य – असभ्य
- संघठन – विघटन
- सजल – निर्जल
- सत्य – असत्य
- संतोष – असंतोष
- सफलता – असफलता
- संकीर्ण – विस्तृत/विस्तीर्ण
- संन्यासी – गृहस्थ
- संयुक्त – वियुक्त
- संध्या – प्रातः
- सदाशय – दुराशय
- सत्कार – तिरस्कार
- समूल – निर्मूल
- सहज – कठिन
- सम – विषम
- सचेष्ट – निश्चेष्ट
- सघन – विरल
- स्मरण – विस्मरण
- स्मृत – विस्मृत
- स्वदेश – परदेश/विदेश
- साधर्म्य – वैधर्म्य
- साहचर्य – पृथक्करण
- सार – निस्सार
- सित – असित
- सुपुत्र – कुपुत्र
- सुखांत – दुखांत
- सुरीला – बेसुरा
- सृजन – संहार
- हरा – सूखा
- हर्ष – विषाद
- हृस्व – दीर्घ
- ह्रास – वृद्धि
- हिँसा – अहिँसा
- हित – अहित
- हेय – प्रेय
- होनी – अनहोनी
- क्षणिक – शाश्वत।

3. युग्म–शब्द

प्रत्येक भाषा में कई शब्द ऐसे होते हैं, जिनके उच्चारण और वर्तनी में बहुत कम भिन्नता होती है, परन्तु अर्थ की दृष्टि से वे बिल्कुल भिन्न होते हैँ। ऐसे शब्दोँ को युग्म–शब्द कहते हैँ। इस प्रकार के शब्द–युग्मोँ के ज्ञान के अभाव में अर्थ का अनर्थ हो सकता है अतः उच्चारण और लेखन में इनका ज्ञान अनिवार्य है।

♦ महत्त्वपूर्ण युग्म–शब्द :

- अंगार – अंगारे
  अगार – आगे
- अंचल – साड़ी का छोर
  अंचला – साधुओँ का एक वस्त्र
- अंचित – गूंथा हुआ, पूजित
  अचित् – जड़, चेतन रहित
- अंजित – काजलयुक्त
  अजित – जो जीता न गया हो
- अंजन – काजल
  अजन – अजन्मा, निर्जन
- अंतर – फर्क
  अतर – इत्र
- अंगद – बालिपुत्र, बाजूबन्द
  अगद – नीरोग
- अनल – आग
  अनिल – हवा
- अचल – पर्वत
  अचला – पृथ्वी
- अचर – न चलने वाला
  अचिर – शीघ्र, नवीन
- अथक – जो न थकता हो
  अकथ – अकथनीय
- अनादि – जिसका आरम्भ नहीँ है
  अन्नादि – अन्न वगैरह
- अभिहित – कहा हुआ
  अविहित – अनुचित
- अपत्य – संतान
  अपथ्य – निषिद्ध भोजन
- अर्थ – धन

अर्द्ध – आधा
• अनिष्ट – बुरा
अनिष्ठ – निष्ठा रहित
• अनु – पीछे
अणु – छोटा कण
• अविराम – लगातार
अभिराम – सुन्दर
• अर्चन – पूजा
अर्जन – संग्रह
• अंस – कन्धा
अंश – हिस्सा
• अवलम्ब – सहारा
अविलम्ब – शीघ्र
• अविज्ञ – मूर्ख
अभिज्ञ – विद्वान
• अन्त – समाप्ति
अन्त्य – अन्तिम
• अजर – जवान, देवता
अजिर – आँगन, बाड़ा
• अभिनय – अनुकरण
अभिनव – नया
• अपर – दूसरा
अवर – नीचे का
• अपहार – अपहरण
उपहार – भेंट
• अब्ज – कमल
अब्द – वर्ष
• अभद्य – भेद का अभाव
अभेद्य – जो तोड़ा न जा सके
• अमल – बिना मैल
अम्ल – तेजाब
• अमूल – बिना जड़ का
अमूल्य – अनमोल
• अवयव – अंग
अव्यय – अविकारी शब्द
• अवरोध – रुकावट
अविरोध – बिना विरोध के
• अशोच – शोक रहित
अशौच – अशुद्ध
• अलि – भौँरा
आली – सखी
• अम्बुज – कमल
अम्बुद – बादल
• अशीलता – दुराचरण
असिलता – तलवार
• अनूदित – अनुवाद किया हुआ
अनुद्यत – तैयार न होना
• अवदान – योगदान
अवधान – ध्यान देना
• अम्ब – आम्र वृक्ष
अम्भ – जल
• अर्घ – मूल्य
अर्घ्य – पूजा
• अरि – शत्रु
अरी – संबोधन (स्त्री.)
• अचार – आम आदि का अचार
आचार – आचरण
• अगम – पहुँच से बाहर
आगम – उत्पत्ति शास्त्र
• अतल – तल रहित
अतुल – बिना तुलना के
आतुल – अनुभव
• अपमान – निरादर
उपमान – जिससे समानता
• अपेक्षा – तुलना में
उपेक्षा – तिरस्कार
• अग – न जलने वाला
आग – अग्नि
• अगत – बुरी गति
आगत – आया हुआ
• अगर – यदि, एक वृक्ष
आगर – समूह
• अगला – आगे का
अर्गला – सिटकनी – रोपने की कील
• अजन्म – जिसका जन्म न हो

आजन्म – जीवन भर
• अजय – जो न जीता जाये
अजया – भांग, बकरी
• अतन्त्र – तन्तुहीन, नियंत्रण रहित
अतन्द्र – आलस्य रहित
• अक्ष – धुरी
अक्षि – आँख
• अवधि – नियत समय
अवधी – एक बोली
• अग – स्थिर
अघ – पाप
• अवन – नीचे उतारना
अवनि – धरती
• असक्त – असमर्थ
आसक्त – मोहित
• अजु – सरल
रज्जु – रस्सी
• अभय – भय रहित
उभय – दोनों
• अयुक्त – अनुचित
आयुक्त – कमीश्नर
• अनुसार – अनुरूप
अनुस्वार – (ं /ँ)
• अस्त – डूब जाना
अस्तु – अच्छा, खैर
• अपकार – बुराई करना
उपकार – भलाई करना
• अन्न – अनाज
अन्य – दूसरा
• असित – काला
अशित – खाया हुआ
• अंक – गोद
अंग – देह का भाग
• अश्व – घोड़ा
अश्म – पत्थर
• अपचार – अपराध
उपचार – इलाज
• अन्याय – गैर-इंसाफी
अन्यान्य – दूसरे-दूसरे
• अवसान – अंत
आसान – सरल
• आकर – खजाना
आकार – बनावट
• आभरण – गहना
आवरण – ढकना
• आदि – प्रारम्भ
आदी – अभ्यस्त, आदत
• आसन – बिछौना
आसन्न – समीप
• आधि – मानसिक कष्ट
आधी – आधा का स्त्रीलिँग
• आर्त्त – दुःख
आर्द्र – गीला
आर्द्रा – एक नक्षत्र
• आपात – पतन
आपाद – चरण से
• आभार – अहसान
अभार – भार से रहित
• आभाष – भूमिका
आभास – झलक
• आयत – विशाल, एक चतुर्भुज
आयात – विदेशी माल मंगाना
• आर्द्र – गीला
आद्रा – अदरक – एक नक्षत्र
• आलय – घर
अलेय – जिसका लय न हुआ हो
• आहुति – बलि, हवन की चीज
आहूति – बुलाना
• आयास – प्रयत्न
आवास – निवास
• आवृत्ति – दोहराना
आवृत – घिरा हुआ
• इतर – दूसरा
इत्र – पुष्पसार
• इति – समाप्ति

ईति – दैव आपत्ति
• इन्दरा – इंद्र की पत्नी
इन्दिरा – लक्ष्मी
• उर – हृदय
उरु – बड़ा, विस्तृत
• उबारना – बचाना
उभारना – ऊँचा उठाना
• उद्धत – उदण्ड
उद्यत – तैयार
• उत्पल – कमल
उपल – पत्थर
• उद्योत – प्रकाश
उद्योग – उपाय
• उतर – नीचे आना
उत्तर – जवाब
• उद्धरण – वाक्य का वैसा ही कथन
उदाहरण – मिसाल
• उधार – देय राशि
उद्धार – ऊपर उठाना
• उन – वे का विकार
ऊन – भेड़ आदि के बाल
• ऋत – सत्य
ऋतु – मौसम
• ओर – तरफ
और – दूसरा, तथा
• कंथा – गुदड़ी
कथा – कहानी
कत्था – एक पेड़ की छाल
• कच – बाल
कुच – स्तन
कूच – प्रस्थान
• कटक – सेना
कंटक – काँटा
• कटिबद्ध – तैयार
कटिबन्ध – कमर का एक आभूषण
• कलि – कलियुग
कली – कोँपल
• करि – हाथी
कीर – तोता
• कलित – सुन्दर, युक्त
कीलित – कील जड़ा
• कपिश – मटमैला रंग
कपीश – हनुमान, सुग्रीव
• कंज – कमल
कुंज – लता, मण्डप
• क्रम – सिलसिला
कर्म – कार्य
• कल – मशीन
काल – समय
• कंकाल – अस्थिपिँजर
कंगाल – निर्धन
• करकट – कचरा
कर्कट – केकड़ा
• करोड़ – 100 लाख
क्रोड़ – गोद
• कड़ी – कठोर
कढ़ी – दही-बेसन का साग
• कड़ाई – कठोरता
कढ़ाई – काढ़ने की क्रिया
• कटौती – कमी करना
कठौती – काष्ठ का पात्र
• कलुष – पाप
कुलिश – वज्र
कलश – मटका
• कांत – पति
क्लांत – थका हुआ
• कान – श्रवणेन्द्रिय
कानि – मर्यादा
• कान्ति – चमक
क्रान्ति – सम्पूर्ण परिवर्तन
• किटि – सुअर
कीट – कीड़ा
कटि – कमर
• कुंडल – एक गहना
कुंतल – सिर के बाल

- कुल – वंश, योग
  कूल – किनारा
- कुट – घर, किला
  कूट – पर्वत
- कुजन – दुर्जन
  कूजन – पक्षियअॅ का कलरव
- कूर – कायर
  क्रूर – निर्दयी
- केत – घर
  केतु – पताका, ध्वजा
- केसर – सिँह की गर्दन के बाल
  केशर – एक सुगन्धित पुष्प
- कोर – किनारा
  कौर – ग्रास
- कोस – दूर की माप
  कोश – खजाना
- कोशल – अयोध्या का प्रदेश
  कौशल – निपुणता
- कृत – किया हुआ
  क्रीत – खरीदा हुआ
- कृति – रचना
  कृती – रचनाकार, चतुर
- कृपण – कंजूस
  कृपाण – तलवार
- कृमि – कीट
  कृषि – खेती
- क्षति – नुकसान
  क्षिति – पृथ्वी
- क्ष्मा – पृथ्वी
  क्षमा – माफ करना
- खर – गधा
  खुर – पशु के खुर
- खाद – उर्वरक
  खाद्य – खाने योग्य वस्तु
- गट्टा – कलाई
  गट्ठा – गट्ठर
- गड़ना – चुभना
  गढ़ना – बनाना
- गदहा – वैद्य
  गधा – गर्दभ
- गण – समूह
  गण्य – गिने जाने योग्य
- गत – बीता हुआ
  गति – चाल
- गाड़ी – यान
  गाढ़ी – गहरी
- गुँथना – माला पिरोना
  गुँदना – आटा सानना
- गुर – उपाय
  गुरु – शिक्षक, भारी
- गुटका – छोटी पुस्तक
  गुटिका – गोली
- गृह – घर
  ग्रह – सूर्य के चारोँ ओर घूमने वाले पिँड
- ग्रंथ – पुस्तक
  ग्रंथि – गाँठ
- गर्व – घमण्ड
  गर्भ – आन्तरिक भाग
- घन – बादल
  घना – गाढ़ा
- घट – घड़ा
  घाट – नदी का तट
- चर्म – चमड़ा
  चरम – अन्तिम
- चरण – पैर
  चारण – एक जाति
- चक्रवाक – चकवा पक्षी
  चक्रवात – बवंडर
- चतुष्पद – चौपाया
  चतुष्पथ – चौराहा
- चित – सिर के बाल
  चित्त – मन
- चिता – दाह संस्कार के लिए लकड़ियाँ
  चिँता – फिक्र
- चिर – अधिक काल

चीर – वस्त्र
चीड़ – एक वृक्ष
• छत – मकान की छत
छात्र – बड़ा छाता
क्षत – घाव
• जर – बुढ़ापा
जरा – पृथ्वी, थोड़ा
• जगत् – संसार
जगत – कुएँ का चौँतरा
• जघन – जांघ
जघन्य – नीच
• जलद – बादल
जलज – कमल
• जरठ – अति वृद्ध
जठर – पेट
• जलना – बलना
झलना – हवा करना
• जलाना – ज्वलित करना
जिलाना – जीवनदान देना
• जवान – युवक
जबान – जीभ
• जाम – प्याला
याम – प्रहर
• जामन – दूध जमाने का दही
जामुन – एक फल
• डीठ – दृष्टि
ढीठ – जिद्दी
• ढलाई – ढालने की क्रिया
ढिलाई – शिथिलता
• तरंग – लहर
तुरंग – घोड़ा
• तर्क – दलील, बहस
तक्र – छाछ
• तप्त – गरम
तृप्त – संतुष्ट
• तरणि – सूर्य
तरणी – नाव
तरुणी – युवती
तरनी – खोमचा रखने का डमरु की शक्ल का पात्र
• तम – अंधकार
तोम – समूह
• तन – शरीर
तनु – पतली
• तड़ाक – शीघ्र
तड़ाग – तालाब
• तर – गीला
तरु – पेड़
• तरि – नौका
तरी – गीलापन
• थन – स्तन
थल – रेगिस्तान
• दंश – डंक
दश – दस
• दशा – अवस्था
दिशा – ओर
• दमन – दबाना, निग्रह
दामन – पहाड़ के नीचे का भाग
• द्रव्य – धन
द्रव – पतला
• दग्ध – जला हुआ
दुग्ध – दूध
• दारा – स्त्री
द्वारा – माध्यम
• दिन – दिवस
दीन – गरीब
• दिवा – दिन
दीवा – दिया
• द्विप – हाथी
द्वीप – टापू
दीप – दीया
• दूत – संदेशवाहक
द्यूत – जुआ
• देव – देवता
दैव – भाग्य
• दोष – अवगुण

द्वैष – वैर
• दोषी – अपराधी
दोषा – रात्रि
• धन – रुपया-पैसा
धन्य – पुण्यवान
• धरा – पृथ्वी
धारा – प्रवाह
• धनि – गृहिणी
धनी – धनवान
धणी – स्वामी
• नकल – अनुकरण, प्रतिलिपि
नकुल – नेवला
• नद – बड़ी नदी
नाद – ध्वनि
• नग – पर्वत
नाग – सर्प, हाथी
• नत – झुका हुआ
नट – खेल-तमाशे दिखाने वाली एक जाति
• नम – गीला
नम्र – विनीत
• नक्र – मगरमच्छ
नर्क – नरक
• नावक – छोटा बाण
नाविक – केवट
• नारी – स्त्री
नाड़ी – नब्ज
• निगम – संस्था
निर्गम – निकास
• निधन – मृत्यु
निर्धन – गरीब
• निर्जर – देवता
निर्झर – झरना
• निर्माण – रचना
निर्वाण – मोक्ष
• निहत – मरा हुआ
निहित – छिपा हुआ
• नियत – निश्चित
नियति – सोच, भाग्य
• निश्चल – अचल
निश्छल – छल रहित
• निमंत्रण – न्यौता
नियंत्रण – बंधन
• नीर – पानी
नीड़ – घौंसला
• नीरद – बादल
नीरधि – समुद्र
• नीरज – कमल
नीरव – नि:शब्द, सुनसान
• नीम – एक पेड़
नींव – मकान की जड़
• नेक – अच्छा
नेकु – तनिक
• परिषद – सभा
परिषद् – सभासद
• प्रभाव – असर
पराभव – हार
• प्रहार – चोट करना
परिहार – समाधान करना
• परुष – कठोर
पुरुष – मनुष्य, नर
• प्रकृत – पदार्थ
प्रकृति – स्वभाव
• पर्जन्य – बादल
परजन – शत्रु, अन्य व्यक्ति
• प्रदीप – दीपक
प्रतीप – उल्टा
• प्रणय – प्रेम
प्रणत – झुका हुआ
• प्रसाद – कृपा
प्रासाद – महल
• प्रकार – तरीका
प्राकार – परकोटा
• प्रवाह – बहाव
प्रभाव – महत्त्व
• प्रथा – परम्परा

पृथा – कुन्ती
• प्रणीत – रचित
परिणीत – विवाहित
• पवन – हवा
पावन – पवित्र
• परिणाम – नतीजा
परिमाण – मात्रा
• प्रमाण – सबूत, नाप
प्रणाम – नमस्कार
• प्रतीहार – द्वारपाल
प्रत्याहार – वापस चलना
• पानी – जल
पाणि – हाथ
• पावस – वर्षा
पायस – खीर
• परिमित – अल्प
परिमिति – सीमा
• परिच्छिद – वेशभूषा
परिच्छेद – अध्याय
• प्रेषित – भेजा हुआ
प्रोषित – प्रवासी
• पाश – फन्दा
पास – समीप
• पुष्कर – जलाशय
पुष्कल – बहुत
• पालतु – पाला हुआ
पलातु – पालने योग्य
• पथ – रास्ता
पथ्य – रोगी का भोजन
• प्रकृत – नैसर्गिक
प्राकृत – सामान्य भाषा
• पट्ट – तख्ता
पट – कपड़ा
• पतन – गिरावट
पत्तन – कस्बा, नगर
• पति – घरवाला
पत्ती – हिस्सा, पेड़ की पत्ती
• पद – ओहदा
पद्य – काव्य
• परिवर्तन – बदलाव
प्रवर्तन – उकसाव
• प्रबल – जबरदस्त
प्रवर – सबसे बड़ा
• प्राप्त – मिला
पर्याप्त – काफी
• फण – साँप का फन
फन – कला
• बलि – भेंट
बली – बलवान
• बहन – भगिनी
वहन – ढोना
• बहु – बहुत
बहू – पुत्रवधु
• बलाक – बगुला
बलाहक – बादल
• ब्याल – सर्प
ब्यालू – रात्रि का भोजन
• बाड़ – ओट
बाढ़ – अतिजल प्रवाह
• बुरा – खराब
बूरा – कच्ची चीनी
• बेर – एक फल
बैर – शत्रुता
• भट – योद्धा
भट्ट – पंडित
• भवन – मकान, घर
भुवन – संसार, लोक
• भाग – हिस्सा
भाग्य – तकदीर
• भाल – मस्तक
भालू – रीँछ
• भित्ति – दीवार
भीति – डर
• मत – राय
मति – बुद्धि

• मणि – रत्न
मणी – साँप की मणी
मण – तोल का एक माप (1 मण = 40 किलो)
• मद – अभिमान
मद्य – शराब
• मनुज – मानव
मनोज – कामदेव
• मरीचि – किरण
मरीची – सूर्य
• मण्डित – सुशोभित
मुण्डित – मुंडा हुआ
• मन्दर – एक पर्वत
मन्दिर पूजा स्थल
• मन्दी – धीमी
मण्डी – हाट
• मलिन – मैला
म्लान – मुरझाया हुआ
• मातृ – माता
मात्र – केवल
• मिट्टी – धूल
मिट्ठी – चुम्बन
• मिश्र – मिला हुआ
मिस्त्र – देश का नाम
• मुक्त – छोड़ा गया
भुक्त – भोगा हुआ
• मुकुर – दर्पण
मुकुट – ताज
• मूल – जड़, मुख्य
मूल्य – कीमत
• मेघ – बादल
मेध – यज्ञ
• मोर – मयूर पक्षी
मौर – मुकुट
• युक्ति – उपाय, तरकीब
उक्ति – कथन
• योग – मन का ठहराव
योग्य – लायक
• रवि – सूर्य
रव – शोर
• राज – शासन
राजा – शासक
• रीति – परम्परा
रीता – खाली
• लक्ष – लाख
लक्ष्य – उद्देश्य, निशाना
• लगन – चाव, उत्साह
लग्न – शुभ मुहूर्त
• ललित – सुंदर
ललिता – गोपी
• लोभ – लालच
लोम – रोम
• व्रत – उपवास
वृत्त – घेरा
वृन्द – समूह
• वसन – वस्त्र
व्यसन – बुरी आदत
बसन – बसना
• वन – जंगल
वन्य – जंगली
• वस्तु – चीज
वास्तु – मकान
• वदन – मुख
बदन – देह
• वर्ण – रंग
व्रण – घाव
• वरण – चुनाव
वरुण – एक देवता
• व्यंग – विकलांग
व्यंग्य – कटाक्ष
• व्यंजन – पकवान
व्यजन – पंखा
विजन – एकान्त
• व्याध – शिकारी
व्याधि – रोग
• वात – वायु

बात – बातचीत
• वाम – टेढ़ा
वामा – स्त्री
• वारिद – बादल
वारिधि – समुद्र
• विष – जहर
विस – कमलनाल
विश्व – दुनिया
• विधि – ढंग, ब्रह्मा
विधु – चन्द्रमा
• विवरण – वृतान्त
विवर्ण – विकृत रंग
• विदुर – पण्डित
विधुर – जिसकी पत्नी मर गई हो
• शंकर – शिव
संकर – मिश्रित
• शर – बाण
सर – तालाब
• शकल – टुकड़ा
सकल – सम्पूर्ण
• शम – शान्ति
सम – समान
• शस्त्र – हथियार
शास्त्र – धर्म ग्रन्थ
• शप्त – शापित
सप्त – सात
• शशधर – चन्द्रमा
शशिधर – शंकर
• शकृत – विष्टा
सकृत – एक बार
• शाला – स्थान
साला – पत्नी का भाई
• शान्त – चुप
सान्त – अन्त सहित
• शित – सफेद
शीत – ठण्ड
• शिरा – नाड़ी
सिरा – छोर
• शुभ – मंगलप्रद
शुभ्र – उज्ज्वल
• शुक – तोता
शुक्र – शक्ति, दैत्य, गुरु
• शूर – वीर
सूर – सूर्य
शूल – काँटा
• शुल्क – फीस
शल्क – छाल
शुक्ल – सफेद
• शूचि – पवित्र
शचि – इन्द्र की पत्नी
• शोक – वियोग, दुःख
शौक – चाव, लगन
• शौर्य – वीरता
सौर, सौर्य – सूर्य सम्बन्धी
• श्वजन – कुत्ता
स्वजन – अपने आदमी
• श्वेद – पसीना
श्वेत – सफेद
• श्रवण – सुनना
श्रामण – जैन भिक्षु
• श्राद्ध – पितरों का श्राद्ध
श्रद्धा – पूज्य भाव
• षष्टि – साठ
षष्ठी – छठी
• संग – साथ
संघ – समूह
• संदेह – शक
सदेह – शरीर के साथ
• सखी – सहेली
साखी – दोहा
सुखी – सुख वाला
• सर्ग – अध्याय
स्वर्ग – देवलोक
• सज्जा – सजावट
सजा – अलंकृत, दण्ड

• सती – साध्वी
  शती – सौ साल
• सहसा – अचानक
  साहस – हिम्मत
• सर्वथा – सब प्रकार से
  सर्वदा – हमेशा
• संवत् – देशी वर्ष
  सम्मत – सलाह के अनुकूल
• समिति – सभा
  सम्मति – सलाह
  सन्मति – अच्छी बुद्धि
• साँस – श्वास, प्राण
  सास – पति या पत्नी की माँ
• सिर – शीश
  सिरा – छोर
• सिता – शक्कर
  सीता – राम की पत्नी
• सुत – बेटा
  सूत – सारथी, रुई का धागा
• सुगंध – खुशबू
  सौगंध – कसम, प्रतिज्ञा
• सुधि – होश
  सुधी – बुद्धिमान
• सूचि – सुई
  सूची – सारणी
• स्वपच – ब्राह्मण
  श्वपच – चाण्डाल
• स्त्रोत – प्रवाह
  श्रोत्र – कान
• हरण – ले जाना
  हरिण – मृग
• हरि – विष्णु
  हरी – हरे रंग की
• हस्त – हाथ
  हस्ति – हाथी
• हल – व्यंजन
  हल – समाधान
• हट – परे हो
  हठ – जिद्द
• ह्रास – कमी
  हास – हँसी
• ह्रद – तालाब
  हृद् – हृदय
• हितू – उपकारी
  हेतु – कारण
• हिम – बर्फ
  हेम – स्वर्ण
• हिय – हृदय
  हय – घोड़ा
• क्ष्मा – पृथ्वी
  क्षमा – माफ करना
• ज्ञेय – जानने योग्य
  गेय – गाने योग्य

4. एकार्थक शब्द

बहुत से शब्द ऐसे हैं, जिनका अर्थ देखने और सुनने में एक–सा लगता है, परन्तु वे समानार्थी नहीं होते हैं। ध्यान से देखने पर पता चलता है कि उनमें कुछ अन्तर भी है। इनके प्रयोग में भूल न हो इसके लिए इनकी अर्थ–भिन्नता को जानना आवश्यक है।

♦ समानार्थी प्रतीत होने वाले भिन्नार्थी शब्द :
• अगम – जहाँ न पहुँचा जा सके।
  दुर्गम – जहाँ पहुँचना कठिन हो।
• अलौकिक – जो सामान्यतः लोक या दुनिया में न पाया जाये।
  अस्वाभाविक – जो प्रकृति के नियमों के विरुद्ध हो।
  असाधारण – सांसारिक होकर भी अधिकता से न मिले, विशेष।
• अनुज – छोटा भाई।
  अग्रज – बड़ा भाई।
  भाई – छोटे-बड़े दोनअॅ के लिए।
• अनुभव – व्यवहार या अभ्यास से प्राप्त ज्ञान।
  अनुभूति – चिन्तन या मनन से प्राप्त आंतरिक ज्ञान।
• अनुरूप – समानता या उपयुक्तता का बोध होता है।
  अनुकूल – पक्ष या अनुसार का भाव प्रकट होता है।
• अस्त्र – फेँककर चलाए जाने वाले हथियार।

शस्त्र – हाथ में पकड़कर चलाए जाने वाले हथियार।
- अवस्था – जीवन का बीता हुआ भाग।
  आयु – सम्पूर्ण जीवन काल।
- अपराध – कानून के विरुद्ध कार्य करना।
  पाप – सामाजिक तथा धार्मिक नियमों के विरुद्ध आचरण।
- अनुरोध – आग्रह (हठ) पूर्वक की गई प्रार्थना।
  आग्रह – हठ।
- अभिनन्दन – सराहना करना, बधाई।
  अभिवन्दन – प्रणाम, नमस्कार करना।
  स्वागत – किसी के आगमन पर प्रकट की जाने वाली प्रसन्नता।
- अणु – पदार्थ की सबसे छोटी इकाई।
  परमाणु – तत्त्व की सबसे छोटी इकाई।
- अधिक – आवश्यकता से बढ़कर।
  अति – आवश्यकता से बहुत अधिक।
  पर्याप्त – जितनी आवश्यकता हो।
- अर्चना – मात्र बाह्य सत्कार।
  पूजा – आन्तरिक एवं बाह्य दोनों सत्कार।
- अर्पण – छोटों द्वारा बड़ों को दिया जाना।
  प्रदान – बड़ों द्वारा छोटों को दिया जाना।
- अमूल्य – जिस वस्तु का कोई मूल्य ही न आँका जा सके।
  बहुमूल्य – अधिक मूल्यवान वस्तु।
- अशुद्धि – भाषा सम्बन्धी लिखने–बोलने की गलती।
  भूल – सामान्य गलती।
  त्रुटि – बड़ी गलती।
- असफल – व्यक्ति के लिए प्रयुक्त होता है।
  निष्फल – कार्य के लिए प्रयुक्त होता है।
  अहंकार – घमण्ड, स्वयं को अत्यधिक समझना।
  अभिमान – गौरव, दूसरों से श्रेष्ठ समझना।
- आचार – सामान्य व्यवहार, चाल–चलन।
  व्यवहार – व्यक्ति विशेष के प्रति परिस्थिति विशेष में किया गया आचरण।
- आनंद – खुशी का स्थायी और गंभीर भाव।
  आह्लाद – क्षणिक एवं तीव्र आनंद।
  उल्लास – सुख-प्राप्ति की अल्पकालिक क्रिया, उमंग।
  प्रसन्नता – साधारण आनंद का भाव।
- आधि – मानसिक कष्ट।
  व्याधि – शारीरिक कष्ट।
- आवेदन – अधिकारी से की जाने वाली प्रार्थना।
  निवेदन – विनयपूर्वक की जाने वाली प्रार्थना।
- आशंका – अनिष्ट की कल्पना से उत्पन्न भय।
  शंका – सन्देह।
- आविष्कार – नवीन वस्तु का निर्माण करना।
  अनुसंधान – रहस्य की खोज करना।
  अन्वेषण – अज्ञात स्थान की खोज करना।
- आज्ञा – बड़ों द्वारा छोटे को किसी कार्य को करने हेतु कहना।
  अनुमति – स्वीकृति।
- आवश्यक – किसी कार्य को करना जरूरी।
  अनिवार्य – कार्य जिसे निश्चित रूप से करना हो।
- आरम्भ – बहुत ही साधारण और सामान्य शुरुआत।
  प्रारम्भ – ऐसी शुरुआत जिसमें औपचारिकता, महत्ता और साहित्यता हो।
- ईर्ष्या – दूसरे की उन्नति पर जलना।
  द्वेष – अकारण शत्रुता।
  स्पर्धा – एक-दूसरे से आगे बढ़ने की भावना।
- उत्साह – निर्भीक होकर कार्य करना।
  साहस – भय की उपस्थिति में कार्य करना।
- उत्तेजना – आवेग।
  प्रोत्साहन – बढ़ावा।
- उद्यम – परिश्रम, प्रवास।
  उद्योग – उपाय, प्रयत्न।
- उपकरण – साधन।
  उपादान – सामग्री।
- कष्ट – मुख्यतः शारीरिक पीड़ा।
  क्लेश – मानसिक पीड़ा।
  दुःख – सभी प्रकार से सामान्य दुःख को प्रकट करने वाला शब्द।
- कन्या – वह अविवाहित लड़की जो रजस्वला न हुई हो।
  लड़की – सामान्य अविवाहित या विवाहित किसी की लड़की।
  पुत्री – अपनी बेटी।
- कृपा – किसी का दुःख दूर करने का प्रयास।
  दया – किसी के दुःख से प्रभावित होना।
  संवेदना – अनुभूति जताना।
  सहानुभूति – किसी के दुःख से प्रभावित होकर अपनी अनुभूति जताना।
- कृतज्ञ – उपकार मानने वाला।
  आभारी – उपकार करने वाले के प्रति मन के भाव प्रकट करने वाला।
- खेद – सामान्य दुःख।
  शोक – स्वजनों के अनिष्ट से होने वाला दुःख।
  विषाद – निराशापूर्ण दुःख।

- तन्द्रा – हल्की नींद।
  निन्द्रा – गहरी नींद।
- नक्षत्र – स्वयं के प्रकाश से प्रकाशित आकाशीय पिण्ड।
  ग्रह – सूर्य के प्रकाश से प्रकाशित आकाशीय पिण्ड।
- नमस्कार – बराबर वाले के प्रति नम्रता प्रकट करने हेतु।
  प्रणाम – अपने से बड़ों को अभिवादन या उनके प्रति नम्रता प्रकट करने के लिए प्रणाम का प्रयोग शब्द का प्रयोग किया जाता है।
  नमस्ते – यह छोटे एवं बड़े सभी के लिए अभिवादन का प्रचलित शब्द है।
- प्रलाप – व्यर्थ की बात।
  विलाप – दुःख में रोना।
- परिणाम – किसी वस्तु का धीरे–धीरे दूसरा रूप धारण करना।
  फल – किसी स्थिति के कारण उत्पन्न होने वाला लाभ।
- परिश्रम – सभी प्रकार की मेहनत को व्यक्त करने वाला शब्द।
  श्रम – मात्र शारीरिक मेहनत।
- परामर्श – सलाह–मशविरा सूचक शब्द।
  मंत्रणा – गोपनीय सलाह–मशविरा।
- प्रसिद्धि – बड़ाई।
  ख्याति – विशेष प्रसिद्धि।
- पीड़ा – शारीरिक कष्ट।
  वेदना – सामान्य अल्पकालिक हार्दिक दुःख।
  व्यथा – गंभीर दीर्घकालिक मानसिक दुःख।
- पीछे – क्रम को सूचित करने वाला शब्द।
  बाद में – समय का भाव सूचित करने वारा शब्द।
- बहुत – ज्यादा (बिना तुलना के)।
  अधिक – ज्यादा (तुलना में)।
- भय – अनिष्ट के कारण मन में उठा विचार (डर)।
  आतंक – शारीरिक और मन में उठा भय।
  त्रास – भयवश होने वाला कष्ट।
  यातना – दूसरों के द्वारा दिया गया कष्ट।
- भवदीय – आपका, तुम्हारा।
  प्रार्थी – प्रार्थना करने वाला।
- भ्रम – किसी बात के लिए विषय गलत समझते हुए गलत धारणा बना लेना।
  सन्देह – किसी के विषय में निश्चय हो जाना।
- भागना – भयवश दौड़ना।
  दौड़ना – सामान्यतः तेज चलना।
- भाषण – सामान्य व्याखान।
  प्रवचन – धार्मिक विषय पर व्याख्यान।
- मनुष्य – मानव जाति के स्त्री-पुरुष दोनों का बोध कराने वाला शब्द।
  पुरुष – मानव पुल्लिँग।
- मंत्री – परामर्श देने वाला।
  सचिव – मंत्री के आदेश को प्रचारित करने वाला।
- मन – इन्द्रियाँ, विषयों का ज्ञान कराने वाला।
  चित्त – चेतना का प्रतीक।
  अन्तःकरण – सत्-असत्, उचित-अनुचित का ज्ञान कराने वाला।
- महाशय – इस शब्द का प्रयोग प्रायः साधारण लोगों के लिए किया जाता है।
  महोदय/मान्यवर – इस शब्द का प्रयोग बड़े लोगों के लिए किया जाता है।
- मित्र – समवयस्क, जो अपने प्रति प्यार रखता हो।
  सखा – साथ रहने वाला समवयस्क।
  सगा – आत्मीयता रखने वाला।
  सुहृदय – सुंदर हृदय वाला, जिसका व्यवहार अच्छा हो।
- लड़का – बाल मानव।
  पुत्र – अपना लड़का।
- लज्जा – दूसरे के द्वारा अपने बारे में गलत सोचने का अनुमान।
  ग्लानि – अपनी गलती पर होने वाला पश्चाताप।
  संकोच – किसी कार्य को करने में होने वाली झिझक।
- यथेष्ट – अपेक्षित या जितना वांछनीय हो।
  पर्याप्त – पूरी तरह से प्राप्त।
- व्यापार – किसी काम में लगे रहना।
  व्यवसाय – थोड़ी मात्रा में खरीदने और बेचने का कार्य।
  वाणिज्य – क्रय-विक्रय और लेन-देन।
- व्याख्यान – मौखिक भाषण।
  अभिभाषण – लिखित व्याख्यान।
- विनय – अनुशासन एवं शिष्टतापूर्ण निवेदन।
  अनुनय – किसी बात पर सहमत होनेकी प्रार्थना।
  आवेदन – योग्यतानुसार किसी पद केलिए कथन द्वारा प्रस्तुत होना।
  प्रार्थना – किसी कार्य-सिद्धि के लिए विनम्रतापूर्ण कथन।
- श्रद्धा – महानजनों के प्रति आदर भाव।
  भक्ति – देवताओं के प्रति आदर भाव।
- श्रीयुत् – इस शब्द का प्रयोग आदर के लिए किया जाता है। हमारे यहाँ इसका प्रयोग बहुत कम होता है।
  श्रीमान् – इस शब्द का प्रयोग भी आदर के लिए किया जाता है। हमारे यहाँ इसका प्रयोग अधिक होता है। श्रीयुत् और श्रीमान् का अर्थ समान-सा ही है।
- स्त्री – कोई भी नारी।
  पत्नी – किसी की विवाहिता स्त्री।
- स्नेह – बड़ों का छोटों के प्रति प्रेम।
  प्रेम – प्यार।
  प्रणय – पति-पत्नी, प्रेमी-प्रेमिका का प्रेम।
- सभ्यता – भौतिक विकास।

संस्कृति – कलात्मक एवं आध्यात्मिक विकास।
• सुंदर – आकर्षक वस्तु।
चारु – पवित्र और सुंदर वस्तु।
रुचिर – सुरुचि जाग्रत करने वाली सुंदर वस्तु।
मनोहर – मन को लुभाने वाली वस्तु।
• हेतु – अभिप्राय।
कारण – कार्य की पृष्ठभूमि।

5. अनेकार्थक शब्द

♦ अनेकार्थक शब्द –

'अनेकार्थक' शब्द का अभिप्राय है, किसी शब्द के एक से अधिक अर्थ होना। बहुत से शब्द ऐसे हैं, जिनके एक से अधिक अर्थ होते हैं। ऐसे शब्दों का अर्थ भिन्न–भिन्न प्रयोग के आधार पर या प्रसंगानुसार ही स्पष्ट होता है। भाषा सौष्ठव की दृष्टि से इनका बड़ा महत्त्व है।

♦ प्रमुख अनेकार्थक शब्द :
• अंक – संख्या के अंक, नाटक के अंक, गोद, अध्याय, परिच्छेद, चिह्न, भाग्य, स्थान, पत्रिका का नंबर।
• अंग – शरीर, शरीर का कोई अवयव, अंश, शाखा।
• अंचल – सिरा, प्रदेश, साड़ी का पल्लू।
• अंत – सिरा, समाप्ति, मृत्यु, भेद, रहस्य।
• अंबर – आकाश, वस्त्र, बादल, विशेष सुगन्धित द्रव जो जलाया जाता है।
• अक्षर – नष्ट न होने वाला, अ, आ आदि वर्ण, ईश्वर, शिव, मोक्ष, ब्रह्म, धर्म, गगन, सत्य, जीव।
• अर्क – सूर्य, आक का पौधा, औषधियों का रस, काढ़ा, इन्द्र, स्फटिक, शराब।
• अकाल – दुर्भिक्ष, अभाव, असमय।
• अज – ब्रह्मा, बकरा, शिव, मेष राशि, जिसका जन्म न हो (ईश्वर)।
• अर्थ – धन, ऐश्वर्य, प्रयोजन, कारण, मतलब, अभिप्रा, हेतु (लिए)।
• अक्ष – धुरी, आँख, सूर्य, सर्प, रथ, मण्डल, ज्ञान, पहिया, कील।
• अजीत – अजेय, विष्णु, शिव, बुद्ध, एक विषैला मूषक, जैनियों के दूसरे तीर्थंकर।
• अतिथि – मेहमान, साधु, यात्री, अपरिचित व्यक्ति, अग्नि।
• अधर – निराधार, शून्य, निचला ओष्ठ, स्वर्ग, पाताल, मध्य, नीचा, पृथ्वी व आकाश के बीच का भाग।
• अध्यक्ष – विभाग का मुखिया, सभापति, इंचार्ज।
• अपवाद – निंदा, कलंक, नियम के बाहर।
• अपेक्षा – तुलना में, आशा, आवश्यकता, इच्छा।
• अमृत – जल, दूध, पारा, स्वर्ण, सुधा, मुक्ति, मृत्युरहित।
• अरुण – लाल, सूर्य, सूर्य का सारथी, सिंदूर, सोना।
• अरुणा – ऊषा, मजीठ, घुँधली, अतिविषा, इन्द्र, वारुणी।
• अनन्त – सीमारहित, ब्रह्मा, विष्णु, शिव, शेषनाग, लक्ष्मण, बलराम, बाँह का आभूषण, आकाश, अन्तहीन।
• अग्र – आगे का, श्रेष्ठ, सिरा, पहले।
• अब्ज – शंख, कपूर, कमल, चन्द्रमा, पद्य, जल में उत्पन्न।
• अमल – मलरहित, कार्यान्वयन, नशा-पानी।
• अवस्था – उम्र, दशा, स्थिति।
• आकर – खान, कोष, स्त्रोत।
• अशोक – शोकरहित, एक वृक्ष, सम्राट अशोक।
• आराम – बगीचा, विश्राम, सुविधा, राहत, रोग का दूर होना।
• आदर्श – योग्य, नमूना, उदाहरण।
• आम – सामान्य, एक फल, मामूली, सर्वसाधारण।
• आत्मा – बुद्धि, जीवात्मा, ब्रह्म, देह, पुत्र, वायु।
• आली – सखी, पंक्ति, रेखा।
• आतुर – विकल, रोगी, उत्सुक, अशक्त।
• इन्दु – चन्द्रमा, कपूर।
• ईश्वर – प्रभु, समर्थ, स्वामी, धनिक।
• उग्र – क्रूर, भयानक, कष्टदायक, तीव्र।
• उत्तर – जवाब, एक दिशा, बदला, पश्चाताप।
• उत्सर्ग – त्याग, दान, समाप्ति।
• उत्पात – शरारत, दंगा, हो-हल्ला।
• उपचार – उपाय, सेवा, इलाज, निदान।
• ऋण – कर्ज, दायित्व, उपकार, घटाना, एकता, घटाने का बूटी वाला पत्ता।
• कंटक – काँटा, विघ्न, कीलक।
• कंचन – सोना, काँच, निर्मल, धन-दौलत।
• कनक – स्वर्ण, धतूरा, गेहूँ, वृक्ष, पलाश (टेसू)।
• कन्या – कुमारी लड़की, पुत्री, एक राशि।
• कला – अंश, एक विषय, कुशलता, शोभा, तेज, युक्ति, गुण, ब्याज, चातुर्य, चाँद का सोलहवाँ अंश।
• कर – किरण, हाथ, सूँड, कार्यादेश, टैक्स।
• कल – मशीन, आराम, सुख, पुर्जा, मधुर ध्वनि, शान्ति, बीता हुआ दिन, आने वाला दिन।
• कक्ष – काँख, कमरा, कछौटा, सूखी घास, सूर्य की कक्षा।
• कर्त्ता – स्वामी, करने वाला, बनाने वाला, ग्रन्थ निर्माता, ईश्वर, पहला कारक, परिवार का मुखिया।
• कलम – लेखनी, कूँची, पेड़-पौधों की हरी लकड़ी, कनपटी के बाल।
• कलि – कलह, दुःख, पाप, चार युगों में चौथा युग।
• कशिपु – चटाई, बिछौना, तकिया, अन्न, वस्त्र, शंख।
• काल – समय, मृत्यु, यमराज, अकाल, मुहूर्त, अवसर, शिव, युग।
• काम – कार्य, नौकरी, सिलाई आदि धंधा, वासना, कामदेव, मतलब, कृति।
• किनारा – तट, सिरा, पार्श्व, हाशिया।
• कुल – वंश, जोड़, जाति, घर, गोत्र, सारा।
• कुशल – चतुर, सुखी, निपुण, सुरक्षित।

• कुंजर – हाथी, बाल।
• कूट – नीति, शिखर, श्रेणी, धनुष का सिरा।
• कोटि – करोड़, श्रेणी, धनुष का सिरा।
• कोष – खजाना, फूल का भीतरी भाग।
• क्षुद्र – नीच, कंजूस, छोटा, थोड़ा।
• खंड – टुकड़े करना, हिस्सों में बाँटना, प्रत्याख्यान, विरोध।
• खग – पक्षी, बाण, देवता, चन्द्रमा, सूर्य, बादल।
• खर – गधा, तिनका, दुष्ट, एक राक्षस, तीक्ष्ण, धतूरा, दवा कूटने की खरल।
• खत – पत्र, लिखाई, कनपटी के बाल।
• खल – दुष्ट, चुगलखोर, खरल, तलछट, धतूरा।
• खेचर – पक्षी, देवता, ग्रह।
• गंदा – मैला, अश्लील, बुरा।
• गड – ओट, घेरा, टीला, अन्तर, खाई।
• गण – समूह, मनुष्य, भूतप्रेत, शिव के अनुचर, दूत, सेना।
• गति – चाल, हालत, मोक्ष, रफ्तार।
• गद्दी – छोटा गद्दा, महाजन की बैठकी, शिष्य परम्परा, सिँहासन।
• गहन – गहरा, घना, दुर्गम, जटिल।
• ग्रहण – लेना, सूर्य व चन्द ग्रहण।
• गुण – कौशल, शील, रस्सी, स्वभाव, विशेषता, हुनर, महत्त्व, तीन गुण (सत, तम व रज), प्रत्यंचा (धनुष की डोरी)।
• गुरु – शिक्षक, बड़ा, भारी, श्रेष्ठ, बृहस्पति, द्विमात्रिक अक्षर, पूज्य, आचार्य, अपने से बड़े।
• गौ – गाय, बैल, इन्द्रिय, भूमि, दिशा, बाण, वज्र, सरस्वती, आँख, स्वर्ग, सूर्य।
• घट – घड़ा, हृदय, कम, शरीर, कलश, कुंभ राशि।
• घर – मकान, कुल, कार्यालय, अंदर समाना।
• घन – बादल, भारी हथौड़ा, घना, छः सतही रेखागणितीय आकृति।
• घोड़ा – एक प्रसिद्ध चौपाया, बंदूक का खटका, शतरंज का एक मोहरा।
• चक्र – पहिया, भ्रम, कुम्हार का चाक, चकवा पक्षी, गोल घेरा।
• चपला – लक्ष्मी, बिजली, चंचल स्त्री।
• चश्मा – ऐनक, झरना, स्रोत।
• चीर – वस्त्र, रेखा, पट्टी, चीरना।
• छन्द – पद, विशेष, जल, अभिप्राय, वेद।
• छाप – छापे का चिह्न, अँगूठी, प्रभाव।
• छावा – बच्चा, बेटा, हाथी का पट्ठा।
• जलज – कमल, मोती, मछली, चंद्रमा, शंख, शैवाल, काई, जलजीव।
• जलद – बादल, कपूर।
• जलधर – बादल, समुद्र, जलाशय।
• जवान – सैनिक, योद्धा, वीर, युवा।
• जनक – पिता, मिथिला के राजा, उत्पन्न करने वाला।
• जड़ – अचेतन, मूर्ख, वृक्ष का मूल, निर्जीव, मूल कारण।
• जीवन – जल, प्राण, आजीविका, पुत्र, वायु, जिन्दगी।
• टंक – तोल, छेनी, कुल्हाड़ी, तलवार, म्यान, पहाड़ी, ढाल, क्रोध, दर्प, सिक्का, दरार।
• ठस – बहुत कड़ा, भारी, घनी बुनावट वाला, कंजूस, आलसी, हठी।
• ठोकना – मारना, पीटना, प्रहार द्वारा भीतर धँसाना, मुकदमा दायर करना।
• डहकना – वंचना, छलना, धोखा खाना, फूट-फूटकर रोना, चिँघाड़ना, फैलना, छाना।
• ढर्रा – रूप, पद्धति, उपाय, व्यवहार।
• तंग – सँकरा, पहनने में छोटा, परेशान।
• तंतु – सूत, धागा, रेशा, ग्राह, संतान, परमेश्वर।
• तट – किनारा, प्रदेश, खेत।
• तप – साधना, गर्मी, अग्नि, धूप।
• तम – अन्धकार, पाप, अज्ञान, गुण, तमाल वृक्ष।
• तरंग – स्वर लहरी, लहर, उमंग।
• तरी – नौका, कपड़े का छोर, शोरबा, तर होने की अवस्था।
• तरणि – सूर्य, उद्धार।
• तात – पिता, भाई, बड़ा, पूज्य, प्यारा, मित्र, श्रद्धेय, गुरु।
• तारा – नक्षत्र, आँख की पुतली, बालि की पत्नी का नाम।
• तीर – किनारा, बाण, समीप, नदी तट।
• थाप – थप्पड़, आदर, सम्मान, मर्यादा, गौरव, चिह्न, तबले पर हथेली का आघात।
• दंड – सजा, डंडा, जहाज का मस्तूल, एक प्रकार की कसरत।
• दक्षिण – दाहिना, एक दिशा, उदार, सरल।
• दर्शन – देखना, नेत्र, आकृति, दर्पण, दर्शन शास्त्र।
• दल – समूह, सेना, पत्ता, हिस्सा, पक्ष, भाग, चिड़ी।
• दाम – धन, मूल्य, रस्सी।
• द्विज – पक्षी, ब्राह्मण, दाँत, चन्द्रमा, नख, केश, वैश्य, क्षत्रिय।
• धन – सम्पत्ति, स्त्री, भूमि, नायिका, जोड़ मिलाना।
• धर्म – स्वभाव, प्राकृतिक गुण, कर्तव्य, संप्रदाय।
• धनंजय – वृक्ष, अर्जुन, अग्नि, वायु।
• ध्रुव – अटल सत्य, ध्रुव भक्त, ध्रुव तारा।
• धारणा – विचार, बुद्धि, समझ, विश्वास, मन की स्थिरता।
• नग – पर्वत, नगीना, वृक्ष, संख्या।
• नाग – सर्प, हाथी, नागकेशर, एक जाति विशेष।
• नायक – नेता, मार्गदर्शक, सेनापति, एक जाति, नाटक या महाकाव्य का मुख्य पात्र।
• निऋति – विपत्ति, मृत्यु, क्षय, नाश।
• निर्वाण – मोक्ष, मृत्यु, शून्य, संयम।
• निशाचर – राक्षस, उल्लू, प्रेत।
• निशान – ध्वजा, चिह्न।
• पक्ष – पंख, पांख, सहाय, ओर, शरीर का अर्द्ध भाग।

- पट – वस्त्र, पर्दा, दरवाजा, स्थान, चित्र का आधार।
- पत्र – चिट्ठी, पत्ता, रथ, बाण, शंख, पुस्तक का पृष्ठ।
- पद्म – कमल, सर्प विशेष, एक संख्या।
- पद – पाँव, चिह्न, विशेष, छन्द का चतुर्थांश, विभक्ति युक्त शब्द, उपाधि, स्थान, ओहदा, कदम।
- पतंग – पतिँगा, सूर्य, पक्षी, नाव, उड़ाने का पतंग।
- पय – दूध, अन्न, जल।
- पयोधर – बादल, स्तन, पर्वत, गन्ना, तालाब।
- पानी – जल, मान, चमक, जीवन, लज्जा, वर्षा, स्वाभिमान।
- पुष्कर – तालाब, कमल, हाथी की सूँड, एक तीर्थ, पानी मद।
- पृष्ठ – पीठ, पीछे का भाग, पुस्तक का पेज।
- प्रत्यक्ष – आँखों के सामने, सीधा, साफ।
- प्रकृति – स्वभाव, वातावरण, मूलावस्था, कुदरत, धर्म, राज्य, खजाना, स्वामी, मित्र।
- प्रसाद – कृपा, अनुग्रह, हर्ष, नैवेद्य।
- प्राण – जीव, प्राणवायु, ईश्वर, ब्रह्म।
- फल – लाभ, खाने का फल, सेवा, नतीजा, लब्धि, पदार्थ, सन्तान, भाले की नोक।
- फेर – घुमाव, भ्रम, बदलना, गीदड़।
- बंधन – कैद, बाँध, पुल, बाँधने की चीज।
- बट्टा – पत्थर का टुकड़ा, तौल का बाट, काट।
- बल – सेना, ताकत, बलराम, सहारा, चक्कर, मरोड़।
- बलि – बलिदान, उपहार, दानवीर राजा बलि, चढ़ावा, कर।
- बाजि – घोड़ा, बाण, पक्षी, चलने वाला।
- बाल – बालक, केश, बाला, दानेयुक्त डंठल (गेहूँ की बाल)।
- बिजली – विद्युत, तड़ति, कान का एक गहना।
- बैठक – बैठने का कमरा, बैठने की मुद्रा, अधिवेशन, एक कसरत।
- भव – संसार, उत्पति, शंकर।
- भाग – हिस्सा, दौड़, बाँटना, एक गणितीय संक्रिया।
- भुजंग – सर्प, लम्पट, नाग।
- भुवन – संसार, जल, लोग, चौदह की संख्या।
- भृति – नौकरी, मजदूरी, वेतन, मूल्य, वृत्ति।
- भेद – रहस्य, प्रकार, भिन्नता, फूट, तात्पर्य, छेदन।
- मत – सम्मति, धर्म, वोट, नहीँ, विचार, पंथ।
- मदार – मस्त हाथी, सुअर, कामुक।
- मधु – शहद, मदिरा, चैत्र मास, एक दैत्य, बसंत ऋतु, पराग, मीठा।
- मान – सम्मान, घमंड, रूठना, माप।
- मित्र – सूर्य, दोस्त, वरुण, अनुकूल, सहयोगी।
- मूक – गूँगा, चुप, विवश।
- मूल – जड़, कंद, पूँजी, एक नक्षत्र।
- मोह – प्यार, ममता, आसक्ति, मूर्च्छा, अज्ञान।
- यंत्र – उपकरण, बंदूक, बाजा, ताला।
- युक्त – जुड़ा हुआ, मिश्रित, नियुक्त, उचित।
- योग – मेल, लगाव, मन की साधना, ध्यान, शुभकाल, कुल जोड़।
- रंग – वर्ण, नाच-गान, शोभा, मनोविनोद, ढंग, रोब, युद्धक्षेत्र, प्रेम, चाल, दशा, रँगने की सामग्री, नृत्य या अभिनय का स्थान।
- रस – स्वाद, सार, अच्छा देखने से प्राप्त आनन्द, प्रेम, सुख, पानी, शरबत।
- राग – प्रेम रंग, लाल रंग, संगीत की ध्वनि (राग)।
- राशि – समूह, मेष, कर्क, वृश्चिक आदि राशियाँ।
- रेणुका – धूल, पृथ्वी, परशुराम की माता।
- लक्ष्य – निशाना, उद्देश्य, लक्षणार्थ।
- लय – तान, लीन होना।
- लहर – तरंग, उमंग, झोँका, झूमना।
- लाल – बेटा, एक रंग, बहुमूल्य पत्थर, एक गोत्र।
- लावा – एक पक्षी, खील, लावा।
- वन – जंगल, जल, फूलोँ का गुच्छा।
- वर – अच्छा, वरदान, श्रेष्ठ, उत्तम, पति (दुल्हा)।
- वर्ण – अक्षर, रंग, रूप, भेद, चातुर्वर्ण्य (ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य व शूद्र), जाति।
- वार – दिन, आक्रमण, प्रहार।
- वृत्ति – कार्य, स्वभाव, नीयत, व्यापार, जीविका, छात्रवृत्ति।
- विचार – ध्यान, राय, सलाह, मान्यता।
- विधि – तरीका, विधाता, कानून, व्यवस्था, युक्ति, राख, महिमामय, पुरुष।
- विवेचन – तर्क-वितर्क, परीक्षण, सत्-असत् विचार, निरुपण।
- व्योम – आकाश, बादल, जल।
- शक्ति – ताकत, अर्थवत्ता, अधिकार, प्रकृति, माया, दुर्गा।
- शिव – भाग्यशाली, महादेव, शृगाल, देव, मंगल।
- श्री – लक्ष्मी, सरस्वती, सम्पत्ति, शोभा, कान्ति, कोयल, आदर सूचक शब्द।
- संधि – जोड़, पारस्परिक, युगोँ का मिलन, निश्चित, सेँध, नाटक के कथांश, व्याकरण मेँ अक्षरोँ का मेल।
- संस्कार – परिशोधन, सफाई, धार्मिक कृत्य, आचार-व्यवहार, मन पर पड़ने वाले प्रभाव।
- सम्बन्ध – रिश्ता, जोड़, व्याकरण मेँ अक्षरोँ का मेल-जोल, छठा कारक।
- सर – अमृत, दूध, पानी, तालाब, गंगा, मधु, पृथ्वी।
- सरल – सीधा, ईमानदार, खरा, आसान।
- साधन – उपाय, उपकरण, सामान, पालन, कारण।
- सारंग – एक राग, मोर की बोली, चातक, मोर, सर्प, बादल, हिरन, पपीहा, राजहंस, हाथी, कोयल, कामदेव, सिंह, धनुष, भ ंरा, मधुमक्खी, कमल, स्त्री, दीपक, वस्त्र, हवा, आँचल, घड़ा, कामदेव, पानी, राजसिँह, कपूर, वर्ण, भूषण, पुष्प, छत्र, शोभा, रात्रि, शंख, चन्दन।
- सार – तत्त्व, निष्कर्ष, रस, रसा, लाभ, धैर्य।
- सिरा – चोटी, अंत, समाप्ति।
- सुधा – अमृत, जल, दुग्ध।
- सुरभि – सुगंध, गौ, बसंत ऋतु।

• सूत – धागा, सारथी, गढ़ई।
• सूत्र – सूत, जनेऊ, गूढ़ अर्थ भरा संक्षिप्त वाक्य, संकेत, पता, नियम।
• सूर – सूर्य, वीर, अंधा, सूरदास।
• सैंधव – घोड़ा, नमक, सिन्धुवासी।
• हंस – जीव, सूर्य, श्वेत, योगी, मुक्त पुरुष, ईश्वर, सरोवर का पक्षी (मराल पक्षी)।
• हँसाई – हँसी, निन्दा, बदनामी, उपहास।
• हय – घोड़ा, इन्द्र।
• हरि – हाथी, विष्णु, इंद्र, पहाड़, सिंह, घोड़ा, सर्प, वानर, मेढक, यमराज, ब्रह्मा, शिव, कोयल, किरण, हंस, इन्द्र, वानर, कृष्ण, कामदेव, हवा, चन्द्रमा।
• हल – समाधान, खेत जोतने का यंत्र, व्यंजन वर्ण।
• हस्ती – हाथी, अस्तित्व, हैसियत।
• हित – भलाई, लोभ।
• हीन – दीन, रहित, निकृष्ट, थोड़ा।
• क्षेत्र – तीर्थ, खेत, शरीर, सदावृत देने का स्थान।
• त्रुटि – भूल, कमी, कसर, छोटी इलाइची का पौधा, संशय, काल का एक सूक्ष्म विभाग, अंगहीनता, प्रतिज्ञा-भंग, स्कंद की एक माता।

6. पशु–पक्षियअॅ की बोलियाँ

पशु/पक्षी — बोली
• ऊँट – बलबलाना
• कोयल – कूकना
• गाय – रँभाना
• चिड़िया – चहचहाना
• भैंस – डकराना (रँभाना)
• बकरी – मिमियाना
• मोर – कुहकना
• घोड़ा – हिनहिनाना
• तोता – टैं-टैं करना
• हाथी – चिँघाड़ना
• कौआ – काँव-काँव करना
• साँप – फुफकारना
• शेर – दहाड़ना
• सारस – क्रें-क्रें करना
• टिटहरी – टीं-टीं करना
• कुत्ता – भ ंकना
• मक्खी – भिनभिनाना।

7. कुछ जड़ पदार्थों की विशेष ध्वनियाँ या क्रियाएँ

पदार्थ — क्रियाएँ
• जिह्वा – लपलपाना
• दाँत – किटकिटाना
• हृदय – धड़कना
• पैर – पटकना
• अश्रु – छलछलाना
• घड़ी – टिक-टिक करना
• पंख – फड़फड़ाना
• तारे – जगमगाना/टिमटिमाना
• नौका – डगमगाना
• मेघ – गरजना।

« पीछे जायें | आगे पढ़ें »

• सामान्य हिन्दी
♦ होम पेज

प्रस्तुति:–

सामान्य हिन्दी

8. शब्द–संरचना

शब्द–संरचना का आशय नये शब्दों का निर्माण, शब्दों की बनावट और शब्द–गठन से है। हिन्दी में दो प्रकार के शब्द होते हैं—रूढ और यौगिक। शब्द रचना की दृष्टि से केवल यौगिक शब्दअें का अध्ययन किया जाता है। यौगिक शब्दों में ही उपसर्ग और प्रत्यय का प्रयोग करके नये शब्दों की रचना होती है।

शब्द–रचना प्रायः चार प्रकार से होती है–

(1) व्युत्पत्ति पद्धति –
इस पद्धति में मूल शब्द में उपसर्ग और प्रत्यय जोड़कर नये शब्दों की रचना की जाती है। जैसे—'लिख्' मूल धातु में 'अक' प्रत्यय लगाने से 'लेखक' शब्द और 'सु' उपसर्ग लगाने से 'सुलेख' शब्द बनता है। इसी प्रकार 'हार' शब्द में 'सम्' उपसर्ग लगाने से 'संहार' और 'ई' प्रत्यय लगाने से 'संहारी' शब्द बनता है।

उपसर्ग व प्रत्यय दोनों एक साथ प्रयोग करके भी नया शब्द बनता है। जैसे—प्राक्+इतिहास+इक = प्रागैतिहासिक। हिन्दी में इस पद्धति से हजारों शब्दों की रचना होती है।

(2) संधि व समास पद्धति –
इस पद्धति में दो या दो से अधिक शब्दों को मिलाकर एक नया शब्द बनाया जाता है। जैसे—पद से च्युत = पदच्युत, शक्ति के अनुसार = यथाशक्ति, रात और दिन = रातदिन आदि शब्द इसी प्रकार बनते हैं।

शब्दों में संधि करने से भी इसी प्रकार शब्द–रचना होती है। जैसे—विद्या+आलय = विद्यालय, प्रति+उपकार = प्रत्युपकार, मनः+हर = मनोहर आदि।

(3) शब्दावृत्ति पद्धति –
कभी–कभी शब्दों की आवृत्ति करने या वास्तविक या कल्पित ध्वनि का अनुकरण करने से भी नये शब्द बनते हैं। जैसे—रातोंरात, हाथोंहाथ, दिनोंदिन, खटखट, फटाफट, गड़गड़ाहट, सरसराहट आदि।

(4) वर्ण-विपर्यय पद्धति –
वर्णों या अक्षरों का उलट–फेर प्रयोग करने से भी नये शब्द बन जाते हैं। जैसे—जानवर से जिनावर, अँगुली से उँगली, पागल से पगला आदि।

उपसर्ग

जो शब्दांश किसी मूल शब्द के पहले जुड़कर उसके अर्थ में परिवर्तन या विशेषता उत्पन्न कर देते हैं, उन शब्दांशों को उपसर्ग कहते हैं। जैसे –
'हार' एक शब्द है। इस शब्द के पहले यदि 'सम्, वि, प्र', उपसर्ग जोड़ दये जायें, तो– सम्+हार = संहार, वि+हार = विहार, प्र+हार = प्रहार तथा उप+हार = उपहार शब्द बनेंगे। यहाँ उपसर्ग जुड़कर बने सभी शब्दों का अर्थ 'हार' शब्द से भिन्न है।

उपसर्गों का अपना स्वतंत्र अर्थ नहीं होता, मूल शब्द के साथ जुड़कर ये नया अर्थ देते हैं। इनका स्वतंत्र प्रयोग नहीं होता। जब किसी मूल शब्द के साथ कोई उपसर्ग जुड़ता है तो उनमें सन्धि के नियम भी लागू होते हैं। संस्कृत उपसर्गों का अर्थ कहीं–कहीं नहीं भी निकलता है। जैसे – 'आरम्भ' का अर्थ है– शुरुआत। इसमें 'प्र' उपसर्ग जोड़ने पर नया शब्द 'प्रारम्भ' बनता है जिसका अर्थ भी 'शुरुआत' ही निकलता है।

♦ विशेष—
यह जरूरी नहीं है कि एक शब्द के साथ एक ही उपसर्ग जुड़े। कभी–कभी एक शब्द के साथ एक से अधिक उपसर्ग जुड़ सकते हैं। जैसे–
- सम्+आ+लोचन = समालोचन।
- सु+आ+गत = स्वागत।
- प्रति+उप+कार = प्रत्युपकार।
- सु+प्र+स्थान = सुप्रस्थान।
- सत्+आ+चार = सदाचार।
- अन्+आ+गत = अनागत।
- अन्+आ+चार = अनाचार।
- अ+परा+जय = अपराजय।

♦ उपसर्ग के भेद –
हिन्दी भाषा में चार प्रकार के उपसर्ग प्रयुक्त होते हैं—
(1) संस्कृत के उपसर्ग,
(2) देशी अर्थात् हिन्दी के उपसर्ग,
(3) विदेशी अर्थात् उर्दू, अंग्रेजी, फारसी आदि भाषाओं के उपसर्ग,
(4) अव्यय शब्द, जो उपसर्ग की तरह प्रयुक्त होते हैं।

1. संस्कृत के उपसर्ग

संस्कृत में कुल बाईस उपसर्ग होते है। वे उपसर्ग तत्सम शब्दों के साथ हिन्दी में प्रयुक्त होते है। इसलिए इन्हें संस्कृत के उपसर्ग कहते हैं। यथा—
उपसर्ग – अर्थ – उदाहरण
1. अति – अधिक, ऊपर – अत्यन्त, अतिरिक्त, अतिवृष्टि, अत्यधिक, अतिशय, अतिक्रमण, अतिशीघ्र, अत्याचार, अत्युक्ति, अत्यावश्यक, अत्यल्प, अतिसार, अतीव।
2. अधि – प्रधान, श्रेष्ठ – अधिकार, अधिपति, अधिनियम, अध्यक्ष, अधिकरण, अध्ययन, अधिगम, अधिकृत, अधिनायक, अधिभार, अधिशेष, अध्यादेश, अधीक्षण, अध्यापक, अधिग्रहण, अध्याय।
3. अनु – पीछे, क्रम – अनुचर, अनुसार, अनुग्रह, अनुकूल, अनुकरण, अनुरूप, अनुशासन, अनुरोध, अनुमान, अनुज, अनुबन्ध, अनुष्ठान, अनूदित, अनुप्रास, अन्वेषण, अनुराग, अनुभव, अनुदार, अनुदिन, अन्विति, अनुज्ञा, अनुवर्तन, अन्वय, अनुभार, अन्वीक्षा, अन्वीक्षण, अन्विष्ट, अन्वेक्षक, अन्वेषक।
4. अप – बुरा, अभाव – अपयश, अपकार, अपव्यय, अपहरण, अपमान, अपवाद, अपशब्द, अपकीर्ति, अपवर्तन, अपशिष्ट, अपवर्जन, अपेक्षा, अपकर्षण, अपघटन, अपवाह, अपभ्रंश।

5. अव – नीचे, हीन, बुरा – अवगुण, अवतार, अवनति, अवरुद्ध, अवधारणा, अवशेष, अवसान, अवकाश, अवमूल्यन, अवसाद, अवधान, अवलोकन, अवसर, अवचेतना, अवाप्ति, अवगत, अवज्ञा, अवस्था, अवमानना।
6. अभि – सामने, पास – अभिमान, अभिमुख, अभिमत, अभिनय, अभिनव, अभिवादन, अभियोग, अभिमन्यु, अभिज्ञान, अभियुक्त, अभिषेक, अभिनेता, अभिराम, अभिवृद्धि, अभिलाषा, अभिकरण, अभीष्ट, अभ्यास, अभ्यांतर, अभ्युदय, अभ्यागत, अभिशाप।
7. आ – तक, सहित – आजन्म, आमरण, आगमन, आक्रमण, आहार, आयात, आतप, आजीवन, आदान, आसार, आकर्षण, आलेख, आभार, आधार, आगार, आश्रय, आगत, आकर।
8. उत् – ऊँचा, श्रेष्ठ – उत्साह, उत्कण्ठा, उत्थान, उत्तम, उत्पन्न, उत्पत्ति, उत्पीड़न, उत्कृष्ट, उद्धार, उज्ज्वल, उद्योग, उल्लेख।
9. उप – पास, गौण, सहायक – उपवन, उपदेश, उपमन्त्री, उपकार, उपनाम, उपनयन, उपस्थिति, उपन्यास, उपचार, उपयोग, उपांग, उपमन्यु, उपराष्ट्रपति, उपकृत, उपहार, उपसंहार, उपलक्ष्य, उपहास, उपकुलपति, उपयुक्त, उपायुक्त, उपखण्ड, उपक्रम, उपग्रह।
10. दुर् – बुरा, कठिन, विपरीत – दुर्जन, दुर्दशा, दुर्लभ, दुराचार, दुराशा, दुराग्रह, दुर्भाग्य, दुर्योधन, दुर्गम, दुर्बल, दुर्गति, दुर्वासा, दुर्भिक्ष, दुर्गुण।
11. दुस् – बुरा, कठिन – दुस्साहस, दुष्कार्य, दुश्चरित्र, दुष्कर, दुश्चिन्ता, दुश्शासन, दुष्कर्म, दुस्साध्य, दुस्तर, दुःस्पर्श।
12. नि – रहित, विशेष, अधिकता – निगम, निपुण, निवारण, निडर, निवास, निदान, निरोध, नियम, निबन्ध, निमग्न, निकास, निहित, निहत्था, निधि, निवेश, न्यस्त, निलंबन, निकम्मा, निवृत्त, निकाय, निधन।
13. निर् – निषेध, विपरीत, बड़ा, बाहर – निर्लज्ज, निर्भय, निर्णय, निर्दोष, निरपराध, निराकार, निराहार, निर्धन, नीरोग, निराशा, निर्विघ्न, निर्दोष, निर्गुण, निरभिमान, निर्वाह, निर्जन, निर्यात, निर्दयी, निर्मल, निर्भीक, निरीक्षक, निर्माता, निर्वाचन, निर्विरोध, निरर्थक, निरस्त, निर्निमेष, निर्भय, निरंजन, निरुपम।
14. निस् – रहित, अच्छी तरह से, बड़ा – निश्चल, निश्चय, निस्सार, निस्सन्देह, निश्छल, निष्काम, निस्संकोच, निस्स्वार्थ, निस्तारण, निष्कपट, निष्कासन।
15. परा – पीछे, तिरस्कार, विपरीत – पराजय, पराभव, पराक्रम, परामर्श, पराधीन, परावर्तन, परास्त, पराकाष्ठा।
16. परि – पूर्ण, पास, चारों ओर – परिणाम, परिवर्तन, परिश्रम, परिक्रमा, परिवार, परिपूर्ण, परिमार्जन, परिमाप, परिसर, परिधि, परिणति, परिपक्व, परिचर्या, परिचर्चा, परिकल्पना, परिभ्रमण, पर्यावरण, पर्यवेक्षण, परीक्षा, परिणय, परिग्रह, पर्यटन, परिचय।
17. प्रति – प्रत्येक, उल्टा – प्रतिदिन, प्रतिनिधि, प्रतिपक्ष, प्रत्यक्ष, प्रतिकूल, प्रतिक्षण, प्रतिमास, प्रतिरोध, प्रतिलिपि, प्रतिमान, प्रतिग्राम, प्रतिज्ञा, प्रत्यावर्तन, प्रतिमा, प्रतिष्ठा, प्रतिभा, प्रतीक्षा।
18. प्र – अधिक, आगे, उत्कृष्ट – प्रथम, प्रबल, प्रहार, प्रभाव, प्रकार, प्रदान, प्रयोग, प्रचार, प्रक्रिया, प्रवाह, प्रपंच, प्रगति, प्रदर्शन, प्रलय, प्रमाण, प्रसिद्ध, प्रख्यात, प्रस्थान, प्रेषण, प्रमेय, प्रवेश, प्रलाप, प्रज्वलित, प्रमोद, प्रकाश, प्रदीप।
19. वि – विशेष, अभाव, भिन्न – वियोग, विभाग, विनाश, विज्ञान, विजय, विदेश, व्याकुल, विकृत, विकट, विपक्ष, विचार, विशेष, विराम, विकल, विमल, विरोध, विकास, विवृत्त, विमान, व्याकरण, विख्यात, विलोम, विवाद, विवाह।
20. सम् – सम्पूर्ण, उत्तम, अच्छी तरह – संसार, सम्मान, संतोष, संयोग, संकल्प, संचय, संगम, संगति, सम्बोधन, समीक्षा, संहार, संवाद, सम्मति, समाचार, समुचित, समर्थ, सन्देह, संविधान, संचालन, समर्पण, संक्षेप, संशय, सम्पर्क, संसद, संयम, सम्बन्ध, संकीर्ण, समग्र।
21. अपि – निश्चय, और भी – अपितु, अपिधान, अपिहित, अपिबद्ध, अपिवृत्त।
22. सु – अच्छा, अधिक, सरल – सुलेख, सुयश, सुपुत्र, सुयोग, सुगन्ध, सुगति, सुबोध, सुपुत्र, सुकन्या, सुफल, सुकाल, सुकर्म, सुगम, सुकर, सुदिन, सुलभ, सुमन, सुशील, सुविचार, सुमंत्र, सुनार, स्वागत, सुदूर, सुदृढ़, सुनैना, सुरक्षा, सुमति, सुभाष, सुरेखा, सुनीता, सुलक्षणा, सुपारी, सुचारु, सुपुत्री।

2. हिन्दी के उपसर्ग

उपसर्ग – अर्थ – उदाहरण
- अ – रहित, निषेध – अचेतन, अजान, अथाह, असाध्य, अकाट्य, अटल, अलग, अछूत, अभागा, अमर, अज्ञान, अमोल, अमर्त्य, अधर्म, अकाल, अतुल, अतल, अरुचि, अवैतनिक, अक्षत, अजीर्ण, अपथ्य, अचिर, अजर, अनाम, अजन्मा, अकारण, अहित, अहर्ता।
- अन – अभाव, निषेध – अनपढ़, अनजान, अनबन, अनमोल, अनमेल, अनहित, अनसुनी, अनकही, अनहोनी, अनदेखी, अनमना, अनखाया, अनचाहा, अनसुना।
- अध – आधा – अधपका, अधमरा, अधजला, अधखिला, अधकचरा।
- आप – स्वयं – आपबीती, आपकाज, आपकही, आपदेखी, आपसुनी, आपकर, आपनिधि।
- उ – उचक्का, उजड़ना, उछलना, उखाड़ना, उभार।
- उन – एक कम – उन्नीस, उनतीस, उनचालीस, उनचास, उनसठ, उनहत्तर, उनासी।
- औ – हीन, निषेध – औगुण, औसर, औघड़, औघट, औरस।
- क – बुरा – कपूत, कलंक, कठोर, कसूर, कमर, कमाल, कपास, कगार, कजरा, कमरा, कजली, कचरा।
- का – बुरा – कायर, कापुरुष, काजल, कातर, कातिल, कातना, कायम, काफ़िर।
- कु – बुरा, हीन – कुरूप, कुपुत्र, कुकर्म, कुख्यात, कुमार्ग, कुपथ, कुगति, कुमति, कुकृत्य, कुविचार, कुपात्र, कुसंग, कुसंगति, कुयोग, कुमाता, कुचाल, कुचक्र, कुरीति, कुप्रबन्ध।
- चौ – चार – चौराहा, चौपाल, चौपड़, चौमासा, चौपाया, चौरंगा, चौसर, चौपाई, चौमुखा, चौकोर, चौगुना, चौबीस, चौखट, चौतरफा।
- ति – तीन – तिराहा, तिकोना, तिरंगा, तिपाई, तिमाही, तिगुनी, तिकड़ी।
- दु – दो, बुरा – दुमुँहा, दुबला, दुरंगा, दुलती, दुनाली, दुराहा, दुकाल, दुभाषिया, दुशाला, दुलार, दुधारू, दुपहिया।
- नाना – विविध – नानाप्रकार, नानारूप, नानाजाति।
- नि – अभाव – निकम्मा, निहत्था, निठल्ला, निडर, निवास, निदान।
- पच – पाँच – पचरंगा, पचमेल, पचकूटा।
- पर – दूसरा – परकाज, परदेश, परकोटा, परहित, परदेसी, परजीवी, परपुरुष, परनिँदा, पराधीन, परोपकार।
- बहु – ज्यादा – बहुमूल्य, बहुवचन, बहुमत, बहुधा, बहुभुज, बहुब्रीहि।
- बिन – बिना – बिनखाया, बिनब्याहा, बिनबोया, बिनचाहा, बिनजाना, बिनदेखा, बिनबुलाया, बिनसोचा।
- भर – पूरा – भरपेट, भरपूर, भरकम, भरसक, भरतार, भरमार, भरपाई।
- स – सहित – सपूत, सफल, सबल, सजग, सचेत, सकाम, ससम्मान, सप्रेम, सरस, सघन, सजीव, सजग, सकुशल।
- सम – समान – समतल, समदर्शी, समकक्ष, समकोण, समबाहु, समरस, समकालीन, समवर्ती, सममित।

3. विदेशी उपसर्ग

हिन्दी में विदेशी भाषाओं के उपसर्ग भी प्रयुक्त होते हैं। विशेष रूप से उर्दू, फारसी और अंग्रेजी के कई उपसर्ग अपनाये जाते हैं। इनमें से कतिपय इस प्रकार हैं—

(क) उर्दू–फारसी के उपसर्ग –
- अल – निश्चित – अलगरज, अलविदा, अलबत्ता, अलहदा, अलबेला, अलमस्त।
- कम – थोड़ा, हीन – कमबख्त, कमजोर, कमसिन, कमकीमत, कमअक्ल, कमखर्च।
- खुश – प्रसन्न, अच्छा – खुशबू, खुशदिल, खुशमिजाज, खुशनुमा, खुशहाल, खुशनसीब, खुशकिस्मत, खुशखबरी।
- गैर – निषेध, रहित – गैरहाजिर, गैरकानूनी, गैरकौम, गैरमर्द, गैरसरकारी, गैरवाजिब, गैरजिम्मेदार।
- दर – में – दरअसल, दरकार, दरमियान, दरबदर, दरहकीकत, दरबार, दरखास्त, दरकिनार, दरगुजर।
- ना – नहीं – नालायक, नापसंद, नामुमकिन, नाकाम, नाबालिग, नाराज, नादान, नाचीज, नागवार, नाखुश, नासमझ, नापाक, नाइंसाफ।
- बा – अनुसार, साथ – बामौका, बाकायदा, बाइज्जत, बामुलायजा, बाअदब, बादल, बादाम।
- बद – बुरा – बदनाम, बदमाश, बदचलन, बदहजमी, बदबू, बदतमीज, बदहवास, बदसूरत, बदइंतजाम, बदकिस्मत, बदरंग, बदहाल।

• बे – बिना, रहित – बेईमान, बेचारा, बेअक्ल, बेहिसाब, बेमिसाल, बेहाल, बेवकूफ, बेदाग, बेकसूर, बेपरवाह, बेकार, बेकाम, बेघर, बेवफा, बेदर्द, बेसमझ, बेवजह, बेचैन, बेशुमार, बेहोश, बेइज्जत, बेरहम, बेसहारा, बेरोजगार, बेवक्त, बेकरार, बेअसर।
• ला – परे, बिना – लापरवाह, लाचार, लावारिस, लापता, लाजवाब, लाइलाज।
• सर – मुख्य – सरकार, सरदार, सरपंच, सरहद, सरनाम, सरफरोश।
• हम – साथ, समान – हमदर्दी, हमराज, हमदम, हमवतन, हमराह, हमदर्द, हमउम्र, हमसफर, हमशक्ल, हमजोली, हमराही, हमपेशा।
• हर – प्रत्येक – हरदिन, हरएक, हरसाल, हरदम, हररोज, हरबात, हरचीज, हरबार, हरवक्त, हरघड़ी, हरहाल, हरकोई, हरतरफ।
• ब – सहित – बखूबी, बतौर, बशर्तें, बतर्ज, बकौल, बदौलत, बमुश्किल, बदस्तूर, बगैर, बनाम।
• बिला – बिना – बिलाकसूर, बिलावजह।
• बेश – अत्यधिक – बेशकीमती, बेशकीमत।
• नेक – भला – नेकराह, नेकदिल, नेकनाम।
• ऐन – ठीक – ठीक – ऐनवक्त, ऐनजगह, ऐनमौके।

(ख) अंग्रेजी के उपसर्ग –
• सब – छोटा – सब रजिस्ट्रार, सब इन्सपेक्टर, सब कमेटी, सब जज।
• हैड – प्रमुख – हैडमास्टर, हैडऑफिस, हैडकांस्टेबिल।
• एक्स – मुक्त – एक्सप्रेस, एक्स प्रिंसिपल, एक्स कमीश्नर, एक्स स्टूडेण्ट।
• हाफ – आधा – हाफटिकट, हाफरेट, हाफकमीज, हाफपेन्ट।
• को – सहित – को-ऑपरेटिव, को-ऑपरेशन, को-स्टार।
• डिप्टी – स्थानापन्न प्रतिनिधि – डिप्टी मिनिस्टर, डिप्टी मैनेजर, डिप्टी कलेक्टर, डिप्टी रजिस्ट्रार।
• वाइस – उप – वाइस प्रिंसिपल, वाइस चांसलर, वाइस प्रेसीडेंट।
• जनरल – सामान्य – जनरल मैनेजर, जनरल इन्श्योरेंस।
• चीफ – मुख्य – चीफ मिनिस्टर, चीफ सेक्रेटरी।

4. उपसर्ग की तरह प्रयुक्त अव्यय

उपर्युक्त उपसर्गों के अतिरिक्त हिन्दी में संस्कृत के कुछ अव्यय, विशेषण और शब्दांश भी उपसर्गों की तरह प्रयुक्त होते हैं।जैसे –
• अ – निषेध – अप्राकृतिक, अकृत्रिम, अधर्म, अनाथ, अपूर्ण, अभाव, अमूल्य।
• अधः – नीचे – अधःपतन, अधोगति, अधोमुख।
• अन् – निषेध – अनन्त, अनादि, अनागत, अनर्थ।
• अन्तर/अन्तः – भीतर – अन्तःकरण, अन्तःप्रान्तीय, अन्तर्गत, अन्तरात्मा, अन्तर्धान, अन्तर्दशा, अन्तर्यामी, अंतरिक्ष, अन्तर्मन, अन्तर्ज्ञान, अन्तर्देशीय, अन्तर्द्वन्द्व, अन्तर्राष्ट्रीय।
• अमा – अमावस्या, अमात्य।
• अलम् – बहुत, काफी – अलंकरण, अलंकृत, अलंकार।
• आत्म – स्वयं – आत्मकथा, आत्मघात, आत्मबल, आत्मानुभूति, आत्महत्या, आत्मज, आत्मश्लाघा, आत्मसमर्पण, आत्मोत्सर्ग, आत्मज्ञान, आत्मसात्, आत्मविश्वास।
• आविर्/आविः – प्रकट – आविर्भाव, आविर्भूत।
• आविष्/आविः – आविष्कार, आविष्कृत।
• इति – अन्त, ऐसा – इतिश्री, इतिहास, इत्यादि, इतिवृत्त, इतिवार्ता।
• चिर – बहुत – चिरकाल, चिरन्तन, चिरायु, चिरंजीव, चिरस्थायी, चिरपरिचित, चिरप्रतीक्षित, चिरस्मरणीय, चिरनिद्रा।
• तत् – उस समय – तल्लीन, तन्मय, तद्धित, तदनन्तर, तत्काल, तत्क्षण, तत्पश्चात्, तत्सम, तत्कालीन, तदुपरान्त, तत्पर।
• तिरस्/तिरः – हीन, बुरा – तिरस्कार, तिरस्कृत, तिरोभाव, तिरोहित, तिरोधान।
• प्राक् – पहले – प्राक्कथन, प्राक्कलन, प्रागैतिहासिक, प्राग्वैदिक, प्राक्तन, प्राक्कृत।
• न – अभाव – नकुल, नपुंसक, नास्तिक, नग।
• प्रातः – सुबह – प्रातःकाल, प्रातःवन्दना, प्रातःस्मरणीय।
• प्रादुर् – प्रकट – प्रादुर्भाव, प्रादुर्भूत।
• पुनर्/पुनः – फिर – पुनर्जन्म, पुनरागमन, पुनरुदय, पुनर्विवाह, पुनर्मिलन, पुनर्विचार, पुनरुद्धार, पुनर्वास, पुनर्मूल्यांकन, पुनरीक्षण, पुनरुत्थान, पुनर्निर्माण।
• पुरा – प्राचीन – पुरातन, पुरातत्त्व, पुरापथ, पुराण, पुरावशेष, पुराचीन।
• पुरः – पुरोहित, पुरोधा, पुरोगामी।
• पुरस् – आगे – पुरस्कार, पुरश्चरण, पुरस्कृत।
• पूर्व – पहले – पूर्वज, पूर्वाग्रह, पूर्वार्द्ध, पूर्वाह्न, पूर्वानुमान, पूर्वनिश्चित, पूर्वाभिमुखी, पूर्वापेक्षा, पूर्वोक्त।
• बहिर्/बहिः – बाहर – बहिरागत, बहिर्जात, बहिर्भाव, बहिरंग, बहिर्द्वन्द्व, बहिर्मुखी, बहिर्गमन।
• बहिस्/बहिः – बाहर – बहिष्कार, बहिष्कृत।
• स – सहित – सजल, सपत्नीक, सहर्ष, सपरिवार, सादर, सकुशल, सहित, सोद्देश्य।
• सत् – सम्मान – सत्कर्म, सत्कार, सद्गति, सज्जन, सत्धर्म, सत्संग, सत्कार्य, सच्चरित्र।
• स्व – अपना – स्वनाम, स्वजाति, स्वशासन, स्वाभिमान, स्वतंत्र, स्वदेश, स्वराज्य, स्वाधीन, स्वधर्म, स्वभाव, स्वार्थ, स्वहित, स्वजन, स्वेच्छा।
• स्वयं – अपने आप – स्वयंभू, स्वयंवर, स्वयंसेवक, स्वयंपाणि, स्वयंसिद्ध।
• सह – साथ – सहाध्यायी, सहपाठी, सहकर्मी, सहोदर, सहयोगी, सहचर, सहयोग, सहकार, सहयात्री, सहानुभूति।

कुछ अन्य शब्द जो उपसर्ग की तरह प्रयुक्त होते हैं –
• अद्य – अद्यतन, अद्यावधि।
• आवा – आवागमन, आवाजाही।
• उद् – उद्गम, उद्गार।
• कत् – कदम्ब, कदाचार, कदर्थ, कदश्व, कदाकार।
• काम – कामयाब, कामकाज, कामचोर, कामचलाऊ, कामदेव, कामधेनु, कामशास्त्र, कामांध, कामाक्षी, कामाख्या, कामाग्नि, कामातुर, कामायनी, कामोन्माद।
• बर – बरदाश्त, बरबाद, बरकरार, बरख्वास्त।
• भू – भूगोल, भूधर, भूचर, भूतल, भूकम्प, भूगर्भ, भूदेव, भूपति, भूमंडल, भूमध्यसागर, भूख, भूखा, भूस्वामी, भूपालक।
• स्वी – स्वीकार्य, स्वीकार, स्वीकृत।
• मंद – मंदबुद्धि, मंदगति, मंदाग्नि, मंदभाग्य।
• मत – मतदान, मतपत्र, मतदाता, मतवाला, मतगणना, मतसंग्रह, मतभेद, माताधिकार, मतावलम्बी।
• मद – मदमाता, मदमस्त, मदकारी, मदमत्त।
• मधु – मधुकर, मधुमक्खी, मधुसूदन, मधुबन, मधुबाला, मधुमेह, मधुशाला, मधुस्वर।
• मन – मनचला, मनचाहा, मनमोहन, मनभाया, मनहर, मनभावन, मनगढ़ंत, मनमुटाव, मनमौजी, मनमानी, मनसब।
• मरु – मरुभूमि, मरुस्थल, मरुप्रदेश, मरुधर।
• महा – महाभियोग, महाभारत, महायज्ञ, महायान, महारथी, महाराज, महाराष्ट्र, महासागर, महामंत्री, महाप्रयाण, महाकाल, महावीर।
• मान – मानचित्र, मानदंड, मानहानि, मानदेय, मानसून, मानसरोवर।
• मित – मितभाषी, मितव्यय, मितव्ययी, मिताहार।
• मुँह – मुँहफट, मुँहबोला, मुँहमाँगा, मुँहदिखाई, मुँहतोड़।

• मूल – मूलभूत, मूलधन, मूलमँत्र, मूलग्रन्थ, मूलबंध।
• यथा – यथाशक्ति, यथासंभव, यथासमय, यथावधि, यथाशीघ्र, यथास्थान, यथास्थिति।
• रंग – रंगमंच, रंगशाला, रंगरूप, रंगढंग, रंगरेज, रंगरूट, रंगरसिया।
• रक्त – रक्ततुण्ड, रक्तवर्ण, रक्तस्राव, रक्तकंठ।
• रफू – रफूचक्कर, रफूगर।
• लेखा – लेखाकार, लेखाकर्म, लेखापाल, लेखाचित्र, लेखांकन।
• लोक – लेकगीत, लोककथा, लोकाचार, लोकनाथ, लोकपाल, लोकायुक्त, लोकहित, लोकतंत्र।
• वज्र – वज्रपाणि, वज्रदंत, वज्रांग, वज्रासन, वज्रायुध।
• वर्ग – वर्गमूल, वर्गफल, वर्गाकार।
• सार्व – सार्वजनिक, सार्वअन्तर, सार्वभौम, सार्वकालिक, सार्वदेशिक।

♦♦♦

प्रत्यय

जो शब्दांश किसी मूल शब्द के पीछे या अन्त में जुड़कर नवीन शब्द का निर्माण करके पहले शब्द के अर्थ में परिवर्तन या विशेषता उत्पन्न कर देते हैं, उन्हें प्रत्यय कहते हैं। कभी–कभी प्रत्यय लगाने पर भी शब्द के अर्थ में कोई परिवर्तन नहीं होता है। जैसे— बाल–बालक, मृदु–मृदुल।

प्रत्यय लगने पर शब्द एवं शब्दांश में संधि नहीं होती बल्कि शब्द के अन्तिम वर्ण में मिलने वाले प्रत्यय के स्वर की मात्रा लग जाती है, व्यंजन होने पर वह यथावत रहता है। जैसे— लोहा+आर = लुहार, नाटक+कार = नाटककार।

शब्द–रचना में प्रत्यय कहीं पर अपूर्ण क्रिया, कहीं पर सम्बन्धवाचक और कहीं पर भाववाचक के लिये प्रयुक्त होते हैं। जैसे— मानव+ईय = मानवीय। लघु+ता = लघुता। बूढ़ा+आपा = बुढ़ापा।

हिन्दी में प्रत्यय तीन प्रकार के होते हैं—
(1) संस्कृत के प्रत्यय,
(2) हिन्दी के प्रत्यय तथा
(3) विदेशी भाषा के प्रत्यय।

1. संस्कृत के प्रत्यय

संस्कृत व्याकरण में शब्दों और मूल धातुओं से जो प्रत्यय जुड़ते हैं, वे प्रत्यय दो प्रकार के होते हैं –
1. कृदन्त प्रत्यय –
जो प्रत्यय मूल धातुओं अर्थात् क्रिया पद के मूल स्वरूप के अन्त में जुड़कर नये शब्द का निर्माण करते हैं, उन्हें कृदन्त या कृत् प्रत्यय कहते हैं। धातु या क्रिया के अन्त में जुड़ने से बनने वाले शब्द संज्ञा या विशेषण होते हैं। कृदन्त प्रत्यय के निम्नलिखित तीन भेद होते हैं –
(1) कर्तृवाचक कृदन्त – वे प्रत्यय जो कर्तावाचक शब्द बनाते हैं, कर्तृवाचक कृदन्त कहलाते हैं। जैसे –
प्रत्यय – शब्द–रूप
• तृ (ता) – कर्त्ता, नेता, भ्राता, पिता, कृत, दाता, ध्याता, ज्ञाता।
• अक – पाठक, लेखक, पालक, विचारक, गायक।
(2) विशेषणवाचक कृदन्त – जो प्रत्यय क्रियापद से विशेषण शब्द की रचना करते हैं, विशेषणवाचक प्रत्यय कहलाते हैं। जैसे –
• त – आगत, विगत, विश्रुत, कृत।
• तव्य – कर्तव्य, गन्तव्य, ध्यातव्य।
• य – नृत्य, पूज्य, स्तुत्य, खाद्य।
• अनीय – पठनीय, पूजनीय, स्मरणीय, उल्लेखनीय, शोचनीय।
(3) भाववाचक कृदन्त – वे प्रत्यय जो क्रिया से भाववाचक संज्ञा का निर्माण करते हैं, भाववाचक कृदन्त कहलाते हैं। जैसे –
• अन – लेखन, पठन, हवन, गमन।
• ति – गति, मति, रति।
• अ – जय, लाभ, लेख, विचार।

2. तद्धित प्रत्यय –
जो प्रत्यय क्रिया पदों (धातुओं) के अतिरिक्त मूल संज्ञा, सर्वनाम या विशेषण शब्दों के अन्त में जुड़कर नया शब्द बनाते हैं, उन्हें तद्धित प्रत्यय कहते हैं। जैसे— गुरु, मनुष्य, चतुर, कवि शब्दों में क्रमशः त्व, ता, तर, ता प्रत्यय जोड़ने पर गुरुत्व, मनुष्यता, चतुरतर, कविता शब्द बनते हैं।

तद्धित प्रत्यय के छः भेद हैं –
(1) भाववाचक तद्धित प्रत्यय – भाववाचक दद्धित से भाव प्रकट होता है। इसमें प्रत्यय लगने पर कहीं–कहीं पर आदि–स्वर की वृद्धि हो जाती है। जैसे –
प्रत्यय — शब्द–रूप
• अव – लाघव, गौरव, पाटव।
• त्व – महत्त्व, गुरुत्व, लघुत्व।
• ता – लघुता, गुरुता, मनुष्यता, समता, कविता।
• इमा – महिमा, गरिमा, लघिमा, लालिमा।
• य – पांडित्य, धैर्य, चातुर्य, माधुर्य, सौन्दर्य।
(2) सम्बन्धवाचक तद्धित प्रत्यय – सम्बन्धवाचक तद्धित प्रत्यय से सम्बन्ध का बोध होता है। इसमें भी कहीं–कहीं पर आदि–स्वर की वृद्धि हो जाती है। जैसे –
• अ – शैव, वैष्णव, तैल, पार्थिव।
• इक – लौकिक, धार्मिक, वार्षिक, ऐतिहासिक।
• इत – पीड़ित, प्रचलित, दुःखित, मोहित।
• इम – स्वर्णिम, अन्तिम, रक्तिम।
• इल – जटिल, फेनिल, बोझिल, पंकिल।
• ईय – भारतीय, प्रान्तीय, नाटकीय, भवदीय।
• य – ग्राम्य, काम्य, हास्य, भव्य।
(3) अपत्यवाचक तद्धित प्रत्यय – इनसे अपत्य अर्थात् सन्तान या वंश में उत्पन्न हुए व्यक्ति का बोध होता है। अपत्यवाचक तद्धित प्रत्यय में भी कहीं–कहीं पर आदि–स्वर की वृद्धि हो जाती है। जैसे –
• अ – पार्थ, पाण्डव, माधव, राघव, भार्गव।
• इ – दाशरथि, मारुति, सौमित्र।
• य – गालव्य, पौलस्त्य, शाक्य, गार्ग्य।
• एय – वार्ष्णेय, कौन्तेय, गांगेय, राधेय।

(4) पूर्णतावाचक तद्धित प्रत्यय – इसमें संख्या की पूर्णता का बोध होता है। जैसे –
• म – प्रथम, पंचम, सप्तम, नवम, दशम।
• थ/ठ – चतुर्थ, षष्ठ।
• तीय – द्वितीय, तृतीय।
(5) तारतम्यवाचक तद्धित प्रत्यय – दो या दो से अधिक वस्तुओं में श्रेष्ठता बतलाने के लिए तारतम्यवाचक तद्धित प्रत्यय लगता है। जैसे –
• तर – अधिकतर, गुरुतर, लघुतर।
• तम – सुन्दरतम, अधिकतम, लघुतम।
• ईय – गरीय, वरीय, लघीय।
• इष्ठ – गरिष्ठ, वरिष्ठ, कनिष्ठ।
(6) गुणवाचक तद्धित प्रत्यय – गुणवाचक तद्धित प्रत्यय से संज्ञा शब्द गुणवाची बन जाते हैं। जैसे –
• वान् – धनवान्, विद्वान्, बलवान्।
• मान् – बुद्धिमान्, शक्तिमान्, गतिमान्, आयुष्मान्।
• त्य – पाश्चात्य, पौर्वात्य, दक्षिणात्य।
• आलु – कृपालु, दयालु, शंकालु।
• ई – विद्यार्थी, क्रोधी, धनी, लोभी, गुणी।

2. हिन्दी के प्रत्यय

संस्कृत की तरह ही हिन्दी के भी अनेक प्रत्यय प्रयुक्त होते हैं। ये प्रत्यय यद्यपि कृदन्त और तद्धित की तरह जुड़ते हैं, परन्तु मूल शब्द हिन्दी के तद्भव या देशज होते हैं। हिन्दी के सभी प्रत्ययों कों निम्न वर्गों में सम्मिलित किया जाता है—
(1) कर्त्तृवाचक – जिनसे किसी कार्य के करने वाले का बोध होता है, वे कर्त्तृवाचक प्रत्यय कहलाते हैं। जैसे –
प्रत्यय — शब्द–रूप
• आर – सुनार, लोहार, चमार, कुम्हार।
• ओरा – चटोरा, खदोरा, नदोरा।
• इया – दुखिया, सुखिया, रसिया, गडरिया।
• इयल – मरियल, सड़ियल, दढ़ियल।
• एरा – सपेरा, लुटेरा, कसेरा, लखेरा।
• वाला – घरवाला, ताँगेवाला, झाडूवाला, मोटरवाला।
• वैया (ऐया) – गवैया, नचैया, रखवैया, खिवैया।
• हारा – लकड़हारा, पनिहारा।
• हार – राखनहार, चाखनहार।
• अक्कड़ – भुलक्कड़, घुमक्कड़, पियक्कड़।
• आकू – लड़ाकू।
• आड़ी – खिलाड़ी।
• ओड़ा – भगोड़ा।
(2) भाववाचक – जिनसे किसी भाव का बोध होता है, भाववाचक प्रत्यय कहलाते हैं। जैसे –
• आ – प्यासा, भूखा, रुखा, लेखा।
• आई – मिठाई, रंगाई, सिलाई, भलाई।
• आका – धमाका, धड़ाका, भड़ाका।
• आपा – मुटापा, बुढ़ापा, रण्डापा।
• आहट – चिकनाहट, कड़वाहट, घबड़ाहट, गरमाहट।
• आस – मिठास, खटास, भड़ास।
• ई – गर्मी, सर्दी, मजदूरी, पहाड़ी, गरीबी, खेती।
• पन – लड़कपन, बचपन, गँवारपन।
(3) सम्बन्धवाचक – जिनसे सम्बन्ध का भाव व्यक्त होता है, वे सम्बन्धवाचक प्रत्यय कहलाते हैं। जैसे –
• आई – बहनोई, ननदोई, रसोई।
• आड़ी – खिलाड़ी, पहाड़ी, अनाड़ी।
• एरा – चचेरा, ममेरा, मौसेरा, फुफेरा।
• एड़ी – भँगेड़ी, गँजेड़ी, नशेड़ी।
• आरी – लुहारी, सुनारी, मनिहारी।
• आल – ननिहाल, ससुराल।
(4) लघुतावाचक – जिनसे लघुता या न्यूनता का बोध होता है, वे लघुतावाचक प्रत्यय कहलाते हैं। जैसे –
• ई – रस्सी, कटोरी, टोकरी, ढोलकी।
• इया – खटिया, लुटिया, चुटिया, डिबिया, पुड़िया।
• ड़ा – मुखड़ा, दुखड़ा, चमड़ा।
• ड़ी – टुकड़ी, पगड़ी, बछड़ी।
• ओला – खटोला, मझोला, सँपोला।
(5) गणनावाचक प्रत्यय – जिनसे गणनावाचक संख्या का बोध है, वे गणनावाचक प्रत्यय कहलाते हैं। जैसे –
• था – चौथा।
• रा – दूसरा, तीसरा।
• ला – पहला।
• वाँ – पाँचवाँ, दसवाँ, सातवाँ।
• हरा – इकहरा, दुहरा, तिहरा।
(6) सादृश्यवाचक प्रत्यय – जिनसे सादृश्य या समता का बोध होता है, उन्हें सादृश्यवाचक प्रत्यय कहते हैं। जैसे –
• सा – मुझ–सा, तुझ–सा, नीला–सा, चाँद–सा, गुलाब–सा।
• हरा – दुहरा, तिहरा, चौहरा।
• हला – सुनहला, रूपहला।
(7) गुणवाचक प्रत्यय – जिनसे किसी गुण का बोध होता है, वे गुणवाचक प्रत्यय कहलाते हैं। जैसे –
• आ – मीठा, ठंडा, प्यासा, भूखा, प्यारा।
• ईला – लचीला, गँठीला, सजीला, रंगीला, चमकीला, रसीला।
• ऐला – मटमैला, कषैला, विषैला।
• आऊ – बटाऊ, पंडिताऊ, नामधराऊ, खटाऊ।
• वन्त – कलावन्त, कुलवन्त, दयावन्त।
• ता – मूर्खता, लघुता, कठोरता, मृदुता।

(8) स्थानवाचक – जिनसे स्थान का बोध होता है, वे स्थानवाचक प्रत्यय कहलाते हैं। जैसे –
• ई – पंजाबी, गुजराती, मराठी, अजमेरी, बीकानेरी, बनारसी, जयपुरी।
• इया – अमृतसरिया, भोजपुरिया, जयपुरिया, जालिमपुरिया।
• आना – हरियाना, राजपूताना, तेलंगाना।
• वी – हरियाणवी, देहलवी।

3. विदेशी प्रत्यय

हिन्दी में उर्दू के ऐसे प्रत्यय प्रयुक्त होते हैं, जो मूल रूप से अरबी और फारसी भाषा से अपनाये गये हैं। जैसे –
• आबाद – अहमदाबाद, इलाहाबाद।
• खाना – दवाखाना, छापाखाना।
• गर – जादूगर, बाजीगर, शोरगर।
• ईचा – बगीचा, गलीचा।
• ची – खजानची, मशालची, तोपची।
• दार – मालदार, दूकानदार, जमींदार।
• दान – कलमदान, पीकदान, पायदान।
• वान – कोचवान, बागवान।
• बाज – नशेबाज, दगाबाज।
• मन्द – अक्लमन्द, भरोसेमन्द।
• नाक – दर्दनाक, शर्मनाक।
• गीर – राहगीर, जहाँगीर।
• गी – दीवानगी, ताजगी।
• गार – यादगार, रोजगार।

हिन्दी में प्रयुक्त प्रमुख प्रत्यय व उनसे बने प्रमुख शब्द :–

• अ – शैव, वैष्णव, तैल, पार्थिव, मानव, पाण्डव, वासुदेव, लूट, मार, तोल, लेख, पार्थ, दानव, यादव, भार्गव, माधव, जय, लाभ, विचार, चाल, लाघव, शाक्त, मेल, बौद्ध।
• अक – चालक, पावक, पाठक, लेखक, पालक, विचारक, खटक, धावक, गायक, नायक, दायक।
• अक्कड़ – भुलक्कड़, घुमक्कड़, पियक्कड़, कुदक्कड़, रुअक्कड़, फक्कड़, लक्कड़।
• अंत – गढ़ंत, लड़ंत, भिड़ंत, रटंत, लिपटंत, कृदन्त, फलंत।
• अन्तर – रुपान्तर, मतान्तर, मध्यान्तर, समानान्तर, देशांतर, भाषांतर।
• अतीत – कालातीत, आशातीत, गुणातीत, स्मरणातीत।
• अंदाज – तीरंदाज, गोलंदाज, बर्कंदाज, बेअंदाज।
• अंध – सड़ांध, मदांध, धर्मांध, जन्मांध, दोषांध।
• अधीन – कर्माधीन, स्वाधीन, पराधीन, देवाधीन, विचाराधीन, कृपाधीन, निर्णयाधीन, लेखकाधीन, प्रकाशकाधीन।
• अन – लेखन, पठन, वादन, गायन, हवन, गमन, झाड़न, जूठन, ऐंठन, चुभन, मंथन, वंदन, मनन, चिंतन, ढ़क्कन, मरण, चलन, जीवन।
• अना – भावना, कामना, प्रार्थना।
• अनीय – तुलनीय, पठनीय, दर्शनीय।
• अन्वित – क्रोधान्वित, दोषान्वित, लाभान्वित, भयान्वित, क्रियान्वित, गुणान्वित।
• अन्वय – पदान्वय, खंडान्वय।
• अयन – रामायण, नारायण, अन्वयन।
• आ – प्यासा, लेखा, फेरा, जोड़ा, प्रिया, मेला, ठंडा, भूखा, छाता, छत्रा, हर्जा, खर्चा, पीड़ा, रक्षा, झगड़ा, सूखा, रुखा, अटका, भटका, मटका, भूला, बैठा, जागा, पढ़ा, भागा, नाचा, पूजा, मैला, प्यारा, घना, झूला, ठेला, घेरा, मीठा।
• आइन – ठकुराइन, पंडिताइन, मुंशियाइन।
• आई – लड़ाई, चढ़ाई, भिड़ाई, लिखाई, पिसाई, दिखाई, पंडिताई, भलाई, बुराई, अच्छाई, बुनाई, कढ़ाई, सिँचाई, पढ़ाई, उतराई।
• आऊ – दिखाऊ, टिकाऊ, बटाऊ, पंडिताऊ, नामधराऊ, खटाऊ, चलाऊ, उपजाऊ, बिकाऊ, खाऊ, जलाऊ, कमाऊ, टरकाऊ, उठाऊ।
• आक – लड़ाक, तैराक, चालाक, खटाक, सटाक, तड़ाक, चटाक।
• आका – धमाका, धड़ाका, भड़ाका, लड़ाका, फटाका, चटाका, खटाका, तड़ाका, इलाका।
• आकू – लड़ाकू, पढ़ाकू, उड़ाकू, चाकू।
• आकुल – भयाकुल, व्याकुल।
• आटा – सन्नाटा, खर्राटा, फर्राटा, घर्राटा, झपाटा, थर्राटा।
• आड़ी – कबाड़ी, पहाड़ी, अनाड़ी, खिलाड़ी, अगाड़ी, पिछाड़ी।
• आढ्य – धनाढ्य, गुणाढ्य।
• आतुर – प्रेमातुर, रोगातुर, कामातुर, चिँतातुर, भयातुर।
• आन – उड़ान, पठान, चढ़ान, नीचान, उठान, लदान, मिलान, थकान, मुस्कान।
• आना – नजराना, हर्जाना, घराना, तेलंगाना, राजपूताना, मर्दाना, जुर्माना, मेहनताना, रोजाना, सालाना।
• आनी – देवरानी, जेठानी, सेठानी, गुरुआनी, इंद्राणी, नौकरानी, रूहानी, मेहतरानी, पंडितानी।
• आप – मिलाप, विलाप, जलाप, संताप।
• आपा – बुढ़ापा, मुटापा, रण्डापा, बहिनापा, जलापा, पुजापा, अपनापा।
• आब – गुलाब, शराब, शबाब, कबाब, नवाब, जवाब, जनाब, हिसाब, किताब।
• आबाद – नाबाद, हैदराबाद, अहमदाबाद, इलाहाबाद, शाहजहाँनाबाद।
• आमह – पितामह, मातामह।
• आयत – त्रिगुणायत, पंचायत, बहुतायत, अपनायत, लोकायत, टीकायत, किफायत, रियायत।
• आयन – दांड्यायन, कात्यायन, वात्स्यायन, सांस्कृत्यायन।
• आर – कुम्हार, सुनार, लुहार, चमार, सुथार, कहार, गँवार, नश्वार।
• आरा – बनजारा, निबटारा, छुटकारा, हत्यारा, घसियारा, भटियारा।
• आरी – पुजारी, सुनारी, लुहारी, मनिहारी, कोठारी, बुहारी, भिखारी, जुआरी।
• आरु – दुधारु, गँवारु, बाजारु।
• आल – ससुराल, ननिहाल, घड़ियाल, कंगाल, बंगाल, टकसाल।
• आला – शिवाला, पनाला, परनाला, दिवाला, उजाला, रसाला, मसाला।
• आलु – ईर्ष्यालु, कृपालु, दयालु।
• आलू – झगड़ालू, लजालू, रतालू, सियालू।
• आव – घेराव, बहाव, लगाव, द्राव, छिपाव, सूझाव, जमाव, ठहराव, घुमाव, पड़ाव, बिलाव।

• आवर – दिलावर, दस्तावर, बख्तावर, जोरावर, जिनावर।
• आवट – लिखावट, थकावट, रुकावट, बनावट, तरावट, दिखावट, सजावट, घिसावट।
• आवना – सुहावना, लुभावना, डरावना, भावना।
• आवा – भुलावा, बुलावा, चढ़ावा, छलावा, पछतावा, दिखावा, बहकावा, पहनावा।
• आहट – कड़वाहट, चिकनाहट, घबराहट, सरसराहट, गरमाहट, टकराहट, थरथराहट, जगमगाहट, चिरपिराहट, बिलबिलाहट, गुर्राहट, तड़फड़ाहट।
• आस – खटास, मिठास, प्यास, बिँदास, भड़ास, रुआँस, निकास, हास, नीचास, पलास।
• आसा – कुहासा, मुँहासा, पुंडासा, पासा, दिलासा।
• आस्पद – घृणास्पद, विवादास्पद, संदेहास्पद, उपहासास्पद, हास्यास्पद।
• ओई – बहनोई, ननदोई, रसोई, कन्दोई।
• ओड़ा – भगोड़ा, हँसोड़ा, थोड़ा।
• ओरा – चटोरा, कटोरा, खदोरा, नदोरा, ढिँढोरा।
• ओला – खटोला, मँझोला, बतोला, बिचोला, फफोला, सँपोला, पिछोला।
• औटा – बिलौटा, हिरनौटा, पहिलौटा, बिनौटा।
• औता – फिरौता, समझौता, कठौता।
• औती – चुनौती, बपौती, फिरौती, कटौती, कठौती, मनौती।
• औना – घिनौना, खिलौना, बिछौना, सलौना, डिठौना।
• औनी – घिनौनी, बिछौनी, सलौनी।
• इंदा – परिँदा, चुनिँदा, शर्मिंदा, बाशिँदा, जिन्दा।
• इ – दाशरथि, मारुति, राघवि, वारि, सारथि, वाल्मीकि।
• इक – मानसिक, मार्मिक, पारिश्रमिक, व्यावहारिक, ऐतिहासिक, पार्श्विक, सामाजिक, पारिवारिक, औपचारिक, भौतिक, लौकिक, नैतिक, वैदिक, प्रायोगिक, वार्षिक, मासिक, दैनिक, धार्मिक, दैहिक, प्रासंगिक, नागरिक, दैविक, भौगोलिक।
• इका – नायिका, पत्रिका, निहारिका, लतिका, बालिका, कलिका, लेखिका, सेविका, प्रेमिका।
• इकी – वानिकी, मानविकी, यांत्रिकी, सांख्यिकी, भौतिकी, उद्यानिकी।
• इत – लिखित, कथित, चिँतित, याचित, खंडित, पोषित, फलित, द्रवित, कलंकित, हर्षित, अंकित, शोभित, पीड़ित, कटंकित, रचित, चलित, तड़ित, उदित, गलित, ललित, वर्जित, पठित, बाधित, रहित, सहित।
• इतर – आयोजनेतर, अध्ययनेतर, सचिवालयेतर।
• इत्य – लालित्य, आदित्य, पांडित्य, साहित्य, नित्य।
• इन – मालिन, कठिन, बाघिन, मालकिन, मलिन, अधीन, सुनारिन, चमारिन, पुजारिन, कहारिन।
• इनी – भुजंगिनी, यक्षिणी, सरोजिनी, वाहिनी, हथिनी, मतवालिनी।
• इम – अग्रिम, रक्तिम, पश्चिम, अंतिम, स्वर्णिम।
• इमा – लालिमा, गरिमा, लघिमा, पूर्णिमा, हरितिमा, मधुरिमा, अणिमा, नीलिमा, महिमा।
• इयत – इंसानियत, कैफियत, माहियत, हैवानित, खासियत, खैरियत।
• इयल – मरियल, दढ़ियल, चुटियल, सड़ियल, अड़ियल।
• इया – लठिया, बिटिया, चुटिया, डिबिया, खटिया, लुटिया, मुखिया, चुहिया, बंदरिया, कुतिया, दुखिया, सुखिया, आढ़तिया, रसोइया, रसिया, पटिया, चिड़िया, बुढ़िया, अमिया, गडरिया, मटकिया, लकुटिया, घटिया, रेशमिया, मजाकिया, सुरतिया।
• इल – पंकिल, रोमिल, कुटिल, जटिल, धूमिल, तुंडिल, फेनिल, बोझिल, तमिल, कातिल।
• इश – मालिश, फरमाइश, पैदाइश, पैमाइश, आजमाइश, परवरिश, कोशिश, रंजिश, साजिश, नालिश, कशिश, तफ्तिश, समझाइश।
• इस्तान – कब्रिस्तान, तुर्किस्तान, अफगानिस्तान, नखलिस्तान, कजाकिस्तान।
• इष्णु – सहिष्णु, वर्धिष्णु, प्रभाविष्णु।
• इष्ट – विशिष्ट, स्वादिष्ट, प्रविष्ट।
• इष्ठ – घनिष्ठ, बलिष्ठ, गरिष्ठ, वरिष्ठ।
• ई – गगरी, खुशी, दुःखी, भेदी, दोस्ती, चोरी, सर्दी, गर्मी, पार्वती, नरमी, टोकरी, झंडी, ढोलकी, लंगोटी, भारी, गुलाबी, हरी, सुखी, बिक्री, मंडली, द्रोपदी, वैदेही, बोली, हँसी, रेती, खेती, बुहारी, धमकी, बंगाली, गुजराती, पंजाबी, राजस्थानी, जयपुरी, मद्रासी, पहाड़ी, देशी, सुन्दरी, ब्राह्मणी, गुणी, विद्यार्थी, क्रोधी, लालची, लोभी, पाखण्डी, विदुषी, विदेशी, अकेली, सखी, साखी, अलबेली, सरकारी, तन्दुरी, सिन्दुरी, किशोरी, हेराफेरी, कामचोरी।
• ईचा – बगीचा, गलीचा, सईचा।
• ईन – प्रवीण, शौकीन, प्राचीन, कुलीन, शालीन, नमकीन, रंगीन, ग्रामीण, नवीन, संगीन, बीन, तारपीन, गमगीन, दूरबीन, मशीन, जमीन।
• ईना – कमीना, महीना, पश्मीना, नगीना, मतिहीना, मदीना, जरीना।
• ईय – भारतीय, जातीय, मानवीय, राष्ट्रीय, स्थानीय, भवदीय, पठनीय, पाणिनीय, शास्त्रीय, वायवीय, पूजनीय, वंदनीय, करणीय, राजकीय, देशीय।
• ईला – रसीला, जहरीला, पथरीला, कंकरीला, हठीला, रंगीला, गँठीला, शर्मीला, सुरीला, नुकीला, बर्फीला, भड़कीला, नशीला, लचीला, सजीला, फुर्तीला।
• ईश – नदीश, कपीश, कवीश, गिरीश, महीश, हरीश, सतीश।
• उ – सिँधु, लघु, भानु, गुरु, अनु, भिक्षु, शिशु, , वधु, तनु, पितु, बुद्धु, शत्रु, आयु।
• उक – भावुक, कामुक, भिक्षुक, नाजुक।
• उवा/उआ – मछुआ, कछुआ, बबुआ, मनुआ, कलुआ, गेरुआ।
• उल – मातुल, पातुल।
• ऊ – झाड़ू, बाजारू, घरू, झेँपू, पेटू, भोँपू, गँवारू, ढालू।
• ऊटा – कलूटा।
• ए – चले, पले, फले, ढले, गले, मिले, खड़े, पड़े, डरे, मरे, हँसे, फँसे, जले, किले, काले, ठहरे, पहरे, रोये, चने, पहने, गहने, मेरे, तेरे, तुम्हारे, हमारे, सितारे, उनके, उसके, जिसके, बकरे, कचरे, लुटेरे, सुहावने, डरावने, झूले, प्यारे, घने, सूखे, मैले, थैले, बेटे, लेटे, आए, गए, छोटे, बड़े, फेरे, दूसरे।
• एड़ी – नशेड़ी, भँगेड़ी, गँजेड़ी।
• एय – गांगेय, आग्नेय, आंजनेय, पाथेय, कौँतेय, वार्ष्णेय, मार्कँडेय, कार्तिकेय, राधेय।
• एरा – लुटेरा, सपेरा, मौसेरा, चचेरा, ममेरा, फुफेरा, चितेरा, ठठेरा, कसेरा, लखेरा, भतेरा, कमेरा, बसेरा, सवेरा, अन्धेरा, बघेरा।
• एल – फुलेल, नकेल, ढकेल, गाँवड़ेल।
• एला – बघेला, अकेला, सौतेला, करेला, मेला, तबेला, ठेला, रेला।
• एत – साकेत, संकेत, अचेत, सचेत, पठेत।
• ऐत – लठैत, डकैत, लड़ैत, टिकैत, फिकैत।
• ऐया – गवैया, बजैया, रचैया, खिवैया, रखैया, कन्हैया, लगैया।
• ऐल – गुस्सैल, रखैल, खपरैल, मुँछैल, दँतैल, बिगड़ैल।
• ऐला – विषैला, कसैला, वनैला, मटैला, थनैला, मटमैला।
• क – बालक, सप्तक, दशक, अष्टक, अनुवादक, लिपिक, चालक, शतक, दीपक, पटक, झटक, लटक, खटक।
• कर – दिनकर, दिवाकर, रुचिकर, हितकर, प्रभाकर, सुखकर, प्रलंयकर, भयंकर, पढ़कर, लिखकर, चलकर, सुनकर, पीकर, खाकर, उठकर, सोकर, धोकर, जाकर, आकर, रहकर, सहकर, गाकर, छानकर, समझकर, उलझकर, नाचकर, बजाकर, भूलकर, तड़पकर, सुनाकर, चलाकर, जलाकर, आनकर, गरजकर, लपककर, भरकर, डरकर।
• करण – सरलीकरण, स्पष्टीकरण, गैसीकरण, द्रवीकरण, पंजीकरण, ध्रुवीकरण।
• कल्प – कुमारकल्प, कविकल्प, भृतकल्प, विद्वतकल्प, कायाकल्प, संकल्प, विकल्प।
• कार – साहित्यकार, पत्रकार, चित्रकार, संगीतकार, काश्तकार, शिल्पकार, ग्रंथकार, कलाकार, चर्मकार, स्वर्णकार, गीतकार, बलकार, बलात्कार, फनकार, फुँफकार,

हुँकार, छायाकार, कहानीकार, अंधकार, सरकार।
• का – गुटका, मटका, छिलका, टपका, छुटका, बड़का, कालका।
• की – बड़की, छुटकी, मटकी, टपकी, अटकी, पटकी।
• कीय – स्वकीय, परकीय, राजकीय, नाभिकीय, भौतिकीय, नारकीय, शासकीय।
• कोट – नगरकोट, पठानकोट, राजकोट, धूलकोट, अंदरकोट।
• कोटा – परकोटा।
• खाना – दवाखाना, तोपखाना, कारखाना, दौलतखाना, कैदखाना, मयखाना, छापाखाना, डाकखाना, कटखाना।
• खोर – मुफ्तखोर, आदमखोर, सूदखोर, जमाखोर, हरामखोर, चुगलखोर।
• ग – उरग, विहग, तुरग, खड़ग।
• गढ़ – जयगढ़, देवगढ़, रामगढ़, चित्तौड़गढ़, कुशलगढ़, कुम्भलगढ़, हनुमानगढ़, लक्ष्मणगढ़, डूँगरगढ़, राजगढ़, सुजानगढ़, किशनगढ़।
• गर – जादूगर, नीलगर, कारीगर, बाजीगर, सौदागर, कामगर, शोरगर, उजागर।
• गाँव – चिरगाँव, गोरेगाँव, गुड़गाँव, जलगाँव।
• गा – तमगा, दुर्गा।
• गार – कामगार, यादगार, रोजगार, मददगार, खिदमतगार।
• गाह – ईदगाह, दरगाह, चरागाह, बंदरगाह, शिकारगाह।
• गी – मर्दानगी, जिंदगी, सादगी, एकबारगी, बानगी, दीवानगी, ताजगी।
• गीर – राहगीर, उठाईगीर, जहाँगीर।
• गीरी – कुलीगीरी, मुँशीगीरी, दादागीरी।
• गुना – दुगुना, तिगुना, चौगुना, पाँचगुना, सौगुना।
• ग्रस्त – रोगग्रस्त, तनावग्रस्त, चिन्ताग्रस्त, विवादग्रस्त, व्याधिग्रस्त, भयग्रस्त।
• घ्न – कृतघ्न, पापघ्न, मातृघ्न, वातघ्न।
• चर – जलचर, नभचर, निशाचर, थलचर, उभयचर, गोचर, खेचर।
• चा – देगचा, चमचा, खोमचा, पोमचा।
• चित् – कदाचित्, किंचित्, कश्चित्, प्रायश्चित्।
• ची – अफीमची, तोपची, बावरची, नकलची, खजांची, तबलची।
• ज – अंबुज, पयोज, जलज, वारिज, नीरज, अग्रज, अनुज, पंकज, आत्मज, सरोज, उरोज, धीरज, मनोज।
• जा – आत्मजा, गिरिजा, शैलजा, अर्कजा, भानजा, भतीजा, भूमिजा।
• जात – नवजात, जलजात, जन्मजात।
• जादा – शहजादा, रईसजादा, हरामजादा, नवाबजादा।
• ज्ञ – विशेषज्ञ, नीतिज्ञ, मर्मज्ञ, सर्वज्ञ, धर्मज्ञ, शास्त्रज्ञ।
• ठ – कर्मठ, जरठ, षष्ठ।
• ड़ा – दुःखड़ा, मुखड़ा, पिछड़ा, टुकड़ा, बछड़ा, हिँजड़ा, कपड़ा, चमड़ा, लँगड़ा।
• ड़ी – टुकड़ी, पगड़ी, बछड़ी, चमड़ी, दमड़ी, पंखुड़ी, अँतड़ी, टंगड़ी, लँगड़ी।
• त – आगत, विगत, विश्रुत, रंगत, संगत, चाहत, कृत, मिल्लत, गत, हत, व्यक्त, बचत, खपत, लिखत, पढ़त, बढ़त, घटत, आकृष्ट, तुष्ट, संतुष्ट (सम्+तुष्+त)।
• तन – अधुनातन, नूतन, पुरातन, सनातन।
• तर – अधिकतर, कमतर, कठिनतर, गुरुतर, ज्यादातर, दृढ़तर, लघुतर, वृहत्तर, उच्चतर, कुटिलतर, दृढ़तर, निम्नतर, निकटतर, महत्तर।
• तम – प्राचीनतम, नवीनतम, तीव्रतम, उच्चतम, श्रेष्ठतम, महत्तम, विशिष्टतम, अधिकतम, गुरुतम, दीर्घतम, निकटतम, न्यूनतम, लघुतम, वृहत्तम, सुंदरतम, उत्कृष्टतम।
• ता – श्रोता, वक्ता, दाता, ज्ञाता, सुंदरता, मधुरता, मानवता, महत्ता, बंधुता, दासता, खाता, पीता, डूबता, खेलता, महानता, रमता, चलता, प्रभुता, लघुता, गुरुता, समता, कविता, मनुष्यता, कर्त्ता, नेता, भ्राता, पिता, विधाता, मूर्खता, विद्वता, कठोरता, मृदुता, वीरता, उदारता।
• ति – गति, मति, पति, रति, शक्ति, भक्ति, कृति।
• ती – ज्यादती, कृती, ढ़लती, कमती, चलती, पढ़ती, फिरती, खाती, पीती, धरती, भरती, जागती, भागती, सोती, धोती, सती।
• तः – सामान्यतः, विशेषतः, मूलतः, अंशतः, अंततः, स्वतः, प्रातः, अतः।
• त्र – एकत्र, सर्वत्र, अन्यत्र, नेत्र, पात्र, अस्त्र, शस्त्र, शास्त्र, चरित्र, क्षेत्र, पत्र, सत्र।
• त्व – महत्त्व, लघुत्व, स्त्रीत्व, नेतृत्व, बंधुत्व, व्यक्तित्व, पुरुषत्व, सतीत्व, राजत्व, देवत्व, अपनत्व, नारीत्व, पत्नीत्व, स्वामित्व, निजत्व।
• थ – चतुर्थ, पृष्ठ (पृष्+थ), षष्ठ (षष्+थ)।
• था – सर्वथा, अन्यथा, चौथा, प्रथा, पृथा, वृथा, कथा, व्यथा।
• थी – सारथी, परमार्थी, विद्यार्थी।
• द – जलद, नीरद, अंबुद, पयोद, वारिद, दुःखद, सुखद, अंगद, मकरंद।
• दा – सर्वदा, सदा, यदा, कदा, परदा, यशोदा, नर्मदा।
• दान – पानदान, कद्रदान, रोशनदान, कलमदान, इत्रदान, पीकदान, खानदान, दीपदान, धूपदान, पायदान, कन्यादान, शीशदान, भूदान, गोदान, अन्नदान, वरदान, वाग्दान, अभयदान, क्षमादान, जीवनदान।
• दानी – मच्छरदानी, चूहेदानी, नादानी, वरदानी, खानदानी।
• दायक – आनन्ददायक, सुखदायक, कष्टदायक, पीड़ादायक, आरामदायक, फलदायक।
• दायी – आनन्ददायी, सुखदायी, उत्तरदायी, कष्टदायी, फलदायी।
• दार – मालदार, हिस्सेदार, दुकानदार, हवलदार, थानेदार, जमींदार, फौजदार, कर्जदार, जोरदार, ईमानदार, लेनदार, देनदार, खरीददार, जालीदार, गोटेदार, लहरदार, धारदार, धारीदार, सरदार, पहरेदार, बूँटीदार, समझदार, हवादार, ठिकानेदार, ठेकेदार, परतदार, शानदार, फलीदार, नोकदार।
• दारी – समझदारी, खरीददारी, ईमानदारी, ठेकेदारी, पहरेदारी, लेनदारी, देनदारी।
• दी – वरदी, सरदी, दर्दी।
• धर – चक्रधर, हलधर, गिरिधर, महीधर, विद्याधर, गंगाधर, फणधर, भूधर, शशिधर, विषधर, धरणीधर, मुरलीधर, जलधर, जालन्धर, शृंगधर, अधर, किधर, उधर, जिधर, नामधर।
• धा – बहुधा, अभिधा, समिधा, विविधा, वसुधा, नवधा।
• धि – पयोधि, वारिधि, जलधि, उदधि, संधि, विधि, निधि, अवधि।
• न – नमन, गमन, बेलन, चलन, फटकन, झाड़न, धड़कन, लगन, मिलन, साजन, जलन, फिसलन, ऐँठन, उलझन, लटकन, फलन, राजन, मोहन, सौतन, भवन, रोहन, जीवन, प्रण, प्राण, प्रमाण, पुराण, ऋण, परिमाण, तृण, हरण, भरण, मरण।
• नगर – गंगानगर, श्रीनगर, रामनगर, संजयनगर, जयनगर, चित्रनगर।
• नवीस – फड़नवीस, खबरनवीस, नक्शानवीश, चिटनवीस, अर्जीनवीस।
• नशीन – पर्दानशीन, गद्दीनशीन, तख्तनशीन, जाँनशीन।
• ना – नाचना, गाना, कूदना, टहलना, मारना, पढ़ना, माँगना, दौड़ना, भागना, तैरना, भावना, कामना, कमीना, महीना, नगीना, मिलना, चलना, खाना, पीना, हँसना, जाना, रोना, तृष्णा।
• नाक – दर्दनाक, शर्मनाक, खतरनाक, खौफनाक।
• नाम – अनाम, गुमनाम, सतनाम, सरनाम, हरिनाम, प्रणाम, परिणाम।
• नामा – अकबरनामा, राजीनामा, मुख्तारनामा, सुलहनामा, हुमायूँनामा, अर्जीनामा, रोजनामा, पंचनामा, हलफनामा।
• निष्ठ – कर्मनिष्ठ, योगनिष्ठ, कर्त्तव्यनिष्ठ, राजनिष्ठ, ब्रह्मनिष्ठ।
• नी – मिलनी, सूँघनी, कतरनी, ओढ़नी, चलनी, लेखनी, मोरनी, चोरनी, चाँदनी, छलनी, धौँकनी, मथनी, कहानी, करनी, जीवनी, छँटनी, नटनी, चटनी, शेरनी, सिँहनी, कथनी, जननी, तरणी, तरुणी, भरणी, तरनी, मँगनी, सारणी।

• नीय – आदरणीय, करणीय, शोचनीय, सहनीय, दर्शनीय, नमनीय।
• नु – शान्तनु, अनु, तनु, भानु, समनु।
• प – महीप, मधुप, जाप, समताप, मिलाप, आलाप।
• पन – लड़कपन, पागलपन, छुटपन, बचपन, बाँझपन, भोलापन, बड़प्पन, पीलापन, अपनापन, गँवारपन, आलसीपन, अलसायापन, वीरप्पन, दीवानापन।
• पाल – द्वारपाल, प्रतिपाल, महीपाल, गोपाल, राज्यपाल, राजपाल, नागपाल, वीरपाल, सत्यपाल, भोपाल, भूपाल, कृपाल, नृपाल।
• पाली – आम्रपाली, भोपाली, रुपाली।
• पुर – अन्तःपुर, सीतापुर, रामपुर, भरतपुर, धौलपुर, गोरखपुर, फिरोजपुर, फतेहपुर, जयपुर।
• पुरा – जोधपुरा, हरिपुरा, श्यामपुरा, जालिमपुरा, नरसिंहपुरा।
• पूर्वक – विधिपूर्वक, दृढ़तापूर्वक, निश्चयपूर्वक, सम्मानपूर्वक, श्रद्धापूर्वक, बलपूर्वक, प्रयासपूर्वक, ध्यानपूर्वक।
• पोश – मेजपोश, नकाबपोश, सफेदपोश, पलंगपोश, जीनपोश, चिलमपोश।
• प्रद – लाभप्रद, हानिप्रद, कष्टप्रद, संतोषप्रद, उत्साहप्रद, हास्यप्रद।
• बंद – कमरबंद, बिस्तरबंद, बाजूबंद, हथियारबंद, कलमबंद, मोहरबंद, बख्तरबंद, नजरबंद।
• बंदी – चकबंदी, घेराबंदी, हदबंदी, मेड़बंदी, नाकाबंदी।
• बाज – नशेबाज, दगाबाज, चालबाज, धोखेबाज, पतंगबाज, खेलबाज।
• बान – मेजबान, गिरहबान, दरबान, मेहरबान।
• बीन – तमाशबीन, दूरबीन, खुर्दबीन।
• भू – प्रभु (प्र+भू), स्वयंभू।
• मंद – दौलतमंद, फायदेमंद, अक्लमंद, जरूरतमंद, गरजमंद, मतिमंद, भरोसेमंद।
• म – हराम, जानम, कर्म (कृ+म), धर्म, मर्म, जन्म, मध्यम, सप्तम, छद्म, चर्म, रहम, वहम, प्रीतम, कलम, हरम, श्रम, परम।
• मत् – श्रीमत्।
• मत – जनमत, सलामत, रहमत, बहुमत, कयामत।
• मती – श्रीमती, बुद्धिमती, ज्ञानमती, वीरमती, रूपमती।
• मय – दयामय, जलमय, मनोमय, तेजोमय, विष्णुमय, अन्नमय, तन्मय, चिन्मय, वाङ्मय, अम्मय, भक्तिमय।
• मात्र – नाममात्र, लेशमात्र, क्षणमात्र, पलमात्र, किंचित्मात्र।
• मान – बुद्धिमान, मूर्तिमान, शक्तिमान, शोभायमान, चलायमान, गुंजायमान, हनुमान, श्रीमान, कीर्तिमान, सम्मान, सन्मान, मेहमान।
• य – दृश्य, सादृश्य, लावण्य, वात्सल्य, सामान्य, दांपत्य, सानिध्य, तारुण्य, पाशचात्य, वैधव्य, नैवेद्य, धैर्य, गार्हस्थ्य, सौभाग्य, सौजन्य, औचित्य, कौमार्य, शौर्य, ऐश्वर्य, साम्य, प्राच्य, पार्थक्य, पाण्डित्य, सौन्दर्य, माधुर्य, स्तुत्य, वन्द्य, खाद्य, पूज्य, नृत्य।
• या – शय्या, विद्य, चर्या, मृगया, समस्या, क्रिया, खोया, गया, आया, खाया, गाया, कमाया, जगाया, हँसाया, सताया, पढ़ाया, भगाया, हराया, खिलाया, पिलाया।
• र – नम्र, शुभ्र, क्षुद्र, मधुर, नगर, मुखर, पाण्डुर, कुंजर, प्रखर, विधुर, भ्रमर, कसर, कमर, खँजर, कहार, बहार, सुनार।
• रा – दूसरा, तीसरा, आसरा, कमरा, नवरात्रा, पिटारा, निबटारा, सहारा।
• री – बाँसुरी, गठरी, छतरी, चकरी, चाकरी, तीसरी, दूसरी, भोजपुरी, नागरी, जोधपुरी, बीकानेरी, बकरी, वल्लरी।
• रू – दारू, चारू, शुरू, घुंघरू, झूमरू, डमरू।
• ल – मंजुल, शीतल, पीतल, ऊर्मिल, घायल, पायल, वत्सल, श्यामल, सजल, कमल, कायल, काजल, सवाल, कमाल।
• ला – अगला, पिछला, मँझला, धुँधला, लाड़ला, श्यामला, कमला, पहला, नहला, दहला।
• ली – सूतली, खुजली, ढपली, घंटाली, सूपली, टीकली, पहली, जाली, खाली, सवाली।
• वंत – बलवंत, दयावंत, भगवंत, कुलवंत, जामवंत, कलावंत।
• व – केशव, राजीव, विषुव, अर्णव, सजीव, रव, शव।
• वत् – पुत्रवत्, विधिवत्, मातृवत्, पितृवत्, आत्मवत्, यथावत्।
• वर – प्रियवर, स्थावर, ताकतवर, ईश्वर, नश्वर, जानवर, नामवर, हिम्मतवर, मान्यवर, वीरवर, स्वयंवर, नटवर, कमलेश्वर, परमेश्वर, महेश्वर।
• वाँ – पाँचवाँ, सातवाँ, दसवाँ, पिटवाँ, चुनवाँ, ढलवाँ, कारवाँ, आठवाँ।
• वा – बचवा, पुरवा, बछवा, मनवा।
• वाई – बनवाई, सुनवाई, तुलवाई, लदवाई, पिछवाई, हलवाई, पुरवाई।
• वाड़ा – रजवाड़ा, हटवाड़ा, जटवाड़ा, पखवाड़ा, बाँसवाड़ा, भीलवाड़ा, दंतेवाड़ा।
• वाड़ी – फुलवाड़ी, बँसवाड़ी।
• वान् – रूपवान्, भाग्यवान्, धनवान्, दयावान्, बलवान्।
• वान – गुणवान, कोचवान, गाड़ीवान, प्रतिभावान, बागवान, धनवान, पहलवान।
• वार – उम्मीदवार, माहवार, तारीखवार, रविवार, सोमवार, मंगलवार, कदवार, पतवार, वंदनवार।
• वाल – कोतवाल, पल्लीवाल, पालीवाल, धारीवाल।
• वाला – पानवाला, लिखनेवाला, दूधवाला, पढ़नेवाला, रखवाला, हिम्मतवाला, दिलवाला, फलवाला, रिक्शेवाला, ठेलेवाला, घरवाला, ताँगेवाला।
• वाली – घरवाली, बाहरवाली, मतवाली, ताँगेवाली, नखरावाली, कोतवाली।
• वास – रनिवास, वनवास।
• वी – तेजस्वी, तपस्वी, मेधावी, मायावी, ओजस्वी, मनस्वी, जाह्नवी, लुधियानवी।
• वैया – गवैया, खिवैया, रचैया, लगैया, बजैया।
• व्य – तालव्य, मंतव्य, कर्तव्य, ज्ञातव्य, ध्यातव्य, श्रव्य, वक्तव्य, दृष्टव्य।
• श – कर्कश, रोमश, लोमश, बंदिश।
• शः – क्रमशः, कोटिशः, शतशः, अक्षरशः।
• शाली – प्रतिभाशाली, गौरवशाली, शक्तिशाली, भाग्यशाली, बलशाली।
• शील – धर्मशील, सहनशील, पुण्यशील, दानशील, विचारशील, कर्मशील।
• शाही – लोकशाही, तानाशाही, इमामशाही, कुतुबशाही, नौकरशाही, बादशाही, झाड़शाही, अमरशाही, विजयशाही।
• सा – मुझ-सा, तुझ-सा, नीला-सा, मीठा-सा, चिकीर्षा, पिपासा, जिज्ञासा, लालसा, चिकित्सा, मीमांसा, चाँद-सा, गुलाब-सा, प्यारा-सा, छोटा-सा, पीला-सा, आप-सा।
• साज – जालसाज, जीनसाज, घड़ीसाज, जिल्दसाज।
• सात् – आत्मसात्, भस्मसात्, जलसात्, अग्निसात्, भूमिसात्।
• सार – मिलनसार, एकसार, शर्मसार, खाकसार।
• स्थ – तटस्थ, मार्गस्थ, उदरस्थ, हृदयस्थ, कंठस्थ, मध्यस्थ, गृहस्थ, दूरस्थ, अन्तःस्थ।
• हर – मनोहर, खंडहर, दुःखहर, विघ्नहर, नहर, पीहर, कष्टहर, नोहर, मुहर।
• हरा – इकहरा, दुहरा, तिहरा, चौहरा, सुनहरा, रूपहरा, छरहरा।
• हार – तारनहार, पालनहार, होनहार, सृजनहार, राखनहार, खेवनहार, खेलनहार, सेवनहार, नौसरहार, गलहार, कंठहार।
• हारा – लकड़हारा, चूड़ीहारा, मनिहारा, पणिहारा, सर्वहारा, तारनहारा, मारनहारा, पालनहारा।
• हीन – कर्महीन, बुद्धिहीन, कुलहीन, बलहीन, शक्तिहीन, मतिहीन, विद्याहीन, धनहीन, गुणहीन।
• हुआ – चलता हुआ, सुनता हुआ, पढ़ता हुआ, करता हुआ, रोता हुआ, पीता हुआ, खाता हुआ, हँसता हुआ, भागता हुआ, दौड़ता हुआ, हाँफता हुआ, निकलता हुआ, गिरता हुआ, तैरता हुआ, सोचता हुआ, नाचता हुआ, गाता हुआ, बहता हुआ, बुझता हुआ, डूबता हुआ।

♦♦♦

सन्धि

संधि का अर्थ है– मिलना। दो वर्णों या अक्षरों के परस्पर मेल से उत्पन्न विकार को 'संधि' कहते हैं। जैसे– विद्या+आलय = विद्यालय। यहाँ विद्या शब्द का 'आ' वर्ण और आलय शब्द के 'आ' वर्ण में संधि होकर 'आ' बना है।

संधि–विच्छेद: संधि शब्दों को अलग–अलग करके संधि से पहले की स्थिति में लाना ही संधि विच्छेद कहलाता है। संधि का विच्छेद करने पर उन वर्णों का वास्तविक रूप प्रकट हो जाता है। जैसे– हिमालय = हिम+आलय।

परस्पर मिलने वाले वर्ण स्वर, व्यंजन और विसर्ग होते हैं, अतः इनके आधार पर ही संधि तीन प्रकार की होती है– (1) स्वर संधि, (2) व्यंजन संधि, (3) विसर्ग संधि।

1. स्वर संधि

जहाँ दो स्वरों का परस्पर मेल हो, उसे स्वर संधि कहते हैं। दो स्वरों का परस्पर मेल संस्कृत व्याकरण के अनुसार प्रायः पाँच प्रकार से होता है–

(1) अ वर्ग = अ, आ
(2) इ वर्ग = इ, ई
(3) उ वर्ग = उ, ऊ
(4) ए वर्ग = ए, ऐ
(5) ओ वर्ग = ओ, औ।

इन्हीं स्वर–वर्गों के आधार पर स्वर–संधि के पाँच प्रकार होते हैं–

1.दीर्घ संधि– जब दो समान स्वर या सवर्ण मिल जाते हैं, चाहे वे ह्रस्व हों या दीर्घ, या एक ह्रस्व हो और दूसरा दीर्घ, तो उनके स्थान पर एक दीर्घ स्वर हो जाता है, इसी को सवर्ण दीर्घ स्वर संधि कहते हैं। जैसे–

अ/आ+अ/आ = आ
दैत्य+अरि = दैत्यारि
राम+अवतार = रामावतार
देह+अंत = देहांत
अद्य+अवधि = अद्यावधि
उत्तम+अंग = उत्तमांग
सूर्य+अस्त = सूर्यास्त
कुश+आसन = कुशासन
धर्म+आत्मा = धर्मात्मा
परम+आत्मा = परमात्मा
कदा+अपि = कदापि
दीक्षा+अंत = दीक्षांत
वर्षा+अंत = वर्षांत
गदा+आघात = गदाघात
आत्मा+ आनंद = आत्मानंद
जन्म+अन्ध = जन्मान्ध
श्रद्धा+आलु = श्रद्धालु
सभा+अध्यक्ष = सभाध्यक्ष
पुरुष+अर्थ = पुरुषार्थ
हिम+आलय = हिमालय
परम+अर्थ = परमार्थ
स्व+अर्थ = स्वार्थ
स्व+अधीन = स्वाधीन
पर+अधीन = पराधीन
शस्त्र+अस्त्र = शस्त्रास्त्र
परम+अणु = परमाणु
वेद+अन्त = वेदान्त
अधिक+अंश = अधिकांश
गव+गवाक्ष = गवाक्ष
सुषुप्त+अवस्था = सुषुप्तावस्था
अभय+अरण्य = अभयारण्य
विद्या+आलय = विद्यालय
दया+आनन्द = दयानन्द
श्रदा+आनन्द = श्रद्धानन्द
महा+आशय = महाशय
वार्ता+आलाप = वार्तालाप
माया+ आचरण = मायाचरण
महा+अमात्य = महामात्य
द्राक्षा+अरिष्ट = द्राक्षारिष्ट
मूल्य+अंकन = मूल्यांकन
भय+आनक = भयानक
मुक्त+अवली = मुक्तावली
दीप+अवली = दीपावली
प्रश्न+अवली = प्रश्नावली
कृपा+आकांक्षी = कृपाकांक्षी
विस्मय+आदि = विस्मयादि
सत्य+आग्रह = सत्याग्रह
प्राण+आयाम = प्राणायाम
शुभ+आरंभ = शुभारंभ
मरण+आसन्न = मरणासन्न
शरण+आगत = शरणागत
नील+आकाश = नीलाकाश
भाव+आविष्ट = भावाविष्ट
सर्व+अंगीण = सर्वांगीण
अंत्य+अक्षरी = अंत्याक्षरी
रेखा+अंश = रेखांश

विद्या+अर्थी = विद्यार्थी
रेखा+अंकित = रेखांकित
परीक्षा+अर्थी = परीक्षार्थी
सीमा+अंकित = सीमांकित
माया+अधीन = मायाधीन
परा+अस्त = परास्त
निशा+अंत = निशांत
गीत+अंजलि = गीतांजलि
प्र+अर्थी = प्रार्थी
प्र+अंगन = प्रांगण
काम+अयनी = कामायनी
प्रधान+अध्यापक = प्रधानाध्यापक
विभाग+अध्यक्ष = विभागाध्यक्ष
शिव+आलय = शिवालय
पुस्तक+आलय = पुस्तकालय
चर+अचर = चराचर

इ/ई+इ/ई = ई
रवि+इन्द्र = रवीन्द्र
मुनि+इन्द्र = मुनीन्द्र
कवि+इन्द्र = कवीन्द्र
गिरि+इन्द्र = गिरीन्द्र
अभि+इष्ट = अभीष्ट
शचि+इन्द्र = शचीन्द्र
यति+इन्द्र = यतीन्द्र
पृथ्वी+ईश्वर = पृथ्वीश्वर
श्री+ईश = श्रीश
नदी+ईश = नदीश
रजनी+ईश = रजनीश
मही+ईश = महीश
नारी+ईश्वर = नारीश्वर
गिरि+ईश = गिरीश
हरि+ईश = हरीश
कवि+ईश = कवीश
कपि+ईश = कपीश
मुनि+ईश्वर = मुनीश्वर
प्रति+ईक्षा = प्रतीक्षा
अभि+ईप्सा = अभीप्सा
मही+इन्द्र = महीन्द्र
नारी+इच्छा = नारीच्छा
नारी+इन्द्र = नारीन्द्र
नदी+इन्द्र = नदीन्द्र
सती+ईश = सतीश
परि+ईक्षा = परीक्षा
अधि+ईक्षक = अधीक्षक
वि+ईक्षण = वीक्षण
फण+इन्द्र = फणीन्द्र
प्रति+इत = प्रतीत
परि+ईक्षित = परीक्षित
परि+ईक्षक = परीक्षक

उ/ऊ+उ/ऊ = ऊ
भानु+उदय = भानूदय
लघु+ऊर्मि = लघूर्मि
गुरु+उपदेश = गुरूपदेश
सिँधु+ऊर्मि = सिँधूर्मि
सु+उक्ति = सूक्ति
लघु+उत्तर = लघूत्तर
मंजु+उषा = मंजूषा
साधु+उपदेश = साधूपदेश
लघु+उत्तम = लघूत्तम
भू+ऊर्ध्व = भूर्ध्व
वधू+उर्मि = वधूर्मि
वधू+उत्सव = वधूत्सव
भू+उपरि = भूपरि
वधू+उक्ति = वधूक्ति
अनु+उदित = अनूदित
सरयू+ऊर्मि = सरयूर्मि
ऋ/ॠ+ऋ/ॠ = ॠ
मातृ+ऋण = मात्ॠण
पितृ+ऋण = पित्ॠण
भ्रातृ+ऋण = भ्रात्ॠण

2. गुण संधि–

अ या आ के बाद यदि ह्रस्व इ, उ, ऋ अथवा दीर्घ ई, ऊ, ॠ स्वर हों, तो उनमेँ संधि होकर क्रमशः ए, ओ, अर् हो जाता है, इसे गुण संधि कहते हैँ। जैसे–

अ/आ+इ/ई = ए

भारत+इन्द्र = भारतेन्द्र
देव+इन्द्र = देवेन्द्र
नर+इन्द्र = नरेन्द्र
सुर+इन्द्र = सुरेन्द्र
वीर+इन्द्र = वीरेन्द्र
स्व+इच्छा = स्वेच्छा
न+इति = नेति
अंत्य+इष्टि = अंत्येष्टि
महा+इन्द्र = महेन्द्र
रमा+इन्द्र = रमेन्द्र
राजा+इन्द्र = राजेन्द्र
यथा+इष्ट = यथेष्ट
रसना+इन्द्रिय = रसनेन्द्रिय
सुधा+इन्दु = सुधेन्दु
सोम+ईश = सोमेश
महा+ईश = महेश
नर+ईश = नरेश
रमा+ईश = रमेश
परम+ईश्वर = परमेश्वर
राजा+ईश = राजेश
गण+ईश = गणेश
राका+ईश = राकेश
अंक+ईक्षण = अंकेक्षण
लंका+ईश = लंकेश
महा+ईश्वर = महेश्वर
प्र+ईक्षक = प्रेक्षक
उप+ईक्षा = उपेक्षा

अ/आ+उ/ऊ = ओ
सूर्य+उदय = सूर्योदय
पूर्व+उदय = पूर्वोदय
पर+उपकार = परोपकार
लोक+उक्ति = लोकोक्ति
वीर+उचित = वीरोचित
आद्य+उपान्त = आद्योपान्त
नव+ऊढ़ा = नवोढ़ा
समुद्र+ऊर्मि = समुद्रोर्मि
जल+ऊर्मि = जलोर्मि
महा+उत्सव = महोत्सव
महा+उदधि = महोदधि
गंगा+उदक = गंगोदक
यथा+उचित = यथोचित
कथा+उपकथन = कथोपकथन
स्वातंत्र्य+उत्तर = स्वातंत्र्योत्तर
गंगा+ऊर्मि = गंगोर्मि
महा+ऊर्मि = महोर्मि
आत्म+उत्सर्ग = आत्मोत्सर्ग
महा+उदय = महोदय
करुणा+उत्पादक = करुणोत्पादक
विद्या+उपार्जन = विद्योपार्जन
प्र+ऊढ़ = प्रौढ़
अक्ष+हिनी = अक्षौहिनी
अ/आ+ऋ = अर्
ब्रह्म+ऋषि = ब्रह्मर्षि
देव+ऋषि = देवर्षि
महा+ऋषि = महर्षि
महा+ऋद्धि = महर्द्धि
राज+ऋषि = राजर्षि
सप्त+ऋषि = सप्तर्षि
सदा+ऋतु = सदर्तु
शिशिर+ऋतु = शिशिरर्तु
महा+ऋण = महर्ण

3. वृद्धि संधि–

अ या आ के बाद यदि ए, ऐ हों तो इनके स्थान पर 'ऐ' तथा अ, आ के बाद ओ, औ हों तो इनके स्थान पर 'औ' हो जाता है। 'ऐ' तथा 'औ' स्वर 'वृद्धि स्वर' कहलाते हैं अतः इस संधि को वृद्धि संधि कहते हैं। जैसे–

अ/आ+ए/ऐ = ऐ
एक+एक = एकैक
मत+ऐक्य = मतैक्य
सदा+एव = सदैव
स्व+ऐच्छिक = स्वैच्छिक
लोक+एषणा = लोकैषणा
महा+ऐश्वर्य = महैश्वर्य
पुत्र+ऐषणा = पुत्रैषणा
वसुधा+ऐव = वसुधैव
तथा+एव = तथैव

महा+ऐन्द्रजालिक = महैन्द्रजालिक
हित+एषी = हितैषी
वित्त+एषणा = वित्तैषणा
अ/आ+ओ/औ = औ
वन+ओषध = वनौषध
परम+ओज = परमौज
महा+औघ = महौघ
महा+औदार्य = महौदार्य
परम+औदार्य = परमौदार्य
जल+ओध = जलौध
महा+औषधि = महौषधि
प्र+औद्योगिकी = प्रौद्योगिकी
दंत+ओष्ठ = दंतोष्ठ (अपवाद)

4. यण संधि–

जब ह्रस्व इ, उ, ऋ या दीर्घ ई, ऊ, ॠ के बाद कोई असमान स्वर आये, तो इ, ई के स्थान पर 'य्' तथा उ, ऊ के स्थान पर 'व्' और ऋ, ॠ के स्थान पर 'र्' हो जाता है। इसे यण् संधि कहते हैं।

यहाँ यह ध्यातव्य है कि इ/ई या उ/ऊ स्वर तो 'य्' या 'व्' में बदल जाते हैं किंतु जिस व्यंजन के ये स्वर लगे होते हैं, वह संधि होने पर स्वर–रहित हो जाता है। जैसे– अभि+अर्थी = अभ्यार्थी, तनु+अंगी = तन्वंगी। यहाँ अभ्यर्थी में 'य्' के पहले 'भ्' तथा तन्वंगी में 'व्' के पहले 'न्' स्वर–रहित हैं। प्रायः य्, व्, र् से पहले स्वर–रहित व्यंजन का होना यण् संधि की पहचान है। जैसे–

इ/ई+अ = य
यदि+अपि = यद्यपि
परि+अटन = पर्यटन
नि+अस्त = न्यस्त
वि+अस्त = व्यस्त
वि+अय = व्यय
वि+अग्र = व्यग्र
परि+अंक = पर्यंक
परि+अवेक्षक = पर्यवेक्षक
वि+अष्टि = व्यष्टि
वि+अंजन = व्यंजन
वि+अवहार = व्यवहार
वि+अभिचार = व्यभिचार
वि+अक्ति = व्यक्ति
वि+अवस्था = व्यवस्था
वि+अवसाय = व्यवसाय
प्रति+अय = प्रत्यय
नदी+अर्पण = नद्यर्पण
अभि+अर्थी = अभ्यर्थी
परि+अंत = पर्यंत
अभि+उदय = अभ्युदय
देवी+अर्पण = देव्यर्पण
प्रति+अर्पण = प्रत्यर्पण
प्रति+अक्ष = प्रत्यक्ष
वि+अंग्य = व्यंग्य
इ/ई+आ = या
वि+आप्त = व्याप्त
अधि+आय = अध्याय
इति+आदि = इत्यादि
परि+आवरण = पर्यावरण
अभि+आगत = अभ्यागत
वि+आस = व्यास
वि+आयाम = व्यायाम
अधि+आदेश = अध्यादेश
वि+आख्यान = व्याख्यान
प्रति+आशी = प्रत्याशी
अधि+आपक = अध्यापक
वि+आकुल = व्याकुल
अधि+आत्म = अध्यात्म
प्रति+आवर्तन = प्रत्यावर्तन
प्रति+आशित = प्रत्याशित
प्रति+आभूति = प्रत्याभूति
प्रति+आरोपण = प्रत्यारोपण
वि+आवृत्त = व्यावृत्त
वि+आधि = व्याधि
वि+आहत = व्याहत
प्रति+आहार = प्रत्याहार
अभि+आस = अभ्यास
सखी+आगमन = सख्यागमन
मही+आधार = मह्याधार
इ/ई+उ/ऊ = यु/यू
परि+उषण = पर्युषण
नारी+उचित = नार्युचित
उपरि+उक्त = उपर्युक्त
स्त्री+उपयोगी = युपयोगी

अभि+उदय = अभ्युदय
अति+उक्ति = अत्युक्ति
प्रति+उत्तर = प्रत्युत्तर
अभि+उत्थान = अभ्युत्थान
आदि+उपांत = आद्युपांत
अति+उत्तम = अत्युत्तम
स्त्री+उचित = युचित
प्रति+उत्पन्न = प्रत्युत्पन्न
प्रति+उपकार = प्रत्युपकार
वि+उत्पत्ति = व्युत्पत्ति
वि+उपदेश = व्युपदेश
नि+ऊन = न्यून
प्रति+ऊह = प्रत्यूह
वि+ऊह = व्यूह
अभि+ऊह = अभ्यूह
इ/ई+ए/ओ/औ = ये/यो/यौ
प्रति+एक = प्रत्येक
वि+ओम = व्योम
वाणी+औचित्य = वाण्यौचित्य
उ/ऊ+अ/आ = व/वा
तनु+अंगी = तन्वंगी
अनु+अय = अन्वय
मधु+अरि = मध्वरि
सु+अल्प = स्वल्प
समनु+अय = समन्वय
सु+अस्ति = स्वस्ति
परमाणु+अस्त्र = परमाण्वस्त्र
सु+आगत = स्वागत
साधु+आचार = साध्वाचार
गुरु+आदेश = गुर्वादेश
मधु+आचार्य = मध्वाचार्य
वधू+आगमन = वध्वागमन
ऋतु+आगमन = ऋत्वागमन
सु+आभास = स्वाभास
सु+आगम = स्वागम
उ/ऊ+इ/ई/ए = वि/वी/वे
अनु+इति = अन्विति
धातु+इक = धात्विक
अनु+इष्ट = अन्विष्ट
पू+इत्र = पवित्र
अनु+ईक्षा = अन्वीक्षा
अनु+ईक्षण = अन्वीक्षण
तनु+ई = तन्वी
धातु+ईय = धात्वीय
अनु+एषण = अन्वेषण
अनु+एषक = अन्वेषक
अनु+एक्षक = अन्वेक्षक
ऋ+अ/आ/इ/उ = र/रा/रि/रु
मातृ+अर्थ = मात्रर्थ
पितृ+अनुमति = पित्रनुमति
मातृ+आनन्द = मात्रानन्द
पितृ+आज्ञा = पित्राज्ञा
मातृ+आज्ञा = मात्राज्ञा
पितृ+आदेश = पित्रादेश
मातृ+आदेश = मात्रादेश
मातृ+इच्छा = मात्रिच्छा
पितृ+इच्छा = पित्रिच्छा
मातृ+उपदेश = मात्रुपदेश
पितृ+उपदेश = पित्रुपदेश

5. अयादि संधि–

ए, ऐ, ओ, औ के बाद यदि कोई असमान स्वर हो, तो 'ए' का 'अय्', 'ऐ' का 'आय्', 'ओ' का 'अव्' तथा 'औ' का 'आव्' हो जाता है। इसे अयादि संधि कहते हैं। जैसे–

ए/ऐ+अ/इ = अय/आय/आयि
ने+अन = नयन
शे+अन = शयन
चे+अन = चयन
संचे+अ = संचय
चै+अ = चाय
गै+अक = गायक
गै+अन् = गायन
नै+अक = नायक
दै+अक = दायक
शै+अर = शायर
विधै+अक = विधायक
विनै+अक = विनायक

नै+इका = नायिका
गै+इका = गायिका
दै+इनी = दायिनी
विधै+इका = विधायिका
ओ/औ+अ = अव/आव
भो+अन् = भवन
पो+अन् = पवन
भो+अति = भवति
हो+अन् = हवन
पौ+अन् = पावन
धौ+अक = धावक
पौ+अक = पावक
शौ+अक = शावक
भौ+अ = भाव
श्रौ+अन = श्रावण
रौ+अन = रावण
स्रौ+अ = स्राव
प्रस्तौ+अ = प्रस्ताव
गव+अक्ष = गवाक्ष (अपवाद)
ओ/औ+इ/ई/उ = अवि/अवी/आवु
रो+इ = रवि
भो+इष्य = भविष्य
गौ+ईश = गवीश
नौ+इक = नाविक
प्रभौ+इति = प्रभावित
प्रस्तौ+इत = प्रस्तावित
भौ+उक = भावुक

2. व्यंजन संधि

व्यंजन के साथ स्वर या व्यंजन के मेल को व्यंजन संधि कहते हैं। व्यंजन संधि में एक स्वर और एक व्यंजन या दोनों वर्ण व्यंजन होते हैं। इसके अनेक भेद होते हैं। व्यंजन संधि के प्रमुख नियम इस प्रकार हैं–

1. यदि किसी वर्ग के प्रथम वर्ण के बाद कोई स्वर, किसी भी वर्ग का तीसरा या चौथा वर्ण या य, र, ल, व, ह में से कोई वर्ण आये तो प्रथम वर्ण के स्थान पर उसी वर्ग का तीसरा वर्ण हो जाता है। जैसे–

'क्' का 'ग्' होना
दिक्+अम्बर = दिगम्बर
दिक्+दर्शन = दिग्दर्शन
वाक्+जाल = वाग्जाल
वाक्+ईश = वागीश
दिक्+अंत = दिगंत
दिक्+गज = दिग्गज
ऋक्+वेद = ऋग्वेद
दृक्+अंचल = दृगंचल
वाक्+ईश्वरी = वागीश्वरी
प्राक्+ऐतिहासिक = प्रागैतिहासिक
दिक्+गयंद = दिग्गयंद
वाक्+जड़ता = वाग्जड़ता
सम्यक्+ज्ञान = सम्यग्ज्ञान
वाक्+दान = वाग्दान
दिक्+भ्रम = दिग्भ्रम
वाक्+दत्ता = वाग्दत्ता
दिक्+वधू = दिग्वधू
दिक्+हस्ती = दिग्हस्ती
वाक्+व्यापार = वाग्व्यापार
वाक्+हरि = वाग्हरि
'च्' का 'ज्'
अच्+अन्त = अजन्त
अच्+आदि = अजादि
णिच्+अंत = णिजंत
'ट्' का 'ड्'
षट्+आनन = षडानन
षट्+दर्शन = षड्दर्शन
षट्+रिपु = षड्रिपु
षट्+अक्षर = षडक्षर
षट्+अभिज्ञ = षडभिज्ञ
षट्+गुण = षड्गुण
षट्+भुजा = षड्भुजा
षट्+यंत्र = षड्यंत्र
षट्+रस = षड्रस
षट्+राग = षड्राग
'त्' का 'द्'
सत्+विचार = सद्विचार
जगत्+अम्बा = जगदम्बा
सत्+धर्म = सद्धर्म
तत्+भव = तद्भव

उत्+घाटन = उद्घाटन
सत्+आशय = सदाशय
जगत्+आत्मा = जगदात्मा
सत्+आचार = सदाचार
जगत्+ईश = जगदीश
तत्+अनुसार = तदनुसार
तत्+रूप = तद्रूप
सत्+उपयोग = सदुपयोग
भगवत्+गीता = भगवद्गीता
सत्+गति = सद्गति
उत्+गम = उद्गम
उत्+आहरण = उदाहरण
इस नियम का अपवाद भी है जो इस प्रकार है–
त्+ड/ढ = त् के स्थान पर ड्
त्+ज/झ = त् के स्थान पर ज्
त्+ल् = त् के स्थान पर ल्
जैसे–
उत्+डयन = उड्डयन
सत्+जन = सज्जन
उत्+लंघन = उल्लंघन
उत्+लेख = उल्लेख
तत्+जन्य = तज्जन्य
उत्+ज्वल = उज्ज्वल
विपत्+जाल = विपत्जाल
उत्+लास = उल्लास
तत्+लीन = तल्लीन
जगत्+जननी = जगज्जननी

2.यदि किसी वर्ग के प्रथम या तृतीय वर्ण के बाद किसी वर्ग का पंचम वर्ण (ङ, ञ, ण, न, म) हो तो पहला या तीसरा वर्ण भी पाँचवाँ वर्ण हो जाता है। जैसे–
प्रथम/तृतीय वर्ण+पंचम वर्ण = पंचम वर्ण
वाक्+मय = वाङ्मय
दिक्+नाग = दिङ्नाग
सत्+नारी = सन्नारी
जगत्+नाथ = जगन्नाथ
सत्+मार्ग = सन्मार्ग
चित्+मय = चिन्मय
सत्+मति = सन्मति
उत्+नायक = उन्नायक
उत्+मूलन = उन्मूलन
अप्+मय = अम्मय
सत्+मान = सन्मान
उत्+माद = उन्माद
उत्+नत = उन्नत
वाक्+निपुण = वाङ्निपुण
जगत्+माता = जगन्माता
उत्+मत्त = उन्मत्त
उत्+मेष = उन्मेष
तत्+नाम = तन्नाम
उत्+नयन = उन्नयन
षट्+मुख = षण्मुख
उत्+मुख = उन्मुख
श्रीमत्+नारायण = श्रीमन्नारायण
षट्+मूर्ति = षण्मूर्ति
उत्+मोचन = उन्मोचन
भवत्+निष्ठ = भवन्निष्ठ
तत्+मय = तन्मय
षट्+मास = षण्मास
सत्+नियम = सन्नियम
दिक्+नाथ = दिङ्नाथ
वृहत्+माला = वृहन्माला
वृहत्+नला = वृहन्नला

3. 'त्' या 'द्' के बाद च या छ हो तो 'त/द्' के स्थान पर 'च्', 'ज्' या 'झ' हो तो 'ज्', 'ट' या 'ठ' हो तो 'ट्', 'ड्' या 'ढ' हो तो 'ड्' और 'ल' हो तो 'ल्' हो जाता है। जैसे–
त्+च/छ = च्च/च्छ
सत्+छात्र = सच्छात्र
सत्+चरित्र = सच्चरित्र
समुत्+चय = समुच्चय
उत्+चरित = उच्चरित
सत्+चित = सच्चित
जगत्+छाया = जगच्छाया
उत्+छेद = उच्छेद
उत्+चाटन = उच्चाटन
उत्+चारण = उच्चारण
शरत्+चन्द्र = शरच्चन्द्र
उत्+छिन = उच्छिन

सत्+चिदानन्द = सच्चिदानन्द
उत्+छादन = उच्छादन
त/द्+ज/झ् = ज्ज/ज्झ
सत्+जन = सज्जन
तत्+जन्य = तज्जन्य
उत्+ज्वल = उज्ज्वल
जगत्+जननी = जगज्जननी
त्+ट/ठ = ट्ट/ट्ठ
तत्+टीका = तट्टीका
वृहत्+टीका = वृहट्टीका
त्+ड/ढ = ड्ड/ड्ढ
उत्+डयन = उड्डयन
जलत्+डमरु = जलड्डमरु
भवत्+डमरु = भवड्डमरु
महत्+ढाल = महड्ढाल
त्+ल = ल्ल
उत्+लेख = उल्लेख
उत्+लास = उल्लास
तत्+लीन = तल्लीन
उत्+लंघन = उल्लंघन

4. यदि 'त्' या 'द्' के बाद 'ह' आये तो उनके स्थान पर 'द्ध' हो जाता है। जैसे–
उत्+हार = उद्धार
तत्+हित = तद्धित
उत्+हरण = उद्धरण
उत्+हत = उद्धत
पत्+हति = पद्धति
पत्+हरि = पद्धरि
उपर्युक्त संधियाँ का दूसरा रूप इस प्रकार प्रचलित है–
उद्+हार = उद्धार
तद्+हित = तद्धित
उद्+हरण = उद्धरण
उद्+हत = उद्धत
पद्+हति = पद्धति
ये संधियाँ दोनों प्रकार से मान्य हैं।

5. यदि 'त्' या 'द्' के बाद 'श्' हो तो 'त् या द्' का 'च्' और 'श्' का 'छ्' हो जाता है। जैसे–
त्/द्+श् = च्छ
उत्+श्वास = उच्छ्वास
तत्+शिव = तच्छिव
उत्+शिष्ट = उच्छिष्ट
मृद्+शकटिक = मृच्छकटिक
सत्+शास्त्र = सच्छास्त्र
तत्+शंकर = तच्छंकर
उत्+शृंखल = उच्छृंखल

6. यदि किसी भी स्वर वर्ण के बाद 'छ' हो तो वह 'च्छ' हो जाता है। जैसे–
कोई स्वर+छ = च्छ
अनु+छेद = अनुच्छेद
परि+छेद = परिच्छेद
वि+छेद = विच्छेद
तरु+छाया = तरुच्छाया
स्व+छन्द = स्वच्छन्द
आ+छादन = आच्छादन
वृक्ष+छाया = वृक्षच्छाया

7. यदि 'त्' के बाद 'स्' (हलन्त) हो तो 'स्' का लोप हो जाता है। जैसे–
उत्+स्थान = उत्थान
उत्+स्थित = उत्थित

8. यदि 'म्' के बाद 'क्' से 'भ्' तक का कोई भी स्पर्श व्यंजन हो तो 'म्' का अनुस्वार हो जाता है, या उसी वर्ग का पाँचवाँ अनुनासिक वर्ण बन जाता है। जैसे–
म+कोई व्यंजन = म् के स्थान पर अनुस्वार (ं) या उसी वर्ग का पंचम वर्ण
सम्+चार = संचार/सञ्चार
सम्+कल्प = संकल्प/सङ्कल्प
सम्+ध्या = संध्या/सन्ध्या
सम्+भव = संभव/सम्भव
सम्+पूर्ण = संपूर्ण/सम्पूर्ण
सम्+जीवनी = संजीवनी
सम्+तोष = संतोष/सन्तोष
किम्+कर = किँकर/किङ्कर
सम्+बन्ध = संबन्ध/सम्बन्ध
सम्+धि = संधि/सन्धि
सम्+गति = संगति/सङ्गति
सम्+चय = संचय/सञ्चय
परम्+तु = परन्तु/परंतु
दम्+ड = दण्ड/दंड

दिवम्+गत = दिवंगत
अलम्+कार = अलंकार
शुभम्+कर = शुभंकर
सम्+कलन = संकलन
सम्+घनन = संघनन
पम्+चम् = पंचम
सम्+तुष्ट = संतुष्ट/सन्तुष्ट
सम्+दिग्ध = संदिग्ध/सन्दिग्ध
अम्+ड = अण्ड/अंड
सम्+तति = संतति
सम्+क्षेप = संक्षेप
अम्+क = अंक/अङ्क
हृदयम्+गम = हृदयंगम
सम्+गठन = संगठन/सङ्गठन
सम्+जय = संजय
सम्+ज्ञा = संज्ञा
सम्+क्रांति = संक्रान्ति
सम्+देश = संदेश/सन्देश
सम्+चित = संचित/सञ्चित
किम्+तु = किंतु/किन्तु
वसुम्+धर = वसुन्धरा/वसुंधरा
सम्+भाषण = संभाषण
तीर्थम्+कर = तीर्थंकर
सम्+कर = संकर
सम्+घटन = संघटन
किम्+चित = किंचित
धनम्+जय = धनंजय/धनञ्जय
सम्+देह = सन्देह/संदेह
सम्+न्यासी = संन्यासी
सम्+निकट = सन्निकट

9. यदि 'म्' के बाद 'म' आये तो 'म्' अपरिवर्तित रहता है। जैसे–
म्+म = म्म
सम्+मति = सम्मति
सम्+मिश्रण = सम्मिश्रण
सम्+मिलित = सम्मिलित
सम्+मान = सम्मान
सम्+मोहन = सम्मोहन
सम्+मानित = सम्मानित
सम्+मुख = सम्मुख

10. यदि 'म्' के बाद य, र, ल, व, श, ष, स, ह में से कोई वर्ण आये तो 'म्' के स्थान पर अनुस्वार (ं) हो जाता है। जैसे–
म्+य, र, ल, व, श, ष, स, ह = अनुस्वार (ं)
सम्+योग = संयोग
सम्+वाद = संवाद
सम्+हार = संहार
सम्+लग्न = संलग्न
सम्+रक्षण = संरक्षण
सम्+शय = संशय
किम्+वा = किंवा
सम्+विधान = संविधान
सम्+शोधन = संशोधन
सम्+रक्षा = संरक्षा
सम्+सार = संसार
सम्+रक्षक = संरक्षक
सम्+युक्त = संयुक्त
सम्+स्मरण = संस्मरण
स्वयम्+वर = स्वयंवर
सम्+हित = संहिता

11. यदि 'स' से पहले अ या आ से भिन्न कोई स्वर हो तो स का 'ष' हो जाता है। जैसे–
अ, आ से भिन्न स्वर+स = स के स्थान पर ष
वि+सम = विषम
नि+सेध = निषेध
नि+सिद्ध = निषिद्ध
अभि+सेक = अभिषेक
परि+सद् = परिषद्
नि+स्नात = निष्णात
अभि+सिक्त = अभिषिक्त
सु+सुप्ति = सुषुप्ति
उपनि+सद = उपनिषद
अपवाद–
अनु+सरण = अनुसरण
अनु+स्वार = अनुस्वार
वि+स्मरण = विस्मरण
वि+सर्ग = विसर्ग

12. यदि ‘ष्’ के बाद ‘त’ या ‘थ’ हो तो ‘ष्’ आधा वर्ण तथा ‘त’ के स्थान पर ‘ट’ और ‘थ’ के स्थान पर ‘ठ’ हो जाता है। जैसे–
ष्+त/थ = ष्ट/ष्ठ
आकृष्+त = आकृष्ट
उत्कृष्+त = उत्कृष्ट
तुष्+त = तुष्ट
सृष्+ति = सृष्टि
षष्+थ = षष्ठ
पृष्+थ = पृष्ठ

13. यदि ‘द्’ के बाद क, त, थ, प या स आये तो ‘द्’ का ‘त्’ हो जाता है। जैसे–
द्+क, त, थ, प, स = द् की जगह त्
उद्+कोच = उत्कोच
मृद्+तिका = मृत्तिका
विपद्+ति = विपत्ति
आपद्+ति = आपत्ति
तद्+पर = तत्पर
संसद्+सत्र = संसत्सत्र
संसद्+सदस्य = संसत्सदस्य
उपनिषद्+काल = उपनिषत्काल
उद्+तर = उत्तर
तद्+क्षण = तत्क्षण
विपद्+काल = विपत्काल
शरद्+काल = शरत्काल
मृद्+पात्र = मृत्पात्र

14. यदि ‘ऋ’ और ‘द्’ के बाद ‘म’ आये तो ‘द्’ का ‘ण्’ बन जाता है। जैसे–
ऋद्+म = ण्म
मृद्+मय = मृण्मय
मृद्+मूर्ति = मृण्मूर्ति

15. यदि इ, ऋ, र, ष के बाद स्वर, कवर्ग, पवर्ग, अनुस्वार, य, व, ह में से किसी वर्ण के बाद ‘न’ आ जाये तो ‘न’ का ‘ण’ हो जाता है। जैसे–
(i) इ/ऋ/र/ष+ न= न के स्थान पर ण
(ii) इ/ऋ/र/ष+स्वर/क वर्ग/प वर्ग/अनुस्वार/य, व, ह+न = न के स्थान पर ण
प्र+मान = प्रमाण
भर+न = भरण
नार+अयन = नारायण
परि+मान = परिमाण
परि+नाम = परिणाम
प्र+यान = प्रयाण
तर+न = तरण
शोष्+अन् = शोषण
परि+नत = परिणत
पोष्+अन् = पोषण
विष्+नु = विष्णु
राम+अयन = रामायण
भूष्+अन = भूषण
ऋ+न = ऋण
मर+न = मरण
पुरा+न = पुराण
हर+न = हरण
तृष्+ना = तृष्णा
तृ+न = तृण
प्र+न = प्रण

16. यदि सम् के बाद कृत, कृति, करण, कार आदि में से कोई शब्द आये तो म् का अनुस्वार बन जाता है एवं स् का आगमन हो जाता है। जैसे–
सम्+कृत = संस्कृत
सम्+कृति = संस्कृति
सम्+करण = संस्करण
सम्+कार = संस्कार

17. यदि परि के बाद कृत, कार, कृति, करण आदि में से कोई शब्द आये तो संधि में ‘परि’ के बाद ‘ष्’ का आगम हो जाता है। जैसे–
परि+कार = परिष्कार
परि+कृत = परिष्कृत
परि+करण = परिष्करण
परि+कृति = परिष्कृति

3. विसर्ग संधि

जहाँ विसर्ग (:) के बाद स्वर या व्यंजन आने पर विसर्ग का लोप हो जाता है या विसर्ग के स्थान पर कोई नया वर्ण आ जाता है, वहाँ विसर्ग संधि होती है।

विसर्ग संधि के नियम निम्न प्रकार हैं–
1. यदि ‘अ’ के बाद विसर्ग हो और उसके बाद वर्ग का तीसरा, चौथा, पांचवाँ वर्ण या अन्तःस्थ वर्ण (य, र, ल, व) हो, तो ‘अः’ का ‘ओ’ हो जाता है। जैसे–
अः+किसी वर्ग का तीसरा, चौथा, पाँचवाँ वर्ण, य, र, ल, व = अः का ओ
मनः+वेग = मनोवेग

मनः+अभिलाषा = मनोभिलाषा
मनः+अनुभूति = मनोभूति
पयः+निधि = पयोनिधि
यशः+अभिलाषा = यशोभिलाषा
मनः+बल = मनोबल
मनः+रंजन = मनोरंजन
तपः+बल = तपोबल
तपः+भूमि = तपोभूमि
मनः+हर = मनोहर
वयः+वृद्ध = वयोवृद्ध
सरः+ज = सरोज
मनः+नयन = मनोनयन
पयः+द = पयोद
तपः+धन = तपोधन
उरः+ज = उरोज
शिरः+भाग = शिरोभाग
मनः+व्यथा = मनोव्यथा
मनः+नीत = मनोनीत
तमः+गुण = तमोगुण
पुरः+गामी = पुरोगामी
रजः+गुण = रजोगुण
मनः+विकार = मनोविकार
अधः+गति = अधोगति
पुरः+हित = पुरोहित
यशः+दा = यशोदा
यशः+गान = यशोगान
मनः+ज = मनोज
मनः+विज्ञान = मनोविज्ञान
मनः+दशा = मनोदशा

2. यदि विसर्ग से पहले और बाद में 'अ' हो, तो पहला 'अ' और विसर्ग मिलकर 'ओऽ' या 'ओ' हो जाता है तथा बाद के 'अ' का लोप हो जाता है। जैसे–
अः+अ = ओऽ/ओ
यशः+अर्थी = यशोऽर्थी/यशोर्थी
मनः+अनुकूल = मनोऽनुकूल/मनोनुकूल
प्रथमः+अध्याय = प्रथमोऽध्याय/प्रथमोध्याय
मनः+अभिराम = मनोऽभिराम/मनोभिराम
परः+अक्ष = परोक्ष

3. यदि विसर्ग से पहले 'अ' या 'आ' से भिन्न कोई स्वर तथा बाद में कोई स्वर, किसी वर्ग का तीसरा, चौथा, पाँचवाँ वर्ण या य, र, ल, व में से कोई वर्ण हो तो विसर्ग का 'र्' हो जाता है। जैसे–
अ, आ से भिन्न स्वर+वर्ग का तीसरा, चौथा, पाँचवाँ वर्ण/य, र, ल, व, ह = (:) का 'र्'
दुः+बल = दुर्बल
पुनः+आगमन = पुनरागमन
आशीः+वाद = आशीर्वाद
निः+मल = निर्मल
दुः+गुण = दुर्गुण
आयुः+वेद = आयुर्वेद
बहिः+रंग = बहिरंग
दुः+उपयोग = दुरुपयोग
निः+बल = निर्बल
बहिः+मुख = बहिर्मुख
दुः+ग = दुर्ग
प्रादुः+भाव = प्रादुर्भाव
निः+आशा = निराशा
निः+अर्थक = निरर्थक
निः+यात = निर्यात
दुः+आशा = दुराशा
निः+उत्साह = निरुत्साह
आविः+भाव = आविर्भाव
आशीः+वचन = आशीर्वचन
निः+आहार = निराहार
निः+आधार = निराधार
निः+भय = निर्भय
निः+आमिष = निरामिष
निः+विघ्न = निर्विघ्न
धनुः+धर = धनुर्धर

4. यदि विसर्ग के बाद 'र' हो तो विसर्ग का लोप हो जाता है और विसर्ग से पहले का स्वर दीर्घ हो जाता है। जैसे–
ह्रस्व स्वर(:)+र = (:) का लोप व पूर्व का स्वर दीर्घ
निः+रोग = नीरोग
निः+रज = नीरज
निः+रस = नीरस
निः+रव = नीरव

5. यदि विसर्ग के बाद 'च' या 'छ' हो तो विसर्ग का 'श्', 'ट' या 'ठ' हो तो 'ष्' तथा 'त', 'थ', 'क', 'स्' हो तो 'स्' हो जाता है। जैसे–
विसर्ग (:)+च/छ = श्

निः+चय = निश्चय
निः+चिन्त = निश्चिन्त
दुः+चरित्र = दुश्चरित्र
हयिः+चन्द्र = हरिश्चन्द्र
पुरः+चरण = पुरश्चरण
तपः+चर्या = तपश्चर्या
कः+चित् = कश्चित्
मनः+चिकित्सा = मनश्चिकित्सा
निः+चल = निश्चल
निः+छल = निश्छल
दुः+चक्र = दुश्चक्र
पुनः+चर्या = पुनश्चर्या
अः+चर्य = आश्चर्य
विसर्ग(:)+ट/ठ = ष्
धनुः+टंकार = धनुष्टंकार
निः+ठुर = निष्ठुर
विसर्ग(:)+त/थ = स्
मनः+ताप = मनस्ताप
दुः+तर = दुस्तर
निः+तेज = निस्तेज
निः+तार = निस्तार
नमः+ते = नमस्ते
अः/आः+क = स्
भाः+कर = भास्कर
पुरः+कृत = पुरस्कृत
नमः+कार = नमस्कार
तिरः+कार = तिरस्कार

6. यदि विसर्ग से पहले 'इ' या 'उ' हो और बाद में क, ख, प, फ हो तो विसर्ग का 'ष्' हो जाता है। जैसे–
इः/उः+क/ख/प/फ = ष्
निः+कपट = निष्कपट
दुः+कर्म = दुष्कर्म
निः+काम = निष्काम
दुः+कर = दुष्कर
बहिः+कृत = बहिष्कृत
चतुः+कोण = चतुष्कोण
निः+प्रभ = निष्प्रभ
निः+फल = निष्फल
निः+पाप = निष्पाप
दुः+प्रकृति = दुष्प्रकृति
दुः+परिणाम = दुष्परिणाम
चतुः+पद = चतुष्पद

7. यदि विसर्ग के बाद श, ष, स हो तो विसर्ग ज्यों के त्यों रह जाते हैं या विसर्ग का स्वरूप बाद वाले वर्ण जैसा हो जाता है। जैसे–
विसर्ग+श/ष/स = (:) या श्श/ष्ष/स्स
निः+शुल्क = निःशुल्क/निश्शुल्क
दुः+शासन = दुःशासन/दुश्शासन
यशः+शरीर = यशःशरीर/यश्शरीर
निः+सन्देह = निःसन्देह/निस्सन्देह
निः+सन्तान = निःसन्तान/निस्सन्तान
निः+संकोच = निःसंकोच/निस्संकोच
दुः+साहस = दुःसाहस/दुस्साहस
दुः+सह = दुःसह/दुस्सह

8. यदि विसर्ग के बाद क, ख, प, फ हो तो विसर्ग में कोई परिवर्तन नहीं होता है। जैसे–
अः+क/ख/प/फ = (:) का लोप नहीं
अन्तः+करण = अन्तःकरण
प्रातः+काल = प्रातःकाल
पयः+पान = पयःपान
अधः+पतन = अधःपतन
मनः+कामना = मनःकामना

9. यदि 'अ' के बाद विसर्ग हो और उसके बाद 'अ' से भिन्न कोई स्वर हो तो विसर्ग का लोप हो जाता है और पास आये स्वरों में संधि नहीं होती है। जैसे–
अः+अ से भिन्न स्वर = विसर्ग का लोप
अतः+एव = अत एव
पयः+ओदन = पय ओदन
रजः+उद्गम = रज उद्गम
यशः+इच्छा = यश इच्छा

हिन्दी भाषा की अन्य संधियाँ

हिन्दी की कुछ विशेष सन्धियाँ भी हैं। इनमें स्वरों का दीर्घ का हृस्व होना और हृस्व का दीर्घ हो जाना, स्वर का आगम या लोप हो जाना आदि मुख्य हैं। इसमें व्यंजनों का परिवर्तन प्रायः अत्यल्प होता है। उपसर्ग या प्रत्ययों से भी इस तरह की संधियाँ हो जाती हैं। ये अन्य संधियाँ निम्न प्रकार हैं–
1. हृस्वीकरण–
(क) आदि हृस्व– इसमें संधि के कारण पहला दीर्घ स्वर हृस्व हो जाता है। जैसे –

घोड़ा+सवार = घुड़सवार
घोड़ा+चढ़ी = घुड़चढ़ी
दूध+मुँहा = दुधमुँहा
कान+कटा = कनकटा
काठ+फोड़ा = कठफोड़ा
काठ+पुतली = कठपुतली
मोटा+पा = मुटापा
छोटा+भैया = छुटभैया
लोटा+इया = लुटिया
मूँछ+कटा = मुँछकटा
आधा+खिला = अधखिला
काला+मुँहा = कलमुँहा
ठाकुर+आइन = ठकुराइन
लकड़ी+हारा = लकड़हारा
(ख) उभयपद हृस्व– दोनोँ पदोँ के दीर्घ स्वर हृस्व हो जाता है। जैसे –
एक+साठ = इकसठ
काट+खाना = कटखाना
पानी+घाट = पनघट
ऊँचा+नीचा = ऊँचनीच
लेना+देना = लेनदेन

2. दीर्घीकरण–
इसमेँ संधि के कारण हृस्व स्वर दीर्घ हो जाता है और पद का कोई अंश लुप्त भी हो जाता है। जैसे–
दीन+नाथ = दीनानाथ
ताल+मिलाना = तालमेल
मूसल+धार = मूसलाधार
आना+जाना = आवाजाही
व्यवहार+इक = व्यावहारिक
उत्तर+खंड = उत्तराखंड
लिखना+पढ़ना = लिखापढ़ी
हिलना+मिलना = हेलमेल
मिलना+जुलना = मेलजोल
प्रयोग+इक = प्रायोगिक
स्वस्थ+य = स्वास्थ्य
वेद+इक = वैदिक
नीति+इक = नैतिक
योग+इक = यौगिक
भूत+इक = भौतिक
कुंती+एय = कौँतेय
वसुदेव+अ = वासुदेव
दिति+य = दैत्य
देव+इक = दैविक
सुंदर+य = सौँदर्य
पृथक+य = पार्थक्य

3. स्वरलोप–
इसमेँ संधि के कारण कोई स्वर लुप्त हो जाता है। जैसे–
बकरा+ईद = बकरीद।

4. व्यंजन लोप–
इसमेँ कोई व्यंजन सन्धि के कारण लुप्त हो जाता है।
(क) 'स' या 'ह' के बाद 'ह्' होने पर 'ह्' का लोप हो जाता है। जैसे–
इस+ही = इसी
उस+ही = उसी
यह+ही = यही
वह+ही = वही
(ख) 'हाँ' के बाद 'ह' होने पर 'हाँ' का लोप हो जाता है तथा बने हुए शब्द के अन्त मेँ अनुस्वार लगता है। जैसे–
यहाँ+ही = यहीँ
वहाँ+ही = वहीँ
कहाँ+ही = कहीँ
(ग) 'ब' के बाद 'ह्' होने पर 'ब' का 'भ' हो जाता है और 'ह्' का लोप हो जाता है। जैसे–
अब+ही = अभी
तब+ही = तभी
कब+ही = कभी
सब+ही = सभी

5. आगम संधि–
इसमेँ सन्धि के कारण कोई नया वर्ण बीच मेँ आ जुड़ता है। जैसे–
खा+आ = खाया
रो+आ = रोया
ले+आ = लिया
पी+ए = पीजिए
ले+ए = लीजिए
आ+ए = आइए।

कुछ विशिष्ट संधियों के उदाहरण:

नव+रात्रि = नवरात्र
प्राणिन्+विज्ञान = प्राणिविज्ञान
शशिन्+प्रभा = शशिप्रभा
अक्ष+ऊहिनी = अक्षौहिणी
सुहृद+अ = सौहार्द
अहन्+निश = अहर्निश
प्र+भू = प्रभु
अप+अंग = अपंग/अपांग
अधि+स्थान = अधिष्ठान
मनस्+ईष = मनीष
प्र+ऊढ़ = प्रौढ़
उपनिषद्+मीमांसा = उपनिषन्मीमांसा
गंगा+एय = गांगेय
राजन्+तिलक = राजतिलक
दायिन्+त्व = दायित्व
विश्व+मित्र = विश्वामित्र
मार्त+अण्ड = मार्तण्ड
दिवा+रात्रि = दिवारात्र
कुल+अटा = कुलटा
पतत्+अंजलि = पतंजलि
योगिन्+ईश्वर = योगीश्वर
अहन्+मुख = अहर्मुख
सीम+अंत = सीमंत/सीमांत

♦♦♦

समास

'समास' शब्द का शाब्दिक अर्थ है– संक्षिप्त करना। सम्+आस् = 'सम्' का अर्थ है– अच्छी तरह पास एवं 'आस्' का अर्थ है– बैठना या मिलना। अर्थात् दो शब्दों को पास–पास मिलाना।

'जब परस्पर सम्बन्ध रखने वाले दो या दो से अधिक शब्दों के बीच की विभक्ति हटाकर, उन्हें मिलाकर जब एक नया स्वतन्त्र शब्द बनाया जाता है, तब इस मेल को समास कहते हैं।'

परस्पर मिले हुए शब्दों को समस्त–पद अर्थात् समास किया हुआ, या सामासिक शब्द कहते हैं। जैसे– यथाशक्ति, त्रिभुवन, रामराज्य आदि।

समस्त पद के शब्दों (मिले हुए शब्दों) को अलग–अलग करने की प्रक्रिया को 'समास–विग्रह' कहते हैं। जैसे– यथाशक्ति = शक्ति के अनुसार।

हिन्दी में समास प्रायः नए शब्द–निर्माण हेतु प्रयोग में लिए जाते हैं। भाषा में संक्षिप्तता, उत्कृष्टता, तीव्रता व गंभीरता लाने के लिए भी समास उपयोगी हैं। समास प्रकरण संस्कृत साहित्य में अति प्राचीन प्रतीत होता है। श्रीमद्भगवद्गीता में भगवान श्रीकृष्ण ने भी कहा है—"मैं समासों में द्वन्द्व समास में हूँ।"

जिन दो मुख्य शब्दों के मेल से समास बनता है, उन शब्दों को खण्ड या अवयव या पद कहते हैं। समस्त पद या सामासिक पद का विग्रह करने पर समस्त पद के दो पद बन जाते हैं– पूर्व पद और उत्तर पद। जैसे– घनश्याम में 'घन' पूर्व पद और 'श्याम' उत्तर पद है।

जिस खण्ड या पद पर अर्थ का मुख्य बल पड़ता है, उसे प्रधान पद कहते हैं। जिस पद पर अर्थ का बल नहीं पड़ता, उसे गौण पद कहते हैं। इस आधार पर (संस्कृत की दृष्टि से) समास के चार भेद माने गए हैं–
1. जिस समास में पूर्व पद प्रधान होता है, वह—'अव्ययीभाव समास'।
2. जिस समास में उत्तर पद प्रधान होता है, वह—'तत्पुरुष समास'।
3. जिस समास में दोनों पद प्रधान हों, वह—'द्वन्द्व समास' तथा
4. जिस समास में दोनों पदों में से कोई प्रधान न हो, वह—'बहुब्रीहि समास'।

हिन्दी में समास के छः भेद प्रचलित हैं। जो निम्न प्रकार हैं—
1. अव्ययीभाव समास
2. तत्पुरुष समास
3. द्वन्द्व समास
4. बहुब्रीहि समास
5. कर्मधारय समास
6. द्विगु समास।

1. अव्ययीभाव समास–
जिस समस्त पद में पहला पद अव्यय होता है, अर्थात् अव्यय पद के साथ दूसरे पद, जो संज्ञा या कुछ भी हो सकता है, का समास किया जाता है, उसे अव्ययीभाव समास कहते हैं। प्रथम पद के साथ मिल जाने पर समस्त पद ही अव्यय बन जाता है। इन समस्त पदों का प्रयोग क्रियाविशेषण के समान होता है।

अव्यय शब्द वे हैं जिन पर काल, वचन, पुरुष, लिँग आदि का कोई प्रभाव नहीं पड़ता अर्थात् रूप परिवर्तन नहीं होता। ये शब्द जहाँ भी प्रयुक्त किये जाते हैं, वहाँ उसी रूप में ही रहेंगे। जैसे– यथा, प्रति, आ, हर, बे, नि आदि।

पद के क्रिया विशेषण अव्यय की भाँति प्रयोग होने पर अव्ययीभाव समास की निम्नांकित स्थितियाँ बन सकती हैं–
(1) अव्यय+अव्यय–ऊपर-नीचे, दाएँ-बाएँ, इधर-उधर, आस-पास, जैसे-तैसे, यथा-शक्ति, यत्र-तत्र।
(2) अव्ययों की पुनरुक्ति– धीरे-धीरे, पास-पास, जैसे-जैसे।
(3) संज्ञा+संज्ञा– नगर-डगर, गाँव-शहर, घर-द्वार।
(4) संज्ञाओं की पुनरुक्ति– दिन-दिन, रात-रात, घर-घर, गाँव-गाँव, वन-वन।
(5) संज्ञा+अव्यय– दिवसोपरान्त, क्रोध-वश।
(6) विशेषण संज्ञा– प्रतिदिवस, यथा अवसर।

(7) कृदन्त+कृदन्त– जाते-जाते, सोते-जागते।
(8) अव्यय+विशेषण– भरसक, यथासम्भव।

अव्ययीभाव समास के उदाहरण:
समस्त–पद — विग्रह
यथारूप – रूप के अनुसार
यथायोग्य – जितना योग्य हो
यथाशक्ति – शक्ति के अनुसार
प्रतिक्षण – प्रत्येक क्षण
भरपूर – पूरा भरा हुआ
अत्यन्त – अन्त से अधिक
रातोंरात – रात ही रात में
अनुदिन – दिन पर दिन
निरन्ध्र – रन्ध्र से रहित
आमरण – मरने तक
आजन्म – जन्म से लेकर
आजीवन – जीवन पर्यन्त
प्रतिशत – प्रत्येक शत (सौ) पर
भरपेट – पेट भरकर
प्रत्यक्ष – अक्षि (आँखों) के सामने
दिनोंदिन – दिन पर दिन
सार्थक – अर्थ सहित
सप्रसंग – प्रसंग के साथ
प्रत्युत्तर – उत्तर के बदले उत्तर
यथार्थ – अर्थ के अनुसार
आकंठ – कंठ तक
घर–घर – हर घर/प्रत्येक घर
यथाशीघ्र – जितना शीघ्र हो
श्रद्धापूर्वक – श्रद्धा के साथ
अनुरूप – जैसा रूप है वैसा
अकारण – बिना कारण के
हाथों हाथ – हाथ ही हाथ में
बेधड़क – बिना धड़क के
प्रतिपल – हर पल
नीरोग – रोग रहित
यथाक्रम – जैसा क्रम है
साफ–साफ – बिल्कुल स्पष्ट
यथेच्छ – इच्छा के अनुसार
प्रतिवर्ष – प्रत्येक वर्ष
निर्विरोध – बिना विरोध के
नीरव – रव (ध्वनि) रहित
बेवजह – बिना वजह के
प्रतिबिंब – बिंब का बिंब
दानार्थ – दान के लिए
उपकूल – कूल के समीप की
क्रमानुसार – क्रम के अनुसार
कर्मानुसार – कर्म के अनुसार
अंतर्व्यथा – मन के अंदर की व्यथा
यथासंभव – जहाँ तक संभव हो
यथावत् – जैसा था, वैसा ही
यथास्थान – जो स्थान निर्धारित है
प्रत्युपकार – उपकार के बदले किया जाने वाला उपकार
मंद–मंद – मंद के बाद मंद, बहुत ही मंद
प्रतिलिपि – लिपि के समकक्ष लिपि
यावज्जीवन – जब तक जीवन रहे
प्रतिहिंसा – हिंसा के बदले हिंसा
बीचों–बीच – बीच के बीच में
कुशलतापूर्वक – कुशलता के साथ
प्रतिनियुक्ति – नियमित नियुक्ति के बदले नियुक्ति
एकाएक – एक के बाद एक
प्रत्याशा – आशा के बदले आशा
प्रतिक्रिया – क्रिया से प्रेरित क्रिया
सकुशल – कुशलता के साथ
प्रतिध्वनि – ध्वनि की ध्वनि
सपरिवार – परिवार के साथ
दरअसल – असल में
अनजाने – जाने बिना
अनुवंश – वंश के अनुकूल
पल–पल – प्रत्येक पल
चेहरे–चेहरे – हर चेहरे पर
प्रतिदिन – हर दिन
प्रतिक्षण – हर क्षण
सशक्त – शक्ति के साथ
दिनभर – पूरे दिन
निडर – बिना डर के

भरसक – शक्ति भर
सानंद – आनंद सहित
व्यर्थ – बिना अर्थ के
यथामति – मति के अनुसार
निर्विकार – बिना विकार के
अतिवृष्टि – वृष्टि की अति
नीरंध्र – रंध्र रहित
यथाविधि – जैसी विधि निर्धारित है
प्रतिघात – घात के बदले घात
अनुदान – दान की तरह दान
अनुगमन – गमन के पीछे गमन
प्रत्यारोप – आरोप के बदले आरोप
अभूतपूर्व – जो पूर्व में नहीं हुआ
आपादमस्तक – पाद (पाँव) से लेकर मस्तक तक
यथासमय – जो समय निर्धारित है
घड़ी–घड़ी – घड़ी के बाद घड़ी
अत्युत्तम – उत्तम से अधिक
अनुसार – जैसा सार है वैसा
निर्विवाद – बिना विवाद के
यथेष्ट – जितना चाहिए उतना
अनुकरण – करण के अनुसार करना
अनुसरण – सरण के बाद सरण (जाना)
अत्याधुनिक – आधुनिक से भी आधुनिक
निरामिष – बिना आमिष (माँस) के
घर–घर – घर ही घर
बेखटके – बिना खटके
यथासामर्थ्य – सामर्थ्य के अनुसार

2. तत्पुरुष समास–

जिस समास में दूसरा पद अर्थ की दृष्टि से प्रधान हो, उसे तत्पुरुष समास कहते हैं। इस समास में पहला पद संज्ञा अथवा विशेषण होता है इसलिए वह दूसरे पद विशेष्य पर निर्भर करता है, अर्थात् दूसरा पद प्रधान होता है। तत्पुरुष समास का लिँग–वचन अंतिम पद के अनुसार ही होता है। जैसे– जलधारा का विग्रह है– जल की धारा। 'जल की धारा बह रही है' इस वाक्य में 'बह रही है' का सम्बन्ध धारा से है जल से नहीं। धारा के कारण 'बह रही' क्रिया स्त्रीलिँग में है। यहाँ बाद वाले शब्द 'धारा' की प्रधानता है अतः यह तत्पुरुष समास है।

तत्पुरुष समास में प्रथम पद के साथ कर्त्ता और सम्बोधन कारकों को छोड़कर अन्य कारक चिह्नों (विभक्तियों) का प्रायः लोप हो जाता है। अतः पहले पद में जिस कारक या विभक्ति का लोप होता है, उसी कारक या विभक्ति के नाम से इस समास का नामकरण होता है। जैसे – द्वितीया या कर्मकारक तत्पुरुष = स्वर्गप्राप्त – स्वर्ग को प्राप्त।

कारक चिह्न इस प्रकार हैं –

क्र.सं. कारक का नाम चिह्न
1— कर्ता – ने
2— कर्म – को
3— करण – से (के द्वारा)
4— सम्प्रदान – के लिए
5— अपादान – से (पृथक भाव में)
6— सम्बन्ध – का, की, के, रा, री, रे
7— अधिकरण – में, पर, ऊपर
8— सम्बोधन – हे!, अरे! ओ!

चूँकि तत्पुरुष समास में कर्ता और संबोधन कारक–चिह्नों का लोप नहीं होता अतः इसमें इन दोनों के उदाहरण नहीं हैं। अन्य कारक चिह्नों के आधार पर तत्पुरुष समास के भेद इस प्रकार हैं –

(1) कर्म तत्पुरुष –

समस्त पद विग्रह
हस्तगत – हाथ को गत
जातिगत – जाति को गया हुआ
मुँहतोड़ – मुँह को तोड़ने वाला
दुःखहर – दुःख को हरने वाला
यशप्राप्त – यश को प्राप्त
पदप्राप्त – पद को प्राप्त
ग्रामगत – ग्राम को गत
स्वर्ग प्राप्त – स्वर्ग को प्राप्त
देशगत – देश को गत
आशातीत – आशा को अतीत(से परे)
चिड़ीमार – चिड़ी को मारने वाला
कठफोड़वा – काष्ठ को फोड़ने वाला
दिलतोड़ – दिल को तोड़ने वाला
जीतोड़ – जी को तोड़ने वाला
जीभर – जी को भरकर
लाभप्रद – लाभ को प्रदान करने वाला
शरणागत – शरण को आया हुआ
रोजगारोन्मुख – रोजगार को उन्मुख
सर्वज्ञ – सर्व को जानने वाला
गगनचुम्बी – गगन को चूमने वाला
परलोकगमन – परलोक को गमन
चित्तचोर – चित्त को चोरने वाला
ख्याति प्राप्त – ख्याति को प्राप्त
दिनकर – दिन को करने वाला

जितेन्द्रिय – इंद्रियाँ को जीतने वाला
चक्रधर – चक्र को धारण करने वाला
धरणीधर – धरणी (पृथ्वी) को धारण करने वाला
गिरिधर – गिरि को धारण करने वाला
हलधर – हल को धारण करने वाला
मरणातुर – मरने को आतुर
कालातीत – काल को अतीत (परे) करके
वयप्राप्त – वय (उम्र) को प्राप्त

(ख) करण तत्पुरुष –
तुलसीकृत – तुलसी द्वारा कृत
अकालपीड़ित – अकाल से पीड़ित
श्रमसाध्य – श्रम से साध्य
कष्टसाध्य – कष्ट से साध्य
ईश्वरदत्त – ईश्वर द्वारा दिया गया
रत्नजड़ित – रत्न से जड़ित
हस्तलिखित – हस्त से लिखित
अनुभव जन्य – अनुभव से जन्य
रेखांकित – रेखा से अंकित
गुरुदत्त – गुरु द्वारा दत्त
सूरकृत – सूर द्वारा कृत
दयार्द्र – दया से आर्द्र
मुँहमाँगा – मुँह से माँगा
मदमत्त – मद (नशे) से मत्त
रोगातुर – रोग से आतुर
भुखमरा – भूख से मरा हुआ
कपड़छान – कपड़े से छाना हुआ
स्वयंसिद्ध – स्वयं से सिद्ध
शोकाकुल – शोक से आकुल
मेघाच्छन्न – मेघ से आच्छन्न
अश्रुपूर्ण – अश्रु से पूर्ण
वचनबद्ध – वचन से बद्ध
वाग्युद्ध – वाक् (वाणी) से युद्ध
क्षुधातुर – क्षुधा से आतुर
शल्यचिकित्सा – शल्य (चीर-फाड़) से चिकित्सा
आँखोंदेखा – आँखों से देखा

(ग) सम्प्रदान तत्पुरुष –
देशभक्ति – देश के लिए भक्ति
गुरुदक्षिणा – गुरु के लिए दक्षिणा
भूतबलि – भूत के लिए बलि
प्रौढ़ शिक्षा – प्रौढ़ों के लिए शिक्षा
यज्ञशाला – यज्ञ के लिए शाला
शपथपत्र – शपथ के लिए पत्र
स्नानागार – स्नान के लिए आगार
कृष्णार्पण – कृष्ण के लिए अर्पण
युद्धभूमि – युद्ध के लिए भूमि
बलिपशु – बलि के लिए पशु
पाठशाला – पाठ के लिए शाला
रसोईघर – रसोई के लिए घर
हथकड़ी – हाथ के लिए कड़ी
विद्यालय – विद्या के लिए आलय
विद्यामंदिर – विद्या के लिए मंदिर
डाक गाड़ी – डाक के लिए गाड़ी
सभाभवन – सभा के लिए भवन
आवेदन पत्र – आवेदन के लिए पत्र
हवन सामग्री – हवन के लिए सामग्री
कारागृह – कैदियों के लिए गृह
परीक्षा भवन – परीक्षा के लिए भवन
सत्याग्रह – सत्य के लिए आग्रह
छात्रावास – छात्रों के लिए आवास
युववाणी – युवाओं के लिए वाणी
समाचार पत्र – समाचार के लिए पत्र
वाचनालय – वाचन के लिए आलय
चिकित्सालय – चिकित्सा के लिए आलय
बंदीगृह – बंदी के लिए गृह

(घ) अपादान तत्पुरुष –
रोगमुक्त – रोग से मुक्त
लोकभय – लोक से भय
राजद्रोह – राज से द्रोह
जलरिक्त – जल से रिक्त
नरकभय – नरक से भय
देशनिष्कासन – देश से निष्कासन
दोषमुक्त – दोष से मुक्त
बंधनमुक्त – बंधन से मुक्त

जातिभ्रष्ट – जाति से भ्रष्ट
कर्तव्यच्युत – कर्तव्य से च्युत
पदमुक्त – पद से मुक्त
जन्मांध – जन्म से अंधा
देशनिकाला – देश से निकाला
कामचोर – काम से जी चुराने वाला
जन्मरोगी – जन्म से रोगी
भयभीत – भय से भीत
पदच्युत – पद से च्युत
धर्मविमुख – धर्म से विमुख
पदाक्रान्त – पद से आक्रान्त
कर्तव्यविमुख – कर्तव्य से विमुख
पथभ्रष्ट – पथ से भ्रष्ट
सेवामुक्त – सेवा से मुक्त
गुण रहित – गुण से रहित
बुद्धिहीन – बुद्धि से हीन
धनहीन – धन से हीन
भाग्यहीन – भाग्य से हीन

(ङ) सम्बन्ध तत्पुरुष –
देवदास – देव का दास
लखपति – लाखों का पति (मालिक)
करोड़पति – करोड़ों का पति
राष्ट्रपति – राष्ट्र का पति
सूर्योदय – सूर्य का उदय
राजपुत्र – राजा का पुत्र
जगन्नाथ – जगत् का नाथ
मंत्रिपरिषद् – मंत्रियों की परिषद्
राजभाषा – राज्य की (शासन) भाषा
राष्ट्रभाषा – राष्ट्र की भाषा
जमींदार – जमीन का दार (मालिक)
भूकंप – भू का कम्पन
रामचरित – राम का चरित
दुःखसागर – दुःख का सागर
राजप्रासाद – राजा का प्रासाद
गंगाजल – गंगा का जल
जीवनसाथी – जीवन का साथी
देवमूर्ति – देव की मूर्ति
सेनापति – सेना का पति
प्रसंगानुकूल – प्रसंग के अनुकूल
भारतवासी – भारत का वासी
पराधीन – पर के अधीन
स्वाधीन – स्व (स्वयं) के अधीन
मधुमक्खी – मधु की मक्खी
भारतरत्न – भारत का रत्न
राजकुमार – राजा का कुमार
राजकुमारी – राजा की कुमारी
दशरथ सुत – दशरथ का सुत
ग्रन्थावली – ग्रन्थों की अवली
दीपावली – दीपों की अवली (कतार)
गीतांजलि – गीतों की अंजलि
कवितावली – कविता की अवली
पदावली – पदों की अवली
कर्माधीन – कर्म के अधीन
लोकनायक – लोक का नायक
रक्तदान – रक्त का दान
सत्रावसान – सत्र का अवसान
राष्ट्र का पिता
अश्वमेध – अश्व का मेध
माखनचोर – माखन का चोर
नन्दलाल – नन्द का लाल
दीनानाथ – दीनों का नाथ
दीनबन्धु – दीनों (गरीबों) का बन्धु
कर्मयोग – कर्म का योग
ग्रामवासी – ग्राम का वासी
दयासागर – दया का सागर
अक्षांश – अक्ष का अंश
देशान्तर – देश का अन्तर
तुलादान – तुला का दान
कन्यादान – कन्या का दान
गोदान – गौ (गाय) का दान
ग्रामोत्थान – ग्राम का उत्थान
वीर कन्या – वीर की कन्या
पुत्रवधू – पुत्र की वधू
धरतीपुत्र – धरती का पुत्र

वनवासी – वन का वासी
भूतबंगला – भूतों का बंगला
राजसिंहासन – राजा का सिँहासन

(च) अधिकरण तत्पुरुष –
ग्रामवास – ग्राम में वास
आपबीती – आप पर बीती
शोकमग्न – शोक में मग्न
जलमग्न – जल में मग्न
आत्मनिर्भर – आत्म पर निर्भर
तीर्थाटन – तीर्थों में अटन (भ्रमण)
नरश्रेष्ठ – नरों में श्रेष्ठ
गृहप्रवेश – गृह में प्रवेश
घुड़सवार – घोड़े पर सवार
वाक्पटु – वाक् में पटु
धर्मरत – धर्म में रत
धर्मांध – धर्म में अंधा
लोककेन्द्रित – लोक पर केन्द्रित
काव्यनिपुण – काव्य में निपुण
रणवीर – रण में वीर
रणधीर – रण में धीर
रणजीत – रण में जीतने वाला
रणकौशल – रण में कौशल
आत्मविश्वास – आत्मा पर विश्वास
वनवास – वन में वास
लोकप्रिय – लोक में प्रिय
नीतिनिपुण – नीति में निपुण
ध्यानमग्न – ध्यान में मग्न
सिरदर्द – सिर में दर्द
देशाटन – देश में अटन
कविपुंगव – कवियों में पुंगव (श्रेष्ठ)
पुरुषोत्तम – पुरुषों में उत्तम
रसगुल्ला – रस में डूबा हुआ गुल्ला
दहीबड़ा – दही में डूबा हुआ बड़ा
रेलगाड़ी – रेल (पटरी) पर चलने वाली गाड़ी
मुनिश्रेष्ठ – मुनियों में श्रेष्ठ
नरोत्तम – नरों में उत्तम
वाग्वीर – वाक् में वीर
पर्वतारोहण – पर्वत पर आरोहण (चढ़ना)
कर्मनिष्ठ – कर्म में निष्ठ
युधिष्ठिर – युद्ध में स्थिर रहने वाला
सर्वोत्तम – सर्व में उत्तम
कार्यकुशल – कार्य में कुशल
दानवीर – दान में वीर
कर्मवीर – कर्म में वीर
कविराज – कवियों में राजा
सत्तारुढ़ – सत्ता पर आरुढ़
शरणागत – शरण में आया हुआ
गजारुढ़ – गज पर आरुढ़

♦ तत्पुरुष समास के उपभेद –

उपर्युक्त भेदों के अलावा तत्पुरुष समास के दो उपभेद होते हैं –

(i) अलुक् तत्पुरुष – इसमें समास करने पर पूर्वपद की विभक्ति का लोप नहीं होता है। जैसे—
युधिष्ठिर—युद्धि (युद्ध में) + स्थिर = ज्येष्ठ पाण्डव
मनसिज—मनसि (मन में) + ज (उत्पन्न) = कामदेव
खेचर—खे (आकाश) + चर (विचरने वाला) = पक्षी
(ii) नञ् तत्पुरुष – इस समास में द्वितीय पद प्रधान होता है किन्तु प्रथम पद संस्कृत के नकारात्मक अर्थ को देने वाले 'अ' और 'अन्' उपसर्ग से युक्त होता है। इसमें निषेध अर्थ में 'न' के स्थान पर यदि बाद में व्यंजन वर्ण हो तो 'अ' तथा बाद में स्वर हो तो 'न' के स्थान पर 'अन्' हो जाता है। जैसे –
अनाथ – न (अ) नाथ
अन्याय – न (अ) न्याय
अनाचार – न (अन्) आचार
अनादर – न (अन्) आदर
अजन्मा – न जन्म लेने वाला
अमर – न मरने वाला
अडिग – न डिगने वाला
अशोच्य – नहीं है शोचनीय जो
अनभिज्ञ – न अभिज्ञ
अकर्म – बिना कर्म के
अनादर – आदर से रहित
अधर्म – धर्म से रहित
अनदेखा – न देखा हुआ
अचल – न चल
अछूत – न छूत
अनिच्छुक – न इच्छुक
अनाश्रित – न आश्रित
अगोचर – न गोचर

अनावृत – न आवृत
नालायक – नहीं है लायक जो
अनन्त – न अन्त
अनादि – न आदि
असंभव – न संभव
अभाव – न भाव
अलौकिक – न लौकिक
अनपढ़ – न पढ़ा हुआ
निर्विवाद – बिना विवाद के

3. द्वन्द्व समास –

जिस समस्त पद में दोनों अथवा सभी पद प्रधान हों तथा उनके बीच में समुच्चयबोधक–'और, या, अथवा, आदि' का लोप हो गया हो, तो वहाँ द्वन्द्व समास होता है। जैसे –
अन्नजल – अन्न और जल
देश–विदेश – देश और विदेश
राम–लक्ष्मण – राम और लक्ष्मण
रात–दिन – रात और दिन
खट्टामीठा – खट्टा और मीठा
जला–भुना – जला और भुना
माता–पिता – माता और पिता
दूधरोटी – दूध और रोटी
पढ़ा–लिखा – पढ़ा और लिखा
हरि–हर – हरि और हर
राधाकृष्ण – राधा और कृष्ण
राधेश्याम – राधे और श्याम
सीताराम – सीता और राम
गौरीशंकर – गौरी और शंकर
अड़सठ – आठ और साठ
पच्चीस – पाँच और बीस
छात्र–छात्राएँ – छात्र और छात्राएँ
कन्द–मूल–फल – कन्द और मूल और फल
गुरु–शिष्य – गुरु और शिष्य
राग–द्वेष – राग या द्वेष
एक–दो – एक या दो
दस–बारह – दस या बारह
लाख–दो–लाख – लाख या दो लाख
पल–दो–पल – पल या दो पल
आर–पार – आर या पार
पाप–पुण्य – पाप या पुण्य
उल्टा–सीधा – उल्टा या सीधा
कर्तव्याकर्तव्य – कर्तव्य अथवा अकर्तव्य
सुख–दुख – सुख अथवा दुख
जीवन–मरण – जीवन अथवा मरण
धर्माधर्म – धर्म अथवा अधर्म
लाभ–हानि – लाभ अथवा हानि
यश–अपयश – यश अथवा अपयश
हाथ–पाँव – हाथ, पाँव आदि
नोन–तेल – नोन, तेल आदि
रुपया–पैसा – रुपया, पैसा आदि
आहार–निद्रा – आहार, निद्रा आदि
जलवायु – जल, वायु आदि
कपड़े–लत्ते – कपड़े, लत्ते आदि
बहू–बेटी – बहू, बेटी आदि
पाला–पोसा – पाला, पोसा आदि
साग–पात – साग, पात आदि
काम–काज – काम, काज आदि
खेत–खलिहान – खेत, खलिहान आदि
लूट–मार – लूट, मार आदि
पेड़–पौधे – पेड़, पौधे आदि
भला–बुरा – भला, बुरा आदि
दाल–रोटी – दाल, रोटी आदि
ऊँच–नीच – ऊँच, नीच आदि
धन–दौलत – धन, दौलत आदि
आगा–पीछा – आगा, पीछा आदि
चाय–पानी – चाय, पानी आदि
भूल–चूक – भूल, चूक आदि
फल–फूल – फल, फूल आदि
खरी–खोटी – खरी, खोटी आदि

4. बहुव्रीहि समास –

जिस समस्त पद में कोई भी पद प्रधान नहीं हो, अर्थात् समास किये गये दोनों पदों का शाब्दिक अर्थ छोड़कर तीसरा अर्थ या अन्य अर्थ लिया जावे, उसे बहुव्रीहि समास कहते हैं। जैसे – 'लम्बोदर' का सामान्य अर्थ है– लम्बे उदर (पेट) वाला, परन्तु लम्बोदर सामास में अन्य अर्थ होगा – लम्बा है उदर जिसका वह—गणेश।
अजानुबाहु – जानुओं (घुटनों) तक बाहुएँ हैं जिसकी वह—विष्णु
अजातशत्रु – नहीं पैदा हुआ शत्रु जिसका—कोई व्यक्ति विशेष
वज्रपाणि – वह जिसके पाणि (हाथ) में वज्र है—इन्द्र
मकरध्वज – जिसके मकर का ध्वज है वह—कामदेव

रतिकांत – वह जो रति का कांत (पति) है—कामदेव
आशुतोष – वह जो आशु (शीघ्र) तुष्ट हो जाते हैं—शिव
पंचानन – पाँच है आनन (मुँह) जिसके वह—शिव
वाग्देवी – वह जो वाक् (भाषा) की देवी है—सरस्वती
युधिष्ठिर – जो युद्ध में स्थिर रहता है—धर्मराज (ज्येष्ठ पाण्डव)
षडानन – वह जिसके छह आनन हैं—कार्तिकेय
सप्तऋषि – वे जो सात ऋषि हैं—सात ऋषि विशेष जिनके नाम निश्चित हैं
त्रिवेणी – तीन वेणियाँ (नदियाँ) का संगमस्थल—प्रयाग
पंचवटी – पाँच वटवृक्षों के समूह वाला स्थान—मध्य प्रदेश में स्थान विशेष
रामायण – राम का अयन (आश्रय)—वाल्मीकि रचित काव्य
पंचामृत – पाँच प्रकार का अमृत—दूध, दही, शक्कर, गोबर, गोमूत्र का रसायन विशेष
षड्दर्शन – षट् दर्शनों का समूह—छह विशिष्ट भारतीय दर्शन–न्याय, सांख्य, द्वैत आदि
चारपाई – चार पाए हों जिसके—खाट
विषधर – विष को धारण करने वाला—साँप
अष्टाध्यायी – आठ अध्यायों वाला—पाणिनि कृत व्याकरण
चक्रधर – चक्र धारण करने वाला—श्रीकृष्ण
पतझड़ – वह ऋतु जिसमें पत्ते झड़ते हैं—बसंत
दीर्घबाहु – दीर्घ हैं बाहु जिसके—विष्णु
पतिव्रता – एक पति का व्रत लेने वाली—वह स्त्री
तिरंगा – तीन रंगो वाला—राष्ट्रध्वज
अंशुमाली – अंशु है माला जिसकी—सूर्य
महात्मा – महान् है आत्मा जिसकी—ऋषि
वक्रतुण्ड – वक्र है तुण्ड जिसकी—गणेश
दिगम्बर – दिशाएँ ही हैं वस्त्र जिसके—शिव
घनश्याम – जो घन के समान श्याम है—कृष्ण
प्रफुल्लकमल – खिले हैं कमल जिसमें—वह तालाब
महावीर – महान् है जो वीर—हनुमान व भगवान महावीर
लोकनायक – लोक का नायक है जो—जयप्रकाश नारायण
महाकाव्य – महान् है जो काव्य—रामायण, महाभारत आदि
अनंग – वह जो बिना अंग का है—कामदेव
एकदन्त – एक दंत है जिसके—गणेश
नीलकण्ठ – नीला है कण्ठ जिनका—शिव
पीताम्बर – पीत (पीले) हैं वस्त्र जिसके—विष्णु
कपीश्वर – कपि (वानरों) का ईश्वर है जो—हनुमान
वीणापाणि – वीणा है जिसके पाणि में—सरस्वती
देवराज – देवों का राजा है जो—इन्द्र
हलधर – हल को धारण करने वाला
शशिधर – शशि को धारण करने वाला—शिव
दशमुख – दस हैं मुख जिसके—रावण
चक्रपाणि – चक्र है जिसके पाणि में – विष्णु
पंचानन – पाँच हैं आनन जिसके—शिव
पद्मासना – पद्म (कमल) है आसन जिसका—लक्ष्मी
मनोज – मन से जन्म लेने वाला—कामदेव
गिरिधर – गिरि को धारण करने वाला—श्रीकृष्ण
वसुंधरा – वसु (धन, रत्न) को धारण करती है जो—धरती
त्रिलोचन – तीन हैं लोचन (आँखें) जिसके—शिव
वज्रांग – वज्र के समान अंग हैं जिसके—हनुमान
शूलपाणि – शूल (त्रिशूल) है पाणि में जिसके—शिव
चतुर्भुज – चार हैं भुजाएँ जिसकी—विष्णु
लम्बोदर – लम्बा है उदर जिसका—गणेश
चन्द्रचूड़ – चन्द्रमा है चूड़ (ललाट) पर जिसके—शिव
पुण्डरीकाक्ष – पुण्डरीक (कमल) के समान अक्षि (आँखें) हैं जिसकी—विष्णु
रघुनन्दन – रघु का नन्दन है जो—राम
सूतपुत्र – सूत (सारथी) का पुत्र है जो—कर्ण
चन्द्रमौलि – चन्द्र है मौलि (मस्तक) पर जिसके—शिव
चतुरानन – चार हैं आनन (मुँह) जिसके—ब्रह्मा
अंजनिनन्दन – अंजनि का नन्दन (पुत्र) है जो—हनुमान
पंकज – पंक् (कीचड़) में जन्म लेता है जो—कमल
निशाचर – निशा (रात्रि) में चर (विचरण) करता है जो—राक्षस
मीनकेतु – मीन के समान केतु हैं जिसके—विष्णु
नाभिज – नाभि से जन्मा (उत्पन्न) है जो—ब्रह्मा
वीणावादिनी – वीणा बजाती है जो—सरस्वती
नगराज – नग (पहाड़ों) का राजा है जो—हिमालय
वज्रदन्ती – वज्र के समान दाँत हैं जिसके—हाथी
मारुतिनंदन – मारुति (पवन) का नंदन है जो—हनुमान
शचिपति – शचि का पति है जो—इन्द्र
वसन्तदूत – वसन्त का दूत है जो—कोयल
गजानन – गज (हाथी) जैसा मुख है जिसका—गणेश
गजवदन – गज जैसा वदन (मुख) है जिसका—गणेश
ब्रह्मपुत्र – ब्रह्मा का पुत्र है जो—नारद
भूतनाथ – भूतों का नाथ है जो—शिव
षटपद – छह पैर हैं जिसके—भौंरा
लंकेश – लंका का ईश (स्वामी) है जो—रावण
सिन्धुजा – सिन्धु में जन्मी है जो—लक्ष्मी
दिनकर – दिन को करता है जो—सूर्य

5. कर्मधारय समास –

जिस समास में उत्तरपद प्रधान हो तथा पहला पद विशेषण अथवा उपमान (जिसके द्वारा उपमा दी जाए) हो और दूसरा पद विशेष्य अथवा उपमेय (जिसके द्वारा तुलना की जाए) हो, उसे कर्मधारय समास कहते हैं।

इस समास के दो रूप हैं–

(i) विशेषता वाचक कर्मधारय– इसमें प्रथम पद द्वितीय पद की विशेषता बताता है। जैसे –

महाराज – महान् है जो राजा
महापुरुष – महान् है जो पुरुष
नीलाकाश – नीला है जो आकाश
महाकवि – महान् है जो कवि
नीलोत्पल – नील है जो उत्पल (कमल)
महापुरुष – महान् है जो पुरुष
महर्षि – महान् है जो ऋषि
महासंयोग – महान् है जो संयोग
शुभागमन – शुभ है जो आगमन
सज्जन – सत् है जो जन
महात्मा – महान् है जो आत्मा
सद्बुद्धि – सत् है जो बुद्धि
मंदबुद्धि – मंद है जिसकी बुद्धि
मंदाग्नि – मंद है जो अग्नि
बहुमूल्य – बहुत है जिसका मूल्य
पूर्णांक – पूर्ण है जो अंक
भ्रष्टाचार – भ्रष्ट है जो आचार
शिष्टाचार – शिष्ट है जो आचार
अरुणाचल – अरुण है जो अचल
शीतोष्ण – जो शीत है जो उष्ण है
देवर्षि – देव है जो ऋषि है
परमात्मा – परम है जो आत्मा
अंधविश्वास – अंधा है जो विश्वास
कृतार्थ – कृत (पूर्ण) हो गया है जिसका अर्थ (उद्देश्य)
दृढ़प्रतिज्ञ – दृढ़ है जिसकी प्रतिज्ञा
राजर्षि – राजा है जो ऋषि है
अंधकूप – अंधा है जो कूप
कृष्ण सर्प – कृष्ण (काला) है जो सर्प
नीलगाय – नीली है जो गाय
नीलकमल – नीला है जो कमल
महाजन – महान् है जो जन
महादेव – महान् है जो देव
श्वेताम्बर – श्वेत है जो अम्बर
पीताम्बर – पीत है जो अम्बर
अधपका – आधा है जो पका
अधखिला – आधा है जो खिला
लाल टोपी – लाल है जो टोपी
सद्धर्म – सत् है जो धर्म
कालीमिर्च – काली है जो मिर्च
महाविद्यालय – महान् है जो विद्यालय
परमानन्द – परम है जो आनन्द
दुरात्मा – दुर् (बुरी) है जो आत्मा
भलमानुष – भला है जो मनुष्य
महासागर – महान् है जो सागर
महाकाल – महान् है जो काल
महाद्वीप – महान् है जो द्वीप
कापुरुष – कायर है जो पुरुष
बड़भागी – बड़ा है भाग्य जिसका
कलमुँहा – काला है मुँह जिसका
नकटा – नाक कटा है जो
जवाँ मर्द – जवान है जो मर्द
दीर्घायु – दीर्घ है जिसकी आयु
अधमरा – आधा मरा हुआ
निर्विवाद – विवाद से निवृत्त
महाप्रज्ञ – महान् है जिसकी प्रज्ञा
नलकूप – नल से बना है जो कूप
परकटा – पर हैं कटे जिसके
दुमकटा – दुम है कटी जिसकी
प्राणप्रिय – प्रिय है जो प्राणों को
अल्पसंख्यक – अल्प हैं जो संख्या में
पुच्छलतारा – पूँछ है जिस तारे की
नवागन्तुक – नया है जो आगन्तुक
वक्रतुण्ड – वक्र (टेढ़ी) है जो तुण्ड
चौसिंगा – चार हैं जिसके सींग
अधजला – आधा है जो जला
अतिवृष्टि – अति है जो वृष्टि
महारानी – महान् है जो रानी
नराधम – नर है जो अधम (पापी)
नवदम्पत्ति – नया है जो दम्पत्ति

(ii) उपमान वाचक कर्मधारय– इसमें एक पद उपमान तथा द्वितीय पद उपमेय होता है। जैसे –
बाहुदण्ड – बाहु है दण्ड समान
चंद्रवदन – चंद्रमा के समान वदन (मुख)
कमलनयन – कमल के समान नयन
मुखारविंद – अरविंद रूपी मुख
मृगनयनी – मृग के समान नयनों वाली
मीनाक्षी – मीन के समान आँखों वाली
चन्द्रमुखी – चन्द्रमा के समान मुख वाली
चन्द्रमुख – चन्द्र के समान मुख
नरसिंह – सिंह रूपी नर
चरणकमल – कमल रूपी चरण
क्रोधाग्नि – अग्नि के समान क्रोध
कुसुमकोमल – कुसुम के समान कोमल
ग्रन्थरत्न – रत्न रूपी ग्रन्थ
पाषाण हृदय – पाषाण के समान हृदय
देहलता – देह रूपी लता
कनकलता – कनक के समान लता
करकमल – कमल रूपी कर
वचनामृत – अमृत रूपी वचन
अमृतवाणी – अमृत रूपी वाणी
विद्याधन – विद्या रूपी धन
वज्रदेह – वज्र के समान देह
संसार सागर – संसार रूपी सागर

6. द्विगु समास –

जिस समस्त पद में पूर्व पद संख्यावाचक हो और पूरा पद समाहार (समूह) या समुदाय का बोध कराए उसे द्विगु समास कहते हैं। संस्कृत व्याकरण के अनुसार इसे कर्मधारय का ही एक भेद माना जाता है। इसमें पूर्व पद संख्यावाचक विशेषण तथा उत्तर पद संज्ञा होता है। स्वयं 'द्विगु' में भी द्विगु समास है। जैसे –
एकलिंग – एक ही लिंग
दोराहा – दो राहों का समाहार
तिराहा – तीन राहों का समाहार
चौराहा – चार राहों का समाहार
पंचतत्त्व – पाँच तत्त्वों का समूह
शताब्दी – शत (सौ) अब्दों (वर्षों) का समूह
पंचवटी – पाँच वटों (वृक्षों) का समूह
नवरत्न – नौ रत्नों का समाहार
त्रिफला – तीन फलों का समाहार
त्रिभुवन – तीन भुवनों का समाहार
त्रिलोक – तीन लोकों का समाहार
त्रिशूल – तीन शूलों का समाहार
त्रिवेणी – तीन वेणियों का संगम
त्रिवेदी – तीन वेदों का ज्ञाता
द्विवेदी – दो वेदों का ज्ञाता
चतुर्वेदी – चार वेदों का ज्ञाता
तिबारा – तीन हैं जिसके द्वार
सप्ताह – सात दिनों का समूह
चवन्नी – चार आनों का समाहार
अठवारा – आठवें दिन को लगने वाला बाजार
पंचामृत – पाँच अमृतों का समाहार
त्रिलोकी – तीन लोकों का
सतसई – सात सई (सौ) (पदों) का समूह
एकांकी – एक अंक है जिसका
एकतरफा – एक है जो तरफ
इकलौता – एक है जो
चतुर्वर्ग – चार हैं जो वर्ग
चतुर्भुज – चार भुजाओं वाली आकृति
त्रिभुज – तीन भुजाओं वाली आकृति
पन्सेरी – पाँच सेर वाला बाट
द्विगु – दो गायों का समाहार
चौपड़ – चार फड़ों का समूह
षट्कोण – छः कोण वाली बंद आकृति
दुपहिया – दो पहियों वाला
त्रिमूर्ति – तीन मूर्तियों का समूह
दशाब्दी – दस वर्षों का समूह
पंचतंत्र – पाँच तंत्रों का समूह
नवरात्र – नौ रातों का समूह
सप्तर्षि – सात ऋषियों का समूह
दुनाली – दो नालों वाली
चौपाया – चार पायों (पैरों) वाला
षट्पद – छः पैरों वाला
चौमासा – चार मासों का समाहार
इकतीस – एक व तीस का समूह
सप्तसिन्धु – सात सिन्धुओं का समूह
त्रिकाल – तीन कालों का समाहार
अष्टधातु – आठ धातुओं का समूह

संधि व समास

असमानता –
1. संधि में दो ध्वनियों या वर्णों का योग है जबकि समास में दो शब्दों या पदों का मेल होता है।
2. संधि में ध्वनी विकार आवश्यक है जबकि समास में ध्वनि विकार तभी होता है जब सामासिक पद में संधि की स्थिति हो अन्यथा नहीं।

समानता –
1. दोनों ही नवीन शब्द–सृजन में सहायक हैं।
2. दोनों ही शब्दों को संक्षिप्त करने में सहायक हैं।
3. दोनों ही कम शब्दों में अधिक भाव प्रकट करने की 'समास–शैली–निर्माण' में सहायक हैं।

♦♦♦

« पीछे जायें | आगे पढ़ें »

• सामान्य हिन्दी
♦ होम पेज

सामान्य हिन्दी

3. शब्द–विचार

♦ शब्द:

प्रयोग–योग्य, एकार्थ–बोधक तथा परस्पर अन्वित वर्णों के समूह को शब्द कहते हैं। दूसरे शब्दों में एक या अनेक वर्णों के मेल से निर्मित स्वतंत्र एवं सार्थक ध्वनि ही शब्द कहलाती है। जैसे – एक वर्ण से निर्मित शब्द—न (नहीं) व (और), अनेक वर्णो से निर्मित शब्द—कुत्ता, शेर, कमल, नयन, प्रासाद, सर्वव्यापी, परमात्मा, बालक, कागज, कलम आदि।

मनुष्य सामाजिक प्राणी है तथा वह समाज में भाषा के माध्यम से परस्पर विचार–विनिमय करता है। इस प्रक्रिया में जो वाक्य प्रयुक्त हैं, उनमें सार्थक शब्दों का प्रयोग करता है। शब्द किसी भाषा के प्राण हैं। बिना शब्दों के भाषा की कल्पना करना असंभव है। शब्द भाषा की एक स्वतंत्र एवं सार्थक इकाई है, जो एक निश्चित अर्थ का बोध कराती है।

♦ शब्द–भेद:

हिन्दी भाषा, विकास की दीर्घ परम्परा और अनेक भाषाओं के सम्पर्क का परिणाम है। फलतः हिन्दी शब्दावली का वर्गीकरण अनेक आधारों पर किया जाता है, जो इस प्रकार है –

♦ विकास (स्रोत) के आधार पर शब्द–भेद:

प्रत्येक भाषा का विकास निरन्तर चलने वाली प्रक्रिया है, जिसमें भाषा के नये–नये शब्दों का निर्माण होता रहता है। हिन्दी भाषा में विकास के आधार पर शब्दों को छः वर्गों में विभाजित किया जाता है –

(1) तत्सम् शब्द –

हिन्दी भाषा का उद्भव संस्कृत से माना जाता है; इस कारण हिन्दी में संस्कृत के कुछ शब्द मूल रूप के समान प्रयुक्त होते हैं और इनके सहयोग से अनेक शब्दों का निर्माण किया जाता है।

जो शब्द संस्कृत से हिन्दी में बिना परिवर्तन किये अपना लिये जाते हैं, उन्हें तत्सम् शब्द कहते हैं। 'तत्' का आशय 'उसके' और 'सम्' का आशय 'समान' है। इस प्रकार जो शब्द संस्कृत के समान होते हैं या जो शब्द बिना विकृत हुए संस्कृत से ज्यों के त्यों हिन्दी भाषा में आ गये हैं, वे तत्सम् शब्द होते हैं। जैसे – भानु, प्राण, कर्म, अग्नि, कोटि, हस्त, मस्तक, यौवन, शृंगार, ज्ञान, वायु, अश्रु, ग्रीवा, दीपक आदि।

(2) तद्भव शब्द –

जो शब्द संस्कृत से उत्पन्न या विकसित हुए हैं या संस्कृत से विकृत होकर हिन्दी में प्रयुक्त किये जाते हैं, उन्हें तद्भव शब्द कहते हैं। इस वर्ग में वे शब्द आते हैं जो संस्कृत भाषा से पालि, प्राकृत, एवं अपभ्रंश के माध्यम से अपना पूरा मार्ग तय करके आये हैं। जैसे – काम, आग, कबूतर, हाथ, साँप, माँ, भाई, घी, दूध, भैंस, खाट, थाली, सुई, पानी, थन, चून, आँसू, गर्दन, आँवला, गर्मी आदि।

♦ तत्सम — तद्भव

अंक – आँक
अंगरक्षक – अँगरखा
अंगुलि – अँगुली
अक्षर – अच्छर
अक्षत – अच्छत
अक्षय तृतीया – आखातीज
अंगुष्ट – अँगूठा
अक्षि – आँख
अकार्य – अकाज
अखिल – आखा
अग्नि – आग
अगम्य – अगम
अग्रवर्ती – अगाड़ी
अज्ञान – अजान
अज्ञानी – अनजाना
अट्टालिका – अटारी
अमावस्या – अमावस
अष्ट – आठ
अष्टादश – अठारह
अद्य – आज
अर्द्ध – आधा
अनार्य – अनाड़ी
अन्नाद्य – अनाज
अन्धकार – अँधेरा
अर्क – आक
अमृत – अमिय
अमूल्य – अमोल
अन्यत्र – अनत
अश्रु – आँसू
अम्बा – अम्मा
अम्लिका – इमली
अशीति – अस्सी
आखेट – अहेर
आम्र – आम
आमलक – आँवला
आम्रचूर्ण – अमचूर
आभीर – अहीर

आदेश – आयुस
आलस्य – आलस
आश्रय – आसरा
आश्चर्य – अजरज
आश्विन – आसोज
आशिष् – असीस
इक्षु – ईख
इष्टिका – ईंट
उच्च – ऊँचा
उज्ज्वल – उजला
उत्साह – उछाह
उद्वर्तन – उबटन
उपालम्भ – उलाहना
उपाध्याय – ओझा
उलूक – उल्लू
उलूखल – ओखली
ऊष्ण – उमस
ऋक्ष – रीछ
ओष्ठ – ओँठ
ॐ – ओम
कंकण – कंगन
कंटक – कांटा
क्षत्रिय – खत्री
क्षार – खार
क्षेत्र – खेत
क्षीर – खीर
क्षति – छति
क्षण – छिन
क्षीण – छीन
कच्छप – कछुआ
कज्जल – काजल
कदली – केला
कर्पूर – कपूर
कृपा – किरपा
कर्त्तरी – कैँची
कर्ण – कान
कृषक – किसान
कर्तव्य – करतब
कटु – कडुआ
कर्तन – कतरन
कल्लोल – कलोल
क्लेश – कलेश
कर्म – काम
कृष्ण – कान्हा
कपर्दिका – कौड़ी
कपोत – कबूतर
काक – कौआ
कार्य – कारज, काज
कार्तिक – कातिक
कास – खाँसी
काष्ठ – काठ
किँचित – कुछ
किरण – किरन
कुक्कुर – कुत्ता
कुक्षि – कोख
कुपुत्र – कपूत
कुंभकार – कुम्हार
कुमार – कुँअर
कुष्ठ – कोढ़
कूप – कुँआ
कोकिला – कोयल
कोण – कोना
कोष्ठिका – कोठी
खनि – खान
खटवा – खट
गंभीर – गहरा
गर्दभ – गधा
गर्त – गड्ढा
ग्रंथि – गाँठ
गृद्ध – गिद्ध
गृह – घर
गर्भिणी – गाभिन
ग्रहण – गहन
गहन – घना
गात्र – गात

गायक – गवैया
ग्राहक – गाहक
ग्राम – गाँव
ग्रामीण – गँवार
गुहा – गुफा
गेंदुक – गेंद
गोधूम – गेहूँ
गोपालक – ग्वाला
गोमय – गोबर
गोस्वामी – गुसाईं
गौ – गाय
गौत्र – गोत
गौर – गोरा
घंटिका – घंटी
घट – घड़ा
घृणा – घिन
घृत – घी
चंचु – चोंच
चंद्र – चाँद
चुंबन – चूमना
चंद्रिका – चाँदनी
चक्र – चाक
चक्रवाहक – चकवा
चतुर्थ – चौथा
चतुर्दश – चौदह
चतुष्कोण – चौकोर
चतुष्पद – चौपाया
चतुर्विंश – चौबीस
चर्म – चाम, चमड़ी
चर्वण – चबाना
चिक्कण – चिकना
चित्रक – चीता
चित्रकार – चितेरा
चूर्ण – चून
चैत्र – चैत
चौर – चोर
छत्र – छाता
छाया – छाँह
छिद्र – छेद
जंघा – जाँघ
जन्म – जनम
ज्योति – जोत
जव – जौ
जामाता – जँवाई
ज्येष्ठ – जेठ
जिह्वा – जीभ
जीर्ण – झीना
झरण – झरना
तुंद – तोंद
तुंल – तंदुल
तप्त – तपन
तपस्वी – तपसी
त्वरित – तुरंत
त्रय – तीन
त्रयोदश – तेरह
तृण – तिनका
ताम्र – तांबा
तिलक – टीका
तीक्ष्ण – तीखा
तीर्थ – तीरथ
तैल – तेल
दंत – दाँत
दंतधावन – दातुन
दक्ष – दच्छ
दक्षिण – दाहिना
दधि – दही
दद्रु – दाद
दृष्टि – दीठि
द्वादश – बारह
द्वितीय – दूजा
द्विपट – दुपट्टा
द्विवेदी – दुबे
द्विप्रहरी – दुपहरी
दिशांतर – दिशावर
दीप – दीया

दीपश्लाका – दीयासलाई
दीपावली – दिवाली
दुःख – दुख
दुग्ध – दूध
दुर्बल – दुबला
दूर्वा – दूब
देव – दई
द्वौ – दो
धर्म – धरम
धत्तूर – धतूरा
धनश्रेष्ठी – धन्नासेठ
धरित्री – धरती
धान्य – धान
धुर् – धुर
धूलि – धूल
धूम्र – धुँआ
धैर्य – धीरज
नक्षत्र – नखत
नग्न – नंगा
नकुल – नेवला
नव्य – नया
नप्तृ – नाती
नृत्य – नाच
नयन – नैन
नव – नौ
नापित – नाई
नारिकेल – नारियल
नासिका – नाक
निद्रा – नींद
निम्ब – नीम
निर्वाह – निबाह
निष्ठुर – निठुर
नौका – नाव
पंक्ति – पंगत
पंचम – पाँच
पंचदश – पन्द्रह
पक्व – पका
पक्वान्न – पकवान
पक्ष – पंख
पथ – पंथ
पत्र – पत्ता
पक्षी – पंछी
पट्टिका – पाटी
पर्पट – पापड़
परश्वः – परसों
परशु – फरसा
पवन – पौन
परीक्षा – परख
पर्यंक – पलंग
पश्चाताप – पछतावा
प्रकट – प्रगट
प्रस्तर – पत्थर
प्रहर – पहर
प्रहरी – पहरेदार
प्रतिच्छाया – परछाँई
पृष्ठ – पीठ
पाद – पैर
पानीय – पानी
पाषाण – पाहन
पितृ – पितर
प्रिय – पिय
पिपासा – प्यास
पिपीलिका – चिँटी
पीत – पीला
पुच्छ – पूँछ
पुत्र – पूत
पुष्कर – पोखर
पूर्ण – पूरा
पूर्णिमा – पूनम
पूर्व – पूरब
पौत्र – पोता
पौष – पौ
फाल्गुन – फागुन
फुल्ल – फुल्का
बंध – बाँध

बंध्या – बाँझ
बर्कर – बकरा
बधिर – बहर
बलिवर्ध – बैल
बालुका – बालू
बुभुक्षित – भूखा
भक्त – भगत
भगिनी – बहन
भद्र – भला
भल्लुक – भालू
भ्रमर – भौँरा
भस्म – भस्मि
भागिनेय – भानजा
भ्राता – भाई
भ्रातृजाया – भौजाई
भ्रातृजा – भतीजी
भाद्रपद – भादो
भिक्षुक – भिखारी
भिक्षा – भीख
भ्रू – भौँहि, भौँ
मकर – मगर
मक्षिका – मक्खी
मर्कटी – मकड़ी
मणिकार – मनिहार
मनीचिका – मिर्च
मयूर – मोर
मल – मैल
मशक – मच्छर
मशकहरी – मसहरी
मार्ग – मारग
मातुल – मामा
मास – महीना
मित्र – मीत
मिष्ठान्न – मिठाई/मिष्ठान
मुख – मुँह
मुषल – मूसल
मूत्र – पेशाब
मृत्यु – मौत
मृतघट – मरघट
मृत्तिका – मिट्टी
मेघ – मेह
मौक्तिक – मोती
यंत्र-मंत्र – जंतर-मंतर
यज्ञ – जग
यज्ञोपवीत – जनेऊ
यजमान – जजमान
यति – जती
यम – जम
यमुना – जमुना
यश – जस
यशोदा – जशोदा
यव – जौ
युक्ति – जुगत
युवा – जवान
यूथ – जत्था
योग – जोग
योगी – जोगी
यौवन – जोबन
रक्षा – राखी
रज्जु – रस्सी
राजपुत्र – राजपूत
राज्ञी – रानी
रात्रि – रात
राशि – रास
रिक्त – रीता
रुदन – रोना
रूष्ट – रूठा
लक्ष – लाख
लक्षण – लक्खन/लच्छन
लक्ष्मण – लखन
लज्जा – लाज
लवंग – लौँग
लवण – नौन/लूण
लवणता – लुनाई
लेपन – लीपना

लोमशा – लोमड़ी
लौह – लोहा
लौहकार – लुहार
वंश – बाँस
वंशी – बाँसुरी
वक्र – बगुला
वज्रांग – बजरंग
वट – बड़
वर्ण – वरन
वणिक – बनिया
वत्स – बछड़ा/बेटा
वधू – बहू
वरयात्रा – बारात
व्याघ्र – बाघ
वाणी – बैन
वानर – बंदर
वार्ताक – बैंगन
वाष्प – भाप
विँश – बीस
विकार – बिगाड़
विवाह – ब्याह
विष्ठा – बींट
वीणा – बीना
वीरवर्णिनी – बीरबानी
वृद्ध – बुड्ढा
वृश्चिक – बिच्छू
श्मश्रु – मूँछ
श्मशान – मसान
श्याली – साली
श्यामल – साँवला
श्वसुर – ससुर
श्वश्रू – सास
श्वास – साँस
शकट – छकड़ा
शत – सौ
शय्या – सेज
शर्करा – शक्कर
श्रावण – सावन
शाक – साग
शाप – श्राप
शृंग – सींग
शिशिँपा – सरसों
शिक्षा – सीख
शुक – सुआ
शुण्ड – सूँड
शुष्क – सूखा
शूकर – सुअर
शून्य – सूना
शृंगार – सिँगार
श्रेष्ठी – सेठ
संधि – सेँध
सत्य – सच
सप्त – सात
सप्तशती – सतसई
सर्प – साँप
सपत्नी – सौत
ससर्प – सरसों
स्कंध – कंधा
स्तन – थन
स्तम्भ – खम्भा
स्वजन – सजन/साजन
स्वप्न – सपना
स्वर्ण – सोना
स्वर्णकार – सुनार
सरोवर – सरवर
साक्षी – साखी
सूत्र – सूत
सूर्य – सूरज
सौभाग्य – सुहाग
हंडी – हाँड़ी
हट्ट – हाट
हर्ष – हरख
हरित – हरा
हरिद्रा – हल्दी
हस्तिनी – हथिनी

हस्त – हाथ
हस्ति – हाथी
हृदय – हिय
हास्य – हँसी
हिँदोला – हिँडोला
होलिका – होली

(3) अर्द्धतत्सम् शब्द –
'अर्द्धतत्सम्' वे शब्द होते हैं, जो संस्कृत शब्दों से व्युत्पन्न या विकसित होकर सीधे ही हिन्दी भाषा में आ गये हैं। इन्हें मध्यकालीन भारतीय आर्य भाषा परिवार में सम्मिलित होने का सौभाग्य प्राप्त नहीं हुआ, फलतः इनके रूप में इतना परिवर्तन नहीं आया, जितना तद्भव शब्दों के रूप में आया। उधर इनका रूप वैसा भी नहीं रह पाया जैसे तत्सम् शब्दों का रहा, इसलिए इन्हें न तत्सम् कहा जाता है और न तद्भव, इन्हें 'अर्द्धतत्सम्' की संज्ञा दी गई है। इनकी संख्या अधिक नहीं है। जैसे –
अगिन, असमान, आँगन, आखर, कारज, किरिपा, किशुन, किसन, चंदर, चूरन, तन, तोल, बरस, भूख, मउर, लगन, लासा, लिछमन, लिछमी, वच्छ, समान।

(4) देशी या देशज शब्द –
जो शब्द स्थानीय आधार पर या ध्वनि के अनुसार गढ़ लिए जाते हैं उन्हें देशी या देशज शब्द कहते हैं। जैसे – पेड़, झगड़ा, चीलगाड़ी आदि।

ज्यादातर देशी और देशज, इन दोनों शब्दों में अन्तर नहीं किया जाता है। पर दोनों शुद्ध एक–दूसरे के पर्याय नहीं हैं। इनके अन्तर को समझ लेना आवश्यक है। 'देशी' शब्द का प्रयोग संस्कृत काल से चला आ रहा है। जिनका अर्थ है, वे शब्द जिन्हें संस्कृत व्याकरण के नियमों से सिद्ध नहीं किया जा सके। कुछ आदिवासियों की भाषा के जो आर्यों के आगमन के समय भारत में निवास करते थे। इनमें से आस्ट्रिक जैसे कबीले तो आर्यों के आगमन से आस्ट्रेलिया एवं इण्डोनेशिया की ओर चले गये। कुछ काल कवलित हो गये और कुछ आर्यों में घुल–मिल गये। भाषा में इनका अन्तर्मिश्रण संस्कृत काल से ही प्रारम्भ हो गया था। पालि, प्राकृत और अपभ्रंश भाषाओं में तो इनकी पर्याप्त बहुलता पाई जाती है। इसलिए हेमचन्द्र को 'देशी' नाम माला कोष में लिखना पड़ा। दूसरी ओर 'देशज' शब्द उन्हें कहा जाना चाहिए, जिनका निर्माण विभिन्न भाषा–भाषी लोगों ने अपनी आवश्यकतानुसार अनुकरण के आधार पर अथवा अन्य प्रकार से कर लिया है। इनको इस आधार पर एक वर्ग में रखा गया है कि दोनों की ही व्युत्पत्ति संधिग्ध है। किसी भी ज्ञात देशीय या विदेशीय भाषा के आधार पर इन्हें व्युत्पन्न नहीं किया जा सकता है।

♦ देशज शब्द :
चिड़िया, डाब, ढोलक, ओढ़ना, बाल, खाल, छोटा, घघरी, पाग, पेँट, झाड़ी, जाँटी, बेटी, तरकारी, आला, भोँपू, चीलगाड़ी, फटफटिया, टेँ–टेँ, चेँ–चेँ, पोँ–पोँ, मेँ–मेँ, टप–टप, झर–झर, कल–कल, धड़ा–धड़, झल–मल, झप–झप, अण्टा, तेँदुआ, ठुमरी, फुनगी, खिचड़ी, बियाना, ठेठ, गाड़ी, थैला, खटखटाना, ढूँढना, मूँगा, खोँपा, झुग्गी, लुटिया, चुटिया, खटिया, लोटा, सरपट, खर्राटा, चाँद, चुटकी, लौकी, ठठेरा, पटाखा, खुरपी, कटोरा, केला, बाजरा, ताला, लुंगी, जूता, बछिया, मेल–जोल, सटकना, डिबिया, पेट, कलाई, भोँदू, चिकना, खाट, लड़का, छोरा, दाल, रोटी, कपड़ा, भाण्डा, लत्ते, छकड़ा, खिड़की, झाड़ू, झोला, पगड़ी, पड़ोसी, खचाखच, कोड़ी, भिण्डी, कपास, परवल, सरसोँ, काँच, इडली, डोसा, उटपटांग, खटपट, चाट, चुस्की, साग, लूण, मिर्च, पेड़, धब्बा, कबड्डी, झगड़ा आदि।

(5) विदेशी शब्द –
विदेशी भाषाओं से आये तत्सम् एवं तद्भव शब्द इस वर्ग में रखे जाते है। दूसरे 'विदेशी' या विदेश शब्द का अर्थ भारतीय आर्य परिवार से भिन्न भाषाएँ लिया जाना चाहिए, क्योंकि हिन्दी में द्रविड़ परिवार की भाषाओं के शब्द भी मिलते हैं, किन्तु द्रविड़ भाषाओं को विदेशी भाषा नहीं कहा जा सकता है। इसलिए विदेशी भाषा का 'देश से बाहर की भाषा' अर्थ लेने से अव्यप्ति दोष आ जाएगा। हिन्दी भाषा अपने उद्भव से लेकर आज तक अनेक भाषाओं के सम्पर्क में आयी जिनमें से प्रमुख हैं—अरबी, फारसी, तुर्की, अंग्रेजी, पुर्तगाली व फ्रेँच।

♦ अरबी शब्द :
गरीब, मालिक, कैदी, औरत, रिश्वत, कलम, अमीर, औलाद, दिमाग, तरक्की, तरफ, तकिया, जालिम, जलसा, जनाब, जुलूस, खबर, कायदा, शराब, हमला, हाकिम, हक, हिसाब, मतलब, कसरत, कसर, कसूर, उम्र, ईमानदार, इलाज, इमारत, ईनाम, आदत, आखिर, मशहूर, मौलवी, मुहावरा, मदद, फायदा, नशा, तमीज, तबियत, तबला, तबादला, तमाम, दावत, आम, फकीर, अजब, अजीब, अखबार, असर, अल्ला, किस्मत, खत, जिक्र, तजुरबा, दुनिया, बहस, मुकदमा, वकील, हमला, अहमक, ईमान, किस्त, खत्म, जवाब, तादाद, दिन, दुकान, दलाल, बाज, फैसला, मामूली, मालूम, मुन्सिफ, मजमून, वहम, लायक, वारीस, हाशिया, हाल, हाजिर, अदा, आसार, आदमी, औसत, कीमत, कुर्सी, जिस्म, तमाशा, तारीफ, तकदीर, तकाजा, तमाम, एहसान, किस्सा, किला, खिदमत, दाखिल, दौलत, बाकी, मुल्क, यतीम, लफ्ज, लिहाज, हौसला, हवालात, मौसम, मौका, कदम, इजलास, नकल, नहर, मुसाफिर, कब्र, इज्जत, इमारत, कमाल, ख्याल, खराब, तारीख, दुआ, दफ्तर, दवा, मुद्दई, दवाखाना, मौलवी, ताज, मशाल, शेख, इरादा, इशारा, तहसील, हलवाई, नकद, अदालत, लगान, वालिद, खुफिया, कुरान, अरबी, मीनार, खजाना, ऐनक, खत आदि।

♦ फारसी शब्द :
जबर, जोर, जीन, जहर, जंग, माशा, राह, पलंग, दीवार, जान, चश्मा, गोला, किनारा, आफत, आवारा, कमरबंद, गल्ला, चिराग, जागीर, ताजा, नापसन्द, मादा, रोगन, रंग, बेरहम, नाव, तनख्वाह, जादू, चादर, गुम, किशमिश, आमदनी, आराम, अदा, कुश्ती, खूब, खुराक, गोश्त, गुल, ताक, तीर, तेज, दवा, दिल, दिलेर, बेहूदा, बहरा, बेवा, मरहम, मुर्गा, मीन, आतीशबाजी, आबरू, आबदार, अफसोस, कमीना, खुश, खरगोश, खामोश, गुलाब, गुलुबन्द, चाशनी, चेहरा, चूँकि, चरखा, तरकश, जोश, जिगर, जुर्माना, दंगल, दरबार, दुकान, देहात, पैमाना, मोर्चा, मुफ्त, पेशा, पारा, मलीदा, पुल, मजा, पलक, मुर्दा, मलाई, पैदावार, दस्तूर, शादी, वापिस, वर्ना, हजार, हफ्ता, सौदागर, सूद, सरकार, सरदार, लश्कर, सितार, सुर्ख, लगाम, लेकिन, सितारा, चापलूसी, गन्दगी, बर्फ, बीमार, नमूना, नमक, जमीँदार, अनार, बाग, जिन्दगी, जनाना, कारखाना, तख्त, बाजार, रोशनदान, चिलम, हुक्का, अमरूद, गवाह, जलेबी, किसमिस, कारीगर, पर्दा, कबूतर, चुगलखोर, शिकार, चापलूसी, चालाक, प्याला, रूमाल, आन, आबरू, आमदनी, अंजाम, अंजुमन, अन्दाज, अगर, अगरचे, अगल, बगल, आफत, आवाज, आईना, किनारा, गर्द, गीला, गिरह, नेहरा, तीन, नाजुक, नापाक, पाजी, परहेज, याद, बेरहम, तबाह, आजमाइश, जल्दी आदि।

♦ अंग्रेजी शब्द :
डाक्टर, टेलीफोन, टैक्स, टेबल, अफसर, कमेटी, एजेन्ट, कमीशन, नर्स, कम्पाउंडर, कालेज, जेल, होल्डर, बॉक्स, गैस, चेयरमैन, अपील, टिकिट, कोर्ट, गिलास, सिनेमा, नम्बर, पैन्सिल, रबर, रजिस्टर, प्रेस, समन, थियटर, डिग्री, बोतल, मील, कैप्टन, पैन, फाउन्टेन, ड्राइवर, डिस्ट्रिक्ट, डिप्टी, ट्यूशन, काउन्सिल, क्रिकेट, क्वार्टर, कम्पनी, एजेन्सी, इयरिँग, इन्टर, इंच, मीटिँग, केम, पाउडर, पैट्रोल, पार्सल, प्लेट, पार्टी, दिसम्बर, थर्मामीटर, ऑफिस, ड्रामा, ट्रक, कैलेण्डर, आंटी, बैग, होमवर्क, मजिस्ट्रेट, पोस्टमैन, कमेटी, कूपन, डबल, कम्पनी, ओवरकोट, कमीशन, फोटो, इंस्पेक्टर, राशन, गार्ड, रेल, लाइन, रिकार्ड, सूटकेस, हाइकोर्ट, मशीन, डायरी, मिनट, रेडियो, स्कूल, हॉस्टल, सर्कस, स्टेशन, फुटबॉल, टॉफी, प्लेटफार्म, टाइप, पाउडर, पास, नोटिस आदि।

♦ तुर्की शब्द :
लफंगा, चिक, चेचक, लाश, कुर्की, मुगल, कुली, कैँची, बहादुर, कज्जाक, बेगम, काबू, तलाश, कालीन, तोप, तमगा, आगा, उर्दू, चमना, जाजिम, चुगुल, सुराग, सौगात, उजबक, चकमक, बावर्ची, मुचलका, गलीचा, चमचा, बुलबुल, दरोगा, चाकू, बारुद, अरमान आदि।

♦ पुर्तगाली शब्द :
तौलिया, तिजोरी, चाबी, गमला, कारतूस, आलपिन, अचार, कमीज, कॉफी, तम्बाकू, साबुन, फीता, किरानी, बाल्टी, आलमारी, अन्नानास, अलकतरा, काजू, मस्तुल, पिस्तौल, नीलाम, गोदाम, किरच, कमरा, कनस्तर, संतरा, पीपा, मिस्त्री, बिस्कुट, परात, बोतल, काज, पपीता, मेज, आलू आदि।

♦ फ्रांसीसी शब्द :
पुलिस, कर्फ्यू, अंग्रेज, इंजन, कारतूस, कूपन, इंजिनियर, रेस्तरां, फिरंगी, फ्रैँचाइज, फ्रांस आदि।

♦ यूनानी शब्द :
टेलीफोन, डेल्टा, एटम, टेलीग्राफ आदि।

♦ डच शब्द :
तुरुप, बम।

♦ चीनी शब्द :
चाय, लीची, तूफान आदि।

♦ तिब्बती शब्द :
डांडी।

♦ ग्रीक शब्द :
दाम, सुरंग आदि।

♦ जापानी शब्द :
रिक्शा, झम्पान आदि।

(6) संकर शब्द –
संकर शब्द वे शब्द होते हैं, जो दो भिन्न भाषाओं के शब्दों से मिलकर सामाजिक शब्दों के रूप में निर्मित होते हैं। ये शब्द भी हिन्दी में प्रयुक्त होते हैं। जैसे –
• रेलगाड़ी (अंग्रेजी+हिन्दी),
• बमवर्षा (अंग्रेजी+संस्कृत),
• नमूनार्थ (फारसी+संस्कृत),
• सजाप्राप्त (फारसी+संस्कृत),
• रेलयात्रा (अंग्रेजी+संस्कृत),
• जिलाधीश (अरबी+संस्कृत),
• जेब खर्च (पुर्तगाली+फारसी),
• रामदीन (संस्कृत+फारसी),
• रामगुलाम (संस्कृत+फारसी),
• हैड मुनीम (अंग्रेजी+हिन्दी),
• शादी ब्याह (फारसी+हिन्दी),
• तिमाही (हिन्दी+फारसी) ।

♦ व्युत्पत्ति के आधार पर शब्द–भेद :
व्युत्पत्ति (बनावट) एवं रचना के आधार पर शब्दों के तीन भेद किये गये हैं – (1) रूढ़ (2) यौगिक (3) योगरूढ़।
(1) रूढ़ :
जिन शब्दों के खण्ड किये जाने पर उनके खण्डों का कोई अर्थ न निकले, उन शब्दों को 'रूढ़' शब्द कहते हैं। दूसरे शब्दों में, जिन शब्दों के सार्थक खण्ड नहीं किये जा सकें वे रूढ़ शब्द कहलाते हैं। जैसे – 'पानी' एक सार्थक शब्द है , इसके खण्ड करने पर 'पा' और 'नी' का कोई संगत अर्थ नहीं निकलता है। इसी प्रकार रात, दिन, काम, नाम आदि शब्दों के खण्ड किये जाएँ तो 'रा', 'त', 'दि', 'न', 'का', 'म', 'ना', 'म' आदि निरर्थक ध्वनियाँ ही शेष रहेंगी। इनका अलग–अलग कोई अर्थ नहीं है। इसी तरह रोना, खाना, पीना, पान, पैर, हाथ, सिर, कल, चल, घर, कुर्सी, मेज, रोटी, किताब, घास, पशु, देश, लम्बा, छोटा, मोटा, नमक, पल, पेड़, तीर इत्यादि रूढ़ शब्द हैं।

(2) यौगिक :
यौगिक शब्द वे होते हैं, जो दो या अधिक शब्दों के योग से बनते हैं और उनके खण्ड करने पर उन खण्डों के वही अर्थ रहते हैं जो अर्थ वे यौगिक होने पर देते हैं। यथा – पाठशाला, महादेव, प्रयोगशाला, स्नानागृह, देवालय, विद्यालय, घुड़सवार, अनुशासन, दुर्जन, सज्जन आदि शब्द यौगिक हैं। यदि इनके खण्ड किये जाएँ जैसे – 'घुड़सवार' में 'घोड़ा' व 'सवार' दोनों खण्डों का अर्थ है। अतः ये यौगिक शब्द हैं।
यौगिक शब्दों का निर्माण मूल शब्द या धातु में कोई शब्दांश, उपसर्ग, प्रत्यय अथवा दूसरे शब्द मिलाकर संधि या समास की प्रक्रिया से किया जाता है।
उदाहरणार्थ :–
- 'विद्यालय' शब्द 'विद्या' और 'आलय' शब्दों की संधि से बना है तथा इसके दोनों खण्डों का पूरा अर्थ निकलता है।
- 'परोपकार' शब्द 'पर' व 'उपकार' शब्दों की संधि से बना है।
- 'सुयश' शब्द में 'सु' उपसर्ग जुड़ा है।
- 'नेत्रहीन' शब्द में 'नेत्र' में 'हीन' प्रत्यय जुड़ा है।
- 'प्रत्यक्ष' शब्द का निर्माण 'अक्ष' में 'प्रति' उपसर्ग के जुड़ने से हुआ है। यहाँ दोनों खण्डों 'प्रति' तथा 'अक्ष' का पूरा–पूरा अर्थ है।

♦ कुछ यौगिक शब्द हैं:
आगमन, संयोग, पर्यवेक्षण, राष्ट्रपति, गृहमंत्री, प्रधानमंत्री, नम्रता, अन्याय, पाठशाला, अजायबघर, रसोईघर, सब्जीमंडी, पानवाला, मृगराज, अनपढ़, बैलगाड़ी, जलद, जलज, देवदूत, मानवता, अमानवीय, धार्मिक, नमकीन, गैरकानूनी, घुड़साल, आकर्षण, सन्देहास्पद, हास्यास्पद, कौन्तेय, राधेय, दाम्पत्य, टिकाऊ, भार्गव, चतुराई, अनुरूप, अभाव, पूर्वापेक्षा, पराजय, अन्वेषण, सुन्दरता, हरीतिमा, कात्यायन, अधिपति, निषेध, अत्युक्ति, सम्माननीय, आकार, भिक्षुक, दयालु, बहनोई, ननदोई, अपभ्रंश, उज्ज्वल, प्रत्युपकार, छिड़काव, रंगीला, राष्ट्रीय, टकराहट, कुतिया, परमानन्द, मनोहर, तपोबल, कर्मभूमि, मनोनयन, महाराजा।

(3) योगरूढ़ :
जब किसी यौगिक शब्द से किसी रूढ़ अथवा विशेष अर्थ का बोध होता है अथवा जो शब्द यौगिक संज्ञा के समान लगे किन्तु जिन शब्दों के मेल से वह बना है उनके अर्थ का बोध न कराकर, किसी दूसरे ही विशेष अर्थ का बोध कराये तो उसे योगरूढ़ कहते हैं। जैसे –
'जलज' का शाब्दिक अर्थ होता है 'जल से उत्पन्न हुआ'। जल में कई चीजें व जीव जैसे – मछली, मेंढ़क, जोंक, सिंघाड़ा आदि उत्पन्न होते हैं, परन्तु 'जलज' अपने शाब्दिक अर्थ की जगह एक अन्य या विशेष अर्थ में 'कमल' के लिए ही प्रयुक्त होता है। अतः यह योगरूढ़ है।
'पंकज' शाब्दिक अर्थ है 'कीचड़ में उत्पन्न (पंक = कीचड़ तथा ज = उत्पन्न)'। कीचड़ में घास व अन्य वस्तुएँ भी उत्पन्न होती हैं किन्तु 'पंकज' अपने विशेष अर्थ में 'कमल' के लिए ही प्रयुक्त होता है। इसी प्रकार 'नीरद' का शाब्दिक अर्थ है 'जल देने वाला (नीर = जल, द = देने वाला)' जो कोई भी व्यक्ति, नदी या अन्य कोई भी स्रोत हो सकता है, परन्तु 'नीरद' शब्द केवल बादलों के लिए ही प्रयुक्त करते हैं। इसी तरह 'पीताम्बर' का अर्थ है पीला अम्बर (वस्त्र) धारण करने वाला जो कोई भी हो सकता है, किन्तु 'पीताम्बर' शब्द अपने रूढ़ अर्थ में 'श्रीकृष्ण' के लिए ही प्रयुक्त है।

♦ कुछ योगरूढ़ शब्द :
योगरूढ़ — विशिष्ट अर्थ
कपीश्वर – हनुमान
रतिकांत – कामदेव
मनोज – कामदेव
विश्वामित्र – एक ऋषि
वज्रपाणि – इन्द्र
घनश्याम – श्रीकृष्ण
लम्बोदर – गणेशजी
नीलकंठ – शंकर

चतुरानन – ब्रह्मा
त्रिनेत्र – शंकर
त्रिवेणी – तीर्थराज प्रयाग
चतुर्भुज – ब्रह्मा
दुर्वासा – एक ऋषि
शूलपाणि – शंकर
दिगम्बर – शंकर
वीणापाणि – सरस्वती
षडानन – कार्तिकेय
दशानन – रावण
पद्मासना – लक्ष्मी
पद्मासन – ब्रह्मा
पंचानन – शिव
सहस्राक्ष – इन्द्र
वक्रतुण्ड – गणेशजी
मुरारि – श्रीकृष्ण
चक्रधर – विष्णु
गिरिधर – कृष्ण
कलकंठ – कोयल
हलधर – बलराम
षटपद – भौंरा
वीणावादिनी – सरस्वती

♦ अर्थ के आधार पर शब्द–भेद:
अर्थ के आधार पर शब्द दो प्रकार के होते हैं–
1. सार्थक शब्द –
जिन शब्दों का पूरा–पूरा अर्थ समझ में आये, उन्हें सार्थक शब्द कहते हैं। जैसे – कमल, गाय, पक्षी, रोटी, पानी आदि।

2. निरर्थक शब्द –
जिन शब्दों का कोई अर्थ नहीं निकलता, उन्हें निरर्थक शब्द कहते हैं। जैसे – लतफ, ङणमा, वाय, वंडा आदि।

कभी–कभी एक सार्थक शब्द के साथ एक निरर्थक शब्द का प्रयोग किया जाता है, जैसे – चाय–वाय, गाय–वाय, रोटी–वोटी, पेन–वेन, पुस्तक–वुस्तक, डंडा–वंडा, पानी–वानी आदि। इन शब्दों में आये हुए दूसरे अकेले शब्द का कोई अर्थ नहीं निकलता। जैसे– गाय के साथ वाय और पेन के साथ वेन आदि। गाय और पेन, शब्दों का अर्थ पूर्ण रूप से समझ में आता है जबकि वाय और वेन शब्दों का अर्थ समझ में नहीं आता। यदि वाय, और वेन को यहाँ से हटा दिया जाये तो भी शब्द के अर्थ पर कोई असर नहीं पड़ेगा परन्तु ये शब्द पहले शब्द के साथ मिलकर एक विशिष्ट अर्थ देते हैं, जो अकेले गाय और पेन नहीं है। जैसे – गाय-वाय का अर्थ, दूध देने वाले पशु से है और पेन-वेन का अर्थ, लिखने के साधन से है।

अर्थ के आधार पर उपर्युक्त प्रकारों के अतिरिक्त शब्दों के निम्नलिखित प्रकार भी हैं–
(1) युग्म समानदर्शी मित्रार्थक शब्द
(2) पर्यायवाची शब्द
(3) अपूर्ण पर्यायवाची शब्द
(4) विलोम शब्द
(5) वाक्य स्थानापन्न शब्द
(6) अनेकार्थक शब्द।

♦ प्रयोग के आधार पर शब्द–भेद:
वाक्य में शब्द का प्रयोग किस रूप में हुआ है, इस आधार पर भी शब्दों का वर्गीकरण किया गया है– (1) नाम (2) आख्यात (3) उपसर्ग (4) निपात। संस्कृत भाषा में पाणिनि ने इनकी पद संज्ञा कर समस्त शब्द–समूह को दो वर्गों में विभाजित किया है– (1) सुबन्त और (2) तिगन्त। सुबन्त से तात्पर्य शब्दों के साथ कारक व्यंजक विभक्तियों का प्रयोग किया जाता है, जिन शब्दों के साथ क्रिया–व्यंजक विभक्तियों का प्रयोग किया जाता है, उन्हें तिगन्त कहा जाता है।

हिन्दी में प्रयोग के आधार पर शब्द के निम्नलिखित आठ भेद हैं–
1. संज्ञा
2. सर्वनाम
3. क्रिया
4. विशेषण
5. क्रिया–विशेषण
6. सम्बन्धबोधक अव्यय
7. समुच्चयबोधक अव्यय
8. विस्मयादिबोधक अव्यय।

♦ रूप विकार के आधार पर शब्द–भेद:
रूप विकार की दृष्टि से शब्दों को दो भागों में विभाजित किया जाता है–
(1) विकारी शब्द –
जिन शब्दों का रूप लिँग, वचन, पुरुष, काल एवं कारक के अनुसार परिवर्तित हो जाता है, वे विकारी शब्द कहलाते हैं। जैसे – लड़का > लड़की – लिँग के कारण, अच्छा > अच्छे, गया > गयी आदि – काल के कारण।
इसमें चार प्रकार के शब्द हैं–
1. संज्ञा
2. सर्वनाम
3. क्रिया
4. विशेषण।

(2) अविकारी शब्द–
अविकारी शब्द वे शब्द हैं जिनका रूप लिँग, वचन, काल, विभक्ति, पुरुष के कारण परिवर्तित नहीं होता। ये शब्द जहाँ भी प्रयुक्त होते हैं, वहाँ एक ही रूप में रहते हैं। ये शब्द अव्ययीभाव समास के उदाहरण कहलाते हैं। जैसे – किन्तु, परन्तु, अन्दर, बाहर, अधीन, इसलिए, यद्यपि, तथापि, कल, परसों, बहुत, शाबास आदि। अविकारी शब्दों के भी चार प्रकार हैं–
(1) क्रिया–विशेषण

(2) समुच्चय बोधक
(3) सम्बन्ध बोधक
(4) विस्मयादिबोधक।

♦ परिस्थिति और प्रयोग के आधार पर शब्द–भेद:

परिस्थिति और प्रयोग की दृष्टि से शब्द के तीन प्रकार होते हैं–

1. वाचक शब्द–

जो शब्द केवल अपने सांकेतिक अर्थ ही प्रदान करते हैं, उन्हें वाचक शब्द कहा जाता है। प्रत्येक शब्द में तत्सम्बद्ध भाषा–भाषी समाज द्वारा किसी न किसी भाव, विचार, वस्तु, स्थान अथवा व्यक्ति का संकेत निहित कर दिया जाता है। जब कोई शब्द केवल उस संकेत का ही बोध कराता है, तब उसे वाचक, सांकेतिक या अभिधेय कहा जाता है। जैसे– राम, पुस्तक, कुर्सी, झुन्झुनूं, लड़का आदि। जब उक्त शब्दों का वाक्यों में वही अर्थ होता है, जो सांकेतिक है, तब इनकी वाचक संज्ञा होगी। यदि कोई मित्र अर्थ प्रदान करेगा तो संज्ञा परिवर्तित हो जायेगी। वाचक शब्द से व्यक्त अर्थ को वाच्यार्थ, मुख्यार्थ या संकेतार्थ कहा जाता है।

2. लक्षक शब्द–

वाच्यार्थ का बोध हो जाने पर जब किसी शब्द का सादृश्य से इतर, मुख्यार्थ से सम्बद्ध कोई अन्य अर्थ ग्रहण किया जाता है, तब उस शब्द को लक्षक और अर्थ को लक्ष्यार्थ कहा जाता है। जैसे– कोई कहता है कि राम गधा है तो वाक्य में प्रयुक्त 'गधा' शब्द के मुख्यार्थ चार पैरों वाला, लम्बे कानों वाला, भारवाही पशु विशेष के लिए होता है, जबकि 'राम' शब्द का प्रयोग एक मनुष्य विशेष के लिए हुआ है। अतः राम शब्द के अर्थ के साथ 'गधा' शब्द के अर्थ की संगति नहीं बैठ रही है। फलतः मुख्यार्थ बोध हो जाने से 'गधा' शब्द का अर्थ 'मूर्खता' से लिया गया है, जो मुख्यार्थ के साथ गुणावगुणी भाव से सम्बन्धित है। अतः यहाँ पर 'गधा' शब्द लक्षक एवं 'मूर्ख' लक्ष्यार्थ है।

3. व्यंजक शब्द–

किसी शब्द के मुख्यार्थ बोध होने पर लक्ष्यार्थ अथवा मुख्यार्थ के पश्चात् किसी चमत्कारपूर्ण अर्थ को ग्रहण किया जाता है, तब उस शब्द की व्यंजक संज्ञा होती है। इस प्रकार व्यंजक शब्द दो प्रकार से व्यंग्यार्थ का बोध कराता है– (1) लक्ष्यार्थ के पश्चात् (2) मुख्यार्थ के पश्चात्। प्रथम का उदाहरण– 'गंगा में घर है।' वाक्य में 'गंगा' शब्द लक्षक और व्यंजक दोनों प्रकार है। पहले 'गंगा' शब्द का सादृश्येतर समीप, सामीप्य भाव सम्बन्ध से 'गंगा का तट' अर्थ लक्ष्यार्थ हुआ। तत्पश्चात् 'शीतल एवं स्वास्थ्यवर्धक स्थल' चमत्कारपूर्ण अर्थ व्यंग्यार्थ होने से 'गंगा' शब्द व्यंजक हो गया। द्वितीय वर्ग का उदाहरण–'सूर्यास्त हो गया है।' वाक्य का मुख्यार्थ के साथ–साथ भोजन पकाने का समय हो गया। पढ़ना बन्द करने का समय हो गया है और भ्रमण का समय हो गया आदि अनेक अर्थों की प्राप्ति होती है। यहाँ पर वे अर्थ बिना मुख्यार्थ बोध के ही प्राप्त हो रहे हैं। अतः यहाँ पर 'सूर्यास्त' शब्द दूसरे प्रकार का व्यंजक शब्द है।

♦ शब्द–रूप:

शब्द भाषा की स्वतंत्र इकाइयाँ हैं। परन्तु इन स्वतंत्र शब्दों को एक–एक करके एक साथ रखने से सार्थक वाक्य नहीं बनते। शब्दों को वाक्यों में प्रयोग करने से पहले उनको 'पद' बनाया जाता है। पद बनाने हेतु स्वतंत्र शब्दों में प्रत्यय, उपसर्ग आदि जोड़े जाते हैं। जैसे– राम बाण रावण मारा, में शब्दों को यथावत् एक साथ रखा गया है परंतु यह सार्थक वाक्य नहीं है। यदि इन शब्दों में हम प्रत्यय, विभक्ति जोड़ दें तो वाक्य बनेगा—राम ने बाण से रावण को मारा। शब्द में परसर्ग, प्रत्यय आदि जोड़ने से 'पद' बनता है। इस प्रकार 'पद' शब्द का वह रूप है जिसे शब्द में प्रत्यय व विभक्तियाँ लगाकर वाक्य में प्रयुक्त होने योग्य बनाया जाता है। अर्थात् शब्द के वाक्य में प्रयुक्त होने वाले विभिन्न रूप ही 'पद' कहे जाते हैं। पदों को ही शब्द–रूप कहा जाता है। संक्षेप में भाषा के लघुत्तम सार्थक खण्डों को शब्द–रूप कहते हैं।

शब्द–रूप दो प्रकार के होते हैं– (1) संरूप (2) रूपिम। प्रकार एवं प्रयोग की दृष्टि से एक ही शब्द के अनेक शब्द–रूप बनाये जा सकते हैं, जैसे– लड़का, शब्द से लड़का, लड़के, लड़कों आदि तथा पढ़ना शब्द में प्रत्यय लगाकर पढ़ना (शून्य प्रत्यय), पढ़, पढ़ें, पढ़ो, पढ़ा, पढ़िये आदि अनेक शब्द–रूप बनाये जा सकते हैं। शब्द–रूप बनाने की यह प्रक्रिया 'शब्द–रूप निर्माण' कहलाती है। इसे 'शब्द साधन' या 'व्युत्पादन' भी कहते हैं। जब भी शब्दों को वाक्यों में प्रयोग करते हैं, उनमें कोई न कोई प्रत्यय अवश्य जोड़ा जाता है। कई बार शून्य प्रत्यय जोड़कर भी वाक्य बनाया जाता है। जैसे– 'लड़का' में शून्य प्रत्यय जोड़कर वाक्य बनाया– लड़का विद्यालय जाता है।

शब्द–रूप निर्माण प्रक्रिया द्वारा नये शब्दों का निर्माण नहीं होता बल्कि ये तो उसी मूल शब्द के विभिन्न रूप होते हैं, जो वाक्य में अलग–अलग व्याकरणिक कार्य करते हैं।

शब्द–शक्तियाँ

♦ शब्द–शक्ति –

बुद्धि का वह व्यापार या क्रिया जिसके द्वारा किसी शब्द का निश्चयार्थक ज्ञान होता है, अर्थात् अमुक शब्द का निश्चित अर्थ यह है—इस तरह का स्थायी ज्ञान जिस शब्द–व्यापार से मानस में संस्कार रूप में समाविष्ट होता है, उसे शब्द–शक्ति कहते हैं।

वाक्य में सदा सार्थक शब्द का प्रयोग होता है। वाक्य में प्रयुक्त प्रत्येक शब्द का प्रयोग के अनुसार अर्थ बतलाने वाली वृत्ति को उसकी शक्ति अर्थात् शब्द–शक्ति या शब्द–वृत्ति कहते हैं।

शब्द–शक्ति के द्वारा व्यक्त अर्थ शब्द की परिस्थिति और प्रयोग के अनुसार तीन प्रकार के होते हैं—

1. वाच्यार्थ—शब्द का मुख्य, प्रधान अथवा प्रचलित अर्थ वाच्यार्थ कहलाता है।
2. लक्ष्यार्थ—शब्द का अमुख्य या अप्रधान अर्थ लक्ष्यार्थ कहलाता है।
3. व्यंग्यार्थ—देश–काल एवं प्रसंग के अनुसार लगाया गया अन्यार्थ या प्रतीयमानार्थ व्यंग्यार्थ कहलाता है।

इस तरह तीनों प्रकार के अर्थ प्रकट करने वाली तीन शब्द–शक्तियाँ होती हैं—

(1) अभिधा—वाच्यार्थ को प्रकट करने वाली शब्द–शक्ति
(2) लक्षणा—लक्ष्यार्थ को व्यक्त करने वाली शब्द–शक्ति
(3) व्यंजना—व्यंग्यार्थ को व्यक्त करने वाली शब्द–शक्ति।

1. अभिधा शक्ति –

जिस शक्ति के द्वारा शब्द के साक्षात् संकेतित अर्थ का बोध होता है, उसे अभिधा कहते हैं। साक्षात् संकेतित अर्थ को शब्द का मुख्यार्थ माना जाता है। अतएव शब्द के मुख्य अर्थ का बोध कराने के कारण यह मुख्या, आद्या या प्रथमा शब्द–शक्ति भी कहलाती है।

जब व्याकरण–ज्ञान, उपमान, शब्द–कोश, व्यवहार–प्रयोग तथा विश्वस्त व्यक्ति माता–पिता व गुरुजन आदि के द्वारा बताया जाता है कि अमुक शब्द का अमुक अर्थ है, अथवा इस शब्द का इस अर्थ में प्रयोग किया जाता है, तो उस प्रक्रिया को 'संकेतित अर्थ' कहते हैं। प्रारम्भ में उक्त ज्ञान–विधियों से अवबोध होने पर संकेतित शब्दार्थ का मानस में स्थायी संस्कार बन जाता है। अतः जब–जब कोई शब्द उसके सामने आता है तो तुरन्त ही उसका अर्थ मानस में व्यक्त या उपस्थित हो जाता है। उसे ही मुख्यार्थ, वाच्यार्थ या अभिधेयार्थ कहते हैं। जैसे–

(क) राम पुस्तक पढ़ता है।
(ख) किसान खेत पर हल चलाता है।
(ग) बालक प्रतिदिन विद्यालय जाता है।

अभिधा शक्ति द्वारा जिन शब्दों का अर्थ–बोध होता है, उन्हें 'वाचक' कहा जाता है। इससे अनेकार्थवाची शब्दों के अर्थ का निर्णय किया जाता है। वाचक शब्द तीन प्रकार के होते हैं –

(i) रूढ—जिन शब्दों का विश्लेषण या व्युत्पत्ति सम्भव न हो तथा जिनका अर्थबोध समुदाय–शक्ति द्वारा हो, वे रूढ कहलाते हैं।
(ii) यौगिक—जो शब्द प्रकृति और प्रत्यय के योग से निर्मित हों और उनका विश्लेषण सम्भव हो तथा उनका अर्थबोध प्रकृति–प्रत्यय की शक्ति से हो, वे यौगिक कहलाते हैं।

(iii) योगरुढ—जिन शब्दों की संरचना यौगिक शब्दों के समान होती है तथा अर्थबोध रूढ को समान होता है, उन्हें योगरूढ कहते हैं। तात्पर्य यह है कि जो शब्द प्रकृति एवं प्रत्यय के योग से निर्मित हों, लेकिन अर्थबोध प्रकृति एवं प्रत्यय की शक्ति द्वारा न होकर समुदाय–शक्ति द्वारा हो, वे योगरूढ कहलाते हैं। जैसे– 'जलज' शब्द जल+ज अर्थात् 'जल में उत्पन्न होने वाला' इस प्रकार व्युत्पन्न होता है। यदि इसे यौगिक माना जाये, तो इससे उन सभी वस्तुओं का बोध होगा, जो जल में उत्पन्न होते हैं; जैसे– सीपी, घोंघा, मेंढक, शैवाल आदि। लेकिन 'जलज' शब्द केवल 'कमल' का बोध कराता है और वह अर्थबोध की दृष्टि से रुढ है। ऐसे शब्द योगरूढ कहलाते हैं।

अभिधा शक्ति के द्वारा साक्षात् संकेतित अर्थ का ग्रहण चार प्रकार से होता है –
(1) व्यक्तिवाचक संज्ञा (द्रव्यवाचक)
(2) जातिवाचक संज्ञा
(3) गुणवाचक (विशेषण)
(4) क्रियावाचक।

इन चार प्रकार के शब्दों से संकेतग्रह होने से वाच्यार्थ का बोध होता है।
उदाहरणार्थ—
'खेत में गाय चर रही थी।' इस वाक्य में सीधा–सादा अर्थ समझ में आता है कि खेत में गाय चर रही है।

'लाल घोड़ा सरपट दौड़ रहा था।' इस वाक्य में घोड़े के दौड़ने का अर्थ सहज में प्रकट हो रहा है।

उक्त उदाहरणों में गाय और घोड़ा जातिवाचक संज्ञा हैं, परन्तु उनका आकार भिन्न है। 'चरना' और 'दौड़ना' क्रियाएँ हैं। घोड़े के लिए 'लाल' विशेषण प्रयुक्त हुआ है। इस प्रकार अभिधा शक्ति से शब्द के प्रधान अर्थ अर्थात् वाच्यार्थ का ही ग्रहण होता है।

2. लक्षणा शक्ति –
वाक्य में मुख्यार्थ का बाध होने पर रूढ़ि अथवा प्रयोजन के कारण जिस शक्ति द्वारा मुख्यार्थ से सम्बन्धित अन्य अर्थ या लक्ष्यार्थ ग्रहण किया जाता है, उसे लक्षणा शक्ति कहा जाता है। लक्षणा शब्द–व्यापार साक्षात् संकेतित न होकर आरोपित व्यापार है।
उदाहरण—"रामदीन तो गाय है, उसे मत सताओ।" इस वाक्य में अभिधा से गाय का अर्थ चौपाया पशु होता है, परन्तु रामदीन चौपाया पशु नहीं हो सकता। उस दशा में 'गाय' का मुख्य अर्थ बाधित या छोड़ा जाता है तब उसी मुख्य अर्थ के सहयोग से गाय के स्वभाव (गुण) के अनुरूप "रामदीन अतीव भोला और सरल स्वभाव वाला है"—यह अर्थ ग्रहण किया जाता है। इस तरह लक्षणा से मुख्यार्थ बाधित होता है और उससे सम्बन्धित अन्य अर्थ—लक्ष्यार्थ या लाक्षणिक अर्थ लिया जाता है। इसे आरोपित अर्थ भी कहते है। इसी प्रकार अन्य उदाहरण हैं –
• वह लड़का शेर है।
• यह लड़की तो गाय है।
• राजस्थान वीर है।
• रमेश का घर मुख्य सड़क पर ही है।
• लाल पगड़ी जा रही है।

उपर्युक्त वाक्यों में लड़के को शेर कहने से 'शेर' का अर्थ साहसी या वीर लिया गया है। अतएव उस पर शेर का आरोप किया गया है। लड़की को गाय कहने से 'गाय' का अर्थ सीधी–सरल है। 'राजस्थान' कोई आदमी नहीं है जो वीर हो, अतः राजस्थान का लक्ष्यार्थ राजस्थान–निवासी जन है। रमेश का घर मुख्य सड़क अर्थात् सड़क के मध्य में नहीं हो सकता, अतः मुख्य सड़क के किनारे पर—उससे अत्यन्त निकट अर्थ के लिये ऐसा कहा गया है। 'लाल पगड़ी' स्वयं तो नहीं जा सकती, क्योंकि वह अचेतन है, इसलिए लाल पगड़ी को पहनने वाला व्यक्ति अर्थात् पुलिस वाला जा रहा है। ये सभी अर्थ लक्षणा शक्ति से ही लिये गये हैं।

लक्षणा शक्ति में तीन बाज अथवा तीन कारण या बातें आवश्यक हैं –
(1) मुख्यार्थ का बाध –
जब शब्द के मुख्यार्थ की प्रतीति में कोई प्रत्यक्ष विरोध दिखाई दे तो उसे मुख्यार्थ का बाध कहते हैं। जैसे—"गंगा पर घर है।" इस वाक्य में 'गंगा पर' शब्द का मुख्यार्थ है– गंगा नदी का प्रवाह, लेकिन प्रवाह पर घर नहीं हो सकता, अतः यहाँ मुख्यार्थ में बाध है।
(2) लक्ष्यार्थ का मुख्यार्थ से सम्बन्ध –
मुख्यार्थ में बाध उपस्थित होने पर लक्ष्यार्थ ग्रहण किया जाता है, लेकिन लक्ष्यार्थ का मुख्यार्थ से सम्बन्ध होना आवश्यक है। इसी को मुख्यार्थ का योग कहते हैं। जैसे —"गंगा पर घर है" वाक्य में 'गंगा पर' का लक्ष्यार्थ 'गंगा के तट पर' लिया जाता है।
(3) लक्ष्यार्थ के मूल में रूढ़ि या प्रयोजन का होना –
लक्ष्यार्थ ग्रहण के मूल में कोई रूढ़ि या प्रयोजन होना आवश्यक है। रूढ़ि का अर्थ है—प्रचलन या प्रसिद्धि। प्रयोजन का आशय है—फल–विशेष या उद्देश्य। जैसे –
फूली सकल मन कामना लूट्यौ अनगिनत चैन।
आजु अचै हरिरूप सखि भये प्रफुल्लित नैन॥
प्रस्तुत पद्यांश में 'मनोकामना' कोई वृक्ष नहीं है कि वह फूले–फले और चैन यानी आनन्द कोई धन–सम्पत्ति नहीं है कि वह लूटा जा सके। श्रीकृष्ण का रूप कोई पेय पदार्थ नहीं है कि उसका आचमन किया जाये। इस प्रकार मुख्यार्थ बाध करके उसके सहयोग से इसका अर्थ लक्ष्यार्थ में ग्रहण किया जाता है।

किसी भी शब्द से लक्षणा द्वारा लक्षित अर्थ या तो रूढ़ि के कारण निकलता है या किसी प्रयोजन के कारण। अतः लक्षणा के मुख्य दो भेद होते हैं—

(1) रूढ़ि लक्षणा –
जहाँ रुढ़ि या रचनाकारों की परम्परा के अनुसार मुख्य अर्थ छोड़कर कोई दूसरा अर्थ लिया जाता है, अर्थात् मुख्य अर्थ में बाधा उपस्थित होने पर लक्ष्यार्थ लिया जाता है, वहाँ पर रूढ़ि लक्षणा मानी जाती है। जैसे—"कलिंग साहसी है।" इस वाक्य में 'कलिँग' एक भूभाग या देश का नाम होने से उसका मुख्यार्थ बाधित हो रहा है, क्योंकि देश अचेतन होने से साहसी नहीं हो सकता। इसलिए लक्षणा से यहाँ 'कलिँग देश के निवासी' अर्थ लिया जाता है। इसी प्रकार कुशल, लावण्य, प्रवीण आदि शब्द भी रूढ़ि लक्षणा से अर्थ प्रकट करते हैं।

(2) प्रयोजनवती लक्षणा –
मुख्यार्थ के बाधित होने पर किसी प्रयोजन के द्वारा अर्थ ग्रहण होने पर प्रयोजनवती लक्षणा होती है। जैसे—"गंगा पर बस्ती है।" गंगा की धारा पर बस्ती नहीं ठहर सकती, इसलिए मुख्यार्थ का बाध होने पर उसके सहयोग से लक्ष्यार्थ बनता है—"गंगा तट पर बस्ती है।" इसका प्रयोजन गंगा–तट को अतिशय निकट, शीतल और पवित्र बतलाना है।

"चौपड़ पर फूलमाली बैठे हैं।" वाक्य में, चौपड़ के मध्य में फव्वारा या दूब आदि की सजावट होती है, उस जगह पर फूलमाली नहीं बैठ सकते, अतः समीप के सम्बन्ध से चौपड़ के पास की जमीन या फुटपाथ पर फूलमाली बैठे हैं, यह अर्थ प्रयोजनवती लक्षणा से निकलता है।

विद्वानों ने लक्षणा के—उपादान लक्षणा, लक्षणलक्षणा, शुद्धा, गौणी, सारोपा, साध्यवसाना आदि विविध भेदोपभेद माने हैं। आचार्य मम्मट ने इसके प्रमुख छः भेद माने हैं, जबकि विश्वनाथ ने 'साहित्यदर्पण' में इसके अस्सी भेद बताये हैं।

3. व्यंजना शक्ति –
जब वाक्य का सामान्य या अमुख्य अर्थ अभिधा और लक्षणा शब्द–शक्ति से नहीं निकलता है, तब उसका कोई विशिष्ट अर्थ या चमत्कारी व्यंग्यार्थ जिस शक्ति से व्यक्त होता है, उसे व्यंजना शक्ति कहते हैं।

व्यंजना के उदाहरण—
(1) तू ही साँच द्विजराज है, तेरी कला प्रमान।
तो पर सिव किरपा करि जान्यौ सकल जहान॥

प्रस्तुत दोहे में कोई चन्द्रमा को सम्बोधित करके कह रहा है—“हे चन्द्रमा! तू ही सच्चा द्विजराज है, तेरी ही कला सार्थक है। सारा संसार जानता है कि शिवजी ने तेरे ऊपर कृपा की है।”

यहाँ पर द्विजराज, कला और शिव में श्लिष्टार्थ लगाने पर भिन्न अर्थ की प्रतीति होती है, अर्थात् शिवाजी ने भूषण की कविता पर प्रसन्न होकर उन्हें दान दिया। यहाँ यह व्यंग्यार्थ भी निकल आता है।

(2) किसी ने अपने साथी से कहा—“संध्याकाल के छः बज गये हैं।”
इस वाक्य में ‘छः बजे’ के अनेक अर्थ लिये जा सकते हैं, जैसे– कोई अर्थ लेगा कि अब घर जाना चाहिए, कोई स्त्री अर्थ लेगी कि गाय को दुहने का समय हो गया है, कोई भक्त अर्थ लेगा कि मन्दिर में आरती का समय हो गया है। इसी प्रकार अनेक अर्थ लिये जा सकते हैं।

(3) प्राकृतिक सुषमा में कमल तो कमल है।
इस वाक्य में प्रथम ‘कमल’ शब्द का अर्थ सामान्य रूप से कमल है, परन्तु द्वितीय ‘कमल’ शब्द का अर्थ ‘सौन्दर्यातिशय (सबसे सुन्दर)’ है।

(4) कोयल तो कोयल ही है।
इस वाक्य मे प्रथम ‘कोयल’ का अर्थ सामान्य कोयल है जबकि द्वितीय ‘कोयल’ शब्द का विशिष्ट अर्थ है– सब पक्षियों में ज्यादा मधुर कूकने वाली।

(5) सुरेश के चेहरे पर बारह बजे हैं।
सुरेश का चेहरा कोई घड़ी नहीं है, फिर उस पर बारह कैसे बज सकते हैं? इसका व्यंग्यार्थ यह है कि उसके चेहरे पर एकदम उदासी छा गई है।

(6) किसी चोर को डाँटते हुए थानेदार ने कहा कि तो तुम धन्ना सेठ हो?
इस वाक्य में चोर को डाँटने के लिए थानेदार ने उसका उपहास करते हुए यह कहा है। चोर धन्ना सेठ कहाँ से हो सकता है?

व्यंजना शक्ति के द्वारा निकलने वाले अर्थ को प्रतीयमानार्थ, गम्यार्थ, अन्यार्थ, व्यंग्यार्थ एवं ध्वन्यर्थ भी कहते हैं। व्यंग्यार्थ को व्यक्त करने वाला शब्द ‘व्यंजक’ कहलाता है। अभिधा और लक्षणा केवल अर्थ बतलाकर शांत हो जाती हैं, परन्तु व्यंजना काव्य–रचना के मूल स्वरूप को अथवा उसके उद्देश्य को व्यक्त करती है। व्यंजना के आधार पर ही किसी काव्य को उत्तम, मध्यम और अधम माना जाता है। इस प्रकार विशेष अर्थ निकालने वाली व्यंजना अन्तिम शब्द–शक्ति मानी जाती है।

♦ व्यंजना के भेद –
व्यंजना शब्द और अर्थ दोनों में रहती है, इस कारण इसके दो प्रमुख भेद हैं—शाब्दी व्यंजना और आर्थी व्यंजना।

(1) शाब्दी व्यंजना –
जहाँ व्यंजना शक्ति से व्यक्त हुआ व्यंग्यार्थ किसी विशेष शब्द के प्रयोग पर आश्रित रहता है, वहाँ शाब्दी व्यंजना होती है। अनेकार्थवाची शब्दों के प्रयोग में शाब्दी व्यंजना होती है, लेकिन इसमें शब्दार्थ नियन्त्रित रहता है। जैसे –
चिरजीवौ जोरी जुरै, क्यों न सनेह गम्भीर।
को घटि ये वृषभानुजा, वे हलधर के बीर॥
इस पद्यांश में आये ‘वृषभानुजा’ और ‘हलधर’ शब्द के अनेक अर्थ हैं, परन्तु यहाँ पर अर्थ नियन्त्रित होकर क्रमशः ‘राधा’ और ‘कृष्ण’ अर्थ लिया गया है।

(2) आर्थी व्यंजना –
जहाँ व्यंजना शक्ति से व्यक्त हुआ व्यंग्यार्थ केवल अर्थ पर ही आश्रित रहता है, वहाँ आर्थी व्यंजना होती है। जैसे –
सूर्य अस्त होने वाला है।
इसमें अभिधा से केवल ‘सूर्यास्त होना’ मुख्य अर्थ निकलता है, जबकि वक्ता, श्रोता या प्रकरण आदि के आधार पर इसके ये भिन्न–भिन्न व्यंग्यार्थ निकलते हैं—गाय दुहने का समय हो गया। दीपक जलाने का समय हो गया। अब घर चलना चाहिए। कार्यालय का समय समाप्त हो गया। मित्र से मिलने का समय आ गया, इत्यादि। इसी प्रकार—
‘बाल मराल कि मन्दर लेही।’
इसका मुख्यार्थ है—छोटा हंस मन्दराचल को कैसे उठा सकता है? जबकि धनुष–यज्ञ के प्रकरण के अनुसार इसका व्यंग्यार्थ होता है—क्या नवयुवक श्रीराम भारी शिव–धनुष को नहीं उठा सकते? इसमें काकु से व्यंग्यार्थ निकला है और यह अर्थ के सहारे व्यक्त हुआ है।

♦♦♦

« पीछे जायें | आगे पढ़ें »

• सामान्य हिन्दी
♦ होम पेज

प्रस्तुति:–
प्रमोद खेदड़

सामान्य हिन्दी

2. वर्ण–विचार

हिन्दी भाषा में वर्ण वह मूल ध्वनि है, जिसका विभाजन नहीं हो सकता। भाषा की ध्वनियों को लिखने हेतु उनके लिए कुछ लिपि–चिह्न हैं। ध्वनियों के इन्हीं लिपि–चिह्नों को 'वर्ण' कहा जाता है। वर्ण भाषिक ध्वनियों के लिखित रूप होते हैं। हिन्दी में इन्हीं वर्णों को 'अक्षर' भी कहते हैं। इस प्रकार ध्वनियों का सम्बंध जहाँ भाषा के उच्चारण पक्ष से होता है, वहीं वर्णों का सम्बन्ध लेखन पक्ष से। हिन्दी भाषा में सम्पूर्ण वर्णों के समूह को 'वर्णमाला' कहते हैं। हिन्दी वर्णमाला मे 44 वर्ण हैं जिसमें 11 स्वर एवं 33 व्यंजन हैं।

♦ स्वर : स्वर वे वर्ण हैं जिनका उच्चारण करते समय वायु बिना किसी अवरोध या रूकावट के मुख से बाहर निकलती है। स्वर 11 हैं– अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ऋ, ए, ऐ, ओ, औ।

यद्यपि 'ऋ' को लिखित रूप में स्वर माना जाता है किन्तु आजकल हिन्दी में इसका उच्चारण 'रि' के समान होता है। इसलिए 'ऋ' को स्वरों की श्रेणी में सम्मिलित नहीं किया गया है।

अंग्रेजी के प्रभाव से 'ऑ' ध्वनि का हिन्दी में समावेश हो चुका है। यह हिन्दी के 'आ' तथा 'ओ' के बीच की ध्वनि है।

• स्वरों की मात्राएँ–

व्यंजनों का उच्चारण हमेशा स्वरों के साथ मिलाकर किया जाता है। इसीलिए वर्णमाला में उनको व्यक्त करने के लिए मात्रा–चिह्नों की व्यवस्था की गई है। हिन्दी–वर्णमाला में 'अ' से 'औ' तक कुल ग्यारह स्वर हैं। इनमें 'अ' को छोड़कर शेष सभी स्वरों के लिए मात्रा–चिह्न बनाए गए हैं। ये मात्राएँ निम्नलिखित हैं–

स्वर–(मात्रा)–उदाहरण
अ – (×) – क्+अ= क
आ – (ा) – क्+आ= का
इ – (ि) – क्+इ= कि
ई – (ी) – क्+ई= की
उ – (ु) – क्+उ= कु
ऊ – (ू) – क्+ऊ= कू
ऋ – (ृ) – क्+ऋ= कृ
ए – (े) – क्+ए= के
ऐ – (ै) – क्+ऐ= कै
ओ – (ो) – क्+ओ= को
औ – (ौ) – क्+औ= कौ

हिन्दी वर्णमाला में 'अ' स्वर के लिए कोई मात्रा–चिह्न नहीं होता क्योंकि हर व्यंजन के उच्चारण में 'अ' शामिल रहता है। 'क', 'च', 'ट' वर्णों का अर्थ है– 'क्+अ=क', 'च्+अ=च' तथा 'ट्+अ=ट'। लेकिन जब व्यंजन को बिना 'अ' के लिखने की आवश्यकता होती है तब हिन्दी में इसकी अलग व्यवस्था है, जैसे–
• नीचे से गोलाई लिए वर्णों के नीचे हलंत लगा दिया जाता है–
ट् – अट्ठारह, द् – गद्दा, ड् – अड्डा।
• खड़ी पाई वाले वर्णों की खड़ी पाई हटा दी जाती है–
च – सच्चा, ब – डिब्बा, ल – दिल्ली।
• क्, फ् जैसे वर्णों में 'हुक' हटा दिया जाता है–
क् – मक्का, फ् – हफ़्ता।
• 'र्' के रूप को परिवर्तित कर वर्ण के ऊपर लगा दिया जाता है– क र् म=कर्म।

• अतिरिक्त चिह्न :–

उपर्युक्त वर्ण–चिह्नों के अलावा कुछ अन्य ध्वनियों के लिए भी हिन्दी में अतिरिक्त वर्ण–चिह्नों का प्रयोग किया जाता है। ये वर्ण और ध्वनियाँ इस प्रकार हैं–
अनुस्वार (ं) – अंडा, संध्या
अनुनासिक (ँ) – आँख, चाँद
विसर्ग (:) – प्रातः, अतः
हलन्त (्) – चिट्ठी, जगत्
ड़, ढ़ (.) – लड़का, बूढ़ा।

इन वर्ण चिह्नों में से 'अनुस्वार' तथा 'विसर्ग' को तो परम्परागत वर्णमाला में 'अं' तथा 'अः' के रूप में दिखाया जाता रहा है। 'हलंत' को वर्णमाला में नहीं दिखाया जाता क्योंकि यह स्वतंत्र वर्ण नहीं है, केवल व्यंजन में स्वर–अभाव दिखाता है।

उपर्युक्त वर्ण चिह्नों में अनुस्वार तो व्यंजन तथा स्वर दोनों के साथ लगता है। विसर्ग तथा अनुनासिकता चूँकि स्वरों के गुण हैं अतः इनके चिह्न केवल स्वरों के साथ लगाए जाते हैं। अनुनासिकता (ँ) का चिह्न 'आ' तथा बिना मात्रा वाले स्वरों के ऊपर लगाया जाता है और अन्य मात्रा वाले स्वरों के ऊपर अनुनासिकता को बिन्दु से ही दर्शाया जाता है, जैसे–
1. 'आ' तथा बिना मात्रा वाले स्वर– काँच, आँख, ढाँचा, माँ, चाँद, उँगली, बहुएँ आदि।
2. मात्रा वाले स्वर– सिँचाई, कँचुए, गोँद, मैं आदि।
3. हिन्दी में प्रातः, अतः आदि तत्सम शब्दों में विसर्ग लगता है।

• स्वरों के भेद – मुखाकृति, ओष्ठाकृति, उच्चारण–समय और उच्चारण–स्थान के आधार पर स्वरों के निम्नलिखित भेद हैं –

1. मुखाकृति के आधार पर स्वरों का वर्गीकरण :
• अग्र स्वर – जिन स्वरों के उच्चारण में जिह्वा का आगे का भाग सक्रिय रहता है, उन्हें 'अग्र स्वर' कहते हैं। जैसे– अ, इ, ई, ए, ऐ।

• पश्च स्वर – जिन स्वरों के उच्चारण में जिह्वा का पिछला भाग सक्रिय रहता है, उन्हें 'पश्च स्वर' कहते हैं। जैसे– आ, उ, ऊ, ओ, औ, ऑ।
• संवृत्त स्वर – संवृत्त का अर्थ है, कम खुला हुआ। जिन स्वरों के उच्चारण में मुख कम खुले, उन्हें 'संवृत्त स्वर' कहते हैं। जैसे– ई, ऊ।
• अर्द्धसंवृत्त स्वर – जिन स्वरों के उच्चारण में मुख संवृत्त स्वरों से थोड़ा अधिक खुलता है, वे अर्द्धसंवृत्त स्वर कहलाते हैं। जैसे– ए, ओ।
• विवृत्त स्वर – विवृत्त का अर्थ है, अधिक खुला हुआ। जिन स्वरों के उच्चारण में मुख अधिक खुलता है, उन्हें विवृत्त स्वर कहते हैं। जैसे– आ।
• अर्द्धविवृत्त स्वर – विवृत्त स्वर से थोड़ा कम और अर्द्धसंवृत्त से थोड़ा अधिक मुख खुलने पर जिन स्वरों का उच्चारण होता है, उन्हें अर्द्धविवृत्त स्वर कहते हैं। जैसे– ऐ, ऑ।

2. ओष्ठाकृति के आधार पर स्वरों के दो भेद हैं :
• वृत्ताकार स्वर – इनके उच्चारण में होठों का आकार गोल हो जाता है। जैसे– उ, ऊ, ओ, औ, ऑ।
• अवृत्ताकार स्वर – जिन स्वरों के उच्चारण में होंठ गोल न खुलकर किसी अन्य आकार में खुलें, उन्हें अवृत्ताकार स्वर कहते हैं। जैसे– अ, आ, इ, ई, ए, ऐ।

3. उच्चारण समय (मात्रा) के आधार पर स्वरों के दो भेद हैं :
• ह्रस्व स्वर – जिन स्वरों के उच्चारण में एक मात्रा का समय अर्थात् सबसे कम समय लगता है, उन्हें ह्रस्व स्वर कहते हैं। जैसे– अ, इ, उ।
• दीर्घ स्वर – जिन स्वरों के उच्चारण में दो मात्राओं का अथवा एक मात्रा से अधिक समय लगता है, उन्हें दीर्घ स्वर कहते हैं। जैसे– आ, ई, ऊ, ऐ, ओ, औ, ऑ।
(दीर्घ स्वर, ह्रस्व स्वरों के दीर्घ रूप न होकर स्वतंत्र ध्वनियाँ हैं।)

4. उच्चारण–स्थान के आधार पर स्वरों के दो भेद किए जा सकते हैं :
• अनुनासिक स्वर – इन स्वरों के उच्चारण में ध्वनि मुख के साथ–साथ नासिका–द्वार से भी बाहर निकलती है। अतः अनुनासिकता को प्रकट करने के लिए शिरोरेखा के ऊपर चन्द्रबिन्दु (ँ) का प्रयोग किया जाता है। किन्तु जब शिरोरेखा के ऊपर स्वर की मात्रा भी लगी हो तो सुविधा के लिए अथवा स्थानाभाव के कारण चन्द्रबिन्दु की जगह मात्र बिन्दु (ं) लिखते है। जैसे– बाँट-बांट।
• निरनुनासिक स्वर – ये वे स्वर हैं, जिनकी उच्चारण–ध्वनि केवल मुख से निकलती है।

अनुनासिक स्वर (ँ) तथा अनुस्वार (ं) में अन्तर :

अनुनासिक तथा अनुस्वार मूलतः व्यंजन हैं। इनके प्रयोग से कहीं–कहीं अर्थ भेद हो ही जाता है। जैसे–
हँस – हँसना, हंस – एक पक्षी।

अनुस्वार का अर्थ है सदा स्वर का अनुसरण करने वाला। 'अ' अनुस्वार का ही ह्रस्व रूप अनुनासिक 'अँ' है। तत्सम् शब्दों में अनुस्वार लगता है तथा उनके तद्भव रूपों में चन्द्रबिन्दु लगता है। जैसे– दंत से दाँत।

हिन्दी में अनुस्वार एक नासिक्य व्यंजन है, जिसे (ं) से लिखा जाता है। प्रायः इसे स्वर या व्यंजन के ऊपर लगाया जाता है। जैसे– अंक, अंगद, गंदा, पंकज, गंगा आदि। इस ध्वनि का अपना कोई निश्चित स्वरूप नहीं होता। उच्चारण इसके आगे आने वाले व्यंजन से प्रभावित होता है। जैसे– 'न्' के रूप में– गंगा, 'म्' के रूप में– संवाद।

अनुनासिकता स्वरों का गुण है। स्वरों का उच्चारण करते समय वायु को केवल मुख से ही बाहर निकाला जाता है। जब वायु को मुख के साथ–साथ नाक से भी बाहर निकाला जाए तो सभी स्वर अनुनासिक हो जाते हैं। अनुनासिकता का चिह्न हिन्दी में (ं) है, किन्तु लेखन में कुछ स्वरों पर चन्द्रबिन्दु तथा कुछ पर बिन्दु लगाया जाता है, जिसके निम्न नियम स्वीकार किए गये हैं–
(अ) जिन स्वरों अथवा उनकी मात्राओं का कोई भी भाग यदि शिरोरेखा से बाहर नहीं निकलता है तो अनुनासिकता के लिए 'चन्द्रबिन्दु' लगाया जाना चाहिए। जैसे– कुआँ, गाँव, चाँद, साँस, पूँछ, सूँघना आदि।
(ब) जिन स्वरों अथवा उनकी मात्राओं का कोई भी भाग शिरोरेखा के ऊपर निकलता है तो वहाँ अनुनासिकता को भी बिन्दु से ही लिखना चाहिए। जैसे– गेंद, सौंफ, चोंच, कोंपल आदि।

आजकल हिन्दी में सभी प्रकार के स्वरों पर अनुनासिकता के लिए बिन्दु ही लगाया जाना चाहिए, परन्तु वर्तनी के अनुसार जहाँ अनुनासिकता के चन्द्रबिन्दु से लिखने की बात कही गई है, वहाँ उसे चन्द्रबिन्दु से ही लिखा जाना चाहिए।

♦ व्यंजन :
हिन्दी भाषा में जिन ध्वनियों (वर्णों) का उच्चारण करते हुए हमारी श्वास–वायु मुँह के किसी भाग (तालु, ओष्ठ, दाँत, वर्त्स आदि) से टकराकर बाहर आती है, उन्हें व्यंजन कहते हैं। उदाहरणार्थ– 'क' के उच्चारण के समय कण्ठ में वायु का अवरोध होता है तथा 'प' के उच्चारण में होठों के पास वायु का अवरोध होता है। अतः व्यंजन वे वर्ण (ध्वनियाँ) हैं, जिनके उच्चारण में मुँह में वायु के प्रवाह में अवरोध (रुकावट) उत्पन्न है।
हिन्दी वर्णमाला में मूलतः 33 व्यंजन हैं। चार व्यंजन अरबी–फारसी के प्रभाव से आए हैं। व्यंजन निम्नलिखित हैं –
क ख ग घ ङ (क–वर्ग)
च छ ज झ ञ (च–वर्ग)
ट ठ ड ढ ण (ट–वर्ग)
त थ द ध न (त–वर्ग)
प फ ब भ म (प–वर्ग)
य र ल व
श ष ह

• व्यंजनों के भेद :
1. प्रयत्न और उच्चारण स्थान के आधार पर व्यंजनों के प्रकार–
(i) स्पर्श व्यंजन – ये पच्चीस हैं–
क वर्ग – क, ख, ग, घ, ङ।
च वर्ग – च, छ, ज, झ, ञ।
ट वर्ग – ट, ठ, ड, ढ, ण।
त वर्ग – त, थ, द, ध, न।
प वर्ग – प, फ, ब, भ, म।
(ii) अंतःस्थ व्यंजन – ये चार हैं–
य, र, ल, व।
(iii) ऊष्म व्यंजन – ये चार हैं–
श, ष, स, ह।
(iv) लुंठित व्यंजन – र।
(v) पार्श्विक व्यंजन – ल।
(vi) अन्य संघर्षी – ख़, ग़, ज़, फ़।
(vii) उत्क्षिप्त व्यंजन – ड़ और ढ़।
ये दोनों ध्वनियाँ हिन्दी में 'ड' और 'ढ' ध्वनियों से विकसित हुई हैं। हिन्दी में इनके अलावा न्ह, म्ह, ल्ह (न, म, ल महाप्राण रूप) भी नवविकसित ध्वनियाँ हैं। इन्हें न, म, ल के साथ 'ह' मिलाकर लिखते हैं।
(viii) अनुनासिक व्यंजन – प्रत्येक वर्ग का पाँचवा वर्ण–ङ्, ञ्, ण्, न्, म्। इनके स्थान पर अनुस्वार (ं) व चन्द्रबिन्दु (ँ) का प्रयोग किया जा सकता है।
(ix) संयुक्त व्यंजन – दो भिन्न व्यंजनों के मेल से बने व्यंजन, जो इस प्रकार हैं–
क्ष = क्+ष – कक्षा, रक्षा आदि।

त्र = त्+र – यात्रा, मित्र आदि।
ज्ञ = ज्+ञ – यज्ञ, ज्ञान, आज्ञा आदि।
श्र = श्+र – श्री, श्रीमती, श्रमिक आदि।
शृ = श+ऋ – शृंगार आदि।
द्य = द्+य – विद्यालय आदि।
क्त = क्+त – रक्त, भक्त आदि।
त्त = त्+त – वृत्त, उत्तर आदि।
द्द = द्+द – रद्द, भद्दा आदि।
द्ध = द्+ध – बुद्ध, प्रसिद्ध आदि।
द्व = द्+व – द्वार, द्विज आदि।
प्र = प्+र – प्रमोद।
न्न = न्+न – अन्न, प्रसन्न आदि।

2. स्वर–तंत्रियों के आधार पर व्यंजन दो प्रकार के हैं–
(i) अघोष व्यंजन – प्रत्येक वर्ग का प्रथम एवं द्वितीय वर्ण तथा श, ष एवं स।
इन व्यंजनों के उच्चारण के समय स्वर–तंत्रियाँ परस्पर इतनी दूर हट जाती हैं कि पर्याप्त स्थान के कारण उनके बीच निकलने वाली हवा बिना स्वर–तंत्रियों से टकराए और उनमें बिना कम्पन किए बाहर निकल जाती है, इसलिए इन्हें अघोष वर्ण कहते हैं।
(ii) सघोष व्यंजन – प्रत्येक वर्ग का तीसरा, चौथा एवं पाँचवा वर्ण, सभी अन्तःस्थ तथा 'ह' वर्ण।
इनके उच्चारण के समय दोनो स्वर–तंत्रियाँ इतनी निकट आ जाती हैं कि हवा स्वर–तंत्रियों से रगड़ खाती हुई मुख विवर में प्रवेश कर जाती है। स्वर–तंत्रियों के साथ रगड़ खाने से वर्णों में घोषत्व आ जाता है, इसलिए इन्हें सघोष वर्ण कहते हैं।

3. प्राणत्व के आधार पर व्यंजन के दो प्रकार हैं –
(i) अल्पप्राण – जिन ध्वनियों के उच्चारण में प्राण अर्थात् वायु कम शक्ति के साथ बाहर निकलती है, वे अल्पप्राण कहलाती हैं। प्रत्येक वर्ग का पहला, तीसरा और पाँचवा वर्ण, सभी अन्तःस्थ व्यंजन (य, र, ल, व) तथा सभी स्वर अल्पप्राण हैं।
(ii) महाप्राण – जिन ध्वनियों के उच्चारण में अधिक प्राण (वायु) अधिक शक्ति के साथ बाहर निकलती है, वे महाप्राण कहलाती हैं। प्रत्येक वर्ग का दूसरा और चौथा वर्ण तथा सभी ऊष्म व्यंजन (श, ष, स, ह) महाप्राण व्यंजन हैं।

• व्यंजन गुच्छ – जब दो या दो से अधिक व्यंजन एक साथ एक श्वास के झटके में बोले जाते हैं, तो उसको व्यंजन गुच्छ कहते हैं।
जैसे– स्टेशन, स्मारक, स्नान, स्तुति, स्पष्ट, स्फूर्ति, स्कंध, श्याम, स्वप्न, क्लेश, ग्यारह, क्योंकि, क्यारी, क्वारी, ग्लानि आदि।

• विसर्ग (:) – विसर्ग का उच्चारण 'ह्' के समान होता है। जैसे– मनःस्थिति (मनह् स्थिति), अतः (अतह्)। विसर्ग का प्रयोग केवल उन्हीं संस्कृत शब्दों में होता है, जो उसी रूप में प्रचलित हैं। जैसे–प्रायः, संभवतः। संस्कृत के 'दुःख' शब्द को हिन्दी में 'दुख' लिखा जाना स्वीकार कर लिया गया है।

• उच्चारण के आधार पर वर्णों के भेद :
फेफड़ों से निकलने वाली वायु मुख के विभिन्न भागों में जिह्वा (जीभ) का सहारा लेकर टकराती है जिससे विभिन्न वर्णों का उच्चारण होता है। इस आधार पर वर्णों के निम्नलिखित भेद किए छा सकते हैं–
क्र.सं. – नाम वर्ण – उच्चारण स्थान – वर्ण ध्वनि का नाम
1. अ, आ, ऑ, क वर्ग एवं विसर्ग (:) – कण्ठ – कण्ठ्य
2. इ, ई, च वर्ग, य, श् – तालु – तालव्य
3. ऋ, ट वर्ग, र्, ष् – मूर्द्धा – मूर्द्धन्य
4. त वर्ग, ल्, स् – दन्त – दन्त्य
5. उ, ऊ, प वर्ग – ओष्ठ – ओष्ठ्य
6. अं, अँ, ङ्, ञ्, न्, ण्, म् – नासिका – नासिक्य
7. ए, ऐ – कण्ठ-तालु – कण्ठ-तालव्य
8. ओ, औ – कण्ठ-ओष्ठ – कण्ठौष्ठ्य
9. व, फ – दन्त-ओष्ठ – दन्तौष्ठ्य
10. ह – स्वर-यंत्र – अलि जिह्वा

• बलाघात – शब्द बोलते समय अक्षर विशेष तथा वाक्य बोलते समय शब्द विशेष पर जो बल पड़ता है, उसे बलाघात कहते हैं। बलाघात दो प्रकार का होता है–(1) शब्द बलाघात (2) वाक्य बलाघात।
(1) शब्द बलाघात – प्रत्येक शब्द का उच्चारण करते समय किसी एक अक्षर पर अधिक बल दिया जाता है। जैसे–गिरा में 'रा' पर। हिन्दी भाषा में किसी भी अक्षर पर यदि बल दिया जाए तो इससे अर्थ भेद नहीं होता तथा अर्थ अपने मूल रूप जैसा बना रहता है।
(2) वाक्य बलाघात – हिन्दी में वाक्य बलाघात सार्थक है। एक ही वाक्य में शब्द विशेष पर बल देने से अर्थ में परिवर्तन आ जाता है। जिस शब्द पर बल दिया जाता है वह शब्द विशेषण शब्दों के समान दूसरों का निवारण करता है। जैसे– 'कुसुम ने बाजार से आकर खाना खाया।'
उपर्युक्त वाक्य में जिस शब्द पर भी जोर दिया जाएगा, उसी प्रकार का अर्थ निकलेगा। जैसे– 'कुसुम' शब्द पर जोर देते ही अर्थ निकलता है कि कुसुम ने ही बाजार से आकर खाना खाया। 'बाजार' पर जोर देने से अर्थ निकलता है कि कुसुम ने बाजार से ही वापस आकर खाना खाया। इसी प्रकार प्रत्येक शब्द पर बल देने से उसका अलग अर्थ निकल आता है। शब्द विशेष के बलाघात से वाक्य के अर्थ में परिवर्तन आ जाता है। शब्द बलाघात का स्थान निश्चित है किन्तु वाक्य बलाघात का स्थान वक्ता पर निर्भर करता है, वह अपनी जिस बात पर बल देना चाहता है, उसे उसी रूप में प्रस्तुत कर सकता है।

• अनुतान – भाषा के बोलने में जो आरोह–अवरोह (उतार–चढ़ाव) होता है, वही अनुतान कहलाता है। हिन्दी में सुर बदलने से वाक्य का अर्थ बदल जाता है।

• संगम – एक ही शब्द की दो ध्वनियों के बीच उच्चारण में किए जाने वाले क्षणिक विराम को संगम कहते हैं। संगम की स्थिति से बलाघात में भी अन्तर आ जाता है। दो भिन्न स्थानों पर संगम से दो भिन्न अर्थ सामने आते हैं। जैसे–
मनका = माला का मोती,
मन–का = मन से संबंधित भाव।
जलसा = उत्सव,
जल–सा = पानी के समान।

• श्रुतिमूलक (य/व) – कुछ शब्दों में य, व मूल शब्द की संरचना में नहीं होते, केवल सुनाई देते हैं। जहाँ य, व का प्रयोग विकल्प से होता है, वहाँ न किया जाए अर्थात् नई–नयी, गए–गये आदि रूपों में से केवल स्वर वाले रूपों को मानक माना जाए। इसी प्रकार जिन शब्दों मे 'य' ही मूल ध्वनि हो वहाँ 'य' का प्रयोग किया जाना चाहिए न कि 'स्वर' का।
जैसे–रुपये, स्थायी, अव्ययीभाव।

• हाइफन (–) – भाषा में स्पष्ट लेखन हेतु हाइफ़न का प्रयोग किया जाता है। हाइफ़न का प्रयोग निम्न स्थितियों में होता है –
1. द्वन्द्व समास में पदों के बीच हाइफ़न अवश्य लगाया जाए।
जैसे–दिन–रात, सुख–दुःख, राजा–रानी, आना–जाना, देख–भाल आदि।
2. 'सा' के पहले हाइफ़न अवश्य लगाना चाहिए। जैसे–

कोयल–सी मीठी बोली।
तुम–सा नहीं देखा।
चाँद–सा मुखड़ा आदि।

• आगत ध्वनियों का लेखन:

कुछ ऐसे शब्द, जो मूल रूप से अरबी–फारसी, अंग्रेजी आदि भाषाओं के हैं, किन्तु हिन्दी में इस प्रकार अपना लिए गए हैं कि वे अब हिन्दी के अंग बन गए हैं। उन्हें हिन्दी की प्रकृति के अनुसार लिख सकते हैं। जैसे–बाग, कलम, कुरान, फैसला, आदि जबकि मूल रूप में इस प्रकार लिखा जाता है–बाग़, क़लम, क़ुरान, फ़ैसला, आदि। यदि उच्चारण का अन्तर प्रदर्शित करना हो तो इस प्रकार लिखा जाएगा–सजा/सज़ा, खाना/ख़ाना आदि।

• दो–दो रूप वाले शब्द :

हिन्दी के कुछ शब्द ऐसे हैं, जिनके दो–दो रूप प्रचलित हैं। विद्वानों ने दोनों ही रूपों को मान्यता प्रदान कर दी है। जैसे–
गरमी-गर्मी, बरफ-बर्फ, गरदन-गर्दन, भरती-भर्ती, सरदी-सर्दी, कुरसी-कुर्सी, फुरसत-फुर्सत, बरतन-बर्तन, बरताव-बर्ताव, मरजी-मर्जी आदि।

• हल् चिह्न (्) – संस्कृत से आए तत्सम् शब्दों को उसी रूप में लिखना चाहिए, जैसे वे शब्द संस्कृत में लिखे जाते हैं, किन्तु आजकल हिन्दी में लिखते समय उनका हल् चिह्न लुप्त हो गया है। जैसे–भगवान, महान, जगत, श्रीमान आदि।

• ध्वनि परिवर्तन – संस्कृत मूलक शब्दों की वर्तनी को ज्यों का त्यों ग्रहण करना चाहिए। जैसे– ग्रहीत, प्रदर्शिनी, दृष्टव्य, आदि प्रयोग अशुद्ध हैं। इनके शुद्ध रूप हैं– गृहीत, प्रदर्शनी, द्रष्टव्य आदि।

• पूर्वकालिक प्रत्यय 'कर' – पूर्वकालिक प्रत्यय 'कर' सदैव क्रिया के साथ मिलाकर ही लिखा जाना चाहिए। जैसे– खा–पीकर, नहा–धोकर, मर–मरकर, जा–जाकर, पढ़कर, लिखकर, रो–रोकर आदि।

• वर्णों के मानक रूप – अ, ऋ, ख, छ, झ, ण, ध, भ, क्ष, श, त्र। वर्णों के मानक रूपों का ही प्रयोग करना चाहिए। लेखन में शिरोरेखा का प्रयोग अवश्य करना चाहिए।

• हिन्दी शब्द–कोश में शब्दों का क्रम –

हिन्दी शब्द–कोश में शब्दों का क्रम विभिन्न वर्णों के निम्न क्रम के अनुसार है–
अं, अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ऋ, ए, ऐ, ओ, औ, क, क्ष, ख, ग, घ, च, छ, ज, ज्ञ, झ, ट, ठ, ड, ढ, त, त्र, थ, द, ध, न, प, फ, ब, भ, म, य, र, ल, व, श, ष, स, ह ।

इस प्रकार शब्द–कोश में सर्वप्रथम 'अं' या 'अँ' से प्रारंभ होने वाले शब्द होते हैं और अन्त में 'ह' से प्रारंभ होने वाले शब्द। प्रत्येक शब्द से प्रारंभ होने वाले शब्द भी हजारों की संख्या में होते हैं, अतः शब्द–कोश में उनका क्रम–विन्यास विभिन्न स्वरों की मात्राओं के अग्र क्रम में होता है–
ं ँ ा ि ी ु ू ृ े ै ो ौ ।

• उदाहरण –

1. आधा वर्ण उस वर्ण की 'औ' की मात्रा के बाद आता है। जैसे– कटौती के बाद कट्टर, करौ के बाद कर्क, कसौ के बाद कस्त, कौस्तु के बाद क्य, क्यों के बाद क्रं... क्र... क्ल... क्व आदि।
2. 'ृ' की मात्रा 'ऊ' की मात्रा वाले वर्ण के बाद आती है। जैसे– कूक, कूल के बाद कृत।
3. 'क्ष' वर्ण आधे 'क्' के बाद आता है। जैसे– क्विँटल के बाद क्षण।
4. 'ज्ञ' अक्षर 'जौ' के अंतिम शब्द के बाद आता है। जैसे– जौहरी के बाद ज्ञात।
5. 'त्र' अक्षर 'त्यौ' के बाद आयेगा। जैसे– त्यौहार के बाद त्रय।
6. 'श्र' अक्षर 'श्यो' के बाद आयेगा क्योंकि श्र=श्*र है तथा 'र' शब्द–कोश में 'य' के बाद आता है।
7. 'द्य' अक्षर 'दौ' के बाद आता है। जैसे– दौहित्री के बाद द्युति।
8. ' ' अक्षर 'रौ' के बाद आता है। जैसे– सरौता के बाद सर्कस एवं करौना के बाद कर्क।
9. ' ' अक्षर किसी भी व्यंजन के 'य' के साथ संयुक्त अक्षर के अंतिम शब्द के बाद आता है। जैसे– प्योसार के बाद प्रकट, ग्यारह के बाद ग्रंथ, द्यौ के बाद द्रव एवं ब्यौरा के बाद ब्रश।

इस प्रकार प्रत्येक वर्ण के सर्वप्रथम अनुस्वार (ं) या चन्द्रबिन्दु (ँ) वाले शब्द आते हैं फिर उनका क्रम क्रमशः अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ऋ, ए, ऐ, ओ, औ की मात्रा के अनुसार होता है। 'औ' की मात्रा के बाद आधे अक्षर से प्रारंभ होने वाले शब्द दिये होते हैं। उदाहरणार्थ– 'क' से प्रारंभ होने वाले शब्दों का क्रम निम्न प्रकार रहेगा–
कं, क, कां, किँ, कि, कीँ, कुं, कु, कूं, कू, कृं, केँ, के, कैँ, कै, कोँ, को, कौँ, कौ, क् (आधा क) – क्या, क्रंद, क्रम आदि।

प्रत्येक शब्द में प्रथम अक्षर के बाद आने वाले द्वितीय, तृतीय आदि अक्षरों का क्रम भी उपर्युक्त प्रकार से ही होगा।

♦♦♦

« पीछे जायें | आगे पढ़ें »

• सामान्य हिन्दी
♦ होम पेज

प्रस्तुतिः–
प्रमोद खेदड़
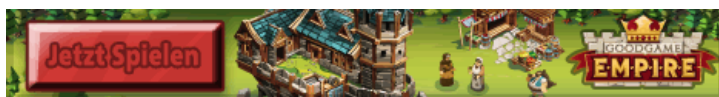
सामान्य हिन्दी

5. वाक्य–विचार

♦ वाक्य–

सार्थक पदों (शब्दों) के उस समूह को वाक्य कहते हैं, जिसके द्वारा एक अर्थ या एक पूर्ण भाव की अभिव्यक्ति होती है। वाक्य सार्थक शब्दों का व्यवस्थित रूप है। शिक्षितों की वाक्य–रचना व्याकरण के नियमों से अनुशासित होती है।

वाक्य एक या एक से अधिक शब्दों का भी हो सकता है। भाषा की इकाई वाक्य है। छोटा बालक चाहे वह एक शब्द ही बोलता हो, उसका अर्थ निकलता है, तो वह वाक्य है। वाक्य–रचना में प्रयुक्त सार्थक पदों के समूह में परस्पर योग्यता, आकांक्षा और आसक्ति या निकटता का होना जरूरी है, तभी वह सार्थक पद–समूह वाक्य कहलाता है।

♦ वाक्य की परिभाषाएँ–

• आचार्य विश्वनाथ—"वाक्य स्यात् योग्यताकांक्षासन्निधिः युक्तः पदोच्चयः।" अर्थात्—"जिस वाक्य में योग्यता और आकांक्षा के तत्त्व विद्यमान हो वह पद समुच्चय वाक्य कहलाता है।"
• पतंजलि—"पूर्ण अर्थ की प्रतीति कराने वाले शब्द–समूह को वाक्य कहते हैं।"
• प्रो॰ देवेन्द्रनाथ शर्मा—"भाषा की न्यूनतम पूर्ण सार्थक इकाई वाक्य है।"
• कार्ल एफ सुंडन—"वाक्य बोली का एक अंश है अर्थात् श्रोता के समक्ष अभिप्रेत को, जो सत्य है, प्रस्तुत किया जाता है।"

♦ वाक्य के तत्त्व–

विचारों की अभिव्यक्ति का माध्यम भाषा है। वाक्य में अभिव्यक्ति का तत्त्व होना आवश्यक है। वाक्य में ध्वनि तथा लिपि उसके बाह्य रूप हैं, शरीर हैं। अर्थ उसके प्राण हैं। शरीर व प्राण की तरह वाक्य में अर्थ तत्त्व, ध्वनि तत्त्व होना चाहिए। वाक्य में शब्दों का उचित क्रम होना चाहिए। इस प्रकार वाक्य–विन्यास में निम्न तत्त्वों का समावेश आवश्यक है–

(1) सार्थकता–

वाक्य में सदैव सार्थक शब्दों का ही प्रयोग होना चाहिए। निरर्थक शब्द तभी आते हैं, जब वे वाक्य में कुछ अर्थपूर्ण स्थिति में होते हैं, जैसे– बक–बक, अपने आप में निरर्थक शब्द हैं। जब ये शब्द किसी प्रश्नवाचक के साथ प्रयुक्त किए जाएँ, जैसे– 'क्या बक–बक लगा रखी है?' तो इन शब्दों में सार्थकता आ जाती है।

(2) योग्यता–

वाक्य के शब्दों (पदों) का प्रसंग के अनुकूल भाव–बोध अर्थात् अर्थ ज्ञान कराने की क्षमता ही 'योग्यता' कहलाती है। वाक्य में वाक् मर्यादा अथवा जीवन के अनुभव के विरुद्ध कोई बात नहीं कही जानी चाहिए। यदि वाक्य में व्यक्त अर्थ में असंगति होगी, तो वाक्य अपूर्ण कहा जाएगा। जैसे–
1. माली आग से उद्यान सींचता है।
2. हाथी को रस्सी से बाँधा है।

उक्त वाक्यों में पहले वाक्य में योग्यता का अभाव है क्योंकि आग का कार्य जलाना है, उसमें सींचने की योग्यता नहीं होती। दूसरे वाक्य में हाथी को रस्सी से बाँधने की बात भी अनुचित है क्योंकि वह लोहे की जंजीरों से बाँधा जाता है। अतः दोनों वाक्यों में भाव या अर्थ की असंगति है। अतः ये वाक्य नहीं हैं।

(3) आकांक्षा–

आकांक्षा का अर्थ है– श्रोता की जिज्ञासा। वाक्य के शब्द एक दूसरे पर आश्रित रहते हैं। इसलिए वाक्य के किसी भाव को पूर्ण रूप से समझने के लिए एक शब्द को सुनकर अन्य शब्दों को सुनने की उत्कण्ठा सहज उत्पन्न होती है। इसे ही आकांक्षा कहा जाता है। जैसे– भूखे बच्चे से माता कुछ शब्द 'हाँ बेटा' कह दे, तो बच्चा अगला शब्द– 'दूध लाती हूँ' सुनने को लालायित रहेगा, जब तक माता से 'दूध लाती हूँ' वाक्य को पूरा न सुन ले। यही आकांक्षा है, इसके बिना वाक्य पूर्ण नहीं होता।

(4) आसक्ति या निकटता–

आशक्ति का आशय है कि एक शब्द का जब उच्चारण किया जाए तो उसी समय अन्य शब्दों का भी उच्चारण किया जाए। वाक्य में योग्यता और आकांक्षा के साथ शब्दों में परस्पर सान्निध्य भी आवश्यक है अन्यथा अर्थ समझने में कठिनाई होती है। जैसे– हम आज कहें– वायुयान और कल कहें– उड़ता है, तो निश्चित रूप से अर्थ स्पस्ट नहीं होगा इसलिए दोनों पदों का समीप होना आवश्यक है तभी 'वायुयान उड़ता है', वाक्य पूर्ण होगा। रुक–रुककर बोले गए शब्द वाक्य की संज्ञा धारण नहीं कर सकते।

(5) पदक्रम–

वाक्यों में प्रयोग करने के लिए शब्दों का सही व्याकरणानुसार यथाक्रम प्रयोग करना आवश्यक है। पदक्रम के अभाव में कुछ का कुछ अर्थ निकल जाता है और इस प्रकार विचारों का सही सम्प्रेषण नहीं हो पाता। जैसे– 'खरगोश को काटकर गाजर खिलाओ।' वाक्य में पदक्रम का दोष होने से अर्थ का अनर्थ हो रहा है। अतः इसे– 'खरगोश को गाजर काटकर खिलाओ' लिखने से सही अर्थ बोध होगा।

(6) अन्वय–

अन्वय शब्द का अर्थ है– मेल। वाक्य में क्रिया के साथ लिँग, वचन, कारक, पुरुष, काल आदि का अनुकरणात्मक व व्याकरणात्मक मेल होना आवश्यक है। जैसे– मछलियाँ पानी में तैर रही हैं। यहाँ 'मछलियाँ' (कर्त्ता पद) प्रथम क्रम पर है तथा 'तैर रही हैं' अन्तिम क्रम पर और 'पानी में' (स्थानवाचक क्रियाविशेषण) मध्यम क्रम पर है। अतः उचित अन्वय के कारण यह वाक्य पूर्ण सार्थक सिद्ध हुआ।

♦ वाक्य के साहित्य सम्बन्धी गुण–

(1) स्पष्टता
(2) समर्थता
(3) श्रुतिमधुरता
(4) लचीलापन
(5) विषय का ज्ञान।

♦ वाक्य के अंग–

वाक्य–विन्यास करते समय जिन शब्दों का प्रयोग किया जाता है, वे मुख्य रूप से दो भागों में विभक्त रहते हैं, इसलिए वाक्य के दो अंग या घटक माने जाते हैं– (1) उद्देश्य और (2) विधेय।

(1) उद्देश्य–

वाक्य में जिस व्यक्ति या वस्तु के सम्बन्ध में कुछ कहा जाता है, उसे उद्देश्य कहते हैं। अतः काम के करने वाले (कर्त्ता) को उद्देश्य कहते हैं। उद्देश्य प्रायः संज्ञा, सर्वनाम या विशेषण शब्द होते हैं, कहीं पर क्रियार्थक शब्द भी उद्देश्य अंश बन जाता है। जैसे–
(1) रमेश गाँव जाएगा।
(2) अभिमानी का सर्वत्र आदर नहीं होता।

(3) घूमना स्वास्थ्य के लिए अच्छा रहता है।
प्रथम वाक्य में, गाँव जाने का कार्य 'रमेश' कर रहा है। अतः रमेश उद्देश्य है। द्वितीय वाक्य में, अभिमानी का आदर न होना वर्णित है, इसमें 'अभिमानी' विशेषण–पद उद्देश्य है। तृतीय वाक्य में, 'घूमना' क्रियार्थक शब्द है, जो कि वाक्य में उद्देश्य अंश की तरह प्रयुक्त है।

उद्देश्य का विस्तारक–
वाक्य में उद्देश्य अर्थात् कर्त्ता के साथ जो शब्द उसके विशेषण रूप में प्रयुक्त होते हैं, वे उद्देश्य के विस्तारक या पूरक कहलाते हैं। जैसे– लोभी व्यक्ति दुःखी रहता है। इस वाक्य में 'लोभी' शब्द 'व्यक्ति' का विशेषण है, इसलिए यह कर्त्ता अर्थात् 'व्यक्ति' का पूरक–पद है।
इस प्रकार उद्देश्य के अन्तर्गत कर्त्ता और कर्त्ता का विस्तार दोनों आते हैं। उद्देश्य विस्तारक में निम्न प्रकार के शब्द हो सकते हैं–
(1) संज्ञा या सर्वनाम (सम्बन्ध कारक के रूप में)। जैसे– रमेश की घड़ी चोरी चली गई, वाक्य में 'रमेश की'।
(2) सार्वनामिक विशेषण। जैसे– वह बालक चला गया, वाक्य में 'वह'।
(3) विशेष! जैसे– अच्छा लड़का प्यारा लगता है, वाक्य में 'अच्छा'।
(4) कृदन्त (सम्बन्ध कारक के रूप में)। जैसे– मेरा लिखा हुआ पत्र कहाँ है?, वाक्य में 'लिखा हुआ'।
(5) कृदन्त का विशेषण। जैसे– अधिक खेलना अच्छा नहीं होता, वाक्य में 'अधिक'।
(6) समानाधिकरण शब्द (समानार्थी) का अर्थ स्पष्ट करने वाला शब्द। जैसे– गोपाल का भाई सत्यपाल पास हो गया, वाक्य में 'गोपाल का भाई'।

(2) विधेय–
वाक्य में उद्देश्य के सम्बन्ध में जो कुछ कहा जाता है, उसे विधेय कहते हैं। वाक्य में क्रिया और उसका पूरक विधेय होता है। जैसे–
(1) आदमी जा रहा था।
(2) वह पढ़ते–पढ़ते सो गया।
(3) गीता लिखती है।
इन वाक्यों में 'जा रहा था', 'सो गया' और 'लिखती है' विधेय अंश हैं, इनसे उद्देश्य के कार्य का ज्ञान होता है।

विधेय का विस्तारक–
वाक्य में क्रिया की विशेषता बताने वाले पदों को विधेय का विस्तारक कहते हैं। कभी–कभी क्रिया के विस्तारक के साथ कुछ पूरक–पद भी आते हैं, जो कि कर्त्ता कारक को छोड़कर अन्य विभक्तियों के होते हैं। उनको भी विधेय के पूरक एवं विस्तारक भाग में रखा जाता है। जैसे–
• 'पुस्तक मेज के ऊपर रखी है।'
इस वाक्य में 'रखी है' विधेय है तथा 'मेज के ऊपर' विधेय का पूरक या विस्तारक है।
विधेय–विस्तारक में निम्न प्रकार के शब्द हो सकते हैं–
(1) क्रिया विशेषण। जैसे– मुरली कल चला गया, वाक्य में 'कल'।
(2) संज्ञा अथवा सर्वनाम (करण, अपादाना या अधिकरण कारक के रूप में)। जैसे– मैं कलम से लिख रहा हूँ, वाक्य में 'कलम से'।
(3) कृदन्त। जैसे– दौड़ता हुआ गया, वाक्य में 'दौड़ता हुआ'।
(4) अकर्मक क्रिया का पूरक शब्द। जैसे– वह फल खराब हो गया, वाक्य में 'खराब'।
(5) सकर्मक क्रिया का कर्म। जैसे– साधना ने पुस्तक पढ़ ली, वाक्य में 'पुस्तक'।
(6) सकर्मक क्रिया के कर्म का पूरक। जैसे– राम ने सुग्रीव को मित्र बनाया, वाक्य में 'मित्र'।
(7) सम्प्रदान कारक। जैसे– मैं सरोज के लिए मिठाई लाया, वाक्य में 'सरोज के लिए'।

♦ वाक्य और उपवाक्य–
वाक्य उस शब्द–समूह को कहते हैं जिसमें कर्त्ता और क्रिया दोनों होते हैं। जैसे– मोहन खेलता है। इसमें मोहन कर्त्ता और खेलता है– क्रिया है। इस वाक्य से पूरा अर्थ–बोध होता है। अतः यह एक वाक्य है।
कभी–कभी एक वाक्य में अनेक वाक्य होते हैं। इसमें एक वाक्य तो प्रधान वाक्य होता है और शेष उपवाक्य। जैसे–
मोहन ने कहा कि मैं खेलूँगा।
इसमें 'मोहन ने कहा' प्रधान वाक्य है और 'कि मैं खेलूँगा' उपवाक्य। उपवाक्य, वाक्य का भाग होता है, जिसका अपना अर्थ होता है और जिसमें उद्देश्य और विधेय भी होते हैं।
उपवाक्यों के आरम्भ में अधिकतर कि, जिससे, ताकि, जो, जितना, ज्यों–ज्यों, चूँकि, क्योंकि, यदि, यद्यपि, जब, जहाँ, इत्यादि होते हैं।

• उपवाक्य तीन प्रकार के होते हैं–
(1) संज्ञा उपवाक्य–
जो आश्रित उपवाक्य संज्ञा की तरह व्यवहृत हो, उसे संज्ञा उपवाक्य कहते हैं। इस उपवाक्य के पूर्व प्रायः 'कि' होता है। जैसे– राम ने कहा कि मैं खेलूँगा। यहाँ 'मैं खेलूँगा' संज्ञा उपवाक्य है।

(2) विशेषण उपवाक्य–
जो आश्रित उपवाक्य विशेषण की तरह व्यवहार में आये, उसे विशेषण उपवाक्य कहते हैं। जैसे– जो आदमी कल आया था, आज भी आया है। यहाँ 'जो कल आया था' विशेषण उपवाक्य है। इसमें जो, जैसा, जितना इत्यादि शब्दों का प्रयोग होता है।

(3) क्रियाविशेषण उपवाक्य–
जो उपवाक्य क्रिया विशेषण की तरह व्यवहार में आये, उसे क्रिया विशेषण उपवाक्य कहते हैं। जैसे– जब पानी बरसता है, तब मेंढक बोलते हैं। यहाँ 'जब पानी बरसता है' क्रिया विशेषण उपवाक्य है। इसमें प्रायः जब, जहाँ, जिधर, ज्यों, यद्यपि इत्यादि शब्दों का प्रयोग होता है।

♦ वाक्य के भेद :
वाक्य के भेद निम्नांकित तीन आधार पर किए जाते हैं–
1. रचना के आधार, पर
2. अर्थ के आधार पर,
3. क्रिया के आधार पर।

• रचना के आधार पर वाक्य के भेद–
1. सरल वाक्य–
जिस वाक्य में एक उद्देश्य, एक विधेय और एक ही मुख्य क्रिया हो, उसे सरल या साधारण वाक्य कहते हैं। जैसे–
• बिजली चमक ती है।
• पानी बरस रहा है।
• सूर्य निकल रहा है।
• वह पुस्तक पढ़ता है।
• छात्र मैदान में खेल रहे हैं।
इन वाक्यों में एक ही उद्देश्य और एक ही विधेय है अतः ये सरल या साधारण वाक्य हैं।

2. मिश्र वाक्य–
जिस वाक्य में मुख्य उद्देश्य और मुख्य विधेय के अलाव एक या अधिक समापिका क्रियाएँ हों, उसे मिश्र वाक्य कहते हैं। मिश्र वाक्यों की रचना एक से अधिक ऐसे साधारण

वाक्यों से होती है, जिनमें एक प्रधान तथा अन्य वाक्य गौण (आश्रित) हों। इस तरह मिश्रित वाक्य में एक मुख्य उपवाक्य और उस मुख्य उपवाक्य के आश्रित एक अथवा एक से अधिक उपवाक्य हैं। जैसे–
• वह कौन–सा मनुष्य है जिसने महाप्रतापी राजा भोज का नाम न सुना हो।
इस वाक्य में 'वह कौन–सा मनुष्य है' मुख्य वाक्य है और शेष सहायक वाक्य क्योंकि वह मुख्य वाक्य पर आश्रित है। अन्य उदाहरण–
• मालिक ने कहा कि कल छुट्टी रहेगी।
• मोहन लाल, जो श्याम गली में रहता है, मेरा मित्र है।
• ऊँट ही एक ऐसा पशु है जो कई दिनों तक प्यासा रह सकता है।
• यह वही भारत देश है जिसे पहले सोने की चिड़िया कहा जाता था।

♦ आश्रित उपवाक्य (गौण उपवाक्य)–
मिश्र वाक्य में आने वाले आश्रित (गौण) उपवाक्य तीन प्रकार के होते हैं–
(1) संज्ञा उपवाक्य–
जो अपने प्रधान उपवाक्य में प्रयुक्त उद्देश्य का, क्रिया का, कर्म या पूरक का समानाधिकरण होता है, उसे संज्ञा उपवाक्य कहते हैं। प्रायः संज्ञा उपवाक्य समुच्चय बोधक अव्यय 'कि' से जुड़ा रहता है। जैसे–
• हमारा विश्वास था कि भारत मैच जीत लेगा।
• मैं नहीं जानता कि वह कहाँ है।
• वकील ने फटकारते हुए कहा कि वह झूठा है।
विशेष—उद्धरण चिह्नों में बंद उपवाक्य भी संज्ञा उपवाक्य होते हैं। जैसे–
• सुषमा ने कहा, "आज मेरा जन्म दिन है।"
• विद्यार्थी ने कहा, "मैं विद्यालय जाऊँगा।"

(2) विशेषण उपवाक्य–
जो अपने प्रधान उपवाक्य के किसी संज्ञा या सर्वनाम शब्द की विशेषता बताता है, उसे विशेषण उपवाक्य कहते हैं। जैसे–
• जो बात सुनो उसे समझो।
• यह वही छात्र है, जो मेरे स्कूल में पढ़ता था।
इनमें 'जो', 'उसे' तथा 'यह' शब्द दोनों उपवाक्यों को जोड़ रहे हैं तथा सर्वनाम की विशेषता बता रहे हैं।

(3) क्रियाविशेषण उपवाक्य–
जो अपने प्रधान उपवाक्य के क्रिया शब्द की विशेषता बताता है या क्रियाविशेषण का समानाधिकरण होता है, उसे क्रियाविशेषण उपवाक्य कहते हैं। जैसे–
• जब–जब वर्षा होगी, तब–तब हरियाली फैलेगी।
• यदि वह पढ़ेगा नहीं, तो उत्तीर्ण कैसे होगा?
इन वाक्यों में जब–जब, तब–तब, यदि, तो—क्रियाविशेषण की तरह प्रयुक्त होकर प्रधान उपवाक्य की क्रिया की विशेषता बता रहे हैं।

समानाधिकरण उपवाक्य–
जो उपवाक्य प्रधान उपवाक्य या आश्रित उपवाक्य के समान अधिकरण वाला हो, अर्थात् एक पूर्ण वाक्य में दो उपवाक्य हों और दोनों ही प्रधान हों, उसे समानाधिकरण उपवाक्य कहते हैं। इन उपवाक्यों में संयोजक अव्यय शब्दों का प्रयोग होता है। जैसे–
• रामदीन निर्धन है, किन्तु है परिश्रमी।
• बुरी संगति मत करो, वरना बाद में पछताओगे।

3. संयुक्त वाक्य–
जिस वाक्य में एक से अधिक साधारण या मिश्र वाक्य हों और वे किसी संयोजक अव्यय (किन्तु, परन्तु, बल्कि, और, अथवा, तथा, आदि) द्वारा जुड़े हों, तो ऐसे वाक्य को संयुक्त वाक्य कहते हैं। जैसे–
• राम पढ़ रहा था परन्तु रमेश सो रहा था।
• शीला खेलने गई और रीता नहीं गई।
• समय बहुत खराब है इसलिए सावधान रहना चाहिए।
इन वाक्यों में 'परन्तु', 'और' व 'इसलिए' अव्यय पदों के द्वारा दोनों साधारण वाक्यों को जोड़ा गया है। यदि ऐसे वाक्यों में से इन योजक अव्यय शब्दों को हटा दिया जाए तो प्रत्येक वाक्य में दो–दो स्वतंत्र वाक्य बनते हैं। इसी कारण इन्हें संयुक्त या जुड़े हुए वाक्य कहते हैं।

• अर्थ के आधार पर वाक्य के भेद–
अर्थ के आधार पर वाक्य के निम्नलिखित आठ भेद होते हैं–
1. विधिवाचक–
जिन वाक्यों में क्रिया के करने या होने का सामान्य कथन हो और ऐसे वाक्यों में किसी काम के होने या किसी के अस्तित्व का बोध होता हो, उन्हें विधिवाचक या विधानवाचक वाक्य कहते हैं। जैसे–
• सूर्य गर्मी देता है।
• हिन्दी हमारी राष्ट्र भाषा है।
• भारत हमारा देश है।
• वह बालक है।
• हिमालय भारत के उत्तर दिशा में स्थित है।
उक्त वाक्यों में सूर्य का गर्मी देना, हिन्दी का राष्ट्र भाषा होना आदि कार्य हो रहे हैं और किसी के (देश तथा बालक) होने का बोध हो रहा है। अतः ये विधिवाचक वाक्य हैं।

2. निषेधवाचक–
जिन वाक्यों में कार्य के निषेध (न होने) का बोध होता हो, उन्हें निषेधवाचक वाक्य अथवा नकारात्मक वाक्य कहते हैं। जैसे–
• मैं वहाँ नहीं जाऊँगा।
• वे यह कार्य नहीं जानते हैं।
• बसन्ती नहीं नाचेगी।
• आज हिन्दी अध्यापक ने कक्षा नहीं ली।
उक्त सभी वाक्यों में क्रिया सम्पन्न नहीं होने के कारण ये निषेधवाचक वाक्य हैं।

3. आज्ञावाचक–
जिन वाक्यों से आदेश या आज्ञा या अनुमति का बोध हो, उन्हें आज्ञावाचक वाक्य कहते हैं। जैसे–
• तुम वहाँ जाओ।
• यह पाठ तुम पढ़ो।
• अपना–अपना काम करो।
• आप चुप रहिए।
• मैं घर जाऊँ।
• तुम पानी लाओ।

4. प्रश्नवाचक–

जिन वाक्यों में कोई प्रश्न किया जाये या किसी से कोई बात पूछी जाये, उन्हें प्रश्नवाचक वाक्य कहते हैं। जैसे–

• तुम्हारा क्या नाम है?
• तुम पढ़ने कब जाओगे?
• वे कहाँ गए हैं?
• क्या तुम मेरे साथ गाओगे?

5. विस्मयबोधक–

जिन वाक्यों में आश्चर्य, हर्ष, शोक, घृणा आदि के भाव व्यक्त हों, उन्हें विस्मयबोधक वाक्य कहते हैं। जैसे–

• अरे! इतनी लम्बी रेलगाड़ी!
• ओह! बड़ा जुल्म हुआ!
• छिः! कितना गन्दा दृश्य!
• शाबाश! बहुत अच्छे!

उक्त वाक्यों में आश्चर्य (अरे), दुःख (ओह), घृणा (छिः), हर्ष (शाबाश) आदि भाव व्यक्त किए गए हैं अतः ये विस्मयबोधक वाक्य हैं।

6. संदेह बोधक–

जिन वाक्यों में कार्य के होने में सन्देह अथवा सम्भावना का बोध हो, उन्हें संदेह वाचक वाक्य कहते हैं। जैसे–

• सम्भवतः वह सुधर जाय।
• शायद मैं कल बाहर जाऊँ।
• आज वर्षा हो सकती है।
• शायद वह मान जाए।

उक्त वाक्यों में कार्य के होने में अनिश्चितता व्यक्त हो रही है अतः ये संदेह वाचक वाक्य हैं।

7. इच्छावाचक–

जिन वाक्यों में वक्ता की किसी इच्छा, आशा या आशीर्वाद का बोध होता है, उन्हें इच्छावाचक वाक्य कहते हैं। जैसे–

• भगवान तुम्हें दीर्घायु करे।
• नववर्ष मंगलमय हो।
• ईश्वर करे, सब कुशल लौटें।
• दूधों नहाओ, पूतों फलो।
• कल्याण हो।

इन वाक्यों में वक्ता ईश्वर से दीर्घायु, नववर्ष के मंगलमय, सबकी सकुशल वापसी और पशुधन व पुत्र धन की कामना व आशीष दे रहा है अतः ये इच्छावाचक वाक्य हैं।

8. संकेत वाचक–

जिन वाक्यों से एक क्रिया के दूसरी क्रिया पर निर्भर होने का बोध हो, उन्हें संकेत वाचक या हेतुवाचक वाक्य कहते हैं। जैसे–

• वर्षा होती तो फसल अच्छी होती।
• आप आते तो इतनी परेशानी नहीं होती।
• जो पढ़ेगा वह उत्तीर्ण होगा।
• यदि छुट्टियाँ हुईं तो हम कश्मीर अवश्य जाएँगे।

इन वाक्यों में कारण व शर्त का बोध हुआ है इसलिए ऐसे सभी वाक्य संकेत वाचक वाक्य कहलाते हैं।

• क्रिया के आधार पर वाक्य के भेद–

क्रिया के आधार पर वाक्य तीन प्रकार के होते हैं–

(1) कर्तृप्रधान वाक्य (कर्तृवाच्य)–

ऐसे वाक्यों में क्रिया कर्त्ता के लिँग, वचन और पुरुष के अनुसार होती है। जैसे–

• बालक पुस्तक पढ़ता है।
• बच्चे खेल रहे हैं।

(2)कर्मप्रधान वाक्य (कर्मवाच्य)–

इन वाक्यों में क्रिया कर्म के अनुसार होती है तथा क्रिया के लिँग, वचन कर्म के अनुसार होते हैं। क्रिया सकर्मक होती है। जैसे–

• बालकों द्वारा पुस्तक पढ़ी जाती है।
• यह पुस्तक मेरे द्वारा लिखी गई।

(3) भावप्रधान वाक्य (भाववाच्य)–

ऐसे वाक्यों में कर्म नहीं होता तथा क्रिया सदा अकर्मक, एकवचन, पुल्लिँग तथा अन्यपुरुष में प्रयोग की जाती है। इनमें भाव (क्रिया) की प्रधानता रहती है। जैसे–

• मुझसे अब नहीं चला जाता।
• यहाँ कैसे बैठा जाएगा।

वाक्य–विश्लेषण

♦ वाक्य–विश्लेषण–

रचना या संगठन की दृष्टि से जो तीन प्रकार (सरल, मिश्र व संयुक्त) के वाक्य माने जाते हैं, उनका विश्लेषण या भेद आदि का निर्देश करना वाक्य–विश्लेषण कहलाता है।

वाक्य–विश्लेषण में वाक्य के अंगों को अलग–अलग किया जाता है। वाक्य–विश्लेषण को वाक्य–विग्रह, वाक्य–पृथक्करण या वाक्य–विच्छेद भी कहते हैं।

♦ सरल (साधारण) वाक्य का विश्लेषण–

सरल वाक्य के विश्लेषण में निम्नांकित बातें लिखी जाती हैं–

(1) उद्देश्य–
(क) साधारण उद्देश्य (संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण या कृदन्त)।
(ख) उद्देश्य विस्तारक।
(2) विधेय–
(क) साधारण विधेय (क्रिया)।
(ख) विधेय–विस्तारक या पूरक।
उदाहरण–
• रमेश गाँव जाएगा।

(क) रमेश—उद्देश्य।
(ख) गाँव—उद्देश्य विस्तारक।
(ग) जाएगा—विधेय।

♦ मिश्र वाक्य का विश्लेषण–

मिश्र वाक्य के विश्लेषण में निम्नांकित बातें दी जाती हैं–
(1) उपवाक्य।
(2) उपवाक्य के भेद।
(3) जोड़ने वाला शब्द (संयोजक अव्यय)।
(4) प्रत्येक उपवाक्य का साधारण वाक्य की भाँति विश्लेषण।
उदाहरण–
• तुम इस पुस्तक को जहाँ चाहो वहाँ रखो।
(क) तुम इस पुस्तक को वहाँ रखो—प्रधान वाक्य।
(ख) जहाँ (तुम) चाहो—क्रिया विशेषण उपवाक्य।
(ग) प्रधान उपवाक्य '(क)' के स्थानवाचक क्रिया विशेषण 'वहाँ' का समानाधिकरण।
(घ) पूरा वाक्य मिश्र वाक्य है।
• जो परिश्रम करेगा वह अवश्य पास होगा।
(क) वह अवश्य पास होगा—प्रधान उपवाक्य।
(ख) जो परिश्रम करेगा—विशेषण उपवाक्य।
(ग) प्रधान उपवाक्य (क) के वह सर्वनाम का विशेषण।
(घ) स्थानवाचक क्रिया विशेषण 'वह' का समानाधिकरण।
(ङ) पूरा वाक्य मिश्र वाक्य है।

♦ संयुक्त वाक्य का विश्लेषण–

संयुक्त वाक्य के विश्लेषण में निम्नलिखित बातें आती हैं–
(1) प्रधान उपवाक्य।
(2) समानाधिकरण उपवाक्य।
(3) जोड़ने वाला शब्द (संयोजक अव्यय)।
(4) प्रत्येक वाक्य का साधारण वाक्य की भाँति विश्लेषण।
उदाहरण–
• मुरारी चतुर है और गोपाल मूर्ख है।
(क) मुरारी चतुर है—प्रधान उपवाक्य।
(ख) गोपाल मूर्ख है—समानाधिकरण उपवाक्य जोड़ने वाला शब्द। और पूरा वाक्य संयुक्त वाक्य है।
• रमेश घर चला गया अथवा बाजार।
(क) रमेश घर चला गया—प्रधान उपवाक्य।
(ख) (रमेश) बाजार (चला गया)—समानाधिकरण उपवाक्य, जोड़ने वाला शब्द 'अथवा'।
(ग) पूरा वाक्य संयुक्त वाक्य है।

पदबन्ध

♦ पदबन्ध-

वाक्य में जब एक से अधिक पद मिलकर एक व्याकरणिक इकाई का काम करते हैं तब उस बंधी हुई इकाई को पदबन्ध कहते हैं। जैसे–
• पाँचवीं कक्षा में पढ़ने वाला छात्र राकेश बहुत बुद्धिमान है।
• हिन्दी पढ़ाने वाले गुरुजी ने मुझे एक अति सुन्दर और उपयोगी पुस्तक दी।
• किसी व्यक्ति या समाज का उत्थान अनुशासन पर निर्भर है।

उक्त वाक्यों में नेवी रंग के अंश पदबन्ध का कार्य कर रहे हैं। पदबन्ध में विकारी और अविकारी दोनों प्रकार के शब्द हो सकते हैं और वे मिलकर व्याकरणिक इकाई पदबन्ध का कार्य करते हैं।

♦ पदबन्ध के भेद–

पदबन्ध के आठ भेद हैं–

1. संज्ञा पदबन्ध–

जब कोई पद समूह वाक्य में संज्ञा का काम देता है तो उसे संज्ञा पदबन्ध कहते हैं। जैसे–
• (पास के मकान में रहने वाला आदमी) मेरा परिचित है।
• (यह पेड़ तो किसी बड़े और तेज धार वाले कुल्हाड़े से) कट सकता है।
• (देश के लिए मर मिटने वाला व्यक्ति सच्चा देशभक्त) होता है।

उक्त वाक्यों में कोष्ठक में बंद वाक्यांश संज्ञा पदबन्द हैं।

2. सर्वनाम पदबन्ध–

वाक्य में सर्वनाम का कार्य करने वाले पदबन्ध को सर्वनाम पदबन्ध कहते हैं। जैसे–
• (भाग्य का मारा मैं) कहाँ आ पहुँचा।
• (चोट खाए हुए तुम) भला क्या खेलोगे।
• (है यहाँ ऐसा कोई!) जो साँप को पकड़ ले।
• (हम सबको धोखा देने वाला तू ,) आज स्वयं धोखा खा गया।

उक्त वाक्यों में कोष्ठक वाले वाक्यांश सर्वनाम पदबन्ध हैं।

3. क्रिया पदबन्ध–

एक से अधिक क्रिया पदों से बनने वाले क्रिया रूपों को क्रिया पदबन्ध कहते हैं। जैसे–
• कहा जा सकता है।
• जाता रहता था।
• निकलता जा रहा है।
• लौटकर कहने लगा।

ये सभी वाक्य क्रिया पदबन्ध हैं।

4. विशेषण पदबन्ध–

जब कोई पद समूह किसी संज्ञा, सर्वनाम की विशेषता बताए तो उसे विशेषण पदबन्ध कहते हैं। जैसे–
• शेर के समान बलवान (आदमी)।
• जोर–जोर से चिल्लाने वाले (तुम)।
• सुन्दर और स्वच्छ लेख लिखने वाला (छात्र)।
• सस्ता खरीदा हुआ (सामान)।
• इस गली में सबसे बड़ा (घर)।

ये पद समूह संज्ञा व सर्वनाम की विशेषता प्रकट कर रहे हैं अतः विशेषण पदबन्ध हैं।

5. क्रिया–विशेषण पदबन्ध–

वह वाक्यांश या पद समूह जो क्रिया–विशेषण का कार्य करे उसे क्रिया–विशेषण पदबन्ध कहते हैं। जैसे–
• घर से लौटकर (जाऊँगा)।
• पहले से बहुत धीरे (चलने लगा)।
• जमीन पर लोटते हुए (बोला)।
• खुले आँगन में (बैठो)।
• बड़ी सावधानी से (उठाओ)।

इन वाक्यों में सभी पदबन्ध क्रिया–विशेषण का कार्य कर रहे हैं। ये कोष्ठक में प्रदर्शित क्रिया की विशेषता बता रहे हैं।

6. सम्बन्ध बोधक पदबन्ध–

जो शब्द वाक्य में दो पदबन्धों के बीच सम्बन्ध स्थापित करावें, उन शब्दों को सम्बन्ध बोधक पदबन्ध कहते हैं। जैसे– बदले, बजाय, पलटे, समान, योग्य, सरीखा, ऊपर, भीतर, पीछे से, बाहर की ओर आदि शब्द वाक्य में सम्बन्ध बोधक पदबन्द कहे जाते हैं। यथा–
• राम की ओर।
• छत के ऊपर।
• कृष्ण के समान आदि।

7. समुच्चय बोधक पदबन्द–

जो शब्द या वाक्यांश एक पदबन्ध को दूसरे शब्द या वाक्यांश से मिलाते हैं उन्हें समुच्चय बोधक पदबन्ध कहते हैं। जैसे–
• राम और श्याम विद्यालय जाते हैं।
• तुम आओगे अथवा राजू आएगा।
• यद्यपि यह काम कठिन है तथापि तुम उसे कर सकते हो।
• यदि तुम पर्वत पर जाओ तो साधुओं के दर्शन हो सकते हैं।
• राकेश ने बहुत प्रयत्न किया परन्तु फिर भी वह हार गया।

उक्त वाक्यों में 'और', 'अथवा', 'यद्यपि', 'तथापि', 'यदि', 'तो', 'परन्तु' शब्द समुच्चय बोधक पदबन्ध हैं।

8. विस्मयादिबोधक पदबन्ध–

किसी वाक्य में 'हर्ष', 'शोक', 'आश्चर्य', 'लज्जा', 'ग्लानि' आदि मनोभावों को व्यक्त करने वाले शब्द विस्मयादिबोधक पदबन्ध कहलाते हैं। जैसे–
• अहा! आज तो मिठाईयाँ बन रही हैं।
• हाँ! मैं भी तो सही कहता हूँ।
• ऐ! तुम फर्स्ट आ गए।
• छिः छिः! फिर पकड़ा गया।

उक्त वाक्यों में 'अहा', 'हाँ', 'ऐ' तथा 'छिः छिः' विस्मयादिबोधक पदबन्ध हैं।

पदक्रम

♦ पदक्रम–

सरल वाक्य में वाक्य के विभिन्न अंग यथा– कर्त्ता, कर्म, पूरक, क्रिया विशेषण आदि सामान्य रूप से जिस क्रम में आते हैं, उस क्रम को 'पदक्रम' कहते हैं।

पदक्रम सभी भाषाओं में एक–सा नहीं होता। हिन्दी में कर्त्ता–कर्म–क्रिया का क्रम है तो अंग्रेजी में कर्त्ता–क्रिया–कर्म का क्रम है। वास्तव में वाक्य में पदों के उचित स्थान पर होने से ही सही अर्थ की प्राप्ति होती है। पदक्रम में थोड़ा–सा परिवर्तन हो जाने पर अर्थ का अनर्थ होने की संभावना बनी रहती है।

♦ पदक्रम के नियम–

वाक्य में पदक्रम का सबसे साधारण नियम है कि पहले कर्त्ता या उद्देश्य, फिर कर्म या पूरक और अंत में क्रिया आती है, जैसे– बालक पुस्तक पढ़ता है।
हिन्दी में पदक्रम के कुछ प्रमुख नियम इस प्रकार हैं–

• कर्ता के बाद क्रिया आती है।

जैसे–
- राम सोता है।
- मैं खेलता हूँ।

• कर्ता और क्रिया के बीच कर्म आता है।

जैसे–
- अनिल आम खाता है।
- सीमा स्कूल जाती है।

• द्विकर्मक क्रियाओं में गौण कर्म पहले और मुख्य कर्म बाद में आता है।

जैसे–
- सोहन ने श्याम को किताब दी।
- मैंने अपने मित्र को पत्र लिखा।
- पिताजी मेरे लिए साइकिल लाए।

• कर्ता और क्रिया के बीच पूरक आता है।

जैसे–
- कुशाल विद्यार्थी है।
- राजवीर डॉक्टर है।

• विशेषण संज्ञा के पूर्व आता है।

जैसे–
- गीता ने नीली साड़ी पहनी है।
- गोविन्द होशियार लड़का है।

• क्रिया–विशेषण क्रिया से पहले आता है।
जैसे–
- घोड़ा तेज दौड़ता है।
- हाथी धीरे–धीरे चलता है।
• निषेधात्मक क्रिया–विशेषण क्रिया से पहले आता है।
जैसे–
- मैं आज स्कूल नहीं जाऊँगा।
- तुम्हें धूम्रपान नहीं करना चाहिए।
• प्रश्नवाचक सर्वनाम जब विशेषण के रूप में प्रयुक्त होता है तो पहले आता है।
जैसे–
- यहाँ कितने लोग हैं?
- यह कैसी किताब है?
• प्रश्नवाचक सर्वनाम या क्रिया–विशेषण क्रिया से पहले आते हैं।
जैसे–
- वह कौन है?
- वह कहाँ जा रहा है?
- तुम्हारा ऑफिस कहाँ है?
• यदि उत्तर 'हाँ' या 'नहीं' में अपेक्षित हो तो 'क्या' मुख्यतः प्रारम्भ में और कभी–कभी अंत में लगता है।
जैसे–
- क्या मनोहर कॉलेज गया था?
- मनोहर कॉलेज गया था क्या?
• संबोधन वाक्य के प्रारम्भ में आता है।
जैसे–
- अरे कमल! इधर आओ।
- हे प्रभु! मेरी रक्षा करो।
• पूर्वकालिक रूप 'कर' क्रिया के बाद जुड़ता है।
जैसे–
- हाथ धोकर भोजन करो।
- खाना खाकर जाना।
• समानाधिकरण शब्द मुख्य शब्द के बाद आता है और बाद के शब्द में विभक्ति का प्रयोग होता है।
जैसे–
- श्याम, तेरा भाई बाहर खड़ा है।
- भवानी, लुहार को बुलाओ।
• प्रश्नवाचक अव्यय 'न' बहुधा वाक्य के अंत में आता है।
जैसे–
- आप वहाँ चलेंगे न?।
- तुम मेरे जन्मदिन की पार्टी में आओगे न?
• संबंधवाचक विशेषण जैसे– जहाँ, तहाँ, जब तक, जैसे, तैसे आदि सामान्यतः वाक्य के अंत में आते हैं।
जैसे–
- जब मैं कहूँ तब तुम चले जाना।
- जहाँ तेरी इच्छा हो वहाँ जा।
• निषेधात्मक अव्यय– न, नहीं, मत आदि बहुधा क्रिया के पहले आते हैं।
जैसे–
- मैं नहीं जाऊँगा।
- तुम मत डरो।
• कर्ता का विस्तार कर्त्ता से पहले तथा क्रिया का विस्तार कर्त्ता के बाद आता है।
जैसे–
- वृद्धा स्त्री को देखते–देखते होश आ गया।
• यदि एक वाक्य में अनेक विशेषण प्रयोग किए गये हों तो सबसे पहले संकेत वाचक विशेषण, फिर संख्या वाचक या परिमाण वाचक और अंत में गुणवाचक विशेषण आता है।
जैसे–
- मैंने ये दो पुराने पलंग बेचे हैं।
• कर्त्ता और कर्म के मध्य में करण कारक आता है।
जैसे–
- माता प्यार से अपने पुत्रों को भोजन कराती है।
• अधिकरण कारक प्रायः वाक्य के बीच में आता है।
जैसे–
- खाने की मेज पर रेडियो रखा है।
• आग्रह व्यक्त करने वाला 'न' वाक्य के अंत में आता है।
जैसे–
- कृपया मेरी बात मान लो न।
•तो, भी, भर, ही आदि शब्द उन पदों के पूर्व प्रयुक्त होते हैं, जिन पर अधिक बल देना होता है।
जैसे–
- मुख्यमंत्री भी आयेंगे।
- तुम भी हमारे साथ चलो न।
• समुच्चय बोधक अव्यय जिन शब्दों को जोड़ते हैं, उनके बीच में आते हैं।
जैसे–
- ग्रह एवं उपग्रह सूर्य के चारों ओर घूमते हैं।
- हम उन्हें सुख देंगे, क्योंकि उन्होंने हमारे लिए बड़ा तप किया है।
• विस्मयादिबोधक प्रायः वाक्य के प्रारंभ में आते हैं।
जैसे–
- अरे! यह क्या हुआ?
- हे ईश्वर! यह क्या हो गया?
- मित्र! तुम इतने समय कहाँ थे?

विराम–चिह्न

विराम शब्द का अर्थ है ठहराव या रुक जाना। एक व्यक्ति अपनी बात कहने के लिए, उसे समझाने के लिए, किसी कथन पर बल देने के लिए, आश्चर्य आदि भावों की अभिव्यक्ति के लिए कहीं कम, कहीं अधिक समय के लिए ठहरता है। भाषा के लिखित रूप में उक्त ठहरने के स्थान पर जो निश्चित संकेत चिह्न लगाये जाते हैं, उन्हें विराम–चिह्न कहते हैं।

वाक्य में विराम–चिह्नों के प्रयोग से भाषा में स्पष्टता और सुन्दरता आती है तथा भाव समझने में सुविधा होती है। यदि विराम–चिह्नों का यथा स्थान उचित प्रयोग न किया जाये तो अर्थ का अनर्थ हो जाता है। जैसे–
• रोको, मत जाने दो।
• रोको मत, जाने दो।
इस प्रकार विराम–चिह्नों से अर्थ एवं भाव में परिवर्तन होता है। लिखित भाषा की तरह कथित भाषा में भी विराम–चिह्न महत्त्वपूर्ण होते हैं।

♦ महत्त्वपूर्ण विराम–चिह्न–
1. अल्प विराम — (,)
2. अर्द्ध विराम — (;)
3. पूर्ण विराम — (।)
4. प्रश्नवाचक चिह्न — (?)
5. विस्मयसूचक चिह्न — (!)
6. अवतरण या उद्धरण चिह्न :
(i) इकहरा — (‘ ’)
(ii) दुहरा — (“ ”)
7. योजक चिह्न — (-)
8. कोष्ठक चिह्न — ( ) { } [ ]
9. विवरण चिह्न — (:–)
10. लोप चिह्न — (......)
11. विस्मरण चिह्न — (^)
12. संक्षेप चिह्न — (.)
13. निर्देश चिह्न — (–)
14. तुल्यतासूचक चिह्न — (=)
15. संकेत चिह्न — (*)
16. समाप्ति सूचक चिह्न — (– : –)

♦ विराम–चिह्नों का प्रयोग–
1. अल्प विराम (,) :
अल्प विराम का अर्थ है, थोड़ी देर रुकना ठहरना। अंग्रेजी में इसे ‘कोमा’ कहते हैं। इसके प्रयोग की निम्न स्थितियाँ हैं–
(1) वाक्य में जब दो या दो से अधिक समान पदों पदांशों अथवा वाक्यों में संयोजक अव्यय ‘और’ की संभावना हो, वहाँ अल्प विराम का प्रयोग होता है। जैसे–
• पदों में—अर्जुन, भीम, सहदेव और कृष्ण ने भवन में प्रवेश किया।
• वाक्यों में—राम रोज स्कूल जाता है, पढ़ता है और वापस घर चला जाता है।
• उठकर, स्नानकर और खाना खाकर मोहन शहर गया।
यहाँ अल्प विराम द्वारा पार्थक्य को दर्शाया गया है।

(2) जहाँ शब्दों की पुनरावृत्ति की जाए और भावातिरेक के कारण उन पर अधिक बल दिया जाए। जैसे–
• वह दूर से, बहुत दूर से आ रहा है।
• सुनो, सुनो, वह गा रही है।

(3) समानाधिकरण शब्दों के बीच में। जैसे–
• विदेहराज की पुत्री वैदेही, राम की पत्नी थी।

(4) जब कई शब्द जोड़े से आते हैं, तब प्रत्येक जोड़े के बाद अल्प विराम लगता है। जैसे–
• संसार में सुख और दुःख, रोना और हँसना, आना और जाना लगा ही रहता है।

(5) क्रिया विशेषण वाक्यांशों के साथ, जैसे–
• उसने गंभीर चिंतन के बाद, यह काम किया।
• यह बात, यदि सच पूछो तो, मैं भूल ही गया था।

(6) ‘हाँ’, ‘अस्तु’ के बाद, जैसे–
• हाँ, आप जा सकते हैं।

(7) ‘कि’ के अभाव में, जैसे–
• मैं जानता हूँ , कल तुम यहाँ नहीं थे।

(8) संज्ञा वाक्य के अलावा, मिश्र वाक्य के शेष बड़े उपवाक्यों के बीच में। जैसे–
• यह वही पुस्तक है, जिसकी मुझे आवश्यकता है।
• क्रोध चाहे जैसा भी हो, मनुष्य को दुर्बल बनाता है।

(9) वाक्य के भीतर एक ही प्रकार के शब्दों को अलग करने में। जैसे–
• राम ने आम, अमरूद, केले आदि खरीदे।

(10) उद्धरण चिह्नों के पहले, जैसे–
• उसने कहा, “मैं तुम्हें नहीं जानता।”

(11) समय सूचक शब्दों को अलग करने में। जैसे–
• कल गुरुवार, दिनांक 20 मार्च से परीक्षाएँ प्रारम्भ होंगी।

(12) कभी–कभी सम्बोधन के बाद भी अल्प विराम का प्रयोग किया जाता है। जैसे–
• सीता, तुम आज भी स्कूल नहीं गईं।

(13) पत्र में अभिवादन, समापन के साथ। जैसे–
• पूज्य पिताजी,
• भवदीय,।

2. अर्द्ध विराम (;)–
अंग्रेजी में इसे 'सेमी कॉलन' कहते हैं। अर्द्ध विराम का प्रयोग प्रायः विकल्पात्मक रूप में ही होता है।
(1) जब अल्प विराम से अधिक तथा पूर्ण विराम से कम ठहरना पड़े तो अर्द्ध विराम का प्रयोग होता है। जैसे–
• अब खूब परिश्रम करो; परीक्षा सन्निकट है।
• शिक्षक ने मुझसे कहा; तुम पढ़ते नहीं हो।
• शिक्षा के क्षेत्र में छात्राएँ बढ़ती गईं; छात्र पिछड़ते गए।

(2) जब संयुक्त वाक्यों के प्रधान वाक्यों में परस्पर संबंध नहीं रहता। जैसे–
• सोना बहुमूल्य धातु है; पर लोहे का भी कम महत्त्व नहीं है।

(3) उन पूरे वाक्यों के बीच में जो विकल्प के अन्तिम समुच्चय बोधक द्वारा जोड़े जाते हैं। जैसे–
• राम आया; उसने उसका स्वागत किया; उसके ठहरने की व्यवस्था की और उसे खिलाकर चला गया।

(4) एक प्रधान पर आश्रित अनेक उपवाक्यों के बीच में। जैसे–
• जब तक हम गरीब हैं; बलहीन हैं; दूसरे पर आश्रित हैं; तब तक हमारा कल्याण नहीं हो सकता।
• सूर्योदय हुआ; अन्धकार दूर हुआ; पक्षी चहचहाने लगे और मैं प्रातः भ्रमण को चल पड़ा।

(5) विभिन्न उपवाक्यों पर अधिक जोर देने के लिए। जैसे–
• मेहनत ही जीवन है; आलस्य ही मृत्यु है।

(6) मिश्र तथा संयुक्त वाक्यों में विपरीत अर्थ प्रकट करने या विरोधपूर्ण कथन प्रकट करने वाले उपवाक्यों के बीच में।

3. पूर्ण विराम (।)–
पूर्ण विराम का अर्थ है पूरी तरह से विराम लेना, अर्थात् जब वाक्य पूर्णतः अपना अर्थ स्पष्ट कर देता है तो पूर्ण विराम का प्रयोग होता है या जिस चिह्न के प्रयोग करने से वाक्य के पूर्ण हो जाने का ज्ञान होता है, उसे पूर्ण विराम कहते हैं। अंग्रेजी में इसे 'फुल स्टॉप' कहते हैं। हिन्दी में इसका प्रयोग सबसे अधिक होता है। पूर्ण विराम का प्रयोग निम्न दशाओं में होता है–
(1) साधारण, मिश्र या संयुक्त वाक्य की समाप्ति पर। जैसे–
• उसने कहा था।
• राम स्कूल जाता है।
• प्रयाग में गंगा–यमुना का संगम है।
• यदि राहुल पढ़ता, तो अवश्य उत्तीर्ण होता।

(2) प्रायः शीर्षक के अन्त में भी पूर्ण विराम का प्रयोग होता है। जैसे–
• विद्यार्थी जीवन में अनुशासन का महत्त्व।
• नारी और भारतीय समाज।

(3) अप्रत्यक्ष प्रश्नवाचक वाक्य के अन्त में पूर्ण विराम लगाया जाता है। जैसे–
• उसने बताया नहीं कि वह कहाँ जा रहा है।

(4) काव्य में दोहा, सोरठा, चौपाई के चरणों के अन्त में। जैसे–
• रघुकुल रीति सदा चलि आई। प्राण जाय पर वचन न जाई।

4. प्रश्नवाचक चिह्न (?)–
प्रश्नवाचक चिह्न का प्रयोग प्रश्न सूचक वाक्यों के अन्त में पूर्ण विराम के स्थान पर किया जाता है। इसका प्रयोग निम्न स्थितियों में किया जाता है–
(1) जहाँ लिखित या मौखिक प्रश्न पूछे जाएँ।
(2) जहाँ स्थिति निश्चित न हो।
(3) व्यंग्योक्तियों के लिए। जैसे–
• आप क्या कर रहे हो?
• कल आप कहाँ थे?
• आप शायद यू. पी. के रहने वाले हो?
• जहाँ भ्रष्टाचार है, वहाँ ईमानदारी कैसे रहेगी?
• इतने छात्र कैसे आ पाएँगे?
• विवाह में अनिल, शानू एवं विनोद आए; पर तुम क्यों नहीं आये?

5. विस्मयादिबोधक चिह्न (!)–
जब वाक्य में हर्ष, विषाद, विस्मय, घृणा, आश्चर्य, करुणा, भय आदि भाव व्यक्त किए जायें तो वहाँ इस चिह्न (!) का प्रयोग किया जाता है। इसके अलावा आदर सूचक शब्दों, पदों और वाक्यों के अन्त में भी इसका प्रयोग किया जाता है। जैसे–
(1) हर्ष सूचक–
• वाह! खूब खेले।
• शाबाश! तुमने गाँव का नाम रोशन कर दिया।
(2) करुणा सूचक–
• हे ईश्वर! सबका भला करो।
• हे प्रभु! मेरी रक्षा करो
(3) घृणा सूचक–
• छिः! कितनी गंदी बात कर रहा है।
• दुष्ट को धिक्कार है!
(4) विषाद सूचक–
• हाय राम! यह क्या हो गया।
(5) विस्मय सूचक–
• सुनो! रमेश पास हो गया।
• हैं! क्या कह रहे हो?

6. उद्धरण या अवतरण चिह्न–
जब किसी कथन को ज्यों का त्यों उद्धृत किया जाता है तो उस कथन के दोनों ओर इसका प्रयोग किया जाता है, इसलिए इसे अवतरण चिह्न या उद्धरण चिह्न कहते हैं। इस चिह्न के दो रूप होते हैं–
(i) इकहरा उद्धरण (‘ ’)–
जब किसी कवि का उपनाम, पुस्तक का नाम, पत्र–पत्रिका का नाम, लेख या कविता का शीर्षक आदि का उल्लेख करना हो तो इकहरे उद्धरण चिह्न का प्रयोग होता है। जैसे–
• रामधारीसिँह ‘दिनकर’ ओज के कवि हैं।
• ‘निराला’ हिन्दी के प्रसिद्ध महाकवि हैं।
• ‘भारत–भारती’ एक प्रसिद्ध काव्य रचना है।
• ‘रामचरित मानस’ के रचयिता तुलसीदास हैं।
• ‘राजस्थान पत्रिका’ एक प्रमुख समाचार–पत्र है।
• ‘विजडन’ पत्रिका को क्रिकेट का बाइबिल कहा जाता है।
• ठीक ही कहा है, ‘उल्टा चोर कोतवाल को डाँटे’।

(ii) दुहरा उद्धरण (“ ”)–
जब किसी व्यक्ति या विद्वान तथा पुस्तक के अवतरण या वाक्य को ज्यों का त्यों उद्धृत किया जाए, तो वहाँ दुहरे उद्धरण चिह्न का प्रयोग किया जाता है। जैसे–
• महावीर जी ने कहा, “अहिँसा परमोधर्म।”
• “स्वतंत्रता मेरा जन्मसिद्ध अधिकार है।”—तिलक।
• “तुम मुझे खून दो, मैं तुम्हें आजादी दूँगा।”—सुभाषचन्द्र बोस।

7. योजक चिह्न (-)–
अंग्रेजी में प्रयुक्त हाइफन (-) को हिन्दी में योजक चिह्न कहते हैं। इसे समास चिह्न भी कहते हैं। हिन्दी में अधिकतर इस चिह्न (-) के स्थान पर डेश (–) का प्रयोग प्रचलित है। यह चिह्न सामान्यतः दो पदों को जोड़ता है और दोनों को मिलाकर एक समस्त पद बनाता है लेकिन दोनों का स्वतंत्र अस्तित्व बना रहता है। इसका प्रयोग निम्न स्थितियों में होता है–
(1) दो शब्दों को जोड़ने के लिए तथा द्वन्द्व एवं तत्पुरुष समास में। जैसे–
• सुख-दुःख, माता-पिता, प्रेम-सागर।
(2) पुनरुक्त शब्दों के बीच में। जैसे–
• धीरे-धीरे, डाल-डाल, पात-पात।
(3) तुलना वाचक सा, सी, से के पहले लगता है। जैसे–
• तुम-सा, भरत-सा भाई, यशोदा-सी माता।
(4) शब्दों में लिखी जाने वाली संख्याओं के बीच। जैसे–
• एक-तिहाई, एक-चौथाई आदि।

8. कोष्ठक चिह्न ( )–
किसी की बात को और स्पष्ट करने के लिए इसका प्रयोग किया जाता है। कोष्ठक में लिखा गया शब्द प्रायः विशेषण होता है। इस चिह्न का प्रयोग–
(1) वाक्य में प्रयुक्त किसी पद का अर्थ स्पष्ट करने हेतु। जैसे–
• धर्मराज (युधिष्ठिर) पांडवों के अग्रज थे।
• डॉ. राजेन्द्र प्रसाद (भारत के प्रथम राष्ट्रपति) बेहद सादगी पसन्द थे।
(2) नाटक या एकांकी में पात्र के अभिनय के भावों को प्रकट करने के लिए। जैसे–
• राम – (हँसते हुए) अच्छा जाइए।
• नल – (खिन्न होकर) और मेरे दुर्भाग्य ! तूने दमयंती को मेरे साथ बाँधकर उसे भी जीवन-भर कष्ट दिया।

9. विवरण चिह्न (:–)–
इसे अंग्रेजी में ‘कॉलन एंड डेश’ कहते हैं। किसी कही हुई बात को स्पष्ट करने के लिए या उसका विवरण प्रस्तुत करने के लिए वाक्य के अंत में इसका प्रयोग होता है। जैसे–
• पुरुषार्थ चार हैं:– धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष।
• क्रिया के दो भेद हैं:– सकर्मक और अकर्मक।

10. लोप सूचक चिह्न (....)–
जहाँ किसी वाक्य या कथन का कुछ अंश छोड़ दिया जाता है, वहाँ इस चिह्न का प्रयोग किया जाता है। जैसे–
• मैं तो परिणाम भोग रहा हूँ, कहीं आप......।
• तुम्हारा सब काम करूँगा....। ..... बोलो, बड़ी माँ.....।

11. विस्मरण चिह्न (^)–
इसे हंस पद या त्रुटिपूरक चिह्न भी कहते हैं। जब किसी वाक्य या वाक्यांश में कोई शब्द लिखने से छूट जाये तो छूटे हुए शब्द के स्थान के नीचे इस चिह्न का प्रयोग कर छूटे हुए शब्द या अक्षर को ऊपर लिख देते हैं। जैसे–
मेरा
•भारत ^ देश है।

12. संक्षेप चिह्न या लाघव चिह्न (०)–
किसी बड़े शब्द को संक्षेप में लिखने हेतु उस शब्द का प्रथम अक्षर लिखकर उसके आगे यह चिह्न लगा देते हैं। प्रसिद्धि के कारण लाघव चिह्न होते हुए भी वह पूर्ण शब्द पढ़ लिया जाता है। जैसे–
• राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय – रा०उ०मा०वि०।
• प्राध्यापक – प्रा०।
• डॉक्टर – डॉ०।
• पंडित – पं०।
• मास्टर ऑफ आर्टस – एम०ए०।

13. निर्देशक चिह्न (–)–
अंग्रेजी में इसे ‘डेश’ कहते हैं। यह चिह्न योजक चिह्न (-) से बड़ा होता है। इस चिह्न के दो रूप हैं–1. (–) 2. (—)। इसका प्रयोग निम्न अवसरों पर होता है–
(1) उद्धृत वाक्य के पहले। जैसे–
• उसने कहा–“मैं नहीं जाऊँगा।”
(2) किसी विषय के साथ तत्संबंधी अन्य बातों की सूचना देने में। जैसे–
• साहित्य के दो भाग हैं—गद्य और पद्य।
(3) समानाधिकरण शब्दों, वाक्यांशों अथवा वाक्यों के बीच में। जैसे–
• आँगन में ज्योत्सना–चाँदनी–छिटकी हुई थी।

(4) लेख के नीचे लेखक या पुस्तक के नाम के पहले। जैसे–
• रघुकुल रीति सदा चलि आई –तुलसी।
(5) जहाँ विचारधारा में व्यतिक्रम पैदा हो। जैसे–
• कौन–कौन उत्तीर्ण हो जायेंगे–समझ में नहीं आता।

14. तुल्यतासूचक चिह्न (=)–
समानता या बराबरी बताने के लिए या मूल्य अथवा अर्थ का ज्ञान कराने के लिए इष चिह्न का प्रयोग किया जाता है। जैसे–
• अनल = अग्नि।
• एक किलो = 1000 ग्राम।

15. संकेत चिह्न (*)–
जब कोई नियम या मुख्य बातें बतानी हों तो उसके पहले संकेत चिह्न लगा देते हैं। जैसे–
• स्वास्थ्य सम्बन्धी निम्न बातों का ध्यान रखना चाहिए–
* प्रातःकाल उठना चाहिए।
* भ्रमण के लिए जाना चाहिए।

16. समाप्ति सूचक चिह्न या इतिश्री चिह्न (–o–)–
किसी अध्याय या ग्रन्थ की समाप्ति पर इस चिह्न का प्रयोग किया जाता है। यह चिह्न कई रूपों में प्रयोग किया जाता है। जैसे– (– :: –), (—x—x—), (* * *), (♦♦♦), (–:o:–), (◊◊◊) आदि।

कारक चिह्न

♦ कारक–चिह्न–
संज्ञा या सर्वनाम के जिस रूप से उसका वाक्य के अन्य शब्दों, विशेषकर क्रिया से सम्बन्ध ज्ञात हो, उसे कारक कहते हैं। कारक को सूचित करने के लिए संज्ञा या सर्वनाम के साथ जो चिह्न लगाये जाते हैं, उन्हें विभक्तियाँ कहते हैं और विभक्ति के चिह्न ही कारक–चिह्न या परसर्ग हैं।

कारक चिह्न 'न', 'को', 'में', 'पर', 'के लिए' आदि को परसर्ग कहते हैं। परसर्ग अंग्रेजी शब्द Postposition का हिन्दी समतुल्य है। सामान्यः एकवचन और बहुवचन दोनों में एक ही परसर्ग का उपयोग होता है। वचन का प्रभाव परसर्ग पर नहीं पड़ता है किन्तु सम्बन्ध कारक परसर्ग इसका अपवाद है।

♦ हिन्दी में आठ कारक होते हैं। उनके नाम और कारक–चिह्न इस प्रकार हैं–
कारक — कारक–चिह्न
1. कर्ता – ने (या कोई चिह्न नहीं)
2. कर्म – को (या कोई चिह्न नहीं)
3. करण – से, के साथ, के द्वारा
4. सम्प्रदान – के लिए, को
5. अपादान – से (अलग भाव में)
6. सम्बन्ध – का, के, की, रा, रे, री
7. अधिकरण – में, पर
8. संबोधन – हे ! अरे ! ओ!

विशेष– कर्ता से अधिकरण तक विभक्ति चिह्न (परसर्ग) शब्दॲ के अंत में लगाए जाते हैं, किन्तु संबोधन कारक के चिह्न– हे, अरे, आदि प्रायः शब्द से पूर्व लगाए जाते हैं।

♦ कारक चिह्न स्मरण करने के लिए इस पद की रचना की गई है–
कर्ता ने अरु कर्म को, करण रीति से जान।
संप्रदान को, के लिए, अपादान से मान॥
का, के, की, संबंध हैं, अधिकरणादिक में मान।
रे ! हे ! हो ! संबोधन, मित्र धरहु यह ध्यान॥

♦ कारकों के प्रयोग :
1. कर्त्ता कारक–
कर्त्ता का अर्थ है, करने वाला। अतः वे शब्द जो क्रिया के करने वाले या होने वाले का बोध कराते हैं, उन्हें कर्त्ता कारक कहते हैं। सामान्यतः इसका चिह्न 'ने' होता है। इस 'ने' चिह्न का वर्तमानकाल और भविष्यकाल में प्रयोग नहीं होता है। इसका सकर्मक धातुओं के साथ भूतकाल में प्रयोग होता है।
(1) कार्य करने वाले के लिए कर्ता कारक का प्रयोग होता है। जैसे–
• राम ने पाठ पढ़ा।
• श्याम ने खाना खाया।
• राजू ने साइकिल खरीदी।
• अनिल ने दरवाजा खोला।

(2) कभी–कभी विभक्ति चिह्न 'ने' का प्रयोग नहीं होता। जैसे–
• रमा गीत गाती है।
• राम आता है।
• लड़की स्कूल जाती है।

सकर्मक क्रिया के सामान्यतः आसन्न, पूर्ण और संदिग्ध भूतकाल के कर्तृवाच्य में 'ने' परसर्ग का प्रयोग होता है।
भूतकाल में अकर्मक क्रिया के कर्ता के साथ 'ने' परसर्ग (विभक्ति चिह्न) नहीं लगता है। जैसे– वह हँसा।
वर्तमानकाल व भविष्यतकाल की सकर्मक क्रिया के कर्ता के साथ 'ने' परसर्ग का प्रयोग नहीं होता है। जैसे– वह फल खाता है। वह फल खाएगा।

(3) होना, पड़ता, चाहिए क्रियाओं के साथ 'को' का प्रयोग होता है। जैसे–
• राम को पढ़ना चाहिए।
• सबको सहना पड़ता है।

(4) लाना, भूलना, बोलना के भूतकालिक रूपों के साथ और जिन क्रियाओं के साथ जाना, चुकना, लगना, सकना लगते हैं, वहाँ 'ने' का लोप हो जाता है। जैसे–
• राम फल लाया।
• मोहन जा सका।

(5) कर्मवाच्य और भाववाच्य में 'ने' के स्थान पर 'से' का प्रयोग होता है। जैसे–
• रावण राम से मारा गया।
• रोगी से चला नहीं जाता।
• सीता से पुस्तक पढ़ी गई।

2. कर्म कारक–
संज्ञा या सर्वनाम के जिस रूप पर कर्त्ता द्वारा की गई क्रिया का फल पड़ता है अर्थात् जिस शब्द रूप पर क्रिया का प्रभाव पड़ता है, उसे कर्ता कारक कहते हैं। इसका कारक–चिह्न 'को' है। जैसे– मोहन ने साँप को मारा। इस वाक्य में 'मारने' की क्रिया का फल साँप पर पड़ा है। अतः साँप कर्म कारक है। इसके साथ परसर्ग 'को' लगा है।
• अब श्याम को बुलालो।
• विजेता बालकों को ही पुरस्कार मिलेगा।
• कुसुम ने सीमा को नृत्य सिखाया।
• गुरु बालक को पुस्तक देता है।

कभी–कभी प्रधान कर्म के साथ परसर्ग 'को' का लोप हो जाता है। जैसे–
• कवि कविता लिखता है।
• गीता फल खाती है।
• अध्यापक व्याकरण पढ़ाता है।
• लड़की ने पत्र लिखा।

3. करण कारक–
संज्ञा के जिस रूप से क्रिया के साधन का बोध हो अर्थात् जिस साधन से क्रिया की जाये उसे करण कारक कहते हैं। इसके विभक्ति चिह्न 'से', 'के द्वारा' हैं। जैसे–
1. अर्जुन ने जयद्रथ को बाण से मारा।
2.बालक गेंद से खेल रहे है।
पहले वाक्य में कर्ता अर्जुन ने मारने का कार्य 'बाण' से किया। अत: 'बाण से' करण कारक है। दूसरे वाक्य में कर्ता बालक खेलने का कार्य 'गेंद से' कर रहे हैं। अत: 'गेंद से' करण कारक है।
अन्य उदाहरण–
• राम ने बाण से बाली को मारा।
• मैं सदा ट्रेन द्वारा यात्रा करता हूँ।
• प्राचार्य ने यह आदेश चपरासी के द्वारा भिजवाया है।
• मैं रोजाना कार से कार्यालय जाता हूँ।

4. सम्प्रदान कारक–
संप्रदान का अर्थ है, देना। कर्ता द्वारा जिसके लिए कुछ कार्य किया जाए अथवा जिसे कुछ दिया जाए उसका बोध कराने वाले संज्ञा के रूप को संप्रदान कारक कहते हैं। इसके विभक्ति चिह्न 'के लिए' 'को' हैं। जैसे–
• स्वास्थ्य के लिए सूर्य को नमस्कार करो।
• गुरुजी को फल दो।
• बालक के लिए दूध चाहिए।
• गौरव को पुस्तक दो।

5. अपादान कारक–
संज्ञा के जिस रूप से एक वस्तु का दूसरी वस्तु से अलग या पृथक् अथवा उत्पन्न होने का भाव व्यक्त हो, उसे अपादान कारक कहते हैं। इसका विभक्ति–चिह्न 'से' है।

अपादान कारक का प्रयोग निम्नलिखित स्थितियों में होता है–
(1) वियोग, पृथक्कता व भिन्नता प्रकट करने के लिए। जैसे–
• पेड़ से पत्ते गिरते हैं।
• पुत्र, माता–पिता से बिछुड़ गया।
• चोर चलती गाड़ी से कूद गया।

(2) उत्पत्ति या निकास बताने के लिए। जैसे–
• मच्छर का जन्म लार्वा से होता है।
• गंगा हिमालय से निकलती है।

(3) दूरी का बोध कराने के लिए। जैसे–
• पुष्कर, अजमेर से 7 मील दूर है।
• मेरा गाँव झुन्झुनूं से 15 किमी. दूर है।

(4) तुलना प्रकट करने के लिए। जैसे–
• राम श्याम से अधिक समझदार है।
• मोहन सोहन से बड़ा है।

(5) कार्यारम्भ का समय प्रकट करने के लिए। जैसे–
• कल से कक्षाएँ आरम्भ होंगी।
• खेल सात बजे से आरम्भ होगा।

(6) घृणा, लज्जा, उदासीनता के भाव में। जैसे–
• मुझे श्याम से घृणा है।
• बालक आगंतुक से लजाता है।

(7) मृत्यु का कारण बतलाने के लिए। जैसे–
• वह जहर खाने से मरा।

(8) रक्षा के अर्थ में। जैसे–
• उसे गिरने से बचाओ।

(9) जिससे डर लगता है। जैसे–
• सभी बदनामी से डरते हैं।
• राजू छिपकली से डरता है।

(10) वैर–विरोध या पराजय के अर्थ में। जैसे–
• किशोर सोहन से हार गया।

(11) जिससे विद्या प्राप्त की जाये। जैसे–
• मैं गुरुजी से पढ़ता हूँ।

(12) गत्यर्थक क्रियाओं में। जैसे–
• राष्ट्रपति आज ही जापान से आये हैं।
• वह साँप से डर गया।

6. सम्बन्ध कारक–
संज्ञा के जिस रूप से किसी वस्तु का दूसरी वस्तु से सम्बन्ध प्रकट हो उसे सम्बन्ध कारक कहते हैं। इसका प्रयोग स्वत्व, अपादान, करण, सम्बन्ध, आधार आदि अर्थों को प्रकट करने के लिए होता है। सम्बन्ध कारक के विभक्ति–चिह्न (परसर्ग) का, के, की, रा, रे, री तथा ना, ने, नी हैं। जैसे–
• राम का भाई मेरे घर है।
• अपनी बात पर भरोसा रखो।
• लक्ष्मण राम का भाई है।
• यही मेरा घर है।
• इन कपड़ों का रंग अत्यंत चटकीला है।
• शानू की पेन्सिल मेरे पास है।
• गीतिका के कागजात कहीं गिर गए हैं।
सम्बन्ध कारक के परसर्ग संज्ञा शब्द के लिँग और वचन के अनुसार बदल जाते हैं। जैसे–
• रामू का भाई।
• रामू की बहन।
• रामू के पापा।

7. अधिकरण कारक–
संज्ञा या सर्वनाम के जिस रूप से क्रिया के आधार या काल का बोध होता है उसे अधिकरण कारक कहते हैं। इसका प्रयोग समय, स्थान, दूरी, कारण, तुलना, मूल्य आदि आधार सूचक भावों के लिए भी होता है। इसके विभक्ति–चिह्न 'में', 'पर' हैं। जैसे–
• थैले में फल हैं।
• बच्चों छत पर मत खेलो।
• मेज पर फूलदान है।
• मेरा भाई कार्यालय में है।
• पुस्तक पर उसका पता लिखा है।
• मैं दिन में सोता हूँ।
• पाँच मील की दूरी।

8. सम्बोधन कारक–
संज्ञा के जिस रूप से किसी को पुकारने, बुलाने या सचेत करने का बोध हो, उसे सम्बोधन कारक कहते हैं। सम्बोधन कारक का कोई विभक्ति–चिह्न (परसर्ग) नहीं होता है, किन्तु उसे प्रकट करने के लिए संज्ञा से पूर्व प्रायः विस्मयादिबोधक अव्यय जोड़ देते हैं। जैसे–
• अरे भाई! इधर आना।
• अजी! सुनते हो।
• बच्चो! यहाँ शोर मत करो।
• हे भगवान! हमारी रक्षा करो।
• हे परमात्मा! मुझे शक्ति दो।

इस कारक में 'हे', 'ओ', 'अरे' आदि शब्दों का प्रयोग संज्ञा के पूर्व किया जाता है अतः इन्हें परसर्गों की श्रेणी में नहीं रखा जा सकता।

काल–विचार

♦ काल–
क्रिया के जिस रूप से कार्य सम्पन्न होने का समय (काल) जाना जाये, उसे काल कहते हैं। जैसे–
1. सुमित्रा ने पत्र लिखा।
2. सुमित्रा पत्र लिखती है।
3. सुमित्रा पत्र लिखेगी।
ऊपर लिखे तीनों वाक्यों में 'लिखना' क्रिया आई है। पहले वाक्य में 'लिखा' क्रिया बीते हुए समय का ज्ञान कराती है। दूसरे वाक्य में 'लिखती है' क्रिया वर्तमान समय का बोध कराती है और तीसरे वाक्य में 'लिखेगी' क्रिया आगे आने वाले समय का ज्ञान करा रही है।

♦ काल के भेद–
काल के तीन भेद होते हैं–
1. भूतकाल
2. वर्तमान काल
3. भविष्यत् काल।
1. भूतकाल–
क्रिया के जिस रूप से बीते हुए समय (अतीत) में कार्य संपन्न होने का बोध हो उसे भूतकाल कहते हैं।
जैसे–
• राम ने पुस्तक पढ़ी।
• राम पुस्तक पढ़ रहा था।
• राम पुस्तक पढ़ चुका था।
• राम ने पुस्तक पढ़ ली होगी।
ऊपर लिखे चारों वाक्यों में 'पढ़ना' क्रिया आई है और चारों वाक्यों में इस क्रिया के अलग–अलग रूप हैं। चारों वाक्यों को पढ़ने से मालूम होता है कि 'पढ़ना' क्रिया का समय भूतकाल में समाप्त हो गया।

♦ भूतकाल के निम्नलिखित छः भेद हैं–

1. सामान्य भूत।
2. आसन्न भूत।
3. अपूर्ण भूत।
4. पूर्ण भूत।
5. संदिग्ध भूत।
6. हेतुहेतुमद भूत।

1. सामान्य भूत–

क्रिया के जिस रूप से बीते हुए समय में कार्य के होने का बोध हो किन्तु ठीक समय का ज्ञान न हो, वहाँ सामान्यभूत होता है। जैसे–

(1) बच्चा गया।
(2) श्याम ने पत्र लिखा।
(3) कमल आया।

2. आसन्न भूत–

क्रिया के जिस रूप से अभी–अभी निकट भूतकाल में क्रिया का होना प्रकट हो, वहाँ आसन्न भूत होता है। जैसे–

(1) बच्चा आया है।
(2) श्याम ने पत्र लिखा है।
(3) कमल गया है।

3. अपूर्ण भूत–

क्रिया के जिस रूप से कार्य का होना बीते समय में प्रकट हो, पर पूरा होना प्रकट न हो वहाँ अपूर्ण भूत होता है। जैसे–

(1) बच्चा आ रहा था।
(2) श्याम पत्र लिख रहा था।
(3) कमल जा रहा था।

4. पूर्ण भूत–

क्रिया के जिस रूप से यह ज्ञात हो कि कार्य समाप्त हुए बहुत समय बीत चुका है उसे पूर्ण भूत कहते हैं। जैसे–

(1) श्याम ने पत्र लिखा था।
(2) बच्चा आया था।
(3) कमल गया था।

5. संदिग्ध भूत–

क्रिया के जिस रूप से भूतकाल का बोध तो हो किन्तु कार्य के होने में संदेह हो वहाँ संदिग्ध भूत होता है। जैसे–

(1) बच्चा आया होगा।
(2) श्याम ने पत्र लिखा होगा।
(3) कमल गया होगा।

6. हेतुहेतुमद भूत–

क्रिया के जिस रूप से बीते समय में एक क्रिया के होने पर दूसरी क्रिया का होना आश्रित हो अथवा एक क्रिया के न होने पर दूसरी क्रिया का न होना आश्रित हो वहाँ हेतुहेतुमद भूत होता है। जैसे–

(1) यदि श्याम ने पत्र लिखा होता तो मैं अवश्य आता।
(2) यदि वर्षा होती तो फसल अच्छी होती।

2. वर्तमान काल–

क्रिया के जिस रूप से कार्य के वर्तमान समय में होने का ज्ञान हो, उसे वर्तमान काल कहते हैं।

जैसे–

• करुणा गीत गाती है।
• करुणा गीत गा रही है।
• करुणा गीत गाती होगी।
• करुणा गीत गा चुकी होगी।

ऊपर लिखे सभी वाक्यों में 'गाना' क्रिया वर्तमान समय में हो रही है।

♦ वर्तमान काल के निम्नलिखित तीन भेद हैं–

(1) सामान्य वर्तमान।
(2) अपूर्ण वर्तमान।
(3) संदिग्ध वर्तमान।

1. सामान्य वर्तमान–

क्रिया के जिस रूप से यह बोध हो कि कार्य वर्तमान काल में सामान्य रूप से होता है वहाँ सामान्य वर्तमान होता है। जैसे–

(1) बच्चा रोता है।
(2) श्याम पत्र लिखता है।
(3) कमल आता है।

2. अपूर्ण वर्तमान–

क्रिया के जिस रूप से यह बोध हो कि कार्य अभी चल ही रहा है, समाप्त नहीं हुआ है वहाँ अपूर्ण वर्तमान होता है। जैसे–

(1) बच्चा रो रहा है।
(2) श्याम पत्र लिख रहा है।
(3) कमल आ रहा है।

3. संदिग्ध वर्तमान–

क्रिया के जिस रूप से वर्तमान में कार्य के होने में संदेह का बोध हो वहाँ संदिग्ध वर्तमान होता है। जैसे–

(1) अब बच्चा रोता होगा।
(2) श्याम इस समय पत्र लिखता होगा।

3. भविष्यत् काल–

क्रिया के जिस रूप से यह ज्ञात हो कि कार्य भविष्य में होगा वह भविष्यत् काल कहलाता है। जैसे–

• श्याम पत्र लिखेगा।
• शायद आज संध्या को वह आए।

इन दोनओं में भविष्यत काल की क्रियाएँ हैं, क्यओंकि ‘लिखेगा’ और ‘आए’ क्रियाएँ भविष्यत काल का बोध कराती हैं।

♦ भविष्यत् काल के निम्नलिखित दो भेद हैं–
1. सामान्य भविष्यत।
2. संभाव्य भविष्यत।
1. सामान्य भविष्यत–
क्रिया के जिस रूप से कार्य के भविष्य में होने का बोध हो उसे सामान्य भविष्यत कहते हैं। जैसे–
(1) श्याम पत्र लिखेगा।
(2) हम घूमने जाएँगे।

2. संभाव्य भविष्यत–
क्रिया के जिस रूप से कार्य के भविष्य में होने की संभावना का बोध हो वहाँ संभाव्य भविष्यत होता है जैसे–
(1) शायद आज वह आए।
(2) संभव है श्याम पत्र लिखे।
(3) कदाचित संध्या तक पानी पड़े।

—:o:—

प्रस्तुति:–

सामान्य हिन्दी

7. वर्तनी एवं वाक्य शुद्धीकरण

किसी शब्द को लिखने में प्रयुक्त वर्णों के क्रम को वर्तनी या अक्षरी कहते हैं। अँग्रेजी में वर्तनी को 'Spelling' तथा उर्दू में 'हिज्जे' कहते हैं। किसी भाषा की समस्त ध्वनियों को सही ढंग से उच्चारित करने हेतु वर्तनी की एकरुपता स्थापित की जाती है। जिस भाषा की वर्तनी में अपनी भाषा के साथ अन्य भाषाओं की ध्वनियों को ग्रहण करने की जितनी अधिक शक्ति होगी, उस भाषा की वर्तनी उतनी ही समर्थ होगी। अतः वर्तनी का सीधा सम्बन्ध भाषागत ध्वनियों के उच्चारण से है।

शुद्ध वर्तनी लिखने के प्रमुख नियम निम्न प्रकार हैं–

• हिन्दी में विभक्ति चिह्न सर्वनामों के अलावा शेष सभी शब्दों से अलग लिखे जाते हैं, जैसे–
- मोहन ने पुत्र को कहा।
- श्याम को रुपये दे दो।

परन्तु सर्वनाम के साथ विभक्ति चिह्न हो तो उसे सर्वनाम में मिलाकर लिखा जाना चाहिए, जैसे– हमने, उसने, मुझसे, आपको, उसको, तुमसे, हमको, किससे, किसको, किसने, किसलिए आदि।

• सर्वनाम के साथ दो विभक्ति चिह्न होने पर पहला विभक्ति चिह्न सर्वनाम में मिलाकर लिखा जाएगा एवं दूसरा अलग लिखा जाएगा, जैसे–
आपके लिए, उसके लिए, इनमें से, आपमें से, हममें से आदि।
सर्वनाम और उसकी विभक्ति के बीच 'ही' अथवा 'तक' आदि अव्यय हों तो विभक्ति सर्वनाम से अलग लिखी जायेगी, जैसे–
आप ही के लिए, आप तक को, मुझ तक को, उस ही के लिए।

• संयुक्त क्रियाओं में सभी अंगभूत क्रियाओं को अलग–अलग लिखा जाना चाहिए, जैसे– जाया करता है, पढ़ा करता है, जा सकते हो, खा सकते हो, आदि।

• पूर्वकालिक प्रत्यय 'कर' को क्रिया से मिलाकर लिखा जाता है, जैसे– सोकर, उठकर, गाकर, धोकर, मिलाकर, अपनाकर, खाकर, पीकर, आदि।

• द्वन्द्व समास में पदों के बीच योजन चिह्न (–) हाइफन लगाया जाना चाहिए, जैसे– माता–पिता, राधा–कृष्ण, शिव–पार्वती, बाप–बेटा, रात–दिन आदि।

• 'तक', 'साथ' आदि अव्ययों को पृथक लिखा जाना चाहिए, जैसे– मेरे साथ, हमारे साथ, यहाँ तक, अब तक आदि।

• 'जैसा' तथा 'सा' आदि सारूप्य वाचकों के पहले योजक चिह्न (–) का प्रयोग किया जाना चाहिए। जैसे– चाकू–सा, तीखा–सा, आप–सा, प्यारा–सा, कन्हैया–सा आदि।

• जब वर्णमाला के किसी वर्ग के पंचम अक्षर के बाद उसी वर्ग के प्रथम चारों वर्णों में से कोई वर्ण हो तो पंचम वर्ण के स्थान पर अनुस्वार (ं) का प्रयोग होना चाहिए। जैसे– कंकर, गंगा, चंचल, ठंड, नंदन, संपन्न, अंत, संपादक आदि। परंतु जब नासिक्य व्यंजन (वर्ग का पंचम वर्ण) उसी वर्ग के प्रथम चार वर्णों के अलावा अन्य किसी वर्ण के पहले आता है तो उसके साथ उस पंचम वर्ण का आधा रूप ही लिखा जाना चाहिए। जैसे– पन्ना, सम्राट, पुण्य, अन्य, सन्मार्ग, रम्य, जन्म, अन्वय, अन्वेषण, गन्ना, निम्न, सम्मान आदि परन्तु घन्टा, ठन्डा, हिण्दी आदि लिखना अशुद्ध है।

• अ, ऊ एवं आ मात्रा वाले वर्णों के साथ अनुनासिक चिह्न (ँ) को इसी चन्द्रबिन्दु (ँ) के रूप में लिखा जाना चाहिए, जैसे– आँख, हँस, जाँच, काँच, अँगना, साँस, ढाँचा, ताँत, दायाँ, बायाँ, ऊँट, हूँ, जूँ आदि। परन्तु अन्य मात्राओं के साथ अनुनासिक चिह्न को अनुस्वार (ं) के रूप में लिखा जाता है, जैसे– मैंने, नहीं, ढेंचा, खींचना, दायें, बायें, सिंचाई, ईंट आदि।

• संस्कृत मूल के तत्सम शब्दों की वर्तनी में संस्कृत वाला रूप ही रखा जाना चाहिए, परन्तु कुछ शब्दों के नीचे हलन्त (्) लगाने का प्रचलन हिन्दी में समाप्त हो चुका है। अतः उनके नीचे हलन्त न लगाया जाये, जैसे– महान, जगत, विद्वान आदि। परन्तु संधि या छन्द को समझाने हेतु नीचे हलन्त लगाया जाएगा।

• अँग्रेजी से हिन्दी में आये जिन शब्दों में आधे 'ओ' (आ एवं ओ के बीच की ध्वनि 'ऑ') की ध्वनि का प्रयोग होता है, उनके ऊपर अर्द्ध चन्द्रबिन्दु लगानी चाहिए, जैसे– बॉल, कॉलेज, डॉक्टर, कॉफी, हॉल, हॉस्पिटल आदि।

• संस्कृत भाषा के ऐसे शब्दों, जिनके आगे विसर्ग (:) लगता है, यदि हिन्दी में वे तत्सम रूप में प्रयुक्त किये जाएँ तो उनमें विसर्ग लगाना चाहिए, जैसे– दुःख, स्वान्तः, फलतः, प्रातः, अतः, मूलतः, प्रायः आदि। परन्तु दुखद, अतएव आदि में विसर्ग का लोप हो गया है।

• विसर्ग के पश्चात् श, ष, या स आये तो या तो विसर्ग को यथावत लिखा जाता है या उसके स्थान पर अगला वर्ण अपना रूप ग्रहण कर लेता है। जैसे–
- दुः + शासन = दुःशासन या दुश्शासन
- निः + सन्देह = निःसन्देह या निस्सन्देह ।

• वर्तनी संबंधी अशुद्धियाँ एवं उनमें सुधार :

उच्चारण दोष अथवा शब्द रचना और संधि के नियमों की जानकारी की अपर्याप्तता के कारण सामान्यतः वर्तनी अशुद्धि हो जाती है।
वर्तनी की अशुद्धियों के प्रमुख कारण निम्न हैं–

• उच्चारण दोष: कई क्षेत्रों व भाषाओं में, स–श, व–ब, न–ण आदि वर्णों में अर्थभेद नहीं किया जाता तथा इनके स्थान पर एक ही वर्ण स, ब या न बोला जाता है जबकि हिन्दी में इन वर्णों की अलग–अलग अर्थ–भेदक ध्वनियाँ हैं। अतः उच्चारण दोष के कारण इनके लेखन में अशुद्धि हो जाती है। जैसे–

अशुद्ध   शुद्ध
कोसिस – कोशिश
सीदा – सीधा
सबी – सभी
सोर – शोर
अराम – आराम
पाणी – पानी
बबाल – बवाल
पाठसाला – पाठशाला
शब – शव
निपुन – निपुण

प्रान – प्राण
बचन – वचन
ब्यवहार – व्यवहार
रामायन – रामायण
गुन – गुण

• जहाँ 'श' एवं 'स' एक साथ प्रयुक्त होते हैं वहाँ 'श' पहले आयेगा एवं 'स' उसके बाद। जैसे– शासन, प्रशंसा, नृशंस, शासक ।
इसी प्रकार 'श' एवं 'ष' एक साथ आने पर पहले 'श' आयेगा फिर 'ष', जैसे– शोषण, शीर्षक, विशेष, शेष, वेशभूषा, विशेषण आदि।

• 'स्' के स्थान पर पूरा 'स' लिखने पर या 'स' के पहले किसी अक्षर का मेल करने पर अशुद्धि हो जाती है, जैसे– इस्त्री (शुद्ध होगा– स्त्री), अस्नान (शुद्ध होगा– स्नान), परसपर अशुद्ध है जबकि शुद्ध है परस्पर।

• अक्षर रचना की जानकारी का अभाव : देवनागरी लिपि में संयुक्त व्यंजनों में दो व्यंजन मिलाकर लिखे जाते हैं, परन्तु इनके लिखने में त्रुटि हो जाती है, जैसे–
अशुद्ध शुद्ध
आर्शीवाद – आशीर्वाद
निमार्ण – निर्माण
पुर्नस्थापना – पुनर्स्थापना
बहुधा 'र्' के प्रयोग में अशुद्धि होती है। जब 'र्' (रेफ़) किसी अक्षर के ऊपर लगा हो तो वह उस अक्षर से पहले पढ़ा जाएगा। यदि हम सही उच्चारण करेंगे तो अशुद्धि का ज्ञान हो जाता है। आशीर्वाद में 'र्' , 'वा' से पहले बोला जायेगा– आशीर् वाद। इसी प्रकार निर्माण में 'र्' का उच्चारण 'मा' से पहले होता है, अतः 'र्' मा के ऊपर आयेगा।

• जिन शब्दों में व्यंजन के साथ स्वर, 'र्' एवं आनुनासिक का मेल हो उनमें उस अक्षर को लिखने की विधि है–
अक्षर स्वर र् अनुस्वार (ं)।
जैसे– त् ए र् अनुस्वार=शर्तें
म् ओ र् अनुस्वार=कर्मों।
इसी प्रकार औरों, धर्मों, पराक्रमों आदि को लिखा जाता है।

• कोई, भाई, मिठाई, कई, ताई आदि शब्दों को कोयी, भायी, मिठायी, तायी आदि लिखना अशुद्ध है। इसी प्रकार अनुयायी, स्थायी, वाजपेयी शब्दों को अनयाई, स्थाई, वाजपेई आदि रूप में लिखना भी अशुद्ध होता है।

• सम् उपसर्ग के बाद य, र, ल, व, श, स, ह आदि ध्वनि हो तो 'म्' को हमेशा अनुस्वार (ं) के रूप में लिखते हैं, जैसे– संयम, संवाद, संलग्न, संसर्ग, संहार, संरचना, संरक्षण आदि। इन्हें सम्शय, सम्हार, सम्वाद, सम्रचना, सम्लग्न, सम्रक्षण आदि रूप में लिखना सदैव अशुद्ध होता है।

• आनुनासिक शब्दों में यदि 'अ' या 'आ' या 'ऊ' की मात्रा वाले वर्णों में आनुनासिक ध्वनि (ँ) आती है तो उसे हमेशा (ँ) के रूप में ही लिखा जाना चाहिए। जैसे– दाँत, पूँछ, ऊँट, हूँ, पाँच, हाँ, चाँद, हँसी, ढाँचा आदि परन्तु जब वर्ण के साथ अन्य मात्रा हो तो (ँ) के स्थान पर अनुस्वार (ं) का प्रयोग किया जाता है, जैसे– फेंक, नहीं, खींचना, गोंद आदि।

• विराम चिह्नों का प्रयोग न होने पर भी अशुद्धि हो जाती है और अर्थ का अनर्थ हो जाता है। जैसे–
- रोको, मत जाने दो।
- रोको मत, जाने दो।
इन दोनों वाक्यों में अल्प विराम के स्थान परिवर्तन से अर्थ बिल्कुल उल्टा हो गया है।

• 'ष' वर्ण केवल षट् (छह) से बने कुछ शब्दों, यथा– षट्कोण, षड़यंत्र आदि के प्रारंभ में ही आता है। अन्य शब्दों के शुरू में 'श' लिखा जाता है। जैसे– शोषण, शासन, शेषनाग आदि।

• संयुक्ताक्षरों में 'ट्' वर्ग से पूर्व में हमेशा 'ष्' का प्रयोग किया जाता है, चाहे मूल शब्द 'श' से बना हो, जैसे– सृष्टि, षष्ट, नष्ट, कष्ट, अष्ट, ओष्ठ, कृष्ण, विष्णु आदि।

• 'क्श' का प्रयोग सामान्यतः नक्शा, रिक्शा, नक्श आदि शब्दों में ही किया जाता है, शेष सभी शब्दों में 'क्ष' का प्रयोग किया जाता है। जैसे– रक्षा, कक्षा, क्षमता, सक्षम, शिक्षा, दक्ष आदि।

• 'ज्ञ' ध्वनि के उच्चारण हेतु 'ग्य' लिखित रूप में निम्न शब्दों में ही प्रयुक्त होता है – ग्यारह, योग्य, अयोग्य, भाग्य, रोग से बने शब्द जैसे–आरोग्य आदि में। इनके अलावा अन्य शब्दों में 'ज्ञ' का प्रयोग करना सही होता है, जैसे– ज्ञान, अज्ञात, यज्ञ, विशेषज्ञ, विज्ञान, वैज्ञानिक आदि।

• हिन्दी भाषा सीखने के चार मुख्य सोपान हैं – सुनना, बोलना, पढ़ना व लिखना। हिन्दी भाषा की लिपि देवनागरी है जिसकी प्रधान विशेषता है कि जैसे बोली जाती है वैसे ही लिखी जाती है। अतः शब्द को लिखने से पहले उसकी स्वर–ध्वनि को समझकर लिखना समीचीन होगा। यदि 'ए' की ध्वनि आ रही है तो उसकी मात्रा का प्रयोग करें। यदि 'उ' की ध्वनि आ रही है तो 'उ' की मात्रा का प्रयोग करें।

हिन्दी में अशुद्धियों के विविध प्रकार

शब्द–संरचना तथा वाक्य प्रयोग में वर्तनीगत अशुद्धियों के कारण भाषा दोषपूर्ण हो जाती है। प्रमुख अशुद्धियाँ निम्नलिखित हैं–

1. भाषा (अक्षर या मात्रा) सम्बन्धी अशुद्धियाँ :
अशुद्ध — शुद्ध
बृटिश – ब्रिटिश
त्रगुण – त्रिगुण
रिषी – ऋषि
बृह्मा – ब्रह्मा
बन्ध – बँध
पैत्रिक – पैतृक
जाग्रती – जागृति
स्त्रीयाँ – स्त्रियाँ
स्त्रष्टि – सृष्टि
अती – अति
तैय्यार – तैयार
आवश्यकीय – आवश्यक
उपरोक्त – उपर्युक्त
श्रोत – स्रोत
जाइये – जाइए
लाइये – लाइए

लिये – लिए
अनुगृह – अनुग्रह
अकाश – आकाश
असीस – आशिष
देहिक – दैहिक
कवियत्रि – कवयित्री
द्रष्टि – दृष्टि
घनिष्ट – घनिष्ठ
व्यवहारिक – व्यावहारिक
रात्री – रात्रि
प्राप्ती – प्राप्ति
सामर्थ – सामर्थ्य
एकत्रित – एकत्र
ईर्षा – ईर्ष्या
पुन्य – पुण्य
कृतघ्नी – कृतघ्न
बनिता – वनिता
निरिक्षण – निरीक्षण
पती – पति
आक्रष्ट – आकृष्ट
सामिल – शामिल
मष्तिस्क – मस्तिष्क
निसार – निःसार
सन्मान – सम्मान
हिन्दु – हिन्दू
गुरू – गुरु
दान्त – दाँत
चहिए – चाहिए
प्रथक – पृथक्
परिक्षा – परीक्षा
षोडषी – षोडशी
परीवार – परिवार
परीचय – परिचय
सौन्दर्यता – सौन्दर्य
अज्ञानता – अज्ञान
गरीमा – गरिमा
समाधी – समाधि
बूड़ा – बूढ़ा
ऐक्यता – एक्य,एकता
पूज्यनीय – पूजनीय
पत्नि – पत्नी
अतीशय – अतिशय
संसारिक – सांसारिक
शताब्दि – शताब्दी
निरोग – नीरोग
दुकान – दूकान
दम्पति – दम्पती
अन्तर्चेतना – अन्तश्चेतना

2. लिंग सम्बन्धी अशुद्धियाँ :

हिन्दी में लिँग सम्बन्धी अशुद्धियाँ प्रायः दिखाई देती हैँ। इस दृष्टि से निम्न बातोँ का ध्यान रखना चाहिए—

(1) विशेषण शब्दोँ का लिँग सदैव विशेष्य के समान होता है।
(2) दिनोँ, महीनोँ, ग्रहोँ, पहाड़ोँ, आदि के नाम पुल्लिंग मेँ प्रयुक्त होते हैँ, किन्तु तिथियोँ, भाषाओँ और नदियोँ के नाम स्त्रीलिँग मेँ प्रयोग किये जाते हैँ।
(3) प्राणिवाचक शब्दोँ का लिँग अर्थ के अनुसार तथा अप्राणिवाचक शब्दोँ का लिँग व्यवहार के अनुसार होता है।
(4) अनेक तत्सम शब्द हिन्दी मेँ स्त्रीलिँग मेँ प्रयुक्त होते हैँ।

- उदाहरण—

• दही बड़ी अच्छी है। (बड़ा अच्छा)
• आपने बड़ी अनुग्रह की। (बड़ा, किया)
• मेरा कमीज उतार लाओ। (मेरी)
• लड़के और लड़कियाँ चिल्ला रहे हैँ। (रही)
• कटोरे मेँ दही जम गई। (गया)
• मेरा ससुराल जयपुर मेँ है। (मेरी)
• महादेवी विदुषी कवि हैँ। (कवयित्री)
• आत्मा अमर होता है। (होती)
• उसने एक हाथी जाती हुई देखी। (जाता हुआ देखा)
• मन की मैल काटती है। (का, काटता)
• हाथी का सूंड केले के समान होता है। (की, होती)
• सीताजी वन को गए। (गयीँ)
• विद्वान स्त्री (विदुषी स्त्री)
• गुणवान महिला (गुणवती महिला)
• माघ की महीना (माघ का महीना)
• मूर्तिमान् करुणा (मूर्तिमयी करुणा)
• आग का लपट (आग की लपट)
• मेरा शपथ (मेरी शपथ)
• गंगा का धारा (गंगा की धारा)

• चन्द्रमा की मण्डल (चन्द्रमा का मण्डल)।

3.समास सम्बन्धी अशुद्धियाँ :

दो या दो से अधिक पदों का समास करने पर प्रत्ययों का उचित प्रयोग न करने से जो शब्द बनता है, उसमें कभी–कभी अशुद्धि रह जाती है। जैसे –

अशुद्ध — शुद्ध
दिवारात्रि – दिवारात्र
निरपराधी – निरपराध
ऋषीजन – ऋषिजन
प्रणीमात्र – प्राणिमात्र
स्वामीभक्त – स्वामिभक्त
पिताभक्ति – पितृभक्ति
महाराजा – महाराज
भ्राताजन – भ्रातृजन
दुरावस्था – दुरवस्था
स्वामीहित – स्वामिहित
नवरात्रा – नवरात्र

4.संधि सम्बन्धी अशुद्धियाँ :

अशुद्ध — शुद्ध
उपरोक्त – उपर्युक्त
सदोपदेश – सदुपदेश
वयवृद्ध – वयोवृद्ध
सदेव – सदैव
अत्याधिक – अत्यधिक
सन्मुख – सम्मुख
उधृत – उद्धृत
मनहर – मनोहर
अधतल – अधस्तल
आर्शीवाद – आशीर्वाद
दुरावस्था – दुरवस्था

5. विशेष्य–विशेषण सम्बन्धी अशुद्धियाँ :

अशुद्ध — शुद्ध
पूज्यनीय व्यक्ति – पूजनीय व्यक्ति
लाचारवश – लाचारीवश
महान् कृपा – महती कृपा
गोपन कथा – गोपनीय कथा
विद्वान् नारी – विदुषी नारी
मान्यनीय मन्त्रीजी – माननीय मन्त्रीजी
सन्तोष-चित्त – सन्तुष्ट-चित्त
सुखमय शान्ति – सुखमयी शान्ति
सुन्दर वनिताएँ – सुन्दरी वनिताएँ
महान् कार्य – महत्कार्य

6. प्रत्यय–उपसर्ग सम्बन्धी अशुद्धियाँ :

अशुद्ध — शुद्ध
सौन्दर्यता – सौन्दर्य
लाघवता – लाघव
गौरवता – गौरव
चातुर्यता – चातुर्य
ऐक्यता – ऐक्य
सामर्थ्यता – सामर्थ्य
सौजन्यता – सौजन्य
औदार्यता – औदार्य
मनुष्यत्वता – मनुष्यत्व
अभिष्ट – अभीष्ट
बेफिजूल – फिजूल
मिठासता – मिठास
अज्ञानता – अज्ञान
भूगौलिक – भौगोलिक
इतिहासिक – ऐतिहासिक
निरस – नीरस

7. वचन सम्बन्धी अशुद्धियाँ :

(1) हिन्दी में बहुत–से शब्दों का प्रयोग सदैव बहुवचन में होता है, ऐसे शब्द हैं—हस्ताक्षर, प्राण, दर्शन, आँसू, होश आदि।
(2) वाक्य में 'या' , 'अथवा' का प्रयोग करने पर क्रिया एकवचन होती है। लेकिन 'और' , 'एवं' , 'तथा' का प्रयोग करने पर क्रिया बहुवचन होती है।
(3) आदरसूचक शब्दों का प्रयोग सदैव बहुवचन में होता है।
उदाहरणार्थ—
1. दो चादर खरीद लाया। (चादरें)
2. एक चटाइयाँ बिछा दो। (चटाई)
3. मेरा प्राण संकट में है। (मेरे, हैं)
4. आज मैंने महात्मा का दर्शन किया। (के, किये)
5. आज मेरा मामा आये। (मेरे)
6. फूल की माला गूँथो। (फूलों)
7. यह हस्ताक्षर किसका है? (ये, किसके, हैं)
8. विनोद, रमेश और रहीम पढ़ रहा है। (रहे हैं)

अन्य उदाहरण—
अशुद्ध — शुद्ध
स्त्रीयाँ – स्त्रियाँ
मातायाँ – माताओं
नारिओं – नारियाँ
अनेकों – अनेक
बहुतों – बहुत
मुनिओं – मुनियों
सबों – सब
विद्यार्थीयों – विद्यार्थियों
बन्धुएँ – बन्धुओं
दादों – दादाओं
सभीओं – सभी
नदीओं – नदियों

8. कारक सम्बन्धी अशुद्धियाँ :
अ. – राम घर नहीं है।
शु. – राम घर पर नहीं है।
अ. – अपने घर साफ रखो।
शु. – अपने घर को साफ रखो।
अ. – उसको काम को करने दो।
शु. – उसे काम करने दो।
अ. – आठ बजने को पन्द्रह मिनट हैं।
शु. – आठ बजने में पन्द्रह मिनट हैं।
अ. – मुझे अपने काम को करना है।
शु. – मुझे अपना काम करना है।
अ. – यहाँ बहुत से लोग रहते हैं।
शु. – यहाँ बहुत लोग रहते हैं।

9.शब्द–क्रम सम्बन्धी अशुद्धियाँ :
अ. – वह पुस्तक है पढ़ता।
शु. – वह पुस्तक पढ़ता है।
अ. – आजाद हुआ था यह देश सन् 1947 में।
शु. – यह देश सन् 1947 में आजाद हुआ था।
अ. – 'पृथ्वीराज रासो' रचना चन्द्रवरदाई की है।
शु. – चन्द्रवरदाई की रचना 'पृथ्वीराज रासो' है।

• वाक्य–रचना सम्बन्धी अशुद्धियाँ एवं सुधार:
(1) वाक्य–रचना में कभी विशेषण का विशेष्य के अनुसार उचित लिंग एवं वचन में प्रयोग न करने से या गलत कारक–चिह्न का प्रयोग करने से अशुद्धि रह जाती है।
(2) उचित विराम–चिह्न का प्रयोग न करने से अथवा शब्दों को उचित क्रम में न रखने पर भी अशुद्धियाँ रह जाती हैं।
(3) अनर्थक शब्दों का अथवा एक अर्थ के लिए दो शब्दों का और व्यर्थ के अव्यय शब्दों का प्रयोग करने से भी अशुद्धि रह जाती है।
उदाहरणार्थ—
(अ.→अशुद्ध, शु.→शुद्ध)
अ. – सीता राम की स्त्री थी।
शु. – सीता राम की पत्नी थी।
अ. – मंत्रीजी को एक फूलों की माला पहनाई।
शु. – मंत्रीजी को फूलों की एक माला पहनाई।
अ. – महादेवी वर्मा श्रेष्ठ कवि थीं।
शु. – महादेवी वर्मा श्रेष्ठ कवयित्री थीं।
अ. – शत्रु मैदान से दौड़ खड़ा हुआ था।
शु. – शत्र मैदान से भाग खड़ा हुआ।
अ. – मेरे भाई को मैंने रुपये दिए।
शु. – अपने भाई को मैंने रुपये दिये।
अ. – यह किताब बड़ी छोटी है।
शु. – यह किताब बहुत छोटी है।
अ. – उपरोक्त बात पर मनन कीजिए।
शु. – उपर्युक्त बात पर मनन करिये।
अ. – सभी छात्रों में रमेश चतुरतर है।
शु. – सभी छात्रों में रमेश चतुरतम है।
अ. – मेरा सिर चक्कर काटता है।
शु. – मेरा सिर चकरा रहा है।
अ. – शायद आज सुरेश जरूर आयेगा।
शु. – शायद आज सुरेश आयेगा।
अ. – कृपया हमारे घर पधारने की कृपा करें।
शु. – हमारे घर पधारने की कृपा करें।
अ. – उसके पास अमूल्य अँगूठी है।
शु. – उसके पास बहुमूल्य अँगूठी है।
अ. – गाँव में कुत्ते रात भर चिल्लाते हैं।
शु. – गाँव में कुत्ते रात भर भौंकते हैं।
अ. – पेड़ों पर कोयल बोल रही है।
शु. – पेड़ पर कोयल कूक रही है।
अ. – वह प्रातःकाल के समय घूमने जाता है।
शु. – वह प्रातःकाल घूमने जाता है।
अ. – जज ने हत्यारे को मृत्यु दण्ड की सजा दी।
शु. – जज ने हत्यारे को मृत्यु दण्ड दिया।
अ. – वह विख्यात डाकू था।

शु. – वह कुख्यात डाकू था।
अ. – वह निरपराधी था।
शु. – वह निरपराध था।
अ. – आप चाहो तो काम बन जायेगा।
शु. – आप चाहें तो काम बन जायेगा।
अ. – माँ–बच्चा दोनों बीमार पड़ गयीं।
शु. – माँ–बच्चा दोनों बीमार पड़ गए।
अ. – बेटी पराये घर का धन होता है।
शु. – बेटी पराये घर का धन होती है।
अ. – भक्तियुग का काल स्वर्णयुग माना जाता है।
शु. – भक्ति–काल स्वर्ण युग माना गया है।
अ. – बचपन से मैं हिन्दी बोली हूँ।
शु. – बचपन से मैं हिन्दी बोलती हूँ।
अ. – वह मुझे देखा तो घबरा गया।
शु. – उसने मुझे देखा तो घबरा गया।
अ. – अस्तबल में घोड़ा चिँघाड़ रहा है।
शु. – अस्तबल में घोड़ा हिनहिना रहा है।
अ. – पिँजरे में शेर बोल रहा है।
शु. – पिँजरे में शेर दहाड़ रहा है।
अ. – जंगल में हाथी दहाड़ रहा है।
शु. – जंगल में हाथी चिँघाड़ रहा है।
अ. – कृपया यह पुस्तक मेरे को दीजिए।
शु. – यह पुस्तक मुझे दीजिए।
अ. – बाजार में एक दिन का अवकाश उपेक्षित है।
शु. – बाजार में एक दिन का अवकाश अपेक्षित है।
अ. – छात्र ने कक्षा में पुस्तक को पढ़ा।
शु. – छात्र ने कक्षा में पुस्तक पढ़ी।
अ. – आपसे सदा अनुग्रहित रहा हूँ।
शु. – आपसे सदा अनुगृहीत हूँ।
अ. – घर में केवल मात्र एक चारपाई है।
शु. – घर में एक चारपाई है।
अ. – माली ने एक फूलों की माला बनाई।
शु. – माली ने फूलों की एक माला बनाई।
अ. – वह चित्र सुन्दरतापूर्ण है।
शु. – वह चित्र सुन्दर है।
अ. – कुत्ता एक स्वामी भक्त जानवर है।
शु. – कुत्ता स्वामिभक्त पशु है।
अ. – शायद आज आँधी अवश्य आयेगी।
शु. – शायद आज आँधी आये।
अ. – दिनेश सांयकाल के समय घूमने जाता है।
शु. – दिनेश सायंकाल घूमने जाता है।
अ. – यह विषय बड़ा छोटा है।
शु. – यह विषय बहुत छोटा है।
अ. – अनेकों विद्यार्थी खेल रहे हैं।
शु. – अनेक विद्यार्थी खेल रहे हैं।
अ. – वह चलता-चलता थक गया।
शु. – वह चलते-चलते थक गया।
अ. – मैंने हस्ताक्षर कर दिया है।
शु. – मैंने हस्ताक्षर कर दिये हैं।
अ. – लता मधुर गायक है।
शु. – लता मधुर गायिका है।
अ. – महात्माओं के सदोपदेश सुनने योग्य होते हैं।
शु. – महात्माओं के सदुपदेश सुनने योग्य होते हैं।
अ. – उसने न्याधीश को निवेदन किया।
शु. – उसने न्यायाधीश से निवेदन किया।
अ. – हम ऐसा ही हूँ।
शु. – मैं ऐसा ही हूँ।
अ. – पेड़ों पर पक्षी बैठा है।
शु. – पेड़ पर पक्षी बैठा है। या पेड़ों पर पक्षी बैठे हैं।
अ. – हम हमारी कक्षा में गए।
शु. – हम अपनी कक्षा में गए।
अ. – आप खाये कि नहीं?।
शु. – आपने खाया कि नहीं?।
अ. – वह गया।
शु. – वह चला गया।
अ. – हम चाय अभी-अभी पिया है।
शु. – हमने चाय अभी-अभी पी है।
अ. – इसका अन्तःकरण अच्छा है।
शु. – इसका अन्तःकरण शुद्ध है।
अ. – शेर को देखते ही उसका होश उड़ गया।
शु. – शेर को देखते ही उसके होश उड़ गये।
अ. – वह साहित्यिक पुरुष है।
शु. – वह साहित्यकार है।
अ. – रामायण सभी हिन्दू मानते हैं।
शु. – रामायण सभी हिन्दुओं को मान्य है।

अ. – आज ठण्डी बर्फ मँगवानी चाहिए।
शु. – आज बर्फ मँगवानी चाहिए।
अ. – मैच को देखने चलो।
शु. – मैच देखने चलो।
अ. – मेरा पिताजी आया है।
शु. – मेरे पिताजी आये हैँ।

• सामान्यतः अशुद्धि किए जाने वाले प्रमुख शब्द :
अशुद्ध — शुद्ध
अतिथी – अतिथि
अतिश्योक्ति – अतिशयोक्ति
अमावश्या – अमावस्या
अनुगृह – अनुग्रह
अन्तर्ध्यान – अन्तर्धान
अन्ताक्षरी – अन्त्याक्षरी
अनूजा – अनुजा
अन्धेरा – अँधेरा
अनेकों – अनेक
अनाधिकार – अनधिकार
अधिशाषी – अधिशासी
अन्तरगत – अन्तर्गत
अलोकित – अलौकिक
अगम – अगम्य
अहार – आहार
अजीविका – आजीविका
अहिल्या – अहल्या
अपरान्ह – अपराह्न
अत्याधिक – अत्यधिक
अभिशापित – अभिशप्त
अंतेष्टि – अंत्येष्टि
अकस्मात – अकस्मात्
अर्थात – अर्थात्
अनूपम – अनुपम
अंतर्रात्मा – अंतरात्मा
अन्विती – अन्विति
अध्यावसाय – अध्यवसाय
आभ्यंतर – अभ्यंतर
अन्वीष्ट – अन्विष्ट
आखर – अक्षर
आवाहन – आह्वान
आयू – आयु
आदेस – आदेश
अभ्यारण्य – अभयारण्य
अनुग्रहीत – अनुगृहीत
अहोरात्रि – अहोरात्र
अक्षुण्य – अक्षुण्ण
अनुसूया – अनुसूर्या
अक्षोहिणी – अक्षौहिणी
अँकुर – अंकुर
आहूति – आहुति
आधीन – अधीन
आशिर्वाद – आशीर्वाद
आद्र – आर्द्र
आरोग – आरोग्य
आक्रषक – आकर्षक
इष्ठ – इष्ट
इर्ष्या – ईर्ष्या
इस्कूल – स्कूल
इतिहासिक – ऐतिहासिक
इक्षा – ईक्षा
इप्सित – ईप्सित
इकठ्ठा – इकट्ठा
इन्दू – इन्दु
ईमारत – इमारत
एच्छिक – ऐच्छिक
उज्वल – उज्ज्वल
उतरदाई – उत्तरदायी
उतरोत्तर – उत्तरोत्तर
उध्यान – उद्यान
उपरोक्त – उपर्युक्त
उपवाश – उपवास
उदहारण – उदाहरण
उलंघन – उल्लंघन
उपलक्ष – उपलक्ष्य
उन्नतिशाली – उन्नतिशील

उच्छवास – उच्छ्वास
उज्जयनी – उज्जयिनी
उदीप्त – उद्दीप्त
ऊधम – उद्यम
उछिष्ट – उच्छिष्ट
ऊषा – उषा
ऊखली – ओखली
उष्मा – ऊष्मा
उर्मि – ऊर्मि
उरु – उरू
उहापोह – ऊहापोह
ऊंचाई – ऊँचाई
ऊख – ईख
रिधि – ऋद्धि
एक्य – ऐक्य
एतरेय – ऐतरेय
एकत्रित – एकत्र
एश्वर्य – ऐश्वर्य
ओषध – औषध
ओचित्य – औचित्य
औधोगिक – औद्योगिक
कनिष्ट – कनिष्ठ
कलिन्दी – कालिन्दी
करूणा – करुणा
कविन्द्र – कवीन्द्र
कवियत्री – कवयित्री
कलीदास – कालिदास
कार्रवाई – कार्यवाही
केन्द्रिय – केन्द्रीय
कैलास – कैलाश
किरन – किरण
किर्या – क्रिया
किँचित – किँचित्
कीर्ती – कीर्ति
कुआ – कुँआ
कुटम्ब – कुटुम्ब
कुतुहल – कौतूहल
कुशाण – कुषाण
कुरूति – कुरीति
कुसूर – कसूर
केकयी – कैकेयी
कोतुक – कौतुक
कोमुदी – कौमुदी
कोशल्या – कौशल्या
कोशल – कौशल
क्रति – कृति
क्रतार्थ – कृतार्थ
क्रतज्ञ – कृतज्ञ
कृत्घन – कृतघ्न
क्रत्रिम – कृत्रिम
खेतीहर – खेतिहर
गरिष्ट – गरिष्ठ
गणमान्य – गण्यमान्य
गत्यार्थ – गत्यर्थ
गुरू – गुरु
गुंगा – गूँगा
गोप्यनीय – गोपनीय
गुंज – गूँज
गौरवता – गौरव
गृहणी – गृहिणी
ग्रसित – ग्रस्त
गृहता – ग्रहीता
गीतांजली – गीतांजलि
गत्यावरोध – गत्यवरोध
गृहस्थि – गृहस्थी
गर्भिनी – गर्भिणी
घन्टा – घण्टा, घंटा
घबड़ाना – घबराना
चन्चल – चंचल, चञ्चल
चातुर्यता – चातुर्य, चतुराई
चाहरदीवारी – चहारदीवारी, चारदीवारी
चेत्र – चैत्र
तदानुकूल – तदनुकूल
तत्वाधान – तत्वावधान
तनखा – तनख्वाह

तरिका – तरीका
तखत – तख्त
तड़िज्योति – तड़िज्ज्योति
तिलांजली – तिलांजलि
तीर्थकंर – तीर्थंकर
त्रसित – त्रस्त
तत्व – तत्त्व
दंपति – दंपती
दारिद्रयता – दारिद्रय, दरिद्रता
दुख – दुःख
दृष्टा – द्रष्टा
देहिक – दैहिक
दोगुना – दुगुना
धनाड्य – धनाढ्य
धुरंदर – धुरंधर
धेर्यता – धैर्य
ध्रष्ट – धृष्ट
झौँका – झोँका
तदन्तर – तदनन्तर
जरुरत – जरूरत
दयालू – दयालु
धुम्र – धूम्र
दुरुह – दुरूह
धोका – धोखा
नैसृगिक – नैसर्गिक
नाइका – नायिका
नर्क – नरक
संगृह – संग्रह
गोतम – गौतम
झुंपड़ी – झोँपड़ी
तस्तरी – तश्तरी
छुद्र – क्षुद्र
छमा,समा – क्षमा
तोल – तौल
जजर्र – जर्जर
जागृत – जाग्रत
श्रृगाल – शृगाल
श्रृंगार – शृंगार
गिध – गिद्ध
चाहिये – चाहिए
तदोपरान्त – तदुपरान्त
क्षुदा – क्षुधा
चिन्ह – चिह्न
तिथी – तिथि
तैय्यार – तैयार
धेनू – धेनु
नटिनी – नटनी
बन्धू – बन्धु
द्वन्द – द्वन्द्व
निरोग – नीरोग
निश्कलंक – निष्कलंक
निरव – नीरव
नैपथ्य – नेपथ्य
परिस्थिती – परिस्थिति
परलोकिक – पारलौकिक
नीतीज्ञ – नीतिज्ञ
नृसंस – नृशंस
न्यायधीश – न्यायाधीश
परसुराम – परशुराम
बढ़ाई – बड़ाई
प्रहलाद – प्रह्लाद
बुद्धवार – बुधवार
पुन्य – पुण्य
बृज – ब्रज
पिपिलिका – पिपीलिका
बैदेही – वैदेही
पुर्नविवाह – पुनर्विवाह
भीमसैन – भीमसेन
मच्छिका – मक्षिका
लखनउ – लखनऊ
मुहुर्त – मुहूर्त
निरसता – नीरसता
बुढ़ा – बूढ़ा
परमेस्वर – परमेश्वर
बहूब्रीह – बहुब्रीहि

नेत्रत्व – नेतृत्व
भीत्ति – भित्ति
प्रथक – पृथक
मंत्रि – मन्त्री
पर्गल्भ – प्रगल्य
ब्रहमान्ड – ब्रहमाण्ड
महात्म्य – माहात्म्य
ब्राम्हण – ब्राह्मण
मैथलीशरण – मैथिलीशरण
बरात – बारात
व्यावहार – व्यवहार
भेरव – भैरव
भगीरथी – भागीरथी
भेषज – भैषज
मंत्रीमंडल – मन्त्रिमण्डल
मध्यस्त – मध्यस्थ
यसोदा – यशोदा
विरहणी – विरहिणी
यायाबर – यायावर
मृत्यूलोक – मृत्युलोक
राज्यभिषेक – राज्याभिषेक
युधिष्ठर – युधिष्ठिर
रितीकाल – रीतिकाल
यौवनावस्था – युवावस्था
रचियता – रचयिता
लघुत्तर – लघूत्तर
रोहीताश्व – रोहिताश्व
वनोषध – वनौषध
वधु – वधू
व्याभिचारी – व्यभिचारी
सूश्रुषा – सुश्रूषा/शुश्रूषा
सौजन्यता – सौजन्य
संक्षिप्तिकरण – संक्षिप्तीकरण
संसदसदस्य – संसत्सदस्य
सतगुण – सद्गुण
सम्मती – सम्मति
संघठन – संगठन
संतती – संतति
समिक्षा – समीक्षा
सौँदर्यता – सौँदर्य/सुन्दरता
सौहार्द्र – सौहार्द
सहश्र – सहस्त्र
संगृह – संग्रह
संसारिक – सांसारिक
सत्मार्ग – सन्मार्ग
सदृश्य – सदृश
सदोपदेश – सदुपदेश
समरथ – समर्थ
स्वस्थ्य – स्वास्थ्य/स्वस्थ
स्वास्तिक – स्वस्तिक
समबंध – संबंध
सन्यासी – संन्यासी
सरोजनी – सरोजिनी
संपति – संपत्ति
समुंदर – समुद्र
साधू – साधु
समाधी – समाधि
सुहागन – सुहागिन
सप्ताहिक – साप्ताहिक
सानंदपूर्वक – आनंदपूर्वक, सानंद
समाजिक – सामाजिक
स्त्राव – स्राव
स्त्रोत – स्रोत
सारथी – सारथि
सुई – सूई
सुसुप्ति – सुषुप्ति
नयी – नई
नही – नहीँ
निरुत्साहित – निरुत्साह
निस्वार्थ – निःस्वार्थ
निराभिमान – निरभिमान
निरानुनासिक – निरनुनासिक
निरूत्तर – निरुत्तर
नीँबू – नीबू
न्यौछावर – न्योछावर

नबाब – नवाब
निहारिका – नीहारिका
निशंग – निषंग
नुपुर – नूपुर
परिणित – परिणति, परिणीत
परिप्रेक्ष – परिप्रेक्ष्य
पश्चात्ताप – पश्चाताप
परिषद – परिषद्
पुनरावलोकन – पुनरवलोकन
पुनरोक्ति – पुनरुक्ति
पुनरोत्थान – पुनरुत्थान
पितावत् – पितृवत्
पक्षि – पक्षी
पूर्वान्ह – पूर्वाह्न
पुज्य – पूज्य
पूज्यनीय – पूजनीय
प्रगती – प्रगति
प्रज्ज्वलित – प्रज्वलित
प्रकृती – प्रकृति
प्रतीलिपि – प्रतिलिपि
प्रतिछाया – प्रतिच्छाया
प्रमाणिक – प्रामाणिक
प्रसंगिक – प्रासंगिक
प्रदर्शिनी – प्रदर्शनी
प्रियदर्शनी – प्रियदर्शिनी
प्रत्योपकार – प्रत्युपकार
प्रविष्ठ – प्रविष्ट
पृष्ट – पृष्ठ
प्रगट – प्रकट
प्राणीविज्ञान – प्राणिविज्ञान
पातंजली – पतंजलि
पौरुषत्व – पौरुष
पौर्वात्य – पौरस्त्य
बजार – बाजार
वाल्मीकी – वाल्मीकि
बेइमान – बेईमान
ब्रहस्पति – बृहस्पति
भरतरी – भर्तृहरि
भर्तसना – भर्त्सना
भागवान – भाग्यवान्
भानू – भानु
भारवी – भारवि
भाषाई – भाषायी
भिज्ञ – अभिज्ञ
भैय्या – भैया
मनुषत्व – मनुष्यत्व
मरीचका – मरीचिका
महत्व – महत्त्व
मँहगाई – मंहगाई
महत्वाकांक्षा – महत्त्वाकांक्षा
मालुम – मालूम
मान्यनीय – माननीय
मुकंद – मुकुंद
मुनी – मुनि
मुहल्ला – मोहल्ला
माताहीन – मातृहीन
मूलतयः – मूलतः
मोहर – मुहर
योगीराज – योगिराज
यशगान – यशोगान
रविन्द्र – रवीन्द्र
रागनी – रागिनी
रुठना – रूठना
रोहीत – रोहित
लोकिक – लौकिक
वस्तुयें – वस्तुएँ
वाँछनीय – वांछनीय
वित्तेषणा – वित्तैषणा
वृतांत – वृतांत
वापिस – वापस
वासुकी – वासुकि
विधार्थी – विद्यार्थी
विदेशिक – वैदेशिक
विधी – विधि
वांगमय – वाङ्मय

वरीष्ठ – वरिष्ठ
विस्वास – विश्वास
विषेश – विशेष
विछिन्न – विच्छिन्न
विशिष्ठ – विशिष्ट
वशिष्ट – वशिष्ठ, वसिष्ठ
वैश्या – वेश्या
वेषभूषा – वेशभूषा
व्यंग – व्यंग्य
व्यवहरित – व्यवहृत
शारीरीक – शारीरिक
विसराम – विश्राम
शांती – शांति
शारांस – सारांश
शाषकीय – शासकीय
श्रोत – स्रोत
श्राप – शाप
शाबास – शाबाश
शर्बत – शरबत
शंशय – संशय
सिरीष – शिरीष
शक्तिशील – शक्तिशाली
शार्दुल – शार्दूल
शौचनीय – शोचनीय
शुरूआत – शुरुआत
शुरु – शुरू
श्राद – श्राद्ध
श्रृंग – शृंग
श्रृंखला – शृंखला
श्रृद्धा – श्रद्धा
शुद्धी – शुद्धि
श्रीमति – श्रीमती
श्मस्रु – श्मश्रु
षटानन – षडानन
सरीता – सरिता
सन्सार – संसार
संश्लिष्ठ – संश्लिष्ट
हरितिमा – हरीतिमा
ह्रदय – हृदय
हिरन – हरिण
हितेषी – हितैषी
हिँदु – हिंदू
ऋषिकेश – हृषिकेश
हेतू – हेतु।

♦♦♦

« पीछे जायें | आगे पढ़ें »

• सामान्य हिन्दी
♦ होम पेज

प्रस्तुति:–
प्रमोद खेदड़